अथ हरिव्यास चरित्रं । दोहा । भक्ति महात
म ललित नर करहुं कथन अब आन ।
जासु सुनत मिटि जात सब मोह मदन
मदमान । चौपाई । विदित व्यास हरिनाम
सुहाये । भक्ति प्रवीन भक्त हरिगाये । नी
रथ चारु नगर शुभ ग्रामा । करत प्रजटन
भक्त अभिरामा । चिंता वली नामथलका
हू । सिष समेत मानस उतसाहू । आये त

हो भक्त गुणधामा। देखि एक कल सघ अरा
मा। कमलय कुमन सरद घन छाया। नहा
विस्राम वकवर पाया। विमलन अग सरि
ल कल कंजा। चलत चाक वर त्रिवध प्रभं
जा। सुमन सुगंधि उमडि चहुं वोरा। अलि
गण कैकि कीर कल सोरा। भक्त प्रवीन दे
खि अस सोभा। मनहुं वचित्र भ्रमर मनलो
भा। सिघ मन करहत वदन मरडवानी। नव

३२
भे०
१

इनर चहू पाक सुखमानी । मैउनीन वर वा
रि यनाई । करहुं देव पूजन सुखदाई । अस
कहि वाम घोर जब देखा । भगवति भवन ।
ललित सुभेलाखा । छाग मेष वलि देत ल
काई । अस अविलोकि भक्त जड़ताई । दयानिर
नयनजल ढरखमानी । वोले वदन नम्रवन वा
नी । अहो मधुर हयादि सुहावन । व्यंजन दि
व्य पाक कल पावन । परि हरि देत अमख

२२ भं० २

कर्मदेवी। जे सब भूत चराचर सेवी। करि हिंसा
जीवन अरु धामा। चाहत रुचिर विरव फर का
मा। अन हिननें हित लेहिं अभागी। अस ऊक
रम करि भगवति लागी। पय सादि बलि ल
लित सुहाई। कहत भक्त कस देहु नभाई। ज
व अस कथन कीन हरिव्यासा। लागे प्रथम
करन परिहासा। मन भाव भक्त गहित अ
सि करना। ऊसोकाटि सीस अज धरना ॥ २

दोहा। अस देखत द्दग व्यास हरि की नासि ह्रा
ह्राकार। भये उचित दाया विवस हरि हरि
वदन उचार ॥१॥ टीका। नाभादासजी कहतेहैं
किहे गुरू महाराज और संपूर्ण संत भक्तो
श्रव और भक्तोका सुंदर महातम कि जिसके
श्रवण करने से मोह मद आदि सब विकारों
का नास होजाताहै मै आपके आगे कथन
करताहूं कि एक हरीव्यास नामकरके भग

वान के परम प्रवीन भक्त होतेभये सो सुंदर
तीर्थ और नगर ग्रामो मे भ्रमन करते हूये वि
तावली नामकरके एक बडा रमणीक अस्था
न जोथा तहां अपने शिष्यके समेत आय प्रा
पत हूये और तिसी स्थलमै एक बडा मनो
हर बगीचा देखकर कि जिसमैमे अनेस को
मल और नवीन वृक्षो की बडी सुंदर सीत
ल और घनीछायाथी तहां भक्त प्रधान वि

३

श्राम करने को वैठजाते भये जिस अस्थान की
कैसी शोभाथी कि वडे सुंदर निरमल जलका
भराहूया तलाउ कि जिसमै नानाप्रकारके क
मल फूलेहूये और सीतल मंद सुगंध इह तीन
प्रकारकी पवन चलरही और पुष्पोंकी सुगंधी
भी चारो ओरसे नानाभांत करके उमडीहूई अली
जो भ्रमर है की जोभौर कीर जो तोते इह भीना
नाप्रकारके शबद और गुंजार करते हैं तव भ

११
म
४

के सब ऐसे अस्थान की शोभा देखकर कि जि
सके आनंदको देवताभी लोभी चित होतेहैं आ
पने शिष्यको मीठी बानीसे कहने लगे कि ९३
तुम ईहां भोजन बनाबो मै इस निरमल जल
विखे स्नान करके और फिर आयकर भगवा
नका स्मरन सेवन सब करताहूं ऐसे कहिकर
जब बांई ओर देखा तोएक बड़ा सुंदर भगवती
का भवन शोभादेता भया तहां बहुत लोगोंका

समान जगाहक्या भगवतीको बकरे ग्रौर मेंढ़

मर्यों की वली देरहेहैं ऐसे देखकर भक्तयथा

न दयाकेवश वडे ग्राकुल ग्रौर दुखी होयकर

दीनतासे कहने लगे कि ग्रहो इहतो सर्व च

राचर की इष्टदेव भगवती माताहै इसको ह

लुग्रा खीर ग्रौर ग्रनेक रसोंके दिव्य व्यंजन

ग्रौर पकवान लागाकर इह देतों का ग्रहा

र मांस जोहै सो किस नमित्त देतेहैं ग्रौर म

११
भ
५

ए जीव हिंसा कर कर अपने मनोरथोंकी सि
द्धी चहते हैं और भगवती के निमित्त ऐसा कु
करम कर कर अभागी अनहितते हितकी
प्रापती करते हैं ऐसे कहिकर फिर तिन को
कहने लगे कि भाई पायस जो खीर आदिक
बड़ी पवित्र और सुंदर वस्तु है सो तुम महामा
ई को क्यों नहीं देते हो वृथा इन जीवोंकाकों
घात करते हो इसप्रकार जब हरिदास जी ने

कथन किया तब सो अधम पापकी ग्लानीम
न करके मनमें परिहास करने लगे और
भक्त प्रधान के मनभावे हीं तत्काल एक
बकरेको पकड़कर और तलवार मारकर
जिसका सीसकाट डालतेभये इस प्रकारति
न दुष्टों के हाथसे जीवका घात देखकर ह
रिदास जोहैं सो हाहाकार करने लगे और
फिर दयाकेवश आकुल और दुखी होय।

कर हरी हरी शब्द को उच्चारण करते भये ।

चौपाई । क्रोध विगत अस सिषहिं बखाना । अ
वन उचित भोजन जलपाना । जग जननीक
हं आजर्ति जाई । बदन विविध विधि असतुति
गाई । निस अपराध जीव इनमारन । ताव वि
दन करि रुचिर निवारन । पाछे पाक करन
कछु होई । अस कहि बदन भक्त वर सोई ।
दीन जीव हित हृदय विचारी । असतुति ल

गेण करन मन हारी। हे हर अमर नागनर से
वी। हेजग जननि जनन सुखदेवी। दोहा। महि
षासुर मद हरनि भव चंड मुंड क्षय कारि। हे
भविधं सनि समर श्री शक्ति चक्र करधारि।
गाहियाछंद। ब्रह्म चारणि शैल पुत्री गौरि व
त्र धारनी। लक्षमी पदमा सती कौमारी दु
खनिवारनी। खड्ग धारनि वाहनी मृग भै
रवी अग भजनी। कालका छत्रे सरी अष्टाद

११ भं. ८

सी खल गंजनी। सिंह वाहनी भगवती भव
नेस्वरी मातंगनी। विंध वासनि नारसिंही भा
रती भवभंजनी। धीधरी साकंभरी ह्ले
स्वरी ललिताउमा। पाप नासनी मुक्त केशी
स्वयचरी रकतारमा। दोहा। अवतें भक्त प्र
मोदनी पायसादि वलिमान। लेहु कृपाकरि
रुचिर निज दीन जीव नजिहान। २। टीका।
नव हरीव्यास जी जोहैं सो कोपमें भरे हुये

७

अपने शिष्यको कहने लगे कि हे पुत्र अबभो
जन और जल का खान पान करना योग्य।
नहीं है प्रथम जग जननी जो भगवती है
जिसको नाना अस्तुती से रिझाय कर और
इन निज अपराधी जीवोंका यान क्षमा करा
य कर फिर पीछे कुछ खान पान किया जा
वेगा ऐसे कहिकर और दीन जीवोंका हृद
यमे हित विचार कर कोमल बानीसे अस्तु

ती करने लगे कि हे जगत की माता हे देव
देवता और नाग मानुषों करके सेवन की
हुई हे जगत मे महिषासुर के मदको हर
ने वाली और चंड मुंड के क्षय करनेवाली।
हे शक्ती और चक्रके धारने वाली हे शैलपु
त्री हे गौरी हे वज्रधारनी हे लक्षमी हे पदम
आसनी अर्थात कमलके ऊपर आसन हुए
करनेवाली और ब्रह्मवर्जके धारने वाली हे

कौमारी दुखनिवारनी हे म्रगवाहनी हे भैर
वी हे खड्ग धारनी हे पापोंका नास करने
वाली हे कालिका हे छत्रकी शोभावाली हे
अष्टादशी अर्थात अठारांभजोंवाली हे खल
जो दुष्टजनहैं तिनका नास करने वाली हे सिं
ह वाहनी हे भगवती हे भवनेस्वर जो महा
देवहैं तिन की प्यारी भवनेस्वरी हे मातंगनी
हे विंध्याचल परवतमे निवास करनेवाली ।

हे नारसिंही हे भारती अर्थात सरस्वती हे सं
सारका भय हर करने वाली हे धीधरी हे शा
कंभरी कि जिसने शाकजो सागहै तिस क
रके जगतके जीवोंको त्रिपत किया है त्रिशूल
के धारणे वाली हे ललिता हे उमा हे मुक्त के
शी अर्थात खुलेकेशोंवाली हे आकाशमें वि
चरनेवाली खेचरी हे रमा हे रमा हे भक्तज
नोकी रक्षा करनेवाली जगदंबे अवने न॥

११
भ
५

५

कृपाकरके इनदीन जीवोंके घातको त्यागकर इह पायसादि अर्थात खीर आदिक वडी सुंदर और पवित्र वलीजोहै सोई गृहण कियाकर।२ चौपाई।जोतम अस नवीन जन पाली।तो मै काटि सीस निजकाली।देहूं मान तव सनम खरारी।अस प्रकार निज वदन उचारी।सिष सुमेन परिहरि गति आना।रह्यो करत सुम रण भगवाना।तीन जाम जब रयन विहायो।

११
भ०
१०

10

चलरथ जाम जवहिं नियरायो। नव निज भवन
वहिर हरखानी। निकसी अभय भक्त वर दा
नी। मानहुं प्रभा कोटि उदतानी। वोली वद
न मधुर सुखवानी। अवतें भक्त भवन वर
मोरे। होहिं नजीव हनन छिन तोरे। मैपुर
कर सव लोगनकाहीं। करहुं प्रवोध स्वपनति
सिमाहीं। अस कहि रुचिर दिव्य पटधारी। अवला
भेष हॅमन हारी। रजनी स्वपन सवन कहुं दीना।

१०

भग

वदन नरेस कथन अस कीना। अवधेतें नगर।
लोक समुदाई। पाय साद्दि वली रुचिर सुहा
ई। मोरेदेहु मुदित हरषाई। ते अजादि पसु व
धन विहाई। तहितें निश्चय होहिं तमारा। से
वति सिउ मनो रथसारा। जो नरेस कुरवकी
नन मोरी। तो तव देहुं वंस सव वोरी। दोहा
इह वैसव हरि आस प्रीय भक्त मोर गुण गे
हु। प्रव नहोहिं हिंसादि इहि नगर दीनवर

२२
भ॰
॥

पद्॥२॥ टीका॥ फिर हरी व्यासजी कहतेहैं कि
हे भक्तजनों को पालने वाली जो कवीत्हने श्र
मानहीं किया तो मै कलको अपना सीसकाट
करहे जगदंबे तेरेचरनों के बीच डारदेउंगा
ऐसाप्रण करके भक्त प्रधान जोहै सो शिष्य
के सहित इकाग्रचित होय करके भगवानका
स्मरण करने लगा इसप्रकार जब तीन पह
र रात वतीत होय गई और चौथा पहर आय

गया तब भक्तजनों को अभय वरकेदेने वाली
भवानी जोहै सो आनंदसे अपने भवन के बा
हिर निकल आई तिस जगदंबेका ऐसा चम
तकार और प्रभावहै कि मानो चांदनीके स
हित कोटि चंद्रमा उदय होय गयाहै और प्र
सन्न होय करके बडी कोमल बानीसे कहने
लगी कि हे भक्त सिरोमणी अबतें आगे नमा
रेहिन करके ईहांमेरे भवन मे कवी जीव हिं

स्र०
म
१२

सा नाहोनी पावेगी इह मेरा वचन सत्य कर
के है मै रात्रीविखे स्वपनेमै प्रकके सब लोगों
को भलीप्रकार प्रबोध कर देनीहूं ऐसे कहि
कर मनोहर स्त्रीके भेषसे वडे सुंदर दिव्य व
स्त्र धारकर रात्रीके समय स्वपने विखे सबको
बुझाय और सुनाय देतभई कि मेरी आज्ञासे
प्रवर्तें आगे सब कोई मेरेको पायस जो हृय
की दीरहैहै तिसकी वलीदेवे मै सोई आनंद।

पूर्वक पायकर परम प्रसन्न होयजाऊंगी औ
र तुमारे हृदय के सब मनोरथोंको सफल क
रूंगी इह जीव हिंसा जो होतीहै सो इसतें आ
गे कोई मतकरे और जो कदाचित इह मेरी
आज्ञा तुमने नहीं मानी तो निश्चय जानो।
कि मै तुमारे संपूर्ण वंसका नास कर देऊंगी
इह भक्त कुलमै सृष्ट हरिव्यास जोहै सो मेरा
परम प्यारा भक्तहै अब मै इसको प्रसन्न हो

३३
भं०
१३

य करके वरदे चुकीहूं कि इसने आगे अव ।
जीव हिंसा कबीना होगी ।२। चौपाई । स्वपन
विलोकि लोक समुदाई । उठे प्रात निज निज
विसमाई । बैठि इकत्र परस्पर वरना । आयेव
हरि व्यास हरि सरना । करि प्रणाम सब विन
य उचारे । अब नहोहिं प्रभ नगर हमारे । उरा
चार हिंसादिक करमा । तोर मजाद वड कृत ।
धरमा । रहि हैं सदा अटल महिमाहीं । दीनयाल

संशय कछु नाहीं। हनिय्रस भक्त सब हरषा
ना। भगवति कथन सत्य जीय जाना। नमन
सीस मनहिं मननाई। कीन सनान विमल
जलजाई। भोजन करत बहुरि हरखाते। शि
ष जत चले भक्ति मद माते। तवतें तहां नगर
सभताहू। भयो करम हिंसादिन काहू। पाव
न हृदय भक्ति सरसाई। भये लोक वैसव स
सदाई। दोहा। अस प्रकार इह चरितमै कीन

कथन हरिव्यास। सुनत जासु हरि भक्ति ज
न होहिं सचित भव त्रास।४। टीका। इस प्र
कार रात्रीके समय स्वपन देखकर प्रातःका
ल होनेहीं सब उठे औैर अपने अपने हृदय
मै आश्चर्ज मानने लगे फिर सब इकत्र होय
करके औैर परस्पर सलाय करके हरीव्यास
जीकी शरणको चले आवते भये तब तिनके
चरनो पर बार बार दंड प्रणाम करके सोख

पनका हृतांत ओर भगवतीका प्रबोधजोथा।
सो सब सुनायदिया तिसके उपरांत हाथ जो
उकर कहने लगे किहे दीनदयाल अब इसतें
आगे तुमारीकृपा के प्रसादसे हमारे नगरमें
कवी जीव हिंसाका पापनही होगा इह तुमारी
बांधीहुई मर्यादा ओर सुधरम जोहै सो सदैवही
अटलरहेगा हेकृपा निधान इसमें कुछ संश
यनहीं है ऐसे तिनकी वानी सुनकर भक्तप

११
भ०
१५

15

ध्यान हृदयमै परम सुख और आनंद मानकर
जगदंबेका कथन सबसत्य जानते भये फिर
जग जननीको मनमै वार वार दंड प्रणाम क
रके तिसतें उपरांत जायकर निरमल जलमै
सनान किया और आनंदसे भोजन पायकर
शिष्यके सहित भक्तीके मदमै मत्तभये हूये
झूल झूल रटते अपने मारग को चलेगये
तबते तिस नगर मै कोई हिंसादि कर्म जोहै

सो नहीं भया हरीव्यास जीके प्रसादसे सबलो
ग भक्ती प्रीती वाले होय कर वैसवबनगये
इस प्रकार इह हरीव्यास जीकी संदर गाथाजो
है सो गायन की गई है इसके श्रवण करने से
मानुष्य भक्ती प्रीतीवाले होयकर संसारके म
हाभयसे छूट जाते हैं ।३। इतिश्री भक्त विनोद
ग्रंथे भगवद भक्ती महातमे हरीव्यास चरित
वरणने नाम सरगा: ॥

मीहांसिंहकृत

भ० १६

१६

16

बल जोई। तासु बचन गति कठिन कीना। इह गु
ण काहु बटज मुनि चीना। कै कलाल कर ग्रा
नमताई। नाहिन उभय पद हृढ भाई। इह प्रभा
व केवल प्रभुसेवा। चरण सरोज बरन छन देवा
। रमा नाथ केशव भगवाना। नेति नेति जहि
निगम बखाना। गुरु नहि बचन सुनत तनका
ला। बोल्यो अ्रे कुटिल मति वाला। सोरठा॥
मोर सिखावन जोय। तव निज घरहु न मूढ वि

श्री म ९

त। अभयमऊच गत होय। ऋया करहु उरवाद

मुखे। ८। टीका। प्रह्लाद कहते हैं कि भाई वेदने

गायन किया हूआहै जो करमोंका प्रभाव ऊछ

न्याराहीहै और इहु सरव सुखोंके देने वाली भ

क्ती जोहै सो कैवल भगवानकी कृपाके प्रसा

दसे प्रापत होतीहै इस भक्तीकी सुंदर महिमा

संपूर्ण जगतमे प्रसिद्धहै एक मुखसे ऊछ क

थन नहीं कीजाती देखिये कि मुनी जनोंमै।

१८

स्पष्ट ओर ज्ञानकी निधी कुंभज अर्थात् घडेसे
उत्पन्न भये हूये अगस्त्य मुनी कि जिनोंने हाथ
की अंजलीके द्वारा समुद्रको पान कर लिया
और कौतुकसेही विंध्याचल पर्वतके बढ़नेकी
गती को रोक दिया क्या इह गुण उक्त कुंभज
मुनीका पाया जाताहै कि उक्त घडा बनाने वा
ले कुलालका प्रभावहै इसमें इह दोनो बातें
नहीहैं इहतो जिनकी स्याम मेघवत शरीरकी

३४
भ
१५

शोभा और कमलोंके समान विशाल नेत्र लक्ष्मी
के नाथ केशव भगवान कि जिनका वेदभी
अंतनहीं पाय सका केवल तिनके चरनोंकी
भक्ती और सेवाका प्रभावहै तब गुरू तिसकी
ऐसी बानी सुनकर कहने लगा कि अरे कुटि
लमती अर्थात् खोटी बुद्धी वाले बालक तूं मे
री सुंदर और बडे हितके देने वाली शिक्षा जो
है सो सुनकर हृदयमे धारन नहीं करता औ

१५

र भय संकोचको त्यागकर मूढ वृथा अपनेही
स्वभावसे उरवाद बकना जाताहैं ।८। चौपाई । इह
श्रावणि तोर प्रति हूला । पावक दहन देत म
त तूला । सनमुख शारदूल पति मेदन । कर
हूं जाय अब सकल नवेदन । अस कहि धाव
कोप गुरु कीना । छुट छुट प्रह्लाद प्रवीना । तू
ली मगन सहज गति धारी । गये कछुक ज
व पंथ निवारी । तब प्रह्लाद रुचिर मुखसूचे ।

३४
भ
२.

बोल्या वचन मधुर स्वर जवे। हे भगवान मान
प्रद स्वामी। हे अव्यक्त भक्त अनुगामी। सवैया
हे सुख कंद आनंद विभू भव फंद प्रबंधन मंद
न हंता। हे वृंदारक वृंदन मंडिन खंडिन चंड प्र
चंडन दंता। हे भक्तंजन रंजन मानस देव नि
रंजन हे भगवंता। हे कमलापत लोचन कंज
न भीत विभंजन रंजन संता। ईस दिती सुत
वृंदन कहु अब मंद महामद गंजन कीजै।रंज

२.

न दीन दयाकर नागर लोग उजागर कीरति ली
जै । बोध सुधाकर देव गुणाकर वेग कृपाकर
दाकर कीजे । विद्रुत शंचित नीरद दिव्य ननों ति
नके मन मोद भरीजे ७॥ टीका । फिर गुरू शुक्रा
चार्य कहते हैं कि जड तेरा इह आचर्ण और कर
म जो है सो देत मनकी रुईको जलाय देनेवाली
वडी दाहक अगनी है अब नू देव मै जाय कर के
राजेंद्र विवेक सिंह तेरा पिता जो है तिसके आगे

३४
भ
॥

तेरा इह ऊकरम सब सुनाय देताहूं ऐसे कहि क
रके गरुड़जोहै सो कोपसे धाय चला तब तिसके
पीछे पीछे चुपचाप मगन चित्त भयाहूआ सह
जे सहजे प्रह्लादभी चल पड़ता भया इस प्रकार
जब ऊछ दूर चले गये तब पवित्र मुख और मी
ठी बानी वाला प्रह्लाद भक्त जोहै सो ऊची स्वर
से अलाप करने लगा कि हे ज्ञान ध्यान औरमा
नके देने वाले भगवान हे अलख सरूप हे भक्त ॥

जनों के हितकारी हे सुखकी निधी हे आनंद
मूरती हे शरण प्रतापवाले इह छंदोंके प्रबंध
वत रचा हूआ जो संसारहै तिस विषे मदजो उ
ह पुरुषहैं तिनका नाश करने वाले हे देवता
ओंके समूहको आनंद देनेवाले और महा प्रबं
ड उह दैत जोहैं तिनको खंडिन करने वाले हे
भक्त जनोंके मानसी नेत्रोंके अर्थात् मनके
नेत्रों के प्रकाश देने वाले अंजन हे देव निरंज

३४ भ २२

न हे भगवंत हे लक्ष्मीकांत हे कमल लोच
न हे भयके हरने वाले हे संत जनोंको आ
नंद देने वाले हे कृपा निधान अब अनुग्रह
करके इह दितीके पुत्र जो देवता गणहैं ति
नको दुःखदायक महामद और दुष्ट जोहैं
तिसके मदको दूर करिये और हे दया नि
धी हे दीन सुख दायक लोकों विषें परम
सुजस और कीरती जोहै सो प्रापत करिये ॥२२॥

22

अ

हे प्रबोध रूपी अमृतनकी खानी हे गुणोंके समुद्र हे बिजलीके समान पीत वस्त्रधारी हे श्याम मेघवत शरीरकी दिव्य आभावाले अ ब कृपा करके दुष्टको शीघ्रही हनन करिये अर्थात मारिये और देवताउंके चित्तको आनंदसे परि पूरण करिये ॥ १॥ चौपाई। जय जय चारु चरित्र विचित्रा। जयति सुधामर नाथ पवित्रा। मायक असुर सुरन प्रति कूला।

३४
भ
२३

23

रन अभिमान डरन सठमूला। देषि सुरालय
नाथ कृपाला। हतहु वेग रिपु सुपच कराला।
मंगल मोद हरष विसमतारहु। धरनि धेनु सु
र त्रास निवारहु। सोरठा। अस रचना सुनि ते
हु। एह हष्टि गुह पाप नव॥ कहा नहिन सि
सु पहु। कौ करमन कर मूरती॥ टीका। फि
र कहताहै कि जैहो तुमारी है जगतमे सुंदर
चरित्रोंके विसतार करने वाले और जैहो तुमा

री हे देवताउंके स्वामी हे दीनबंधु इह मायक
जो नाना मायाके जाननै वाला असुर और दे
वताउंके विरुद्ध अभिमानी और बडा शत्रु जो
है सो हमको कृपा करके शीघ्र नासको प्रापत
करिये और ब्रह्मण पृथिवी देवताउं के हृदय
का शोक निवारण करके जगतमै आनंद औ
र मंगल जोहैं सो विस्तारण करिये ऐसे प्रका
दके मुखसे वाणीकी रचना सुनकर शुक्रा

३४
भ
२४

24

वाजे पीछे फिरकर देखतेहैं और कहतेहैं कि
इहतो वालक नहींहै कोई करमोंकी मूरती
है ॥ चौपाई। अस कहि अग्र मौन गुरु गमना।
पहुंचे आय द्वार नृप भवना। तहां दनुज पति
सहित समाजा। रह्यो मुदित निज सभा विरा
जा। सामंतन अव कीरण देखी। कुसमय हृ
दय शुक्र निज लेखी। राजपतनि पें गयो सि
धारी। जाय वदन अस गिरा उचारी। तोर रा

जे भामनि सतप्यारा । करहिं न वचन मोर सू ईकारा । कहि कहि विविध वदन समुझावा । कछु प्रतिकूल पठहिं मन भावा । सोरठा । की न अलंवन जोय । तव सुत मन न्टप भामनी । निकर असुर जल सोय । निश्चय दोष कलंक प्रद ॥ ५ ॥ टीका ऐसे कहिकर गुरू जोहै सो मौन होय कर आगेको चलपडा तव गवन करता करता राजाके भवन द्वारमे आय आप

३४
भ
२५

त भया तहां दैतोंका राजा हरणकशपपु जोथा
सो अनंदसे अपनी सभाके बीच विराजाहूआथा
तिस समय मंत्रियोंके सहित सब समाज जुडा
हूआ जो देखा तो शुक्राचार्ज अपने हृदयमें कु
समय विचार कर तहांसे राजपतनी जो राजा
की राणी और प्रल्हादकी माताथी तिसके घ
रमें चलागया और जातेंही कहने लगा कि हे
राज भामनी इह तेरा परम प्यारा पुत्र जोहै सो

मेरी शिक्षाको ग्रहण नहीं करता मै इसको
अनेक प्रकार कहि करके समझाय रहाहूं
परंतु कछु औरका और विरुद्धही पढ़ताहै
और अपनेही मनकी इच्छा करताहै हे राज
रानी इह तेरे पुत्रने जो मन आचरण अर्थात
धारण कियाहै सोतो संपूर्ण दैत कुलको नि
श्चय करके दोष और कलंकके देने वालाहै
२ । चौपाई । गुरुमुख सुनत वचन अमरानी

३४
भ
२९

भाषत सुतहिं चाह मृदुवानी। हे सुत भूरि व
पलता खोई। तव दनुवंस उचित हति जोई।
सो आचरण करहु सुत प्यारा। अति हित मानि
सुवन गुरु द्वारा। उत्तम दनुज वंश जोई वंसा।
करहिं सकल सुख जासु प्रसंसा। तुम कहं त
हो प्रतिमे जाया। सुनि प्रह्लाद वदन मुसका
या। इह कटु वचन जननि कस कैहो। मै नि
सि दिवस विलोकत रैहौ। सकल वंस दनु

२९

जात अभागी । दगध प्रचंड अनल अनिलागी
नहि अवसर दनुराज सुहावा । सभात्याग नि
ज भवनन आवा । सुतहिं देखि मानस हरषा
ना । तव प्रह्लाद भक्त जग पाना । पितहिं प्र
णाम कीन अति दीना । सादिर जनक आलिंग
न कीना । परम प्रेमयुत अंक बिठाई । सुखन
वदन वचन हरषाई । अवलग तुमहूं मात पर
वीना । गुरुतें पढ़ो जवन सिष लीना । सोम

म हृदय श्रवण सुखदाई। देहु पुत्र निज वदन सुनाई। तव प्रह्लाद सुमरि भगवाना। प्रकट पितहिं अस वचन बखाना। अवलग तात गुरु न हित चीना। अस उपदेस मंत्र मोहि दीना॥ परिहरि असुर वेस आचरना। सन चित चाहु विमल निज करना। सुंदर स्याम नाम रस देहा। हारन हृदय भक्त तम नेहा। जहि स्पर्श पद पावन संगा। चिदत गंग कलि किलष विभंगा

२७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अरु प्रसाद जहि देव अनंता। होहिं त्रिकाल द

रसि मुनि संता। पाव अक्षर स्वर भेदन राई। जहि

प्रसाद ऐश्वर्य वडाई। जहि माया वस मंडनि का

या। उपजव विनस पार नहिं पाया। क्षणमें क

रहिं रंक जग राया। दीनदयाल कर अद्भुत मा

या। सोरठा। सरण नाम भगवान। उचित लें न

अनुचित तजी। श्रवण कीरतन गान। करण ता

हि हित जानि निज। ९। टीका तव गुरु भ्रकावा

जेके मुखसे वचन सुनकर राणी जोहै सो वडी
कोमल श्रौर मधुर वाणीसे प्रह्लादको कहने
लगी कि हे पुत्र तूं चपलता को त्याग कर दैत
वंसका उचित जो धरमहै सो हित चितसे ग्रह
णकर श्रौर गुरूके वचनोको वडी श्रद्धा प्रीतीसे
मान देख पुत्र इह संपूर्ण वंसो विषे वडा उत्तम
श्रौर स्रष्ट दैत वंस जोहै मैंने तिस विषें तेरेको
जायाहै श्रौर इह कैसाभी वंसहै कि जिसकी स

व लोक स्लाघा और वडाई करतेहैं इस प्रकार
जननीके मुखसे वचन सुनकर प्रह्लाद मुसका
य करके कहने लगा कि हे माता इह तूं ऐसे म
हा मिथ्या और कटू वचन कैौं कहती हैं मैंनो
रात्रीदिन सर्व काल देखता रहताहूं इह मंद भा
गोंवाला संहर्ण देत वंस जोहै इसको तो अनसे
प्रचंड और दगध करणेवाली अगनी लगी हू
ईहै मै जानताहूं कि थोडेही कालमें नासको

प्रापत हो जावेगा ऐसे प्रह्लादके कथन करते करते राजा जो है सो सभा त्याग करके घरको चला आवता भया तहां पुत्रको देख कर हरष मे प्रफुलत होय गया तब प्रह्लादने तुरत उठ कर और दोनो हाथ जोडकर चरनोपर दंड प्रणाम किया पिताने वडी प्रीती सनमानमे हृदयमे लगाय कर फिर आनंद और प्रेमसे अपनी गोदी मे विठाय लिया और बार बार मुखको चूमकर

वडी प्रसन्नतासे पूछने लगा किहे पुत्र अब ल
ग तुमने गुरूजीके पास जो जो पढा और गुण
प्राप्त कियाहै सो अपने मुखसे उचार कर सु
नावो और मेरे हृदयको आनंद देवो ऐसे जब
पिताने वडी प्रीती और प्यारसे पूछा तब प्रल्हा
द हृदयमे भगवान को स्मर कर और अभय
होय कर कहने लगा किहे पिता अब लग गु
रूजीने मेरे को परम हित और सतकारसे २ रू

४ भ ३

उपदेश और मंत्र दियाहै कि असुरोंके वंसका धरम और आचर्ण जोहै सो सब त्याग करके चित्तको निरमल करना और तामरस जो नील वरणका कमलहै तिसके समान शोभा वाला जिनका शरीर और भक्तजनोके हृदय के अंधेरेको दूर करणे वाले और जिनके चरण कमलोंके सपर्श होनेसे गंगा आदिक नदीजो हैं सो पवित्र होय करके जगतमे कलीकाल

३

के पापोंका नाश करनेका सामर्थ होय गईहैं फिर जिस अनंत देवके प्रसादसे मुनी जन और संत महात्मा सुंदर ज्ञान ध्यानके सहित होय कर त्रिकाल दरसी होय जातेहैं और जिस पर मातमाकी कृपासे असुर जो दैत सुरजो देवता और मानुष्य राजे वडी ऐश्वर्यता और वडाईको प्राप्तहोतेहैं और जिस देवकी मायाके वश अनेक ब्रह्मांड उपजते और विनसतेहैं ऊर्द्धपा

रनहीं पाया जाता अलख पुरुषकी बडी अद्भुत
मायाहै क्षणमें राजाको रंक करना और रंक
को राजा करदेताहै ऐसे भक्त हितकारी और
दीन बंधू भगवान की शरणको प्रापत होना
और तिसकाही कीर्तन सुणना और तिसका
ही स्मरण करणा तिसकेंही भजनमें लीन र
हना। १। चौपाई। जब प्रह्लाद वदन प्रसनाहो
कीन कथन सनमुख दनुनाहो। कोपा हन्य

नैन तवकीने। बोल्यो वचन मरम ह्रत वीने।
अरे वनस कहिनें चतुराई। इह तवलीन परम
डःखदाई। वेचिस कवन दीन अववारा। थों
जद निज अपराध तुमारा। तव गुरु भीत वि
वस तन कंपत। बोल्यो विघन जनहु गन सं
पत। विघ मातंग केहरि दनुनाथा। मोरी स
नहु श्रवण निजगाथा। सिसहि यतन करि
विविध निवारा। कीनन वचन मोर सुईकारा

जो मिथ्या भनहूं कछु तोही ॥ तो मत सपन महां गुरु मोही । करि अपमान रिसकि गुरु काहा । तब त्रिसकार मोर सठ चाहा । मंद मत तोहि जनक सुभागी । सत्य सत्य अब कपट तयागी । सोरठा । मोर पठावन जोग । अब निज व दन समझ पित ॥ करहु कथन अब सोय । प रि हरिवेग विलंब सिह ॥ । टीका । जब प्रह्ला दने देत राज अपने पिताके सनमुख इसप्रका

३४
भ
३२

३२

र कथन किया तब सो अभिमानी कोपसे ला
लनेत्र करके कहने लगा कि अरे बालक इह
पर म डरके देनेवाली शिक्षा और चतुराई जो है
सो तैने कहांसे ली और किससे सुनी है जप
किसने तेरेको छललिया और महामंद अवि
चार जो है सो देदिया है कि मूर्ख तेरा ऊछु अप
नाही अपराध है इतनेमे गुरु जो है सो भयके
वश कांपता हूआ मानो सब संपती को गवाये

हूये व्याकुल चित्त होयकर कहने लगा कि हे
गजराज शत्रुओंके मदको हरने वाले मृग राज
और हे दैत्य कुलके भूषण अब मेरी प्रार्थना
जोहै सो सुनिये कि मै इस बालकको अनेक
प्रकार यत्न कर करके निवारण कर चुका
हूं परंतु इसने मेरे वचनोंको स्वीकार नही कि
या जो इस विषै मै कुछ मिथ्या कहताहूं मेरेको
महागुरुकी सौगंद है ऐसे कहिकर प्रल्हा

दको बडे त्रिस कारके वचनोंसे कहने लगा कि अरे मंद मै जानताहूं कि तूं मेरा अपमान व हताहैं परंतु अब जड तेरेको पिताकी सौगंद होवे कि कपट को त्यागकर मेरा पढावना औ र शिक्षा जोहै सो पिताके मन मुख सत्य सत्य कथन कर ॥ ११॥ चौपाई। तब प्रह्लाद लीन उर सोचा इह जड उभय मंद मति पोचा। सठ उरा तमन दूरतन मूला। द्वेष निरंतभगवन प्रति कू

ला। अस विचारि कहउ उत्र प्रवीना। तुसी रहेउ
वदन नहीं दीना। गुरु तव कहिस वचन रिस
रूपा। तववश वरति जास अस रूपा। भक्ति
प्रसिद्ध कीन दृढजीके। ते परिवाक प्रथम स
ठ नीके। पावहु दंड उह हत भागी। जे पश्चात
वनहिं ममलागी। सो विसकार होहिं जड मो
रा। पहु प्रसाद भक्ति सठ तोरा। नृप दनुजात
सुनत गुरु भाषा। कहतन हृदय एक सठ रा

खो। दीनन उत्र मौन जड़ रह्यौ। ऋषिपति द
नुज वदन नव कह्यौ। ग्रव इहि देह्र सपन स
रनाइ। करहिं समर्पण भक्ति उरजाइ। सोरठा।
कहा सपन सठ मौन। जहिं भक्ती नव हृदय दृ
ढ॥ इहि विद्यामे कौन। पक्षपात कर मोर गुरु
र॥ टीका नव प्रह्लादने हृदयमे जान लिया कि
इह जड़ दोनो उष्ट बुद्धीवाले ग्रोर उष्ट ग्रानमा
पापोंकी खानी महा द्वेषी ग्रोर भगवानके वि

योंहीं ऐसे विचार कर कछभी उत्तर नहीं दिया मौनहीं होय रहा तब परम कोपसे गुरू कहने लगा कि रे जड तैंने जिसके वशवर्ती अर्थात् अनुसारी होकर हृदयमें ऐसी भक्तीको दृढ कियाहै तिसका तो प्रथम तूं फल पायले पीछे मेरेको जोववेगी सो तेरी भक्तीका प्रसाद मेंभी भोग लेऊंगा ऐसे गुरूका कथन सुनकर दैत राज कहने लगा कि देखो इह बडाभारी डुःखहै

जो तुमारे कहनेका कुछ उत्तर नहीं दिया उन
मन वनकर मौनहीं होय रहाहै तव दैत पती
कहने लगा कि हे शुक्राचार्ज अब इसको तिसी
देवताकी सौगंध देवो कि जिसकी इह हृद
यमें भक्ती और स्मरण करताहै ऐसे कहि
कर फिर प्रह्लादको कहने लगे कि अरे उरम
ती तेरेको तिसी इष्टदेवकी सौगंदहै कि जिस
की हृदयमे तेने भक्ती दृढ़ की हुईहै अव सत्य

और

सत्य कहोकि इस विद्यामै तेरा कौन गुरु कौन

और पढ़ पानीहै ८ ॥ चौपाई ॥ पुरि हरि मंद मो

न गति धरमा । करहो प्रकट वेग निज मरमा ।

तब हरि हृदय सुमरि प्रह्लादा । कह्यो जनक

मन वचन अगाधा । देव सर्व विद्या निधि जो

ई । घट घट अंतरजामि प्रभु सोई । जे सर्वज्ञ सा

क्षि भगवाना । चिदानंद वर ब्रह्म अमाना । स

र्व चेत अनभव अविनासी । अभय अमर अज

२८

सहज प्रकासी। अद्भुत अनघ अमल निस का
मा। सत्य नदीस ईस अभिरामा। अलख अल
ख अव्यक्त निरंजन। रंजन देव दैत मद गंजन।
विद्या गुरू मोर सोई स्वामी। आरत हरण भक्त
अनुगामी॥ सोरठा॥ नव भाखिस धनुजेस। अ
रे निसरग डरातमन॥ नव अनिवात कलेस।
कीन आलंबन अन्य मत॥ तीन लोक समुदा
य। विध्वंस मेरो विदित॥ तहिमै त्रम सठ आ

३४ भ ३२

य। जनम्यो कुल कंटिक स्वपच।३३। टीका हे मेंद श्रव मोन धरमको त्यागकरके इस प्रकार तिनका कथन सुनकरके प्रल्हाद जोहै सो भगवान कृपा निधानको हृदयमे सुमरण कर के वडी गूढ श्रोर परम पवित्र वाणीमे कहने लगा कि हे पिता जो सर्व विद्याकी निधी श्रोर घट घटके अंतरजामी सर्वत्र साखी श्रोर सत चित आनंद रूपहैं ब्रह्म अवनासी श्रोर सुने प्रका

अपनाभेदजोहै सोसत्यकरकेप्रकट कर

३२

७४

सोहैं जनम मरनसे रहित ओर अभय रूपहैं कि
जिनको किसीका भय नही अमानीहैं कि जो
मानसेभी रहितहैं सर्ववेताहैं कि जो सबको
जानने वालेहैं अच्युतहैं कि जो कबी गिरते न
हीहैं अनघहैं कि जिनको पाप कुछ लेपनही
है अमलहैं कि जो सदैव निरमलहैं ओर कामनासे रहित सतके समुद्रहैं अव्ययहैं कि
जिनका व्यय नहीहै अव्यक्तहैं कि जो प्रगट

का

१४
भ
१८

नहीं देखेजानेहैं निरंजनहैं कि जो मायासे र
हितहैं ऐसे दैतोंका मदहरकरणे वाले और
देवताउंको आनंद देनेवाले तीनलोकके ना
यक भगवान जोहैं सोमेरे वियाके गुरुहैं औ
रतिनहीकी मेरेहृदयमै भक्ती हढहै इसप्र
कारप्र
ल्हादकी अखंड वानीसुन करके दनुजपती
परम कलेशमानकर कहने लगा कि अहो
बडे अनर्थकी वातहै मैनेतो प्रथम औरहीम

न धारन करलिया है देखो इह तीन लोक मै उजागर महा प्रतापी मेरा वंसजो है तिसविषे तू डरमती एक कलंक और कंटिक अर्थात कांटा उतपन्न भया हैं ॥ चौपाई ॥ मोरकाय आह्ठम गन पारा । रह्यो सकल भवनन विसतारा । दानमान ऐस्वर्य वडाई । संपति सुजस मोद सुखछाई । आज तमहूं सठ सकल लजाना । कायर सरस करहु अज्ञाना । मम वीरज

२४
भ
३९

कर वीरजनाथा। सुनौ देत जननी उपजाया।
सोगुण भयो पकन हितो रे। इह ग्रस्थर्य विउल
नीय मोरे। यों संसर्ग काल कछु दाया। कछु
तव जननि मोर उर छाया। ग्रसगुण नहि प्र
भाव कर लीना। करहु समृद्ध पद सुरदीना।
सुनहु तात प्रह्लाद बखाना। इह सब कथन
मोर ग्रज्ञाना। बिन ऐश्वर्य राजसुख सेषे। बि
नहु हरि भक्ति काहु किन लेखे। जीवन काय ज

वन भगवाना । करहिं ननधन देउषणामा । शा
व समान सोई जीवन देहा । श्रुति पुराण संमति
मतपहा । जहि श्रीनाथ रुचिर गुणग्रामा । की
न नरटन कीरतन नामा । सोर मनातहि प्रकष
न
प्रभागी । विरव वहरि सरस जगलागी । हनहिं
न मंद हजस हरि जोई । श्रवण विष्व वल सहश
सोई । हरि सरूप जिन वदन देखा । सोहग के
कि पंख ममलेखा । हजादिक प्रभुत वर करमा

२४
म
५.

40

कीन नकरण जास सुस यरमा। सो गत भाग वि
सुनेज पाना। डुम पल्लव परि दगध समाना।
जिन वरणान मन सुम करि जावा। भगवन था
म दरस नहिं पावा। तीरथ बाह सुदिन नहिं की
न्हो। सो असिपत्र सरस पदवीन्हो। विभो राज सं
पति जहि पावा। हरि नमिम वरदान सुहावा।
उर उदार है नाहिन दीना। सो सुपति संपति जग
वीना। हरिजस जासु गान नहिं करयो। दारुण ५.

वज्र नास उर भरयो। सोरठा। सुनहु तात करि छोह। असुर शिरोमणि धीर सुत। परि हरि कपट विमोह। भजहु रमापति मोक्षप्रद। ५। टीका। फिर दैतपती कहताहै कि मंद देखु मेरे शरीरका पराक्रमजोहै सो संपूर्ण भवनोंमे विसतरण होय रहाहै अर्थात् फैल रहाहै और मेरा दान मान ऐश्वर्य वडाई संपती सुख और सुजस जो है तिसकी महिमा कुछ कही नही जाती परंतु

हे अभागी आज तैने कायरोंके समान अज्ञानके
वचन करकर सब लज्जाको प्राप्त करदेई है औ
र देखो कि मेरे वीरजकी शक्तीसे दैतपुत्रीके ग
र्भमहारा उत्पन्न भयाहूं तू बडे आश्चर्जकी बात है
कि सो गुण तेरेको कुछभी नहीं भया क्या जानूं
कि तेरा संजोगके समय मेरे और तेरी माताके
हृदयमें कुछ दयाका प्रवेश होयगयाथा कि
जिसके प्रभावसे तेरे विषे इह गुण आय प्रक

४१

ट हूआहै जो अपने पक्षको छोडकर मूढ महा
दीन देवता जोहैं तिनके पक्षको पालना करता
हैं ऐसे पिताके मुखसे वचन सुनकर प्रल्हाद
कहने लगा कि हे असुरेंके राजा इह तेरा क
थन जोहै सो केवल सब अज्ञानहीहै कैयोंकि
संपती सुख और ऐश्वर्य वडाई इह सब भगवा
नको भक्तीके विना किसी अर्थ नहीहै जोपुरु
ष शरीर धारकर भगवानके चरणोंको दंड१

श्री
भ
भा
१

णा मनहीं करता तिसका सो शरीर जीवताही
शव अर्थात मुरदेके समानहै हेपिता इहक्रती
और प्रताणों नेंकहाहै और जिसने सुंदर रसनाको
पायकर श्रीपती जो लक्ष्मीके नाथ भगवानहैं
तिनका कीर्तन और भजन स्मरण नहीं किया
तिस पुरुषकी सो रसनाभी संसारमें विषकी वे
लीके समानहै तैसेंही जिनकानोंमें हरीहरका
सुजस नहीं सुना सो कानभी जगत विषे सरप

4

ऊंइाकेही तल्पहैं श्रौर जिननेश्रौ करके भगवा
न कृपानिधानकी मूरतीका दरसन नहीपाया
सोनेत्रभी मोर पंखोंके समान श्राकार मात्रही
हैं जिनहाथोंसे प्रीति पूर्वक विश्वनाथका पूज
न सेवन नहीं करलिया सोहाथ मानो दग्धभ
ये हूये हलके पत्रोंके सदृशहैं श्रौर जिन चर
नोंसे चलकर भगवानके धामोंका दरसन न
हीं पाया श्रौर तीर्थयात्राभी नही करी सोचर

२४
भ
५२
२

णभी असीनामा वृक्षके पत्रोंके समान दुःखदा
यकहीहैं और जिस पुरुषने राज संपती और वि
भूतीजो प्रताप इत्यादि प्रभुताई वडाईको पायक
र भगवानके नमित्त प्रीती सनमानसे उच्चादा
न नहीं किया तिस पुरुषका राज विभू और सं
पती जोहै सो जगतमै केवल एक विपती रूप
ही जानो और जिसने हरी नारायणका सुजस
और गुणानुवाद गायन नहीं किया तिस अभागी

५३

के हृदय मे मानो वड़ाघोर वज्र भरया हूआ है
तांते हे धीरजके धाम पिता और हे असुरों वि
षें शिरोमणी अब अनुग्रह करके हृदयका क
पट और छल जोहै सो त्याग देवो शुध और सर
ल चित होयकरके सरव सुखं और कल्याणके दे
ने वाले लक्ष्मीनाथ भगवान जोहैं रात्रीदिन ति
नकाही भजन और सुमरण करो ।१४। चौपाई ।
धारहु हृदय ध्यान भगवाना । पूजन करम धरम

३४
भ
४३

43

मनमाना। लेबहु शरण धरणि सुर देवा। सादर
करि संभावना सेवा। विरचत उरग अरिन मद
हरहो। पालन प्रजा विविध विधि करहो। आप
न सम्भ सुजस विसतारी। करहु धवल त्रैलोक
सुरारी। सहित सखन गण सचिव समाजा। आ
पन करहु रुचिर साम्राजा। उदय प्रताप गगन
लग धरना। कीजिये नाथ विदत जिमि तरना।
सोरठा। तव अस सुनि देवराज। कहा मंद मोरे

लगेगा। तव उपदेसन आज। कवन ज्ञान अस्ता
न ज्ञत। १५। टीका फिर कहताहै कि हे पिता हृ
दयमै ध्यान भी तिसी प्रमानमा का धारण करो
और तिसकेही भजन सेवनमै ततपर रहो और सं
दर धरम और सुकरम जोहैं तिनमै प्रहती राखो
साध ब्रह्मण और देवता ऊंकी शरणको प्रापत
होकर नित्य तिनकाही सेवन सतकार करने
रहो और उरग जोगढ आदिहैं सो रचाय कर श

र४
भ
४४

44

त्रुओंके मदका नासकरी औार प्रीती पूर्वक अपनी
प्रजाको पाली इसप्रकार अपना सुजस विसता
रण करके तीनलोकमै उजागर होजावो संपूर्ण
सखोगण औार मंत्रियोंके सहित महां प्रतापको प्रा
प्त होकर अपने प्रभावको पृथवीसे आकाश त
क सूर्जके समान उदय करदेवो औैसे प्रह्लादने ज
व पिताको वचनोकी रचनाकर प्रबोधन किया
कर
तव सुन करके दैत राजजो है सो कहने लगा कि

४४

अरे मंद तं आज मेरेको इहकौन अज्ञानके समान ज्ञान उपदेश करकर सिखावने लगाहैं। ९५।
चौपाई। मूढ प्रसिद्ध तोर हरि जोई। सदृश व्योम पुष्प जग सोई। मम ऐश्वर्य व्याप्त सब भवना। कायर तोर देव गण जवना। प्रेरत मोर स्मरन विकराला। परि हरि विबुध लोक निज आला। आसन धाव धीर उरहारी। लगे निराच चिह्न तन कारी। जहं तहं गिरन कंदरन जाई। छिपन जीव

निज रहे डराई। कछु कौपीन मात्र वपु वसना। व्यथन मरहिं विकल विनु ग्रसना। तिनमे देव इंद्र सुख जोई। वंदित चरण चारु मम सोई। गय दिगजान मोर कठिनाई। रद कराल जिनकर अधिकाई। दूर दूर भूरी मम कीने। विक्रम जी ति लोक सब लीने। मै सुर असुर सकल कर स्वामी। इह सब प्रजा मोर अनुगामी। सोरठा। जनक वदन कटुवाद। सुनि श्रवणन रिस विव

२४
भ
४५

४५

AS

सकै। बोला जन प्रह्लाद। अहोतात विसमय

विपुल॥ १९॥ टीका। फिर कहताहै कि हो मू

ढ़ वालक वे तेरा हरी जो प्रसिद्ध है और जिस

की तूं शलाघा करताहैं सोतो जगतमे आका

शके पुष्पोंवतहै जो किसीने देखाही नही औ

र मेरा ऐश्वर्य जोहै सो तो सरव भवनोमे भली

प्रकार उजागरहै और वे कायर तेरे देवता ग

एजोहैं सो मेरे बाणोंकेप्रेरेहूये अपने स्वर्ग लोक

३४
भ
५८

के हथेरोंको त्यागकर धीरजसे रहित भयसे कांप
ते और घायल भये हूये जहां तहां परवतों कंदरों
और गुफोंमे व्याकुल होय कर जीवको लुकाय
हूये वैठेहैं ऊब कोपीन मात्र शरीर परवस्त्र हो
गा नहीं तो महा दुखी भयेहूये भूखे और प्यासे
मरतेहैं और तिनमे से वडे वडे भारी इंद्र आदि मु
ख्य देवता जोहैं सोतो राती दिन मेरे चरनो को
वंदना करते रहतेहैं और गयदिग कि जोदिशों

५८

के रक्षक हमतीहैं सोभी मेरी कठिनताई और

को क्रूरता जानतेहैं जिनके वडे कठोर और दीर्घ दो

त जोहैं सोमैंने अपनी भुजोंकेवलसे मूलीके

समान चूर और दूर कर दिये हुयेहैं और अपने

प्रचंड प्राक्रम करके सब लोकोंको जीतलिया

है मै इस काल विषे संपूर्ण सुर और असुरोंका

स्वामीहूं और यह प्रजा सब मेरीहै इस प्रकारपि

ताके मुखसे महाकष्ट अर्थात् वडे कोड़े वचन

३४
भ
६०

श्रवन करके प्रह्लाद जोहै सो परम कोपके वश
होय कर कहने लगा कि अहो पिता वडे आश्च
र्यकी वातहै मै इसका उत्तर तुमको आगे देताहूं
१९। चौपाई। गुण निधान श्रीनाथ गुसैयां। अंत
र्यामि प्रभु घट घट छैयां। हरण गर्भ विश्वानर
रूरा। स्नातनमा मोद तनु मूरा। मंगल धाम वा
म विधि आदिक। वंदित जासु संत सनकादिक।
होत विश्व जहि कौतुक द्वारा। भव पालन संघार

६०

प्रकारा। प्रभु कृपाल भगवान कृतज्ञा। करहु नाश नव जनक प्रविज्ञा। सुनि प्रभुकोप निरत दनुजाना। भरत जान बोलिकहिस मुख बाता। परि हरि दनुज वेग प्रवदाया। करि प्रहार प्राणु थ सब काया। करहु त्राण शुहि प्राणन केरा। ना हिन रावन मंद रिपुमेरा। इहि जीवनकर मे प्रव जाना। होवन कवहुं सुजस कल्याना। नव प्रात म दनुज नहिकीने। दारुणा शास्त्र वेगकर लीने।

२४
भ
४८

सोरठा। धाय धरहु रवकीन। भये विध्वंसन उदित नहि॥ नव पक्वाद प्रवीन। विनय लीन श्रम गुण नमन॥ ९॥ टीका देखिये कि जो सरव गुणोंकी निधी लक्ष्मीके पती और घट घटकी जानने वाले जाग्रत स्वपन सुषुपत इन तीनो अवस्थाके अभिमानी ईश्वर हिरण्यगर्भ विश्वानर और रुद्रनामकरके प्रसिद्धहैं पवित्र आतमाहैं आनंदकी मुद्रा और मंगलके धामहैं कि जिनको शिव ब्रह्मा

और संत सनकादिक सदैव वंदना करते रहते
हैं और जिनके कौतुक द्वारा संसारकी उतपती
पालना और संघार होता रहताहै और हनन्त तू
पहैं अर्थात किये हूयेको जानने हारेहैं ऐसे मेरे
कृपानिधान भगवान जोहैं सोहू पिता तू तिन
की अवित्ता करताहैं इस प्रकार प्रह्लादके अग्र
ववन सुनकर दैत राज परम कोपके वश हो
जाता भया और अपने सेवकोंको कहने लगा

२४
भ
४९

किहै देतो अव दयाको शीघ्र त्यागकर और इस
के शरीरपर शस्त्रका प्रहार देकर इरमतीको भ्र
वी प्राणोंसे रहित करदेवो इह इए मेरा पुत्र नहीं
है कोई गाया शत्रूहै मैने भली प्रकार जान लिया
है जो इस प्रथमके जीवनेसे मेरेको कदाचित
कल्यान नहींहोवेगी ऐसे दैतपतीकी आज्ञाके
आधीन भयेहूये असुर जोहै सो तत काल तीव्र
शस्त्रोंको हाथोंमे धारन करके घोंवोंपक डोऐसा
शब्द करतेहूये प्रह्लादके वधकरनेको तयार हो जा ॥

ते भये तव भक्तोंमें प्रधान और परम चतुर श्रेष्ठा
द तिस समय जिसप्रकार विनती और विचार क
रताहै सो आगे कथन किया जाताहै ९ चौपाई
जेमम पद सरोज हरिनीके। प्रीत प्रतीत भक्ति द्द
ढ जीके ऐहिं सत्य निगमा वलि जोई। तो दनु शा
स्त्रघात गुण होई। निसफल ह्रथा विगत वल सा
री। वहुरि वदन अस गिरा उचारी। जे माधव भ
गवन पनि माया। करहिं नदीन द्याल निज दाया

अ
म
५०

50

ते तृण करहिं घात तृण देहा। अरु भगवान क
वहुं करि नेहा। करुणा करहिं दास निज जानी।
वृथा प्रहार वज्रहत पानी। अस चिंतन जीय क
रन प्रकाश्यो। तब दनुजात शस्त्रकर साध्यो।
कहि अस धरहु धाय हरि जन पर। करत प्रहार
शस्त्रकर तन पर। काहु खडग कोउ बान प्रचंडा
मुदगर गदा सूल गिरि खंडा। काहु पास प्रद बा
स प्रहारैं। कोपित चक्र शक्ति सठमारैं। अगनि ५०

न शस्त्र सवलन प्रहारे। पै जगदीस जास रव वारे। आयुध करहिं कवन गुणनाहीं। होत स हाय आप प्रभुजाहीं। सोरठा। ऊंठिन गति स मुदाय। सुमन हृष्टि सदृशा लगे। थकत असुर तनलाय। भयो नशोणत मात्र कछु॥ टीका प्रह्लाद कहताहै कि जो मेरी भक्ती प्रीती और प्रतीती भगवानके चरण कमलें विषें सत्य करके दृढहै और जो वेद शास्त्रभी सत्यहैं।

१४
म
५१

तो इह दैतोंके शस्त्रोंका घात श्रौर तिनका बल
जोहै सो सब वृथा श्रौर निसफल होजावे श्रौर फि
र कहने लगा कि जो मायाके पती केशव भग
वान श्रौर दीनोंके हितकारी अपनी आज्ञारूह
जोहै सो नाकरैं तो इह छिणभी शरीरका घात
कर देताहै श्रौरजो भक्त रक्षक भगवान अपनी
कृपा दृष्टीसे सफलकरैं अर्थात् दासपर आप
नी दयापालैं तो हाथसे घोर वज्रका प्रहार कि

५१

था हूआभी वृथा होजाताहै इस प्रकार प्रह्लाद
अपने हृदयमे चिंतन कररहाथा इतनेमे दैतजो
हैं सो हाथोंमे शस्त्र साथेहूये और धरो मारो धरो
मारो पुकारते हूये प्रह्लाद भक्तके शरीर पर
शस्त्रोंकी नाना वरषा करने लगजाते भये तब
कोई खडगजो तलवार और कोई वडे प्रचंड वा
ण कोई मुदगर और कोई गदा त्रिशूल कोई पर
वतोंके खंड और कोई महाभयके देने वालीपा

१४
भ
५२

स अर्थात फासी कोई कोपसे वक्र और शक्तीमा
रते भये ऐसे अगनित शस्त्र कि जिनकी कछु गि
नती नहीं दुष्ट दैत्योंने प्रह्लादके शरीरपर प्रहार
किये अर्थात् मारे परंतु जिसके आप जगदीश्व
र भगवान रखवारे और सहायकहो नहा शस्त्र
जोहैं सो क्याउपा कर सकतेहैं सब कुंठित अर्था
त खुंडे होयकर एक कथरके विंदुमात्र भी घा
त नहीं करसके किंतु भक्त प्रधानके शरीरको

32

ऐसे प्रतीत होतेथे कि मानों पुष्पोंकी वरषा
होय रहीहै ॥ ९ ॥ चौपाई । तव दनुजात निकर
अभिमानी । मानहूं पाय समर वड हानी । नृ
पपें आय सकल मन मारे । विसमय विवस व
चन उच्चारे । मार्ईराज सिसुतन परभारी । कौ
न्ये अगनित शस्त्र प्रहारी । काहुन अंग वषीर
ए भयऊ । सकल विराम थकत हम भयऊ ।
भूप वचन तव सुनतहिं वखाना । विद्या कप
टनमहिंकछुजाना । ऐसेकोमंत्रसिद्धिसठनोरे । करहुसमस्तवेगगुणमोरे ॥

हरिजनगीरा सुनतदनुराई। बोल्योवदन वचन मुसकाई। वियाकप
ट मंत्र कछु मोरे। नाहिंन जनक सपत सुत तोरे।
जहि चित बाकु चरण हरि लागा। पावन प्रीति री
ति अनुरागा। सो अंतक भय स्वपन नदेखे। तुम
से तात कवन कितलेखे। इहिमें करहिं जवन
जन संसा। सोगो हुन गुरु स्वामि विधंसा। नरक
निवास करहिं चिरकाला। सुनत वचन असु
रहर भुआला। सोरठा। परम कोपवश लीन।
बोलिव्याल सरिस गरल। नव प्रायस सुवदीन

अब विलंब जनि करहु कछु। टीका। नव संघर्ण
देत जोहैं सो मानो जैसे रणविषे बडी हानी पाय
कर और हार कर आवतेहैं तैसेही व्याकुल और
मन मारे हुये आयकर राजाको कहने लगे कि
हे असुरोंके नायक हमने तुमारी आज्ञासे इस
बालकके शरीरपर अनंत शस्त्रोंके प्रहार कि
येहैं कि जिनका कछु अंतनहीं परंतु इसका
कोई अंगभी छीजा नहीं गया और हम शस्त्र

३४
भ
५५

मारते मारते थकत होय गयेहैं ऐसे तिनका व
डे अचरजके देने वाला कथन सुन करके हिरण्य
कश्यप प्रह्लादकी ओर देखकर कहने लगा
कि अरे जड सत्यकहो कि तेरेको कुछ छल
विद्याका ज्ञानहै कि अथवा कोई मंत्र सिद्धी रख
ताहैं अब मेरे सनमुख अपना जैसा गुणहै तैसा
प्रकट कर तब भगवानका दृढभक्त प्रह्लाद
जोहै सो मुखसे मुसकाय कर कहने लगा कि

५५

54

हे पिता मैंतेरेही चरणोंकी सौगंद करके
र कहताहूं कि मेरेको विद्या कपट मंत्र कुछ
भी नहींहै परंतु एक जानताहूं कि जिस पुरुष
का भगवान कृपा निधानके चरण कमलोंमें
अखंड चित्त जुड़ गयाहै सो तो जमराजके भय
को सपनेमें भी नहीं देख सकता तुम कौन और
किस गिनती मेंहो इसमे जो कोई संशय कर
ताहै सो गुरुस्वामी और गऊ हत्याके पापका

३४
भ
५५

अधिकारी होताहै और अधम बहुत काल घो
र नरकमै निवास करताहै इसप्रकार प्रह्लाद
का कथन सुनकर दैत राज जोहै सो परम को
पसे महा विषके भरेहूये सरपोंको बुलाय क
र कहने लगा कि अब विलंब मतकरो और
मेरी आज्ञाको पालो १९। चौपाई। करहु अन
ल निजगरल प्रकासा। डंसित करहु शीघ्रस
ठनासा। स्वपच निशादरकी नसि भारी। तब

५५

क आदि उरग नव मारी । दनुज नाथ अनु सा
सन लीना । गारुन डंस नास सिध कीना । फुं
करत फणक कालवत धाई । फुनि फुनि क
रहिं डंस समुदाई । हरि प्रसाद भये सहश्र मी
ना । विष प्रभाव कछु नायन वीना । डंसन द
सन सीस मणि नासा । सकल सफुटन टूट व
णनासा । कंपमान तन विघत भुजंगा । रदम
णि आदि अंग सब भंगा । आय नृपहिं निज द

श्रा दिखाई। बिसमय बिवस देखि दनुराई। दि
ग संघूर बोलि रिस काया। तिनहिं बक्र असदी
न रजाया। इह जोई परपञ्च अभिमानी। माया
निउण कपट सठखानी। निज बिक्राल रदन
सन पह्रा। बदरह्र बदन उदर घुत देह्रा। ते प्रनु
सास दनुज पति पाई। लागे हतन नास जवया
ई। हूटे दसन अनल तन लागी। न्रपपें आय
बेग गज भागी। का अपराध नोर हमकीना। ५८

56

जेहिपरि बाक नृपति असलीना। सोरठा। अ
तिपीडत नतहोय। जंभ दमन हत हमभये॥
जंभी दंती दोय। रहोन हमरे एक गुण।२०।
टीका। दैतपती कहताहै कि तुम अपने विष
की अगनी जोहै सोप्रकाश करके और उस क
रके शीघ्रहीं उसका नास करदेवो कयोंकि इस
अधमने मेरा बहुत निरादर कियाहै ऐसे दनुज
नाथकी आज्ञा पायकर नतक आदि बडे क्रूर

सरप जो हैं सो सब कोपसे धायकर और काल
रूपहोय कर फुंकारे मारते हूये यद्यपि अनेक
प्रकारसे वारंवार प्रह्लादके शरीर को डंस अर्था
त् डंग मारतेहैं तद्यपि भगवानकी कृपाके प्र
सादसे तिनके डंसोंका नहीं कछु भी गुण न
हीं होता मानों मछलियों के समान होय गये
हैं विषका प्रभाव कछु भी देखनहीं पडता त
व डंस मारते मारते तिनके दांत सीस और

मणी जोहैं सो सब टूट फूट कर नासको प्राप
त होय गईं फिरतो व्याकुल और कांपते अंग भं
ग भये हूये भुजंग अर्थात् सरप जोहैं सो राजाके
पास आयकर अपने शरीरोंकी डुरदशा सब दि
खावते भये इस प्रकार तिनकी मंद दशा देखक
र देव राज वडे आचर्जको प्रापत होय गया औ
र तत कालही महांमत गयंद अर्थात् वडे म
सत हाथी जोहैं सो बुलाय कर तिनको वडी

क्रूर आज्ञा देता भया कि इहजो देवताओंके पक्ष
को पालने वाला महां अभिमानी बालकहै औ
र माया कपटमे बडा प्रवीनहै तुम जाय करके
अपने कठोर दंतोंमे इस अधमके शरीरको चीर
देवो ऐसी आज्ञाको पायकर हसती जोहैं सोतु
रत धाय करके प्रह्लादके शरीरको विदारण
जो करणेलगे अर्थात फाड़ने लगे तो दैव उ
नकासे स्पर्श करतेही तिनके दांत सब टूटपडे

५८

और शरीरोंको मानो अगनी लगजाती भई तव
मेंहमणे हसती जलते मरते हूये राजाके पास भा
गे चले आये और कहने लगे कि हे राजन हमने
तुमारा ऐसा कौन अपराध कियाथा कि जिस
के वदले हमको यह भारी दंड मिलाकि हम श
रीरें करके परम पीडत और महा दुखी ऊंभ होयगये
जो साथे और दसन जोदांत यह हमारे सव टूट
गयेहैं अव हमारे दोनो गुणोंमेसे एक गुणभी

रघु
भ
५९

नहीं रहा नातो हम ऊंभी रहे श्रोर नाहंती २० चौ
पाई। हमरे लेनमो कनक कीना। यह तव पत
न भूप हमचीना। तव दनुपति पावक मन का हा। तवसामर्थसकल
जग दा हा। करहुन भस्म वेग सठ एही। सुनि श्रनुसास
श्रनल न्रप तेही। भाजव उदित धार तहि करना
तव प्रसाद भगवन भय हरना। सीतल श्रमर
तरंगनि सोभा। भये कलोल श्रनल गत छोभा
जन प्रह्लाद सफुट वर बानी। सुनहु तात श्रस

५९

वदन वखानी। अनल प्रचंड दग्ध अति जेहू।
हरि आधीन संसृति गति तेहू। बिनु न देस भ
गवान कृपाला। करहिं न कवहुं दग्ध कछु
ज्वाला। जो इह निज तंत्रिक न्रप होई। तो वड
अंत्र जठिर कृत सोई। करहिं न दग्ध भस्म त्रण
काया। भलहिं विचार देख दनु राया। सोरठा।
अति पीडत दुःखदेत। त्रिविध ताप संसारजे।
करण समन तिन हेत। रामनाम भेखज रुचि

२। टीका। फिर हस्ती कहते हैं कि हे राजन्
हमने जानलिया है जो तुमने हमारे राज मक
ताले नेके वास्ते इह यतन किया है ऐसे तिन
का कथन सुनकर फिर दैत राज जो है सो अग
नी को बुलायकर कहने लगा कि हे अगनि दे
व तूं कैसा हैं जो सरव जगत के दगध करने
को सामर्थ हैं अब इस उष ओर उरमती को कों
नही भस्म कर देता इस प्रकार तिसकी आज्ञा

सन करके अगनि देव जो है सो भक्त रूपके ज
लोंको जब प्रचंड होय करके आया तब प्रह्लाद
के साथ सपर्श करनेही तिस अगनीके लोल अ
ग्रांत चंचल कलोल जो थे सो सब गंगा जीके सी
तल जलके समान तरत संगती रूप होय गये ति
सको देख करके प्रह्लाद जगदीस्वरसे अभय हो
यकर पिताको कहने लगा कि हे दैत्य कुलके
भूषण अवतं विचार करके देख कि इह महा

प्रचंड और दग्ध करने वाला अगनी जोहै सो इ
ह स्वतंत्र अर्थात् कुछ आपने आधीन नहींहै स
र्व जगतके पालक जो भगवानहैं तिनके आ
धीनहै और तिनकी आज्ञाके विना इसको एक
तृणके भस्म करनेकी भी सामर्थ्य नहींहै जो क
दाचित इह अपनेही आधीन होताजो उदर विषे
जो जठिर अगनी रहताहै सो शरीरको क्यों ना
भस्म करदेता ताते भगवानकी आज्ञाकेविना

ऊख भी नं हो सकताहै हे पिता ऐसे भगवान
दीन हितकारी जोहैं तिनके ही नामका रात्री दि
न भजं ओर स्मरण कर्नां चाहिये देखियेकि ग्र
ध्यातम ग्रदभूतक ग्रधदेवक इह तीन प्रकारके
संसारमें वडे क्लेशोंके देने वाले ताप जोहैं ति
नके नाश करनेको इह राम नाम वडी सुंदर ओ
र सुखदायक एक ओषधी है ।२१। चौपाई। संत
त नाह जवन जन साधक। राम नाम निज हृद

ना

३४
म
८२

62

य आयक। तिन कहं त्रास भीति कछु नाहीं। सं
शय कबहुं तोर मन माहीं। तो प्रन सत्य मोरे तन ला
गी। होत प्रतीत सलिल गति आगी। सुत जनन
सुन तव न्रपकाहा। इह रिपु मोर निधन जोई रा
हा। माहुर गोप पाक जन पाई। करहु प्राण गत
ता सुखवाई। तव आज्ञा पत सुत जन दीना। सो
जन गोप गरल करि लीना। सहसा अमिय ता
स गुण भय ओ। अति चित चकत देखि सठ रहे

औ। स्वाभाविक गुण कै कछु मोरे। विद्या क
रहु प्रकट जड़ मोरे। करहिं न काहू यनन गु
ण वाला। कहत वदन अस दनुज भुआला।
सुनहु तात प्रह्लाद वखाना। मोर जननि लीला
निज नाना। विरचि विलासमात्र वहु वरना। वि
ष कहं अमिय अमिय विष करना। प्रथमहिं
कीन सकल चट माना। मै न कपट विद्या क
छु जाना। सोरठा। सुनत दैत अधि राय। कोप

४४
भ
८३

63

विवस दनुजात गए। लीनसि निकट बुलाय।
दीन रजायस बदन भ्रम। २२। टीका फिर प्रह्ला
द कहता है कि हे पिता जिस राम नामकी जो
पुरुष निरंतर करके आराधना और साधना क
रते हैं तिनको भगवानकी कृपाके प्रसादसे सं
सारमै कोई भय और कलेश नहीं होता इसमै
जो तुमको कुछ संशय होतो प्रत्यक्ष देख जो
मेरे शरीर विषे अगन लगा हूआ जलके समान ८३

शीतल प्रतीत होताहै ऐसे प्रह्लादके मुखसे वचन सुनकर दैत्यराज पाचक जनोंको किजो भोजन बनाने वालेहैं आज्ञादेता भया कि इह जो अवध अर्थात किसी प्रकार नहीं मरने वाला मेरा शत्रु जोहै सो इसको अब तुम भोजन मे विष मिलायकर खवाय देवो तिस विषके प्रभावसे इह अधम अवश्य मृत्युको प्राप्त हो जावेगा इस प्रकार तिसकी आज्ञापाय कर।

३४
म
८४

64

तिन पाचकौंने प्रल्हादको कपटसे भोजनमें
विष मिलाय कर खवाय दिया परंतु वही बात
है कि जिसके जगदीस रखवारे हों तिसको
कछुभी भय नहींहै तहां विष जोथा सो अमृत
के समान गुण दायक होगया तब हिरण्य क
श्यप जोहै सो इस प्रभावको देखकर बडे अ
चरजके वश होय करके कहने लगा कि अ
रे बालक इह तेरा कोई स्वाभाविकही गुणहै

८४

कि अथवा तूं कोई विद्या कपट जानताहैं मेरे
को सत्य करके कथन कर क्योंकि तेरेको
कोई यतन भी ग्रहण नहीं करताहै तब प्रल्हा
द कहने लगा कि हे पिता तूं श्रवण कर सख
स्टष्टीको करती हरती मेरी माता लक्षमी जो
है तिसने विलासमात्र नाना प्रकारकी लीला
रची हूईहै सो विषको अमृत करतीहै और
अमृतको विष कर देतीहै तिसने जो ऊंक

करनाहै सो प्रथमहीं कर राखा है मैं तो कछु भी कपट और विद्या नहीं जानता हूं ऐसे सुनकर के दैत राज कोपसे थर थर कांप उठा और असुरैंको बुलाय कर फिर जिस प्रकार आज्ञा देता भया सो आगे कथन कीजाती है २१। चौपाई। सुव इहि बांधि कठिन सठ अंगा। तुम सब वेग जतन निज संगा। जाय शीघ्र गिरिपर तिसका रहू। धाय धाय धरि धरन पिछारहू। तुरत दैत

अनुसासन पाई । बांधि शीघ्र गिरि चले लिवाई ।
तव प्रह्लाद धरण अतिवानी । कहिस वदन अ
स नेअत सानी । होत निमगण जलधि वहुवारा
तोपें दीननाथ उपकारा । सो जस कौन विदित
जगसारी । अजहूं कपाल छछ निज धारी । ते उप
कार मानि भव हरना । मेरे लेहु धारि तव चरना ।
तव हनुमान बांधि गिरि ठाहो । आवत धरनि
लीन कर धाहो । सावधान निज भवनन आवा ।

१४
भ
६६

हरि प्रसाद श्रम काहु न पावा। सोंव्रासुर नव
लीन डुलाया। जानत रहा विपुल सठ माया।
दनुज भूप मख तासु बखाना। सुनहु वचन मम
सखे सुजाना। माया कपट तमसुं अति नागर।
सकल वंस दनु जात उजागर। तजहु प्रपंच वेग
अब तेही। जहि तें होव नष्ट सठ एही। ते अनुसा[स]
राऊ निजपाई। अति प्रचंड माया विरचाई। सोरठा
कानन लागी देखि। दारुण दव चहुं ओर निज। ६६

ग्रति विसमय जीय लेखि। कहत वचन प्रह्ला
द ग्रस २३। टीका राजा कहताहै कि हे दैतो स्र
व तुम इस डष्टके ग्रंगोंको यतन से भली प्रका
र् बांधकर ग्रोर वडे ऊंचे परवतपर जायकर
फिर घुमाय घुमायकर एथिवीपर पछाड देवो
तव इह ग्रधम प्राणोमे रहित होजावेगा ग्रैसे ति
सकी ग्राज्ञा पायकर दैतोंने प्रह्लादको निरद
य होयकर ततकाल बांधलिया ग्रोर खैंचते।

67

हूये परवतपर लेगये तहां प्रह्लाद जोहै सो दी
न होयकर नम्र वाणीसे पृथ्वीके आगे प्रार्थना
करणे लगा कि हे भूमीमाता तू सुमरण कर
कि तेरेको मेरे दीन बंधू भगवानने समुद्र विषे
डूबती को बहुत वार उपकार करके राख लिया
हूआहै इस कृपासिंधूका उपकार सब लोगोंमे
भली प्रकार विदितहै और अब लग भी ऊमस
अर्थात् कछु रूप होय कर भक्त हितकारीने

तेरेको पीठपर धारण किया हूआहै तेने अवतं
सोई उपकार हृदयमें स्मरण करके तिनके
दासकी रक्षाकर अर्थात् मेरेको परवतसे गि
रते हूयेको हाथोंपर धारण करले इतनेमें दे
तोंने तिसको वडे वेगसे घुमायकर परवतके
शिखरसे पृथवीपर फेरदिया तब पृथवीने द
याकरके आवनेको तुरतही हाथों पर धारण
कर लिया और महा उपद्रवसे राखलिया तब

प्रह्लाद स्वस्थचित्त और सावधान होयकर भग
वानको स्मरता हुआ घरको चला आया दी
नानाथकी कृपासे उसको भी कलेश नही पाया
इह अदभुत जब दैतराज तिसके पिताने सुना
तो आवरजके वश भया हूआ हाथोंको मलने
लगा और कोपसे भरा हूआ फिर ततकाल ही
संबरा सुरनामा दैतको बुलाय लेता भया कि जो
अनेक प्रकारकी मायामे प्रवीन था और तिसको

९८

१४
भ
९८

वडे सनमानसे कहने लगा कि हे मेरे सखे तू
कैसाहैं कि माया ओर कपटमें परम चतुर ओ
र संपूर्ण दैतवंशमें प्रधानहैं अब ऐसा प्रपंच
ओर यतन कर कि जिससे इह मेरा शत्रु प्रल्हाद
जोहै सो मृत्युको प्रापत होजावे तब तिसने दैत
पतीकी आज्ञा मान कर तुरतही ऐसी प्रचंड मा
या रचदेई कि एक वडा भारी बणहै जिसविषें
प्रल्हादकी चारो ओर महा प्रचंड अगनी लगा

हूआ मानो अवी भस्म करदेताहै जिसको देखक
र भयसे व्याकुल भया हूआ प्रल्हाद जिस प्रकार
कहताहै सो आगे कथन किया जाताहै २३। चौ
पाई। उदयि गता निगम कहुं गयऊ। यों आसी
स उज ऊंदिन भयऊ। यों कछु हाया सकलभ
ईहानी। यों भगवान स्वपन गति मानी। मै नि
ज भयो स्वपन कछु लीना। यों चरित्र माया प
ति कीना। विसमय विवस भ्रांति हति जीके। २९

१४
भ
९९
२
68

श्रमनशति करत धार शृति नीके। जैजैजैति जग
त उप जावन। मनमथ चारु मुनिन मन भावन
मुर कर हरण धरण सुरपाला। करुणा क्षमा
क्षेम शुति शाला। दुरत निवारण कुंडिल मंडित।
हनन विविध नप दनुज प्रचंडन। बंध विमोचन
सजन रंजन। दिव्य विलोचन दुरजन गंजन। देव
गदाधर सुरगण नायक। बोध सुधाकर जनन
सहायक। वेद विशारद भारत पंडित। दलन दो

३४
भ
८९

षडर्वग्राम प्रचंडित। नत जन लालस आलस
खंडिन। मानव मानद कौस्तुभ मंडन। करम प
रायण भंजन शोकन। मोह विधूनन दीन विलो
कन। निरमल मानस मलन विध्वंसन। पंडित
मंडिन खंडिन संसन। मीन करानन भानु विलो
चन। भक्त परायण भीत विमोचन। सोरठा। दी
ननाथ श्री बंधु। विरचित अमर प्रपंच जे। प्रभु
करुणामृत सिंधु। करिय वेग अहिकर हनन।

२४ टीका। प्रह्लाद कहताहै कि इह क्या अनर्थ भयाहै समुद्र सूक गया कि वेद लुपत होयगये हैं कि अथवा ब्राह्मणोंका आसीर वाद असत्य होय गया कि जगतमें संहरण रूपाकी हानी हो य गईहै अथवा विल भगवान निद्रामें लीन हो य गये कि मेरेकोही ऊक्क स्वपन होय रहाहै कि अथवा मायाके पती भगवान जोहैं तिनोंने ऊक्क चरित्र कियाहै इस प्रकार अचरजके वश

३४
भ
७.

भामिक हूनी भया हूआ प्रल्हाद फेर धीरजको धा
रकर भगवान कृपा निधानकी प्रसन्नती करने
लग जाता भया कहता है कि जै जै जै हो तमारी
हे जगतके उतपन्न करने वाले भगवान जै हो
तमारी हे कोटि कामदेवकी शोभाको लजादे
नेवाले जै हो तमारी हे मुनी जनोके मनको भा
वने वाले हे भक्तोंके हृदयमें निवास करणे
वाले हे मुरदैतके वध करणे वाले मुरारी भग

७.

वानहै हे गौ ब्राह्मण पृथवी श्रौर देवताऊंके पाल
क जैहो तुमारी हे क्षमाकी मूरती हे कल्याण
के दाता हे दयानिधी हे धीरजके धाम जै हो
तुमारी हे पापोंके नास करने वाले हे कानोमे
सुंदर कुंडलोंकी शोभा वाले हे तीन तापके हर
नेवाले हे दुष्टदैतोंका क्षै करने वाले जैहो तुमा
री हे संसारके वंधनको काटने वाले हे संत भ
क्तोंको श्रानंद देनेवाले जैहो तुमारी हे दिव्य ने

नेवाले हे गदाधर स्वामी हे देवताओंके नायक
हे वेदरूपी अमृतकी निधी हे दीनोंके सहाय
क हे वेदमे चतुर हे शुद्ध विलासके धनी हे दुःख
दोष और भयके नाश करने वाले हे दारिद्र खंड
न हे नम्रजनों पर प्रीती पालने वाले हे मानुषों
को मानके देनेवाले हे कौस्तुभ मणीकी शोभा
वाले हे करम सुधरम विषे परायण हे शोक
निवारण जैहो तुमारी हे निरमल हृदय वाले

७१

हे मोह मदके नास करणे वाले हे पंडित जनोके
हृदयको आनंद प्रकासी हे संशय विनासी हे वे
द्माके समान मुखकी शोभावाले हे भक्तजनो
पर स्नेह करने वाले हेडष्टोंके जलानेको सूरज
के समान नेत्रोंके धारणेवाले हे दीनानाथ हेल
क्ष्मी कांत हेकृपारूपी अमृतके समुद्र श्रह अ
सुरकी रची हूई माया जोहै सो दयाकरके अब इ
सको शीघ्र निवारण करिये २४। चौपाई। नमस्त

३४ स ७२

गिरा सुनत अस जनकी । विहसत जासु गति आरत
मनकी । कृपा विवस ह्वै विष्णु प्रकासा । दीन सु
दरसन कहुं अनु सासा । हरहु प्रपंच वेग तव
जाई । तहि न देस भगवँ अस पाई । कौन न हृस्य न
असुर हृण माया । देखि चरित्र बहुरि दनु राया ।
वेग बुलाय महृन सन काहा । इहु जोई नयन मो
र रिपु राहा । आज वधव सठ देहु सुखाई । पाय
महृन दनु नाथ रजाई । करण सशोषण हरि

जन काया । तुरत प्रवेश महत निज पाया । त
हांपि थेनु थरनि दुःखहारे । जन कर भये प्राण र
खवारे । करुणा सिंधु भक्त भय गंजन । लीन पा
न करि तुरत प्रभंजन । जव समीर गुण नाहिंन
देखा । तव सकोप दनुजात विसेखा । नाग पास
मन कठिन वंधाई । दीन नदेस वदन खेल राई ।
वीवन वेग उदधि अवगाहा । सठहिं देक्ष तव द
नुज प्रवाहा । सोरठा । भूप रजायस पाय वांधि

३४
भ
७३

तासु दनु जात गण। वेग जलधि तट प्राय। ला
गे करण निमग्गण जब। २५। टीका। तब उस प्र
कार अपने भक्तकी नम्रवाणी सुनकर सो भग
वान कि जिनको अपने जनके हृदयकी गती स
ब विदितहै तुरत दयाके वश होयकर सुदर्शन
चक्रको आज्ञा देते भये कि तुम जायकर शीघ्र इ
स असुरकी मायाको हर करदेवो तब सो दीना
नाथ की आज्ञा पायकर ततकालही असुरकी

73

७३

प्रचंड मायाको निवारण करदेता भया ऐसे वरि
त्रको देखकर पापकी खानी अभिमानी दैत रा
ज जोहै सो तिसी समय फिर महत जो पवनहै
तिसको बुलाय करके आज्ञा देताभया कि इह
अवध जो नहीं वध होनेवाला मेरा शत्रुहै तुम अ
पनी संशोषण शक्तीसे जाय करके आजहीं इस
के शरीरको सुकाय देवो कि जिससे इह दुवला
और दुःखी होयकरके आपहीं मरजावे ऐसे दे

३४
भ
७४

त नायकी आज्ञाको पायकर प्रभंजन जो पवन है सो जाय करके जब प्रह्लादके शरीर विषे प्रवेश करता भया तब तहांभी पृथिवी और गऊ ओंकी रक्षा करने वाले भगवान अपने जनके आपरखवारे होयगये ततकालहीं पवनको पान करलेते भये इस प्रकार जब पवनकाभी कु छ गुण नहीं देखा तब महांकोपसे दैत राजाने नाग फासके साथ कठिन बंधवाय कर आज्ञा ७४

देई कि जावो इस अथमको अवी समुद्रकी व
डी घोर और महा भयानक लहरोंके बीच जाय
करके प्रवाह देवो ऐसे तिसकी आज्ञाको पाय
कर देतोंने प्रह्लादको पकड लिया और खैंचते
हूये ल्यायकर जब समुद्रमे प्रवाह देने लगे तब
प्रह्लाद बडी नम्रवानीसे जिसप्रकार विनती क
रताहै सो आगे कथन की जातीहै २५ चौपाई त
व प्रह्लाद बदन उच्चारी। नम्रत गिरा सुनहु नि

३४ धिवारी। तब मुनि घटज मशोषण कीना। तम
म हिं पान कौतुक करिलीना। बहुरि देव भगवन
७५ पति माया। निजवर ग्रंह्मि नीर उपजाया। सो उ
पकार मोर प्रभुदेवा। जो तव मानि करहु कछु
सेवा। सो जलधीस ग्राज तव वारी। मोरे लेहु क
न रें निज धारी। ग्रसकहि मोन मंत्र हरि लागा। हृ
दय सुमरण भक्त वड भागा। तव दनुजान था
य धरि आस्यो। वीचन वेग प्रबल जहं भास्यो।
७५

बिनु प्रयास श्रम मुदित सरीरा। वहा प्रवाह जा
य निधि नीरा। भा उद्वेल प्रबल जलधीसा। की
न मर्याद श्राद निजखीसा॥ प्रलय प्रतीत जनहुं
तहां होई। डूबे दनुज ठाउ तट जोई। सोरठा। कै
न हन्य मनिधीर। सकल अनर्थनते तहां। आय
वाहिर निधिनीर। हल हपा चिंतन करत। २९
टीका प्रह्लाद कहताहै कि हे जलनिधी तं स्मम
रण कर कि जब तेरेको अगस्त मुनीने कौतुक

३४
भ
८६

मे पान कर लियाथा तो मेरे दीन वंधू भगवान
ने अनुग्रह करके फिर तेरेको अपने चरनोमे
मे उतपन्न कर लिया जो आज कदाचित तू सो
उपकार हृदयमे विचारकर तिनकी उच्छ सेवा
कर लेवेंतो तेरेको योग्यहै कौंकि मै तिस भग
वानका दास आज दैतोंका प्रेरया हूआ तेरे विषे
डूबने लगाहूं तू कृपा करके मेरेको हाथोंमे धा
रण करले इतनेमे असुरोंने तिसको वैसेही बां

ये हूयेको जलविषें प्रवाहदिया तब तिनका ऐसा
हूआ प्रह्लाद समुद्रके अगाध जलकी महा भयान
क लहरोंके बीच वहा चला जाताहै तिससमय
समुद्र जोहै सो अपनी मर्यादाको छोड़कर अत्यं
नहीं बढ़जाना भया मानो एक प्रलै प्रतीत होने
लगी तब देखजो किनारेपर स्थित भये हूये हरी
भक्तकी दशाको देखरहेथे सो सबके सब डूब
गये और प्रह्लादको समुद्रने सनमान पूर्वक स

३४
भ
७७

77

ह्रजेंही बाहिर फेर दिया सो संपूर्ण अनर्थोंसे न
हूत्र होय कर भगवान को चिंतन करता हूत्रा
जिस प्रकार अस्तुती करताहै सो आगे गायन
की जातीहै २८ चौपाई । अति प्रसन्न मानस अनु
रागा । अस्तुति करण हरण भवलागा । हे भ
गवान दीन हितकारी । सजन सुखद त्रास जन
हारी । आरत हरण धरण सुर त्राता । मंगल क
रण विघ्न सुखदाता । भक्त कल्प द्रुम दीनसने

७७

२

हू। जनपें प्रीति चिर जगजेहू। भक्त भीत मोचन भव स्वामी। वत्सल भक्त भक्त अनुगामी। जग जग संत धेनु हर धरना। अगजग नाथ त्रास भव हरना। नित्य जास अस रीति सुहाई। सहित स कहि जनकर लघुताई। मोसे कुटिल मंद मतिवा रे जो कर भये ख्याल रखवारे। सोरठा। मे सख जनदीन। को सनेह अनुवंधि व्रत। कृपानाथ सन कीन। जहिते हे दारद दमन। इह अपार उपकार

१४
भ
७८

मोपैकी उदार तुव। जाहिन वदन हजार सो सुरार
वरनन किये २७। टीका प्रह्लाद कहता है कि हे
दीनोके हितकारी भगवान हे भक्तोंके भय हर
नेवाले हे गऊ ब्राह्मण पृथिवी ओर देवताऊं की
रक्षा करणेवाले हे भगवान तुम कैसे हो किस
ब मंगलोंके देनेवाले ओर जगतके पालक
हो भक्त जनोंके कल्पवृक्ष ओर दीनोके सने
हीहो ओर सदैव जिनका यही विरद है कि आप ७८

ने दास जनोंपर प्रीती पालनी श्रौर भक्तोंके हृ
दयका भय श्रौर शोक दूर करना इसीतें हे दीना
नाथ तुम जगतमें भक्तवत्सल कहावते हो हे
श्रग जग श्रर्थात जड चैतन्य सबीके स्वामी तुमा
री नित्य यही रीतीहै कि जगतमें श्रपने जनकी
लघुता श्रौर श्रपमानको कबी सहार नहीं सक
तेहो देखियेकि मेरे जैसे मंदमती श्रौर महा कुटि
लके हे दीनबंधु तुम रखवारे होयगयेहो कहिये

३४
भ
७५

कि मैंने ऐसा कौन सनेह संबंधी व्रत कियाथा कि जिसमें हे उदार हे मुरार भगवान तुमने मेरेपर इह अनंत उपकार कियाहै कि जिसको मै हजार मुख धार करभी कथन करूं तो नहीं किया जाताहै २१ चौपाई। होत निमगण उदधि अवगाहा। अति ष वंड पावक कर दाहा। त्रणी भरतकर शिखर उ तंगा। अरुप्रहार आयुध बहुरंगा। गरल समी र सशोषण काया। अन्य अनेक दनुज सठमाया

७५

सबतें राखे लीन भगवाना। मै कृपाल केवल
जीय जाना। प्रभुकर निरव कलपतरु एहू। ज
नपै सदा करण निजनेहू। तरहितें श्रुति पुराण
अस गावे जन रंजन प्रभुजनन सहावे। अस प्रका
र प्रह्लाद प्रवीना। प्रेम भक्ति युत अस तनति लीना
पित अवलोकि ताहि उत रूष्टा। सहि न सक्यो स
ठ दनुज प्रतिष्टा। कहत मूढ अरभक हरिनोरा
राखत हृदय बास अति मोरा। गिरि कंदरा आश्रत

रा०
म
८०

जडजाई। बिधन जीव निज रह्यो डराई। संतन
डरवित विगत वड वसना। पावन मोर त्रासवस
श्रमना। सनमुख होहिं मोर किमि दीना। मै प्रा
क्रमि तहि हनन प्रवीना। जानत मोर विपुलता
नीके। मानत त्रास भलहिं निजजीके। मोर प्रचं
ड भुजन बल पाई। डरमत दनुज देव समुदाई।
सोरठा। सुनि पितु वचन कठोर नव बोल्यो प्र
ल्हाद जन। जवलग प्रभुवर मोर। ईहां सपष्ट

८०

जनकभा। तवलग सकल तुमार। विभू वजाई
संपती। मोर वचन निरधार। हृदय धरहु दानव
पती। २८। टीका देखिये कि तहां वडे अगाध स
मुद्रमे डूवाना और महा प्रचंड अगनीमे जलाना
तैसेही घोर ऊचे परवतके शिखरसे गिराना औ
र दैतोंके हाथसे नाना शस्त्रोंके घात दिलाना
विषका षवाना और पवनसे शरीरको सुकाना
संभ्रासुरकी मायाका भय दिखाना इत्यादि अनेक

१४
भ
८८

उपद्रव और अनर्थ जो भये तिन सवते मेरेको वचा
ना ऐसे उपकार करनेको हे दीनानाथ तुमही समर्
र्थहो और कौन हो सकताहै और हे दीनवंधु मैने
भली प्रकार जान लियाहै जो तुमारा निरंतर कर
के यही व्रतहै कि अपने जनपर सदैव सनेहसे पा
लना इसीते हे कृपा निधान तुमको श्रुती और पु
राणोंने प्रगट करके जन रक्षक और जन पाल
क गायन कियाहै इसप्रकार प्रल्हाद जोहै सो

८८

प्रेम और भक्तीमे लीन भयाहूआ भगवान भक्त
सर्व दानकी असतुती करता भया तब तिसकी
ऐसी उतकृष्टा अर्थात् उत्तमताई और वडाई दे
ख करके दैतोंविषें वडा प्रतिष्ठत और मानी दैत
राज जोहै सो सहार नहीं सकता भया हंकारसे
उनमत्त भयाहूआ कहने लगा कि अरे मूढ़ बा
लक इहतेरा हरी कि जिसकी तूं इतनी शलाघा
और वडाई करताहैं सो तो हृदयमे मेरे भयसे

यो० वा० ८२

कांपता रहताहै और परवतोंकी कंदरोंके आश्रय होकर अपने जीवको छिपाये हूये बैठाहै शरीरप र वस्त्रभी नहीहैं और महा दुःखी भयाहूआ मेरे त्रा सके वश कछु भोजन मात्रभी नही पाय सकताहै सो ऐसा निरवल और दीन कहो मेरे सनमुख के से होय सकताहै मै तिसके वध करने अर्थात मा रनेको सामर्थहूं वेमेरी प्रबलता और मेरे प्राक्रम की महिमाको भली प्रकार जानताहै और हृदय

मै भय मानताहूं मेरी प्रचंड भुजोंका ऐसा वल औ
र पराक्रम प्रसिद्धहै कि जिससे दैत और देवता सव
थरथर कांपते रहतेहैं इस प्रकार पिताका अतिसे
प्रवल कठोर और अभिमानका भराहूआ वचन
सुनकर प्रह्लाद अभय होयकरके कहने लगा कि
हेतात जवलग मेरा महा प्रभू इहां प्रकट नही भ
या तव लगही तू निश्चय जानकि इहतेरा प्रताप
और संपती वडाई सव देख पडतीहै २८ चौपाई।

रघ
म
८३

83

होत प्रत्यक्ष बिसरि सब जाई। तात तुम्हार भूरि च
तुराई। तब लग गरज करहिं करि कानन। जब
लग नहिन प्रकट पंचानन। सुनहु तात भाखिस
हनुराई। बंध्यात्रिये पुत्र बरु जाई। कलह कबहुं
कि करहिं बिवाहा। ओम प्रसन्न सोपि हृष्टाहा।
होहिं प्रकास अंधकार नयना। सुनहिं उरग बरु
गायन बयना। सुर गालीक सिरोमणि तोरे। सो
न होहिं हत मन भाव मोरे। तब प्रह्लाद कोप बस

बानी। बोला सुनहु असुर नृपमानी। अनसे प्रब
ल हालाहल जोई। तास विरचन कलेवर सोई।
तहं प्रलीन फणक करन्याईं। महा राज मम
त्रिभुवन साईं। करहु न कोप विवस तिन कोरे।
सब विधि दीन दयाल प्रभु मोरे। कर आकर साम
र्थ गुसैयां। औरकी और करहिं कछु नैयां। सो
जब करहिं कोप भगवाना। प्रलैकाल कर अ
नल समाना। सोरठा। तो विसमय कछु नाहिं

होहिं निखिल ब्रह्मंडजे। तरत भस्म छणमाहिं।
को निवारकर सकहिं तव। २९। टीका। और हे
पिता तिस अनंत प्रतापी भगवानके प्रकट हो
तेही तुमारी चपलता और बड़राई जोहै सो सब
बिसर जावेगी करी जो हसतीहै सो छणमे तब
लगही गरज करताहै कि जब लग तहां सिंह
नहीं प्रकट होता तब दैतराज कहने लगा कि
अरे नदान जो कबी वंध्या अर्थात बांझ स्त्री पुत्र

84

भी जनमै और हीजड़ा विवाहभी करै आकाश
से पुष्पभी वरषें और अंधपुरुषके नेत्रोंमें प्रका
शभी होजावे सरप जोहै सो गायनभी करैने परं
तु सबसे निकारा और सबसे निषिद्ध तेरा शिरो
मणी हरी जोहै सोतो कदाचित भी मेरे मनमु
ना
एवं होवेगा इसप्रकार सुन करके प्रल्हादकोप
के वश हो जाता भया और कहने लगा कि हे
अभागी पिता तूं श्रवणकर कि अंतमे क्रूर हो

३४
भ
८५

लाहल जो विषहै तिसके रचेहूये कलेवरमै महा
भयंकर फणिक अर्थात् सरप वत लीन भयेहू
ये तीन लोकके नायक मेरे स्वामी जोहैं तूं जढ
तिनको कोपके वश मतकर क्यौंकि वे अनंत
आक्रम वाले और अनंतही महिमा वाले दीना
नाथ करने नाकरने अरु कछ औरका औरही
वमनकर दिखाय देनेको सामर्थ्यहैं सो जब पहिले
कालकी अगनीके समान अपना प्रचंड कोपक

८५

र वैठेंगे तव हे पिता कछु आचर्ज नहीं है जानोकि
एक क्षणभरमेंही संहरण ब्रह्मांड भसम होजावें
गे फिर तिस समय तिनको कौन निवारण और
शांती करणे वालाहै। २९। चौपाई। तहां मसक
श्व जनक हमारा। होव निरंतर वेग संचारा। भ
तजन सखि मित्र समुदाई। दसा देखि तब जाहि
पराई। केवल मरन होव तहं तोरा। संतन सत्य
वचन पित्र मोरा। दनुजा थीम सुनत सुतवानी

रा० च० मा० ५८

मानस मानि अतसे वडज्ञानी। कहत मंद मति अधम अचारी। इह प्रसिद्ध जड संसृति सारी। तब विरुद्ध अस कवन प्रकारा। रे उरात मन व चन उचारा। मैना मृगा देव नभ धरना। अंत्र व हिर निसवासर मरना। तव प्रति कुल करहु क समूझा। करम प्रसिद्ध मोर जग गूझा। सुनि प्र ल्लाद कहत रिसमानी। तव जन सकल सुनहु ममवानी। अहो कवन इह व्यापिस आई। सद

य जनक जढ उरजन नाई। जहिवर विथी दीनव रपही। करत निरादर जढमति नेही। मानत नाहिं मूढ अभिमानी। कहत वदन जोई अनहि नवानी। मोरेभी प्रमाण अव पहू। देवप्रधान क मल भव जेहू। तास वचन इह पातक कोहीं। सो अव करु प्रमाण भवहोंही। सोरठा। निसफल जाहिन सोय। हनहिं वेग भगवान इही। ब्रह्म वाक वर जोय करत अथम तिनकर हनन।

१४
भ
८०

।२०। टीका। और हे पिता तहां तुमारा मस्तक जो
मच्छर है तिसके समान संघार होजावेगा अर्थात
तुम मारे जाउगे और इह तुमारे भृत सेवक और
मंत्रीजोहैं सो तुमारी डरदशा देख करके सब भा
ग जावेंगे तहां केवल एक तुमाराही मरना होगा
इह मेरा वचन सत्यकरके है इसमे कुछ संशय न
हीहै ऐसे प्रह्लादका कथन सुनकर दैत राज
जोहै सो हृदयमे बडा शोक और हानी मानकर

कहने लगा कि अरे प्रथम बालक मेरा प्रधान
करम जो है सो संपूर्ण जगत विषे प्रसिद्ध है और
इस बारता को भी सब लोक भली प्रकार जान
ते हैं कि मैं तो ना मनुष्य ना पशू ना दैत देवताके
हाथसे ना पृथ्वी ना आकाश ना अंतर ना बाहि
र ना रात्री ना दिन विषे मरना है मूढ तैने इह
कैसे मेरे मरने को महा अनर्थ और विरुद्ध बच
न उचारण करदिया है तब पश्चात स्नान करके

यो
भ
८८

वडे क्रोधसे कहने लगा कि हे भाई लोगो तुम देखो जो इस मेरे पिताके हृदयमें इह कौन जड ता और दुरमती आय व्यापीहै कैसोंकि जिस विधा ता अर्थात् ब्रह्माने इसको वरदान दियाहै अब मंद तिसकेही वचनोंका निरादर करताहै और हं कारके वश भया हूआ नही मानताहै तांते मैभी अब यही कहताहूं कि संपूर्ण देवताउं विषे स्र ष्ट विधाता जोहै तिसके वचन इस अभिमानीको

शीघ्र फलदायक होवें और भगवान इसको जैसे ही हननकरैं अर्थात् जैसेही मारैं कि ना रात्रीहो नादिनहो ना अंदर ना बाहिर इत्यादि विधाताके वचन जोहैं सो सब सत्यही होवैं जो इह तिसके वचनों निरादर करताहै और तिनके तात्पर्यको नहीं समझताहै। ३। चौपाई। सुनहु तात यक्ता द उचारा। कहहु जवन तव स्वामि हमारा। सन मुख मोर नहिन कस होई। देव प्रसिद्ध होत प्रभु

का

सोई। घट घट अंतर जामि यति माया। दलन उहृग
ए जनन महाया। अव सासात तोर संहारा। क
रिहं देव हरण महिभारा। वोल्ये असुर कोप व
महोई। अस सामर्थ तोर प्रभुजोई। सर्वव्यापि तुम
जवन वखाना। कवन भीनवस होत न भाना।
केवल माति ज्ञास जीयमोरा। होत न प्रकट मूढ
प्रभु तोरा। अस सामर्थ जोपि कछु तेहू। तो स्यंव
सनमुख तव जेहू। इहिमै सरव व्यापि कसनांही

अंतरयामि तव त्रिभुवन साईं। तव प्रल्हाद ह

विर मडवानी। सनत्कु तात अस वदन बखानी

जे मम भक्ति चरण हरिनीके। पावन प्रेम प्री

ति हद्जीके। जोपि वेदवर वाक्य उचारा। श्रेहिं

प्रमाण सत्य संसारा। सोरठा। तोमोरे भगवान

अंतर वर्ति स्यंवजे। तिनकर दरसन भान। श्री

ब्रह्मेव तुमरे पितृ। कीटमात्र इह जोय। चल

त तात कल पंथ पर। इहिमै प्रभु मम सोय।

३४ भ ५.

होन प्रतीत न तुमहिं कस ३१। टीका। फिर प्र
ल्हाद कहताहै कि हेपिता श्हजो तुम कहते
होकि तुमारे स्वामी मेरे मनमुख क्यौं नही हो
ताहै सो श्रवन सावधानहो श्रोर देख कि घट घ
ट के अंतरयामी मायाके पती श्रोर दुष्ट दैतोंका
नाश करणेवाले भक्त जनोंके रखवारे श्रोर पृ
थिवीका भार हर करणेवाले श्रब साक्षात प्रक
ट होय करके तेरा संघार करेंगे अर्थात तेरेको

५.

मारदेवैंगे ऐसे प्रह्लादका उग्रवचन सुन करके
दैत्यपती कोपसे तमक कर कहने लगा कि जो
ऐसी सामर्थ्य वाला सरव व्यापी तेरा प्रभूहै तो
वे किसका भय राखताहै क्यों प्रकट नहीं होता
अरे वालक तूंनहीं जानताहैं वेतो केवल मेरेही
भयसे छिपाहूआ प्रकट नहीं होय सकताहै जो
कदाचित वे ऊंछ ऐसीही सामर्थ्य वाला और स
वे व्यापीहै तो इहदेव तेरे मनभाव जो स्थंव सि

श्री भ ९१

९१

न भया हूआहै इसमैं तेरा सर्वव्यापी और अंतरजा
मी प्रभुकेयों नहीं देख पडताहै इसप्रकार तिसका
कथन सुनकर प्रह्लाद कोमल बानीसे कहने
लगा कि हे जनक अर्थात् हे पिता जो कदाचित
मेरी पवित्र भक्ती भगवानके चरण कमलोंमें भ
ली प्रकार दृढहै और मेरी प्रीती प्रतीतीभी भग
वानके चरणोंमैं सत्य करकेहै और जो संसारमैं
वेदके वाक्य प्रमाण और सत्यहैं तो मेरे अंतर

९१

मामी और दीन बंधु भगवान जोहैं सो प्रत्यक्ष इ
सी स्थंबके द्वारा अबी तेरेको दरसन देतेहैं ऐसे
कथन करके फेर कहने लगा कि हे पिता तूं
देख इह स्थंबपर कीट मात्र जीव जो चलरहाहै
इसविषे मेरे सर्वव्यापी परमातमा भगवान तेरे
को क्यौंनहीं देख पडतेहैं ३२ चौपाई। खन खनव
वन भूप उछारा। उभय कीट कल एवंभ मभारा
के नक कहहु तोर प्रभु रहयो। अहो भाग वड

१४
म
१८

देवन भयधी । श्रम जिन केर् एजनय स्वामी ।
कहि प्रक्कार स्वनहु विधिवामी । नजहु डरंत कु
टिलपन जीके । लेहु स्रशरण चरण श्रीपीके ।
दीन दयाल केशव भगवाना । सेवत होहिं तुम
हिं कल्पाना । परिहरि वक्र उम्र हंकारा । भज
हु कृपाल विश्व आधारा । ननर त्नृप यरि मरतु
कराला । तोरे हनन हेतु रहिकाला । होन प्र
नत वहत ममस्वामी । दीनदयाल भक्त अनुगा

१८

मी । जब प्रह्लाद रुचिर प्रसवानी । प्रकट पितु
हिं निजवदन बखानी । नव खदरा अंगार[illegible]ण से
से । क्रूर कलेवर पंनग जैसे । कोप प्रचंड प्रबल
तरंगोंके । इंदोलन अवैव सब जोंके । नपता इस
गोलप कर न्याईं । अरुण नैन हुत त्रिभुवन साईं
सम तीन नख कठिन कराला । थाराजनहूं कर
ण करवाला । अस विचित्र सुर शत्रु अनूपा । बै
ठी कंठी रच रूपा । सोरठा । रव प्रति रव करि

१४
भ
८३

सोय। मणिमय खंवन स्थंवतें। भेदि प्रकट प्रभुहो
य अदभुत मूरति नरहरी। ३२। टीका तब ऐसे
पुत्रके वचन सुनकर दैतपती मुसकाय करके
कहने लगा कि हे बालक इस खंभ और कीटके
विषे कहा इहु तेरा कितनाक प्रभू है अहो देवता
उंके धन्य भाग हैं कि जिनका इहु कीट मात्र इष्ट
देव है कि जिसको रात्रीदिन पूजते और वंदना
करते रहते हैं ऐसा अपमान और अभिमानका

८३

वचन सुनकर प्रह्लाद कोपसे कहने लगा कि
हे अभागी पिता अबमैंने निश्चय जानलिया कि
तेरेपर विधाता कोपसे विरुद्ध होय गयाहै परंतु
हेतात तूं अबभी हृदयसे जड़ता और कपटको
त्यागदे और लक्ष्मीके पती शरणागत पालक
भगवान जोहैं तिनके चरणोंकी शरणको प्रा
प्तहो इसमें दीन हितकारी और विघ्न निवारी
दीनानाथ जोहैं सो तेरेपर अवश्य क्षमा करदेवेंगे

३४
भ
९४

औरतूं सुंदर कल्याणको प्राप्त होजावैगा इदव
का अभिमान और कुटिल वचन सब छोडदे केव
ल दयाकी निधी और जगतके आधार मेरे स्वामी
जोहैं तिनका ही भजन और सुमरण कर नहीं
तो मत्स्यका भयंकर रूप धारकर तेरे वध करने
अर्थात मारनेके वास्ते वे अनंत प्रभाव वाले
और भक्त रक्षक भगवान अबी प्रकट हूये वह
तेहैं जब इसप्रकार प्रल्हाद भक्तने पिताको प्र

९४

कट उचारण किया नव खदरा जो हैरहै तिस
के अंगारयों वन और क्रूर कलेवर वाले सरप
के समान वडे प्रवल और प्रचंड कोपसे इंदोल
न करा डेलतेहैं अंग जिनके और लोहेके तपे
हूये गोल्योंके समान किये हूयेहैं लालनेत्र हा
थोंके महा विक्राल दसो नख जोहैं सोहैं मानो
भयानक तलवारोंकी तीव्र धारा ऐसे सुर दैत
के शत्रु वैकुंठी कंठीरव अर्थात वैकुंठ निवासी

३४
भ
२५

95

मृगपती रूप भगवान जोहैं सो शाहपर शाह क
रते हूये मणियों करके खचित भयाहूआ स्थंव
जोथा तिसको भेदन करके अर्थात् चीर करके
महा भयंकर और अदभुत नरसिंह मूरतीमें प्र
कट होजाते भये। ३३। चौपाई। व्याकुल लोक
गगन गरजाना। भै दिग कंपि भीत मन माना।
डोलन धरनि धीर उरन्यागे। सैल विदलन पर
स परलागे॥ वेला नजि सजलधि निज जोई। प्र

२५

रु हग हृंद भ्रमन गति होई। मानस विकल भू
न सब केरा। दशाकाल कछु जायन हेरा। ज
नहुं सकुटन लाग ब्रह्मंडा। करि कराल अस
शबद प्रचंडा। दीन दयाल भक्त अवलेवा। अवि न
रभूत प्रभु भये स्यंवा। कोलाहल अत सय नव
भारी। भयो परस्पर नर अरु नारी। कहत काल
कलपांत हमारे। प्रकट भयो अब विनुहिं वि
चारे। सुत भ्रत नातमात प्रिय नेहू। कहां मित्र

परिजन जीय गेहू। रह्यो आगाकर कवन बसाई।
कहिकर शरण लेव ग्रव जाई। जीवन मरण मू
रुककुनाही। निज निज विश्वत सकल मनमा
ही। जिमि हुडत निधि सलिल जहाजू। होहिं वि
कल सब देखि समाजू। सोरठा। तथा लोक स
मुदाय। त्रासत व्याकुल धीर गत। जहं तहं च
ले पराय। परि हरि पुत्र कालत्र निज। ३३।
टीका तब भगवानके ऐसे नरसिंह रूपको दे

९६

खकर लोक सब व्याकुल होय गये और आका
श गरजने लगा गय दिग्गज दिशोंके रक्षक
हस्तीहैं सोभी भयसे थरथर कांप उठे और
पृथवीभी धीरजको त्यागकर डगमग डोल
ने लगपडी पर्वत जोहैं सो परस्पर भिडने लग
जाने भये और समुद्रभी अपनी मर्यादा को त्या
गचला दिशोंमें भ्रमन होने लगा सब भूतों
का मन जोहै सो व्याकुल होय गया तिससमय

की दशा कुछ देखी नहीं जाती मानो ब्रह्मांड फू
टने लगाहै इस प्रकार बड़ा प्रचंड ग्रौर महा
कराल शब्द करके दीनोके पाल ग्रौर भक्तो
के ग्राधार नरसिंह भगवान जोहैं सो ततका
ल स्थंबसे साक्षात प्रकट होजाते भये तब ति
ससमय ग्रत्यंत कोलाहल ग्रर्थात महा घोर
शोर जोहै सो मच गया नारी ग्रौर नर सब व्या
कुल भये हुये ग्रैसेही कहतेहैं कि ग्रहो ग्रज

हमको विना हूऐही अकस्मात प्रलय काल
आय प्राप्त भयाहै अव कहां पुत्र पिता माता
और कहां सेवक सखे भ्राता कहां मित्र बांधव
सुखदाता प्राणोंका कौण भरोसा रहाहै अव
किसकी शरणको प्राप्त होवें जीवन और म
रण किसीकोभी कछु सूझ नहीं पडताहै अ
पने अपने सव कोई व्याकुल होय रहेहैं जैसे
समुद्र विषे जहाज को डूवता देखकर ममि म

व समाज दुःखी भयाहूआ विलाप करने लग
जाताहै तैसेही इह लोग भयके वश सव व्याकु
ल और धीर भये हूये धनधाम और स्त्री पुत्र स
व त्यागकर त्राहित्राहि करते भागचले ३३

चौपाई। मातु पुत्र प्रियकर जीयपीके। देखन
हगन लालसा जीके। भीत विवस कछु पर
तन सूझा। निजपर पतनि पुत्र पति हूझा।
काहु उसासमलेन मन मारे। चलेजात निज प्रा

ण संभारे। कादर काहु प्राण परि हरयो। को
ऊ विपत मूरछित धर परयो। कोऊ सूरवीर ए
ति चीने। आरत भये दीन गति कीने। त्राहि
त्राहि रव कोऊ उचारी। आय शरण प्रह्लाद
सिधारी। हमभ्रत तोर भवन कर सारे। अब
राखहु प्रभु प्राण हमारे। हमकर विषम का
ल इहि जोई। तव केवल गति आनन कोई।
परमदेव हरम भगवाना। आज त्रास मानस

३४
भ
९९

निज माना। कंपत एष धरनि नजिदीना। सक
ललोक मन विकल मलीना। सोरठा। नाक
प्रबल मृगराज। शठा वात कर सोपिभा। वि
कल भूत सब आज। गिरन वहत जन्तु धरनि
तल ३४ टीका नव माता पुत्रको और पतनी
पतीको देखनेकी अभिलाषा करतीहैं परंतु
भयके वश ऊकुछ सूफनहीं पडताहै कि अपना
बिगाना और माता पिता स्त्री पुत्र भ्राता कोनहै

ग्रौर कहांहैं केते व्याकुल ग्रौर मनमारे हूये बडे
लंबे उसास भरतेहैं केते प्राणेंका लिये हूये
भागे चलेजातेहैं केते कायर होयकर गिरते
ग्रौर मरते जातेहैं केते मूर्छा गत होयकर पृ
थिवीपर पडरहेहैं केते सूर वीरेंको देख कर
दीन भये हूये तिनके ग्राश्रय गयेहैं ग्रौर केते ग्रा
हि ग्राहि उचारते हूये प्रह्लादकी शरणको प्रा
प्त ग्रापत भयेहैं ग्रौर हाथ जोडकर कहतेहैं कि

होय

२४ भ ९०

100

हे नाथ हम तुमारे घरके सेवक और चाकर हैं
अब इस समय कृपाकरके हमारे प्राणोंको र
ख लीजिये हे प्रभू इस कठिन कालमे हमको
तुमारे विना और कोई आधार नहींहै आज पर
म देव कूरम भगवान जोहैं तिनोंनेभी भयमा
नकर अपनी पृष्ट अर्थात् पीठसे पृथ्वीको त्याग
दियाहै और संपूर्ण लोकोंका मन व्याकुल औ
र महा मलीन होय गयाहै और स्वर्ग लोकजो

वी

१००

है सोभी तिस महां प्रवल मृग राजकी गरदन
के उठेहूये रोमांचोंके भयसे व्याकुल होय कर
के आज पृथिवीपर गिरने चहताहै ३४। चौपा
ई। अव अहि समय महा मतिवारे। हम प्रका
द प्राण रखवारे। अनल प्रचंड कोप पंचानन।
चाहत कीन दगध जनु कानन। होहु सहाय
जानि जन अपने। हम कहं आज नतर जग
सपने। व्याकुल देखि दनुज गण ताहां। वोले

३४
भ
१०१

वचन वदन खेलनाहीं। ग्रहो दैतउर धीरज धरहो। कायर इव विलाप जनि करहो। का ग्रागल तव नाहिंन देखे। विघन व्याघ्र इहि सरस वसेखे। इहिमे ग्रधिक कवन गुण तांके। केपत तमहुं सकल वश जांके। मृग ग्रारण्य कवन कितलेखे। तव सामर्थ स्मरण देखे। ग्रायुध निगुण प्रवल भटि मारे। सिंह भीन वशभये निकारे॥ धरहु धीर पौरुष उरभाई। १०१

१०१

मै अनेक कानन भ्रम जाई। शारदूल मत्तानन
चीने। सर प्रहारि प्राणन हनकीने। नव दनुजा
त विकल मन मारे। हनहू भूप अस वचन उचा
रे। सोरठा। जास वदन अब लोकि। प्राण ध्यान
वाहन करण। अरु कंपत त्रैलोकि कोसनमु
ख तो कर स्थिर। ३५। टीका। फिर सब लोग क
हते हैं कि हे महामती वाले प्रह्लाद अब इस स
मय हमारे प्राणोंके तुमही रखवारे हो इहघोर

२४
भ
१०२

तेजस्वी पंचानन जो सिंह है इसके कोपकी महा
प्रचंड अगनी जोहै सो हमको मानो वणके स
मान अबी दग्ध करणे वहतीहै तुम आज अ
पने जानकर हमको सहायक होवो नहीं तो
इह जगत हमको आज सपने वत होजाताहै
इस प्रकार सब दैत्य लोगोंको व्याकुल देखक
रके हिरण्य कश्यपू जोहै सो वडे मदके वचनों
से कहने लगा कि अहो वडे आचर्जकी वातहै १०२

तुमने धीरज क्यों त्यागदिया और क्यों सावधा
न नहीं होजाते इह कायरोंके समान कैसा वि
लाप करतेहो और शत्रुसे कल्याण चहतेहो धि
गहै तुमको अरे मूढ क्या तुमने इसके समान
आगे वणमे व्याघ्र अर्थात बाघनहीं देखेहैं इसमें
तिनतें अधिक कौन गुणहै कि जिसके भयसे
तुम थरथर कांपरहेहो इह वणके मृगक्याहैं
और किसगिनतीमेहैं तुम सरव प्रकारके साम
कर

३४
भ
९३

र्य और शस्त्रोंके धारणेवाले महा शूर वीरहो
इसवणके रहने वाले मृगका भय मान कर न
कारे होय गयेहो हो वीर हृदयमे धीरजको धा
रन करो और अपने बल पराक्रमको देखो मैने
नो वणमे जाय कर ऐसे अनेकही मृगोंका शि
कार कियाहूआहै और बाणोसे छिंद भिंद कर
के जहां तहांउडाय दियेहैं ऐसे देत राजका कथ
न सुनकर सब असुर जोहैं सो अतमे व्याकुल

हुये

९३

ग्रोर मलीन चित्तभये हूये कहने लगे कि हे ए
जन जिसका महाभयंकर मुख देखकरके प्रा
ण तुरतही चलनेको चहतेहैं ग्रोर त्रैलोकी भी थ
र थर कांपतीहै तिसके सनमुख स्थिरहोने को
किसकी सामर्थहै ।३५। चौपाई। झटि हठ सूर
वीरता सारी । दशा भीम हरि लीन सिहारी । बो
ले बहुरि देत ग्रधिराई । सूर धरम रह नाहिन
भाई । सनमुख होत शत्रु कद रावहिं । प्राण प्रा

३४
म
९८

ण करि सुजस न पावहिं । महावीर वीरन वर जो
ई । विक्रम विजय कीन त्वम सोई । समर प्रचारि
प्रवल अरि मारे । अव कस प्राण प्राण उवारे ।
हव उर धरह्न धीर दनुजाता । मोर प्रताप सकल
जग ख्याता । जे ब्रह्मादि देव वरगाढे । वेत्र पानि
द्वारे मम ठाढे । जीव चराचर संस्ति जाहू । मम
सासन वस वहिर नकाहू । सोरठा । मोर वाहू व
ल जोय । तीनलोक जानत सकल । त्वव आऊ

१०८

ल कस होय। कापावर स्तगविपन इह। ३५।
फिर कहतेहैं कि हे नाथ सूरवीरोंकी संपूर्ण
वीरता और हठ पराक्रम जोहै सो इस सिंहको
भयानक दृशाने सब हर लियाहै तव दैत रा
ज कहने लगा कि अहो भाई इह तमजो भय
के वश होकर वडी कायरता और दीनताके
वचन कहतेहो तो इह उत्तम सूरवीरों का धरम
नहींहै जो पुरुष शत्रुको सनमुख देखकर

रध
भ
१०५

105

कायर होजातेहैं और प्राणप्राण करके पुका
रतेहैं वे संसारमें सुजस और वडाई नहीं पाव
तेहैं मेरेको वडा विसमय अर्थात् आचर्ज लग
ताहै कि वीरोंमें प्रधान महा सूरवीर जो थे सो
तो तुमने अपने प्रचंड पराक्रमसे जीत लिये
और वडे वडे प्रवल शत्रुओंको रण भूमिमे व
लकार वलकार कर मार दियाहै अव कैसे
प्राण प्राण करके पुकारते हो हठ और धीर

जको हृदयमै कैयों नहीं धारण करतेहो दे
खो मेरे प्रतापको कि जो संपूर्ण जगतमे प्रसि
द्धहै ग्रौर ब्रह्मादि जो वड़े प्रधान देवताहैं सो
हाथोंमें ग्रासे धारण किये हूये रात्री दिन मेरे
द्वारे पर स्थित रहतेहैं ग्रौर भी जगतके सब
चराचर जीव मेरेही ग्राज्ञाके ग्राधीन चलतेहैं
ग्रह मेरी भुजोंका बल ग्रौर प्राक्रम जोहै सोतो
तीन लोकमे सब जानतेहैं तुम व्याकुल कैसे

होयगये इह वणका मग कौन पांवर और का

तच्छ वस्तू है। ३५। चौपाई। जब प्रस मंद वचन

उच्चारे। तव हर धरनि धेनु रखवारे। अरुन प्र

कोप हगन स्रीजोंके। अति परि भ्रमत जुगल

भ्रुवांके। वकतर विकट भेष कृत भपावन।

गरजे घोर जलध जनु सावन। कोधन पडे नदि

त इवधाई। लीन अग्र हर तल जानु दवाई। जि

मि भुजंग सिर गरुड दवावा। अरु सचान जि

३४ भ १०९

१०९

मि कपट अलावा। नाग मनाल नाल जिमि
भंजा। तिमि नर केहरि असुर मदगंजा। चप
ल विपुल नादिक चतुराई। सोना होन एक
नहिपाई। देरे वनम धाव अस वानी। मंद
दीन गति वदन वखानी। सोरठा। जोकर द
ष्टी जोरि। अति कराल कर वाल सम। अस
पंचानन कोरि। करहु निवारण शीघ्र तम।
टीका। जव इस प्रकार तिस अधम दैत राज

ने महा अभिमानके वचन उचारे तब देवता ए
थ्वी और गौओंकी रक्षा करनेवाले भगवान
जोहैं सो कैसी अपूर्व शोभाको उदय करते भ
ये कि महा प्रकोपसे लाल होय गया जिनके
नेत्रोंका प्रभाव और दोनो वंक भ्रुकटी अर्था
त् विंगी भवां जोहैं सो अतसे करके फरकने
लग जाती भई वकत्र जो मुखहै सो वडा विक
ट और महा भयंकर तैसेही क्रूराकार शरीर

और पावस ऋतुके मेघवत घोर गरज करते

हूये बडे प्रचंड कोपसे विजलीके समान चमक

और चमकसे उछलकर तिस प्रथम ग्रहरको

तुरतही जान्हूऔंके तले ऐसे दवाय लेते भये

कि मानो जैसे सरपके बालकको गरुड दवा

य लेताहै और जैसे वटेरेको सचान जो शिकरा

है सो झपट लेताहै फिरकैसे कि जैसे कमलको

नालको हसती मरोड लेताहै तैसेही महा प्राक

श्री
भ
९८

108

मी नरसिंह भगवानने तिस असुरके मदको
ततकालही दूर और दूर करदिया तहां तिस
की प्रभुता बडाई और चपलता चतुराई जोथी
सोतो एकभी होनेनही पाई तबबडी दीनता
से निबल और सिथल होयकर पुकारने लगा
कि हेपव हेवनस अब शीघ्र धाय कर मेरी स
हायताकर क्योंकि महा विकराल तलवार
की धाराके समान जिसके नेत्रोंकी कांतिभयी

९८

नक दृष्टीहै ऐसा सिंहोविषें प्रधान सिंह जोहै तिसके हाथसे मेरे छुडानेको अब तेंही साम र्थीहैं । ३८ । चौपाई । तात नात हा मात प्रकार न । मोरे जानि वेग सुत आरत । विकट कर्ते न ग्रस्त इहि काला । अति पीडत विकल वै हा ला । होहु सहाय प्राण कर मोरे । इह उपकार आज सुत तोरे । मोहि कहं जीव दान अब कर हो । कठिन कलेस त्रास जिय हरहो । सुतस

वपु

सुं
म
१०५

न करत वचन भ्रम दीने। तब भगवान मरम कछु चीने। शारदूल नर रूप प्रगारी। प्रखर नखर कर हृद प्रहारी। तुरत विदारि उदर खल दीना। विलम नमेख मात्र नहिं कीना। स नमुख देखि मननि निज नाहां। बोल्यो वदन वचन खल नाहो। कबहुं कि हृदय तोर प्रिय भामा। मम अनुराग जियन कछु कामा। तो करि प्रगति विविध विधिनी के। लेहु कुठाय

१०५

आज प्रिय पीके। काहू वाहू वचन मुख वर
ना। वेग निवार राज मग करना। ते पति म्हन
न दीन अस वानी। बोली वदन जोरि जुग पा
नी। हे कृपाल माधव सुख केहू। दीननाथ
प्रभु दीनन बंधू। हे नर केहरि भक्त भय गंजन
आरत हरन धरणि सुर रंजन। कहिस ऊमती
वचन मुख जोई। दीन थाल कर सनमुख होई
इहि कर नहिंन नाथ अपराधू। अजसे मोह हू

नहिंन

२४
भ
११

ति मूढ प्रमादू। जानत मैंह प्रभुमाया। तुमहु
कृपाल दयाल करिदाया। तरण मरदन मन हो
हिं न स्वामी। यश तुमार कछु जन अनुगामी
सोरठा। तब बोले भगवान। सुन महिषी
मम भक्त जे। अन्तमे मित्र प्रिय प्राण। तोक
र प्रथम उरात मन। कीन जवन त्रिसकार।
प्रतिदिन करि अति वेदना। सोकस सकहु
सहार। मै व्यापकता कर हृदय। ३७। टीका

११

110

इस प्रकार पुत्र पुत्र हा पुत्र पुकारता हूआ बार
बार यही कहताहै कि हे तात अबमै इस महा
भयंकर कालका ग्रसाहूआ परम पीडत ओर
दुखी होय रहाहूं तूं आज पिताका हित वि
चार कर इस कठिन कालमै शीघ्र मेरे प्राणो
की रक्षाकर ओर जीवदान देकर मेरे दुख सं
कट ओर भयको निवारण कर यह तेरा अ
त्यंत उपकार होवेगा ऐसे पुत्रके आगे दीन

२४
भ
॥॥

ओर दुःखके भरे हूये वचन जो कह रहाथा त
व भगवानने हृदयमें सोचाकि ऐसा नाहो मे
रे भक्तके चित्तमे दया उतपन्न होजावे ओर इस
असुरके क्षमाकी प्रार्थना करदेवे ऐसे विचा
र कर दुष्ट दलन नरसिंह रूप भगवान जोहैं
सो बडे क्रूर ओर खरभे नखोंका घात देकर
तिस असुर असुरके उदरको तरनही विदार
न करदेते भये अर्थात् फाड देते भये तब सो ॥॥

मंदमती दैतराज तहां अपनी स्त्रीको मनमु
ख स्थितभई देख कर कहने लगा कि हे प्या
री जो कदाचित तेरे हृदयमे मेरे जीवनेकी
उत्कृ प्रीती और अभिलाषा है तो मुखसे नाना
विनती वडाई और प्रार्थना चतुराई कर कर
इस महा म्रग राजके हाथसे मेरेको छुडावले
इस प्रकार पतीके मुखसे वानी सुनकर सो
भामनी दीन गतीसे हाथ जोडकर प्रार्थना

३४
भ
११२

करने लगी कि हे कृपाके धाम हे लक्ष्मी ना
थ हे आनंद मूरती हे दीन हितकारी हे दीनबं
धु हे भक्त भय हारी हे नरसिंहरूप धारी हे उं
दारिद्रोंके हर करने वाले हे पृथवी और दे
वताओंके हृदयको आनंद देने वाले हे दया
निधी इस उरमतीने जो आपके सनमुख अनु चितवचनउचारनकिये
किजोप्रभूकेसनमुखकह ने योग्य नहीथे तो हे दीनानाथ इसमे इसका
कुछ अपराध नहींहै क्योंकि इह प्रकार बुद्धी

११२

र लियेहैं सो पिता तेभी धन्यहैं औोर इह भग
वानभी धन्यहै कि जिनोंने तेरेपर ऐसी अपूर्व
अनुग्रह करीहै अब तमको ओर भक्त हित
कारी भगवानको मेरी वार वार दंड प्रणाम
होवे सोकैसेभी दीनबंधू भगवानहै कि जिनों
ने अत्यंत उदारतासे तेरे जैसे पापकी खानीको
अपना परम धाम जोहै सोदेदियाहै । ४ । चो
पाई । अस जब कहिस वचन प्रह्लादा । असुर

रा॰
मे॰
१२३

123

तुरंत भुत पगपसाया। नव प्रभु हर प्रमोद जल
मारी। दहन दनुज जल तिलक दिवारी। कि
ये त्रप निज भीम वसेखी। हरहिं हर देव गए
देखी। वैजंठी कंठीरय कैसे। भयावन क्रूर
कलेवर जैसे। अनसे प्रकोप पुंज निमिज्वाला
मनमुख होहिं कवन नहिकाला। फेरि विमा
ए देव समुदाये। अवनी हार दनुज पति आ
ये स्थितह्वै लाग नम्र मुख करना। असतुति

दीन दयाल भव हरना। जैजै चारु वरन जल
जारन। सरद्विज धेनु धरनि भय हारण। द
यासिंधु सबसार सुहावा। रम्मय हरम जा
स श्रुति गावा। फणा रतन कर द्योतन दी
पे। तलप ललित वर मंडल प्रदीपे। तन उते
ग पीन स्तन श्रीके। ललित अरविंद पद नी
के। छवि मंदार चारु स्रज धारी। उपमा को
टि मदन छविहारी। भ्रमर प्रेम प्रक्षालन च

रना। नीरज नील नीरधर बरना। श्रीवर उल्ल
ह्रास घनस्वामी। नारायण नरसिंह नमामी।
गीरवाण गंधर्वनिकाया। मुनि ऋषि विप्र संत
महि राया। भूत अपसरा यक्ष सवाहीं। जीव
चराचर जे जगमाहीं। मनुज पसाच उरग दनु
जाता। देव राज पशुपति वरधाता। इनकर
सुजस जास संसारा। गाय मान सुख विवि
ध प्रकारा। काम धेनु द्रुमदेव समाना। देव

अनंत शक्ति परधाना। अखिल लोक विश्राम
अगारी। सार भूत वैकुंठ मुरारी। सदा हरण
हरि मेदनि भारा। धरहिं ललित लीला अव
तारा। अब कृपाल केवल हम लागी। दाह
क दनुज वंस वण आगी। इह नर धार हूल अ
वनारा। आरत जानि हमहिं प्रभु धारा। करु
णा सिंधु भक्त भयहारे। भये दीन देवन रख
वारे। अतसे प्रचंड प्रबल नरगोको। विषय

२४
भ
१२५

प्रताप अंत गत जाको। बुद्धि अगोचर परहिं न
पारा। सकल परस्पर करहिं विचारा। एक क
हहिं ग्रीषम ऋतु तरनी। चपला चैय वदन
कौ वरनी। त्रितिये नैन वाम दव काहू। काहू
कहहिं बडवानल दाहू। विदत नृपथरि कोप
कराला। वरनहिं काहु सकल छित ज्वाला।
अस हर सकल सोच उर करहीं। हरि प्रताप
कछु जानिन परहीं। को सामर्थ नाहिं तिनके

३४
भ
१२८

र दैत कुलके राजाको दग्ध करनेवाले अग
नीके समान नरसिंह भगवान जोथे सो बडा
महा भयानक रूप कर लेते भये तब देवता
गण स्थित भये हूये दूरसेही देखतेहैं निकट
नहीं आय सकते कैसेभी रूपसे नरसिंह देव
शोभाय मानहैं कि अनसे क्रूर और भयंकर
है कलेवर जिनका और महा प्रकोपसे अग
नीके पंजवन लाल भये हूये तिस समय ति

120

नके सनमुख होनेकी किसको सामर्थ्यथी न
व देवता गण अपने अपने विमानोको फेर क
र पृथिवी तलपर दैत्यराजके द्वारमे स्थित हो
यकर बडी नम्र वानीसे नानाप्रकार अस्तु
ती जोहै सो करण लगे कहतेहैं कि जैहो जैहो
तुमारी हे कमलोंवत चरणोंकी शोभावाले
जैहो तुमारी हे गौ ब्रह्मण पृथवी ओर देवता
ओंके भय हर करणे वाले हेभगवान तुम

कैसेहो कि सुधा सिंधु जो क्षीर समुद्रहै तिस वि
षे वडा सुंदर और रमणीक नाग फणियों औ
र रतन मणियोंके दीपकोंसे प्रकाशमानहै
जिनका मनोहर धाम अर्थात् वर शेष नाग
की वडी आनंद दायक कोमल सेजा जोहै ति
सपरहे जिनका शैन और लक्ष्मीके सुंदर क
वौंकरके मरदितहैं जिनके कोमल चरण हृ
दयमे धारी हूईहै जिनोने मंदार जो कलप वृ

हैं जिसके पुष्पोंकी सुंदर माला ग्रौर कोटि
काम देवकी छवीको लज्जा देने वालीहै जिन
की विचित्र मूरती नैमेंही गंगाके पवित्र जल
से प्रक्षालन भये हूये हैं जिनके चरण नीले
बादर ग्रौर नीलेही कमल वतहै जिनके शरी
रका सुंदर वरण ग्रर्थात् रंग श्री जो लक्ष्मीहै
जिसके हृदयमै पवि हर्ण रहता जिनके दरस
नका नित्य उत्साह ग्रौर हुलास गीरवाण जो

श्र
भ
१२८

देवता और गंधर्व मुनी ऋषी संत ब्राह्मण और
पृथवी पाल जो राजे भूत अपसरा यक्ष पिशा
व दैत नाग और मनुष्य देवराज जो इंद्र पशु
पति जो शिव धाता जो ब्रह्मा इनकरके जग
तमे जिनकी नाना कीर्ति और सुजस गाय
मान किया हूआहै कामधेनु कलपवृक्ष के
समान अनंत शक्ती और अनंतही प्रभावहै
जिनका संपूर्ण लोकोके आधार और वैकुंठ

१२८

की संहरणी शोभा और शृंगार पृथवीका भा
र उतारनेके वासते होताहै जिनका जग ज
ग लीला अवतार ऐसे कृपाके समुद्र भगवा
न जोहैं सो अब तिनोने हमकोही दुःखी जा
नकर केवल हमारे ही नमित्त दैतवंसके व
णेका दगध करणे वाला अगनीके समान
रूप महां भयंकर नरसिंह अवतार जेहै सो
धारन कियाहै और दयाकी निधी भक्त रद

३९
भ
१२९

क भगवान हमारेही दीन देवताओंके रखवा
रे भयेहैं देखिये कि कैसा महा प्रबल और प्र
चंड पराक्रम प्रताप और प्रभाव दिखायाहै कि
जहां बुद्धी विचारका कुछभी संचार नहीहै
अर्थात अनंत महिमाहै कुछपार नही पाया
जाता इसप्रकार सब देवता परस्पर सोच और
अनमान करतेहैं एक कहतेहैं कि इह कोई
ग्रीषम ऋतुका सूरज उदय भयाहै एक क

१२९

हतेहैं कि इह विजलीका समूह प्रतीत होता
है और कोई कहतेहैं कि इह महा देवके त्रनी
ये नेत्रकी ज्वालाहै कोई कहतेहैं कि इह समु
द्रकी वडवानल अगनीहै कोई कथन करते
हैं कि इह प्रलयकोपका रूप धारकर संपूर्ण
पृथिवीकी अगनी जोहै सो आय जगीहै ऐसे
संपूर्ण देवता अपने अपने विचारके अनुसार
कहतेहैं परंतु भगवानकी महिमा और प्रा

१४
भ
ए०

क्रम प्रताप जब्र जान नहीं पडताहै तिनमै
कोईभी सामर्थ नहींहै जो श्रेसे नरसिंह भग
वानके रूपको सनमुख स्थित होयकर देख
सकै महा प्रज्वलत अगनी समान भगवान
का कोप जोहै तिसके शांती होनेकी गती
को देखतेहैं श्रोर भगवानकी शरणको सन
मुख जानेकी परस्पर सम्मती विचार रहेहैं
कि पहिले कौन श्रोर पीछे कौनजावे। ४२।

ए०

1370

चौपाई प्रेरित नहिं प्रथम गण नायक। होहु
तुमहूं इहि समय सहायक। मनमुख जाय
दैव निधि दाया। प्रसन्नति करहु वदन गण
राया। करि मुख मंदमंद गति ठानी। चले स
रन प्रनु सासन मानी। कोपाहन्न वदन हरिदे
खी। काल कराल अनल जनुलेखी। फिरे न
रन पाछिल पग धारी। हरहरहर रव वदन
उचारी। देव राज सन तब तिनकाहा। तुम स

२४
भ
॥३॥

र सकल शिरोमणि राहा। अस कहि इंद्र चर
ण प्रति बानी। भाषी वदन निपुण जिय जानी
हरिषं गवन वरण गति तोरी। नामस गुण प्र
भाव जंाकोरी। वरुण कहत मारुत मन भाषा
तव निज वेग तीव्रतर राखा। अह भय त्रास सो
पि मनमाहीं। हमरे कहत देव कछुनाहीं। व
रणन वरुण कहत असव्यारी। कहहु प्रभा
कर विनय हमारी। हम सामर्थ्य तेज वन ह

॥३॥

हृग। करहु अभिष्ट हरन कर एरा। सोरठा।
तव अम भानु बखान। प्रथम नमोरे तुम क
हा। अब जीवन मम जान आसा साधे काल
कहां। ४२। टीका तव तिनोने प्रथम गणपती
जीको प्रेरा और कहा है गण नायक इस समय
हमारे तुमही सहायक बनो भगवानके सन
मुख जावो और मुखसे नाना प्रकार असतुती
कर कर तिनके कोपकी शांती करावो ऐसे

वा

देवताओंका वचन सुनकर करी मुख प्रधान ह
सतीके मुखसे गणेशजी जो हैं सो मंद मंद ग
तीसे भगवानके सनमुख को चल पडते भये
तब आगे आगे जायकर कोपसे लाल भयाहूआ
मानो त्रिकाल कालकी अगनीके समान नर
सिंह भगवान का मुख देखकर हरहरहर श
ब्द उचारते हूये ततकालही पीछेको फिर
आये और देव राजजो इंद्रहै तिसके पास आय

कर कहने लगे कि हे सुरपती तुम संपूर्ण दे
वताओं विषे सिरोमणी और प्रधान हो तहां भ
गवानके सनमुख जानेकी तुमारीही साम
र्थ है तब इंद्र स्तुति करके वरुण देवको कह
ने लगा कि हे वरुण तेरा नाम स गुण प्रभाव
है और तू परम चतुर है हरीके सनमुख जा
नेकी तेरीही सामर्थ है तब वरुण आगे माह
त जो पवन है तिसको कहता भया कि हे

पवन भगवानके सनमुख तुम जावो क्यों
कि तुमारा प्रनसे करके तीव्र वेगहै और
भय त्रास भी तुमारे हृदयमे कुछ नहींहै ऐ
से वरुणका कथन सुन करके पवन आ
गे सूरजको कहने लगा कि हे प्रभा कर
प्रधान हे प्रकाशकी निधी तूं सरब गुण सा
मर्थ और महां तेजस्वी सूरवीर हैं आज तूंही
देवताऊंके मनोर्थ सफल कर तब सूरज

भी कहने लगा कि भाई तुमने मेरेको पहि
ले क्यों नहीं कहा अब सायं काल होय ग
याहै मेरा बल पौरुष कहां रहा औरमे लुप
त हुआ वहताहूं।५२। चौपाई। इह अवसर
सामर्थन कोई। विनु मयंक हरि सनमुख हो
ई। अहिं क्रोध नरकि हरि निवरणा। सो मयंक
दिन नायक वरना। ससि हनि वदन सह अम
गाथा। हमरे वचर वचर मुख थाना। अगनि

रघ
भ
१२५

धान विद्यामति नागर। अगुगण्प हर सकल
उजागर। आज होहिं प्रभु सनमुख सोई। आ
न देव सामर्थ न कोई। विधि अस सुनत नि
साकर बानी। बोले हृदय अगम अतिजानी
अब तुम मिलि बृंदारक सारी। चलहु शरण
हीरोध कुमारी। सो निवारण करिहिं भगवाना
प्रबल कोप जोई अनल समाना। अस कहि
चरण शरण प्रभुमाया। गवने दीन देव स

१२५

सुदाया। हे अंबे शारद मुद सदनी। मंगल क
रनि निशाकर वदनी। नीरज नवल विलोल
विलोचनी। हृदय भक्त दुःख त्रास विमोचनी
सकल लोक प्रतिपालन जासा। व्रत पुनीत श्रु
ति सेन प्रकासा। सोरठा। मातु कोप पति प्रा
ण। करहु समन चलि शीघ्र तुम। जव श्रम
सरण बखान। तब बोली कमला वचन ४२
टीका। फिर सूरज कहता है कि भाई इस स

ल

रघ
म
१३५

मद्य भगवानके सनमुख होनेको चंद्रमाके
विना और कोई सामर्थ नहींहै सोई नरसिंह
देवके कोपको निवारण करणे वालाहै इ
सप्रकार सूरजकी वाणी सुनकर चंद्रमा जो
है सो कहने लगा कि भाई इसकार्जके करने
को हमारे विषे सामर्थ एक विधाता अर्थात
ब्रह्माहै क्योंकि वे सर्वगुण निधान औरविद्या
विचारमे परम चतुर संपूर्ण देवताओं विषे प्र

१३५

घम गिनती वाला और हमती करके उजाग
रहै आज सोई भगवानके मनमुख होवेगा
और किसीभी देवताको सामर्थ नहीहै तव
ऐसे चंद्रमाकी वानी सुनकर विधाता कह
ने लगा कि भाई इहवारता वडी अगम और अ
तसे कठिनहै परंतु मैतुमको एक विचार क
हताहूं कि तुम सव देव मिलकर क्षीर समुद्र
की पुत्री जो महा लक्ष्मीहै तिसके चरनोकी

दुर्गा
भ
१२९

शरण को चले सोई भगवानके प्रबल ओर
प्रचंड कोप को किजो अगनीके समान महा
प्रज्वलत है शांती करदेवेगी ऐसे विचार क
र संपूर्ण देवता जो हैं सो महामाया की शरण
को चले आवते भये ओर हरषही स्थित होय
कर अनेक प्रकारकी अस्तुतीसे जगदंबे
को रिझावने लगे कहते हैं कि हे अंबे हे शा
रदे हे आनंद मूरती हे मंगल करनी हे चंद्र

माके समान् मुखकी शोभावाली हे नवीन
कमलवन चंचल नेत्रोंवाली हे भक्त जनोंके
हृदयके भय और क्लेश हरकरनेवाली हे ज
गत जननी तू कैसीहैं कि संपूर्ण लोकोंको
पालना यही जिसका पवित्रव्रत कीर्ति और
संत जनोंने गायन कियाहै अब हेमाता तू इस
समय इन तीन देवताओंका हित विचार कर
और चलकर इह प्रलैकालकी अगनीके समा

१४
भ
१२

न प्राण पतीका कोप जो है तिसको शांती कर
अर्थात् शीघ्र निवारण कर तब ऐसे देवताओं
ने प्रार्थना करी तब लक्ष्मी जैसे उत्तर देती है
सो आगे कथन किया जाता है ४३। चौपाई।
इहि अवसर मोरे सुरजाना। मनसुख नहिन
शार्ङ्ग भगवाना। तब देवन अस विनय उचा
री। करिय कवन अब जतन विहारी। कौन
उपाय हमऊं मिलि जोई। नाहिन भयो देव

१२

फर सोई। सकल करोकर शक्ति भवानी। सो
पि आज मानस सकुचानी। प्राण नाथकर म
नमुख होई। भई नकोप समन कर सोई। तो
निश्चय मानस हम जाना। सकल चराचर क
र भगवाना। भयेसि उदित करण संचारा। ह
मरे कवन आज आधारा। अस विचारि हृदार
क सारी। गये शरण प्रह्लाद सिधारी। हे जग
प्रलहाद हार मंदिर। प्रलहाद उर दनुज वि

३४
भ
९८

138

खंडन। आगे नृप नारायण केरो। आज धन्य
कीरति जगनेरो। हरि प्रिय संत शिरोमणि टी
का। भक्त प्रधान प्रथम नवलीका। ध्रुव व
लि करहु समन गुण खाना। नमहुं प्रचंड को
प भगवाना। नव प्रह्लाद स्याम घन बरना।
करि प्रणाम जल जारण बरणा। सनमुख प्र
भय गवन गतिदीना। हरि कृपाय तन आवन चीना
सोरठा। भने वचन कविदान। हे सवनस हे

९८

तात मित। हे सभक्त प्रिय प्राण। अव आलिं
गन वेग तव। करहु मुदित मन आय। मोहि
सन परि हरि सकुच जन। मै जान्यो तव पाय
प्रिय नाना निज काय दुःख। ४४। टीका जग
दंवे कहती है कि हे देवताओ इस समय भगवा
नके मनमुख जानेकी मेरी शक्ति और सामर्थ
नहीं है तव देवता दीन होय करके विनती
करने लगे कि हे भगवान अव हम किसकी

१४
भ
१३९

प्राग्ण लेवैं ओर क्याकरैं जो उपाय हम करतेहैं
सो कोई सिद्ध नहीं होताहै देखियेकि सरब प्रका
रके करने और नाकरनेको सामर्थ भवानी ल
छ्मी जोहै सोभी आज भयमान कर सकुचाय
मान होयगई और प्राण नाथके सनमुख जा
यकर तिनके कोपको निवारण नहीं करसकी
इसतें आज हमने निश्चय जान लियाहै कि भग
वान सरब चराचर स्रष्टीका संघार किया चहते

१३९

हैं अहो हम दीन देवताओंको अब किसका
आधारहै इस प्रकार सब देवता गण विचार
करके प्रह्लादकी शरणको चले आये और
तहां नम्रवाणीसे दीन होयकर कहने ल
गे कि हे सरब जगतके हितकारी हे देवताओं
को आनंद देने वाले और दैतोंके हृदय का
हुलास जोहै तिसको नास करने वाले हे भ
क्त तुम कैसेभी हो कि भगवानके आणण

रे संतो विषे प्रधान और भक्तोंमै प्रथम गिन
नी वाले हो आज जगतमै तुम धन्यहो और
धन्य तुमारे सुजसकी महिमाहै अब हे गुण
निधान तुमही हमारे दीन देवताओंका हि
त विचारो और चलो इह भगवानका महाप्र
चंड कोप जोहै इसकी वेग शांती करो नहीं
तो क्षणभरमै संपूर्ण लोक भस्म होने चह
तेहैं ऐसे देवताओंकी दीनता और दुःखदेख

१४
भ
१५

140

५

कर वडे कोमल चित्तवाले भक्त प्रल्हाद जो
हैं सो नारायणके चरण कमलोंको प्रणाम
करके वडी दीनगतीसे अभय होयकर नर
नेंही दीन वंधुके सनमुख को चलपडते भ
ये तव नरसिंह भगवान अपने प्यारे भक्तको
आवते देखकर अत्यंत कृपा और सनेह के
वचनोंसे कहने लगे कि हेवत्स हेतात हे
सभक्त हेमेरे प्राण प्यारे अव भय और संको

१४
भ
१४१

वको त्याग और आनंद पूर्वक शीघ्र आय क
रके मेरे हृदयको शीतल कर अर्थात मेरे
को मिल हे प्यारे मै जानताहूं जो तेंने मेरी
भक्तीके वश होकर शरीरमें नाना प्रकारका
दुःख और कलेश पायाहै । ४४ । चौपाई । ज
नक दंडकर पीडित भारी । साधु सरल चित
धीरज धारी । अति प्रीय भक्त मोर मन भावा
अस कहि कृपा सिंधु उर लावा । पुलक गा

४१

न रोमावलि ठाढ़ी। बरनिन जाय प्रीति उ
र गाढ़ी। नेति नेति जेहि निगम नरूपा। गु
ण अतीत अव्यक्त सरूपा। ब्रह्म नरीह अगो
चर बानी। अगम जासु गति जाय न जानी
चिदानंद परमातम जोई। आज सु भक्त प्रेम
वश होई। एत नरकेहरि रूप जन अगन।
जन मन करत पतन अलिंगन। प्रमुदित
कहत कृपानिधि बानी। भक्त प्रमत्त आज

सुंद
र
१४२

मोहि जानी। जो मन भाव मांग वर मोही
नहिन देव अज कछु मोही। सुनि भगवान
वदन अस वचना। कृपा सनेह मोद प्रद व
चना। है कर पंकज सीस धरि चरना। नव प्र
ल्हाद वदन अस वरना। हे कृपाल प्रणता
रत हारी। नाथ अनाथ दीन हित कारी। से
न सिद्ध तापस मुनि ज्ञाना। साधन यतन
कठिन हठ नाना। करिहें अ विर्भन तिनके

१४२

रे। हे।नन कृपासिंधु प्रभु मेरे। सो तो आज विदित मम लागी। निज ऐश्वर्य गरवता त्यागी। धारहूल नररूप धरावा। कृपा नकेन विष्णु भ्रम पावा सोरठा। धन्य भाग वड मोर। जहि उदेश त्रिभुवन धनी। आविर्भूत भा तोर मोरे दरसन नरहरी। ५५। टीका। फिर भगवान कहते हैं कि हे धीरजके धाम सारूप्यौर स्वरूपे सभाव वाले मेरे भक्त तूं पिताके अने

२४
भ
१४२

143

क दंड देनेमे शरीर करके परम पीडित होय र
हाहैं ऐसे कहि करके कृपासिंधु तिसको अ
पने हृदयमें लगाय लेते भये शरीर प्रफुल
त होय गया और रोमांच सब उठ खडे हूये प्री
ती और सनेह जो है सो कछु कहा नही जाता
देखिये कि जिस परमात्माको वेद और
शास्त्र सब नेति नेति करके गायन करते हैं
कि [illegible] भगवान इहनही इहभी नही ऐसे नि

षेधसे ही कथन करते हैं अलक्ष अंत नहीं पा
या जाता और गुणोंसे रहित है प्रकट नहीं
होय सकता और निरीह जो कि चेष्टा और
इच्छासे भी रहित है अगोचर है कि जो इंद्रि
योंका विषय नहीं है अर्थात जाना नहीं जा
ता है और वाणीसे भी परे है अगम है कि ज
हां किसीकी पहुंच नहीं है और सत चित आ
नंद रूप है कि जो सदैव रहने वाला चैतन्य

२४
भ
१५५

ओर आनंद मूरती हैं ऐसी अनंत महिमा ओ
र अनंत ही प्रभाव वाले भगवान जो हैं सो आ
ज भक्त की प्रीती ओर प्रेम के वश होय कर
नरसिंह रूप धार कर के अपने जन के साथ
तिसके अंङ्गन मे प्रत्यक्ष आलिंङ्गन कर रहे
हैं अर्थात हृदय सो हृदय जुडाय कर मिल
रहे हैं ओर फिर आनंद मे मगन भये हूये भ
गवान कहते हैं कि हे मेरे प्यारे भक्त तेंआज

१५५

मेरे को प्रसन्न जानकर जो वर तेरे मनको
भावताहै सो मांग तेरे को अदेय कुछ नहीं है
मै सब देसकताहूं तूं संकोच को त्याग करके
मांग हे भक्त मांग इस प्रकार भगवानके मु
खसे वचन सुनकर और दीनानाथको पर
म प्रसन्न जानकर प्रह्लाद जो है सो दोनो हा
थ जोडे हूये चरनोपर सीस धर कर प्रार्थना
करने लगा कि हे कृपाके धाम हे दीनजनों

१४
म
१४५

के दुख क्लेशों दूर करने वाले हे अनाथोंके ना
थ हे भक्त हितकारी देखिये कि संत सिद्ध
तपस्वी मुनी ज्ञानी और ध्यानी जोहैं सो हे
प्रभू तुमारे दरसनके निमित्त नाना साधन
यतन और अनेक कठिन हठ करते रहतेहैं
परंतु कृपा निधान तुम तिनके ध्यान मात्र
भी नहीं आवतेहो आज मेरे कैसे उदय भा
गहैं कि जिसके निमित्त संहरण भवतोंके प

145

ती और दीनहित कारी नै अपना ऐश्वर्य औ
र बड़ाई त्यागकर इह नरसिंह रूप धारण
करके बहुतही श्रम पाया है आजमै धन्य
हूं और धन्य मेरे भाग्य हैं कि जिसकी भक्ती
के वश होयकर तीन लोकके नायकने इ
ह नरसिंह भेष धारण किया और परतत्व
मेरेको दरसन दिया है । ४५ । चौपाई । मांग
हु कवन नाथ वर आना । मनमुख देखि

२४
भ
१५८

146

बसहिं भगवाना। जो कृपाल मोपे करि
दाया। देन चहहु वर भक्त सुहाया। तो क
रुणाय सिंधु करि नेहू। मोरे देहु रुचिर
वर एहू। जनम जनम प्रभु भक्ति सुहाई। संतनरहहिमोरउरछाई
हे अनंत हे त्रिभुवन साईं। सदा बसहु मो
रे मन माहीं। अब दिल प्रेम नित्य नव मोरे।
पावन पद सरोज हरि तोरे। बढहिं बिरा
म लोन प्रभु होई। एहु कृपाल देहु वर मो

१५८

ही। भक्त याचना सनत अगारी। एव मस्त
मुखेगिरा उचारी। बहुरि दीनबर कृपा निधा
ना। होहु अमर तव सवे सजाना। अब आ
गल तब बंस मझारा। होहिन मोर करन सं
वारा। निस कंटिक तव राज सुहावा। अनु
दिन करहु रुचिर मन भावा। पुनि पवि तो
ष हरन सँमाना। कीन कृपाय काय भग
वाना। अब तम देव विगत ज्वर होई। सजु

२४ भ १६०

147

व कलेस जास उरखोई । अति प्रसन्न मन स
हित समाजू । करहु यथा सुख निज राजू ।
नायनाक निज लोक मझारा । विचरहु विधि
आयस अनुसारा । नव प्रसंसि सुख विविध
प्रकारे । करि प्रणाम सुर सकल सिधारे ।
सोरठा । बहुरि राज अभिषेक जन प्रह्लादहिं
देत नहं । आपके हरि नरभेष । दशाउत्र ग
वने हरी थह । टीका । फिर प्रह्लाद कहतोहे

कि हे दीनानाथ तुम कलप वृत्त ग्रोर चिं
तामणीके समान सरब सिद्धियोंके देने वा
ले मेरे साचात सनमुख स्थितहो ग्रब मै कौ
न वरकी जाचना करूं ग्रर्थात् कौन वर मां
गू परंतु जो कृपा निधान मेरे पर ग्रनकूल
भयेहो ग्रौर प्रसन्न होयकर वरदेना चहते
हो तो हे दयानिधे हे भक्त सहायक ग्रनु
ग्रह करके यही वरदेवो कि जनम जनम

२४
भ
१५८

विषे तुमारी सुंदर भक्ती जो है सो मेरे हृद
यमे निरंतर करके दृढही रहे और हे प्र
भु हे त्रिभुवन स्वामी तुमभी सदैव मेरे
हृदयमे निवास करते रहो हे तुमारे च
रनोका पवित्र प्रेम जो है सो मेरे हृदयमे क
दाचितभी घटै नही दिन दिन नित्य नवीन
ही वढता चला जावे इस प्रकार भक्तकी
जाचना और प्रार्थना सुनकर भगवान प्र

१५८

सन्नभये हूये एव मस्तू शब्द कहिदेते भये
कि हेभक्त ऐसेही होगा फिर कृपा निधानने
इह वरदिया किहे मेरे प्राणप्यारे हे मेरे सखे
अवंतू सरव उपाधियों से रहित होकर अमर
हो इसते आगे तेरे वंसमे मेरे हाथसे किसीका
संहार अर्थात् मरना नहीं होगा अब तुं आनं
द पूर्वक निसकंटिक राजकर तेरे को कि
सीका भय और त्रास नहीं होवेगा ऐसे प्र

१४
भ
१४९

ह्लाद भक्तको वरदेकर फिर भगवान देव
ताओंका परितोष और सत्कार करते भये क
हने लगे कि हे देवताओ अब तुम हृदयसें दुः
ख और कलेशको त्यागकर और अभय हो
यकर आनंदसे अपना पूर्ववत् राज जो है सो
करो और स्वर्ग लोकमे जायकर विधी जो
ब्रह्मा है तिसकी आज्ञा अनुसार अपने सब
कारज विवहार जो हैं सो करो और आनंद सु

१४९

वंक विचरी नव देवता गण भगवान क्रपा
नियानकी वडी सुंदर हितके देनेवाली शि
क्षा सुनकर और अनेक प्रकार अस्तुती क
र कर वार वार प्रणाम करते और जैजै उ
चारते हूये अपने स्वर्ग धामको चले गये ति
सके उपरांत राज्याभिषेक जो राज तिलक है
सो विधी अनुसार अपने हाथसे जन प्रल्हा
दको देकर फिर आप नरसिंह भेषधारी भ

१४
भ
१५०

गवान आनंद पूर्वक उत्तर दिशाको प्रस्थान कर जाते भये अर्थात् चले जाते भये। ५८। चौपाई। नव प्रह्लाद वंस निज धरमा। लागेउ करन दहिक पितृकरमा। सनकादि संत स ज्जन मति शाला। इस प्रकार भगवान कृपाला। सदा भक्तवश भक्त सहाई। रक्षक भक्त भक्त भक्त सुखदाई। जुग जुग प्रेम भक्ति वश होई। सुर द्विज धरनि धेनु हित सोई। कृरम

१५०

150

कोल मनस इत्यादी। यदहिं नृप भगवान
अनादी। तांते देस सुजस सुख करनी। स
कल प्रधान भक्ति बुध बरनी। भक्ति पुरु
ष कहूं संतनिमांही। सकल सुलभ दुरल
भ कछु नांही। अस प्रह्लाद चाहवर सोहा।
परम पुनीत चरित मनमोहा। यद्यपि यथा
अलप मति दीना। तहि अनुसार कथन क
छु कीना। सरब सावद इह कथा सुहाई।

१४
भ
।५।

जो इहि सुनहिं श्रवण मन लाई। सोरठा। हो
हिं भक्ति भगवान। संतत नांकर हृदय दृढ
मिटहिं मोह मद मान कष्ट दोष वंदन मुक
त ४७। टीका। तब पीके प्रक्षाद जो है सो अ
पने वंसकी रीती अनुसार पिताका मृतक
करम सब विधी पूर्वक करके अपने राज
काज और संत भक्तोंकी सिवकाईमे तत्प
र होजाता भया नाभादासजी कहते हैं कि

।५।

हे संतो इस प्रकार भगवान कृपा निधान म
हेव भक्तोंके वश और भक्त सहायक भक्तर
क्षक और भक्त सुखदायक हैं जुग जुग वि
षें भक्त जनोंकी भक्ती और प्रेमके वश हो
कर गौ ब्राह्मण पृथवी और देवताओंकी र
क्षा करने वाले दीनानाथ कूरम वाराह औ
र मतस अर्थात मच्छ इत्यादि अनेक अवता
र धारण करते रहे हैं तोते संपूर्ण सुख स्व

१४
भ
१५२

152

जस और कल्याणके देने वाली इह सरव प्र॰
थान भगवानकी भक्तीही शास्त्र और बुध ज
नोने गायनकीहै भक्तीवाले पुरुषको संसा
रमे सब सुलभहीहै दुरलभ कुछ नहीहै इस
प्रकार इह प्रल्हादकी परम पवित्र और मनो
हर गाथा जोहै सो मैने कुछ किंचन मनीके
अनुसार गायन करदेइहै इह कैसीभी गाथा
हैकि सरव सुखोंके देनेवालीहै जोकोई इस

१५५

~~155~~

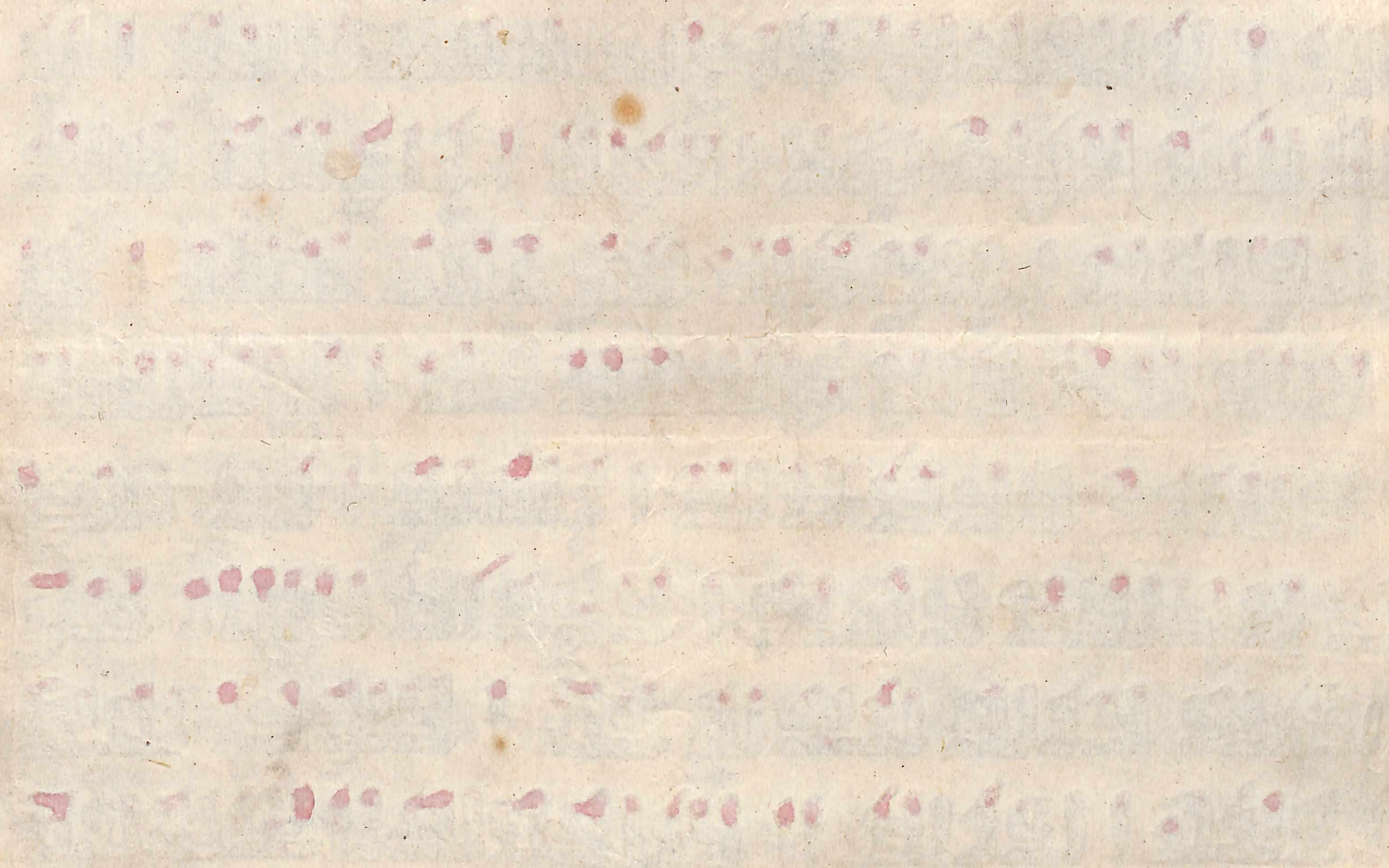
153



भ० मा०
१५२

को श्रद्धा पूर्वक पढेगा अथवा श्रवण करेगा
तो तिसके हृदय मै भगवान की पवित्र भ
क्ती जो है सो निरंतर करके दृढ होजावेगी
श्रौर भगवान की कृपा के प्रसाद से तिसके
कष्ट दुष दोष श्रौर बंधन इह सब छूट जावें
गे इसमै कछु संशय नहीं है ४७। इति श्री भक्त
विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ति महात्मे भाषाटीका
यां प्रकार वर्णनं नाम सरगः

मीहां सिंह कृत





३५
भ
१

अथशंकराचार्यचरितं ॥ सोरठा। गुरुवर कृपा निकेत। अव शंकरा चारज कहूं। प्रेम भक्ति सुखदेत। कथन महातम ललित तर। चौपाई। जासु सुनत उरज्ञान प्रकासहिं। मद जडतादि मोह भ्रम नासहिं। उत्तम द्रवड देस महि जोई। मझातंग नाम अस होई। सरिता तहां डरित गण हारी। संगम जवन ललित जिनकारी। सो

१

श्रुति परम पुण्य प्रदनीका। जहि जग विदि
त देश्वर लीका। तहं खगेरि रुचिर असना
मा। रंमय पुण्य मानवर ग्रामा। लोक सक
ल तहि ग्राम निवासी। परम प्रवीन ज्ञान गु
णरासी। यज्ञ विशारद शील सुधरमी। वे
द विहित करम कर मरमी। पतिव्रत धरम
निरत नर नारी। दान दयादि विमल व्रतधा
री। सोरठा। ब्रह्मलोक समग्राम। सकल

३५
भ
२

धाम सदधाम सम। परम अर्थ श्री काम। शे
षेशी मथ वसहिं जनो।।८।। टीका। नाभादास
जी कहतेहैं कि हे कृपाके धाम गुरु स्वामी
जी और हे संतजनो अब शंकराचार्य जीकी
मनोहर गाथा जोहै सो आपके आगे कथन
करताहूं इसको ध्यानदेकर श्रवण करिये
और यह कैसीभी गाथाहै किजिसके श्रवण
करनेसे हृदयमें ज्ञान प्रकाश होजाताहै

२

और मोह मद जड़ता भ्रम इत्यादि विकार
जोहैं सो सब नाशको प्राप्त होजातेहैं कह
तेहैंकि द्रविड़ देशकी बड़ी उत्तम भूमीजोहै
तहां भद्रा औररंग नाम करके पापोंका ना
श करणेवाली दो नदी विदितहैं तिनका सं
गम जोहै सो संसारमें परम पुन्यके देने वा
ला और सब तीर्थोंमें प्रधान बड़ा प्रसिद्धहै
और तहांही शृंगेरी नामकरके एक पुन्यमा

२५
म
३

न और बड़ा रमणीक ग्राम होतासया तिसग्रा
मविषे निवास करणे वाले लोक जोहैं सोसब
ज्ञान विचारमे परम प्रवीन और यज्ञोंके कर
नेवाले वडे [illegible] और सधरमी करम कांड
मैभी चतुर और वेदके जानने वाले तहांकी
स्त्रीभी पतिव्रत धरममे प्रवीन सबनारी नर
दान और दयामे श्रद्धावाले और परम व्रतधा
री मानो वे ग्राम ब्रह्म लोकके तुल्य था और

३

तहांके हर सब देवताओंके वरोंके समान
थे और ऐसे प्रतीत होताकि धरम अरथ
काम मोक्ष इह चारो पदारथ तिस श्रृंगेरी
ग्राममेंहि निवास करतेहैं ॥ चौपाई। तहां ए
क द्विजवंस मकरंधो। हरमचूप लीला अव
तरयो। वेद वेदांग निपुण गुण धीरा। श्रुति
हित जानि सवन मतिधीरा। वेदाध्यासन ह
विर कराकहिं। धरम सम्मपन्न लोक सुखव

३५
भ
४

पावहिं । शंकर नाम तासु समदाना । धर्म
स्वरूप धरम प्रति दाता । जहि विधि स्राय
भवति श्रवनारी । सो श्रव कथा मनोहर सा
री । सादिर करहु कथन दुःख हरनी । ललि
त मोद मंगल मन भरनी । रहे लोक जोई थ
रुनि वसेरा । संत सिद्ध तापस द्विजसेवा ।
सो कलिकाल घोर अति पाई । सकल वि
घ्न उरथीर विहाई । दान मान यज्ञादिक

करमा। भये समग्र लुपत वर धरमा। ग्रुग
ध प्रपंच जयन मतसारी। नास्तिक धरम नि
रत नरनारी। दयादान श्रद्धा ब्रतमाहीं। है
सभाव प्रीती हरिनाहीं। वर्णाश्रम च्युत निं
दक भारी। हव्य कव्य वरजित सटमारी। सो
रठा। वेद शास्त्र प्रति कूल। परिहरि सत्य अ
सत्य रत। धरम रूप जगमूल। तोकर दा
हक अनल जनो। २। टीका। तहां ब्रह्मलों

३५
भ
५

के वंसविषें एक शिव स्वरूप लीला अवतार
होताभया सो कैसाकि वेद और वेदके अंगों
को जाननेवाला और गुणोंकी निधी बडे हि
तके संपूर्ण ब्रह्मणोंको वेद पढावनेमें प्रवी
न तिसके प्रसादसे सब लोग धरम और स
करमवाले होयकर परमसुखको प्रापत
होते भये और वे प्रापकी मूरती धरम और
धीरजके देनेवाला शंकर नाम करके लो

५

गोंमे प्रसिद्ध था और तिस उपकार की निधी का
जिस प्रकार पृथवी तलपर अवतार होता
भया सो परम मनोहर और सुखदायक हृ
दयमे आनंद और मंगलोंके अर्थ करने वा
ली गाथा जो है सो अब प्रीती पूर्वक गायन क
रता हूं क्योंकि गो ब्राह्मण संत सिद्ध तपस्वी
मुनी ऋषी जोगी जती इत्यादि पृथवीतल प
र वास करने वाले जोथे जो घोर कलीकाल

का प्रभाव पायकर सव व्याकुल और धीरज
से रहित होयगये दानमान यज्ञादिक करम
जोहैं सोभी सव लुप्त होयगये और परम
कीभी हानी होयगई सर्व प्रपंच अर्थात् स
ष्टीके सवलोग जोहैं सो जवन मतकाले हो
यगये जहां लग नारीनर जोथे सो सव कालि
क मतको आश्रय करलेते भये दया दान
श्रद्धा व्रत इनविषें किसीकी रुची और प्रीती

नही रही सब लोग धर्मके द्वेषी श्रौर विरो
धी होयगये श्रपने वरण श्राश्रमसे भूलक
र देव श्रौर पित्री करममे रहित वेदशास्त्र
से विरुद्ध सत्यको त्यागकर श्रसत्य विषें
प्रवृत होयकर धरम रूपी जो जगतमें हुई
है तिसके दग्धकरनेको मानो श्रगनी हो
य जाते भये १। चौपाई। श्रसप्रकार कलि
जवहिं प्रचंडा। लागफोटेन विविध विधिदंडा

१५
भ
७

सब इंद्रादि भाग सब छीने । सुर पितरादि सं
ग निज लीने । हव्यकव्य [illegible] परम दुखारी
आय शरण विधि सकल सिधारी । करि प्र
णाम सुर विनय बड़ाई । विविध प्रसंसि ब
रन सुजगाई । देखि नलिन भव देव दुखारी
प्रभु दित गिरा वदन उचारी । सहु सरब हंरा
सक तोरे । उपज कलेश विदित जीय मोरे ।
करहु उपाय धीर उर धरहो । गवहु भवन

चिंता जनि करहो। धरि उर विधि भरोसञ्च

अराये। करि प्रणाम निज भवनन आये।

तव कैलास कीन विधि गवना। राजे जहां

शंभु मुद भवना। हरिहर तहां जुगल विधि

दीधा। देखिविरंचि दृगन सुखपाया। मोद

हा। वैसो रानमुख जाय। करि प्रणाम या

ना वदन। प्रसतति बहु विधि गाय। विनय

करत जुग जोरि कर ३। टीका इसप्रकार

३५
भ
८

महा प्रचंड कलि काल अर्थात् कलियुग जो
है सो जगतके लोगोंको अनेक प्रकार का दं
ड देने लगा तब इंद्रादिक देवता यज्ञभाग जो
है तिनसे हीन भये हूये सब देव और पितरोंको
साथ लिये हूये बडे दीन और दुःखी होयकर
ब्रह्माकी शरणको चले आये तहां बारबार
दंडप्रणाम करके फिर अनेक प्रकारकी
प्रसन्नती करकर कहने लगे कि हेप्रभू ह

मको अब पृथ्वी तलपर नाखिद्री और नदेव
भाग कोई कभी नहीं देताहै हम कौन आ
धारसे जियेंगे तव विधाता देवताऊंको दुखी
देखकर वडी खेदायक वाणीसे कहने
लगा किहे देवताओ इह तुमारा कलेश और
दुःखजोहै सो सरवही मेरे हृदयमें विदितहै
अर्थात् आगेही जान रहाहूं अब तुम धीरज
को धारो और चिंताको त्यागकर अपने घर

को चले जावो मैं इस वार्त्ता का अवश्य उपाय
करता हूं ऐसे सुनकर के देवता जो हैं सो विधा
ता के भरोसे को हृदय में राखकर और वार
वार प्रणाम करकर अपने घर को चले आये
उहां ब्रह्मा भी उठकर कैलास को महादेव
जी के पास चला जाता भया तहां जायकर क्या
देखता है कि शंभू और विष्णु भगवान दोनो
विराजे हूये परस्पर वार्त्ता आलाप कर रहे हैं

विधाता देख करके परम सुखको प्राप्त भ
या और प्रणाम करके मनमुख जायवे का फि
र दोनो हाथ जोडकर और प्रसन्नती करक
र जिस प्रकार विनती करणे लगा सो आ
गे कथन कीजाती है।२। चौपाई। आश्रयगा
वि देव वलतेरा। स्रजन प्रपंच परम अतमो
रा। सोतो सकल लोक इहिकाला। करम भू
मीपर दीन दयाला। भवतप कृपा दान प्रत

३५ भ ९

जोई। वेद बहीन रीत सब खोई। जग आचार
निरत सब भयऊ। नाहिं नधरम करम कछु
रहयो। किंनर यक्ष विबुध गंधरबा। पन्नग
दीन हीनबल सरबा। निज निज बली भाग
नहींपायो। प्राणमात्र अवशेष रहायो। सो
रठा। आये शरण तुमारि। दीनदयाल करु
णाय तन। अब कछु हृदय विचारि। इनक
र कीजिये प्रति कृपा। ४। टीका। ब्रह्माक

९

10

हताहै कि हे देव मै तुमारे वलको आश्रयता

लेकर वडे यतनसे इस प्रपंच अर्थात् जग

तको रचताहूं और यही मेरा धरमहै सोतो

सवलोग इस करम भूमीपर यज्ञ जप कि

या दान व्रत इत्यादि वेदकी रीती और मर्या

दा जोहै सो सव खोयकर अधम जयना चा

रमे प्रवृत्तहोय गयेहैं अर्थात् सव नास्तिक

ही वनगयेहैं धरम और सुकरम पृथवी

३५
म
॥

पर ऊसकभी नहीं रहा किन्नर यक्ष देवता गं
धर्व नाग इह सब दीन और बलसे हीन हो
गयेहैं अपना अपना बलीभाग जो नहीं
पाया तो शरीरोंसे सूखकर पीछे प्राण मा
त्रही रहिगयेहैं अब हे दीनानाथ सबमिल
कर तुमारेही चरनोंकी शरणको आयेहैं
सोजैसे बन पडताहै तैसेही इनदीन देवता
ओंका हित विचार कर ऊसकशीघ्र उपाय क ॥

रिये । ४१ चौपाई। तव प्रभु रमानाथ भगवा
ना। सुन विरंचि प्रेम वचन बखाना। मोर
आगमन वृषभ ध्वज पाहीं। प्रथम विदित
मोर मन माहीं॥ तातें इहां प्रथमहि आवा। अ
व प्रभु शंभु जवन मन भावा। सकल लोक
हित हृदय विचारी। जो कछु भनहिं यथा
त्रिपुरारी। विरंचि उपाय करहिं हम सोई।
हरप्रसाद सबकर हित होई। तव प्रभु महा

३५
भ
१२

देव भगवाना। सुनहु गरुडध्वज वचन बखा
ना। अहो विठल बिसमय अति वचना। वि
स्तरन भयो धरनि मत जयना। यथा स्वस्ति
भवप्रजा सुखारी। कहहु यतन सोई हृदय
विचारी। नहिपरमै रमीम सुखदाई। करहु
उपाय जवन वन आई। तब प्रभ कह विधि
वि श्रीरमना। हे कृपाल प्रभु मन्मथ दमना।
जहि विधि प्रजा स्वस्ति जुत होई। हम प्रभ

करहिं कथन अब सोई। जम हम मान लोक करि गमना। अंशऽवतार धार द्विज भवना। सोरठा। वेदशास्त्र यज्ञादि। करन स्थापित यथावत। रुचिर धरम पथ साधि। निदरि जवन शासन सजग। दोहा। नास्तिक मतकर विघ्न कहं आस्तिक अनल जराय। सकल भस्मकरि लोक निज पनि प्रभु वलह्व पराय। ५। टीका। जब रमापती भग

३५
भ
१३

बान जोहैं सो ब्रह्माको कहने लगे किहे धाता मेरा इह महादेवके पास आना मेरेको प्रथम ही स्फुरपडाथा तांते मै इहां आ ऐहीं चलाआ याहूं सब शंकर देव अपनी बुद्धीके अनुसा र संपूर्ण लोकोंका हित विचार कर जैसी शि क्षा देवैंगे हम तिसकाही श्रम और यतन करैं गे इसतैं तिनके प्रसादसे सब लोगोंका हित और भलाई निश्चय होगी ऐसे भगवानका

13

कथन सुनकर महादेव कहने लगे कि हे
गरुडध्वज हे लक्ष्मीनाथ देखो बडे आश्चर्य
की बात है जो संपूर्ण पृथिवीपर जहां तहां
इह जगत मत जो है सो व्यापत होय गया है
अब जिसप्रकार प्रजाको कल्यान और सु
ख प्रापत होवे सोई प्रकार मेरेको हृदयमे
विचार करके कहो तिसपरमे जैसे बन प
डेगा तैसेही उपाय कहूंगा तब महादेवको

३५
भ
१४

वचन सुनकर ब्रह्मा और विष्णु कहने लगे
कि हे त्रिपुरारी हे कामदेवके दग्ध करणे
वाले शंभु अब जिस प्रकार प्रजा कल्याण
और सुखको प्राप्त होतीहै हम आपके आ
गे सोई उपाय कथन करतेहैं क्योंकि हम तु
म अंशावतारं कर और मात लोक अर्थात्
पृथवीतलपर ब्रह्मणकुलमे जनम पाय
कर वेद शास्त्र यज्ञव्रत दयादान इत्यादि

धार

१४

धरमका मारग सब साधकर ग्रोर जयन
प्रभावका भलीप्रकार निरादर करकर ग्र
र्थात नास्तिक मतके व णाको ग्रास्तिक
ग्यानकी ग्रगनीसे भसम करके फिर ग्रा
नंद पूर्वक ग्रपने लोकको चलेग्रावें इस
प्रकार जब विसु भगवान ग्रोर ब्रह्माने क
थन किया तब महादेव स्वीकार करके
कहने लगे कि ग्रेसेही होगा तिसतें उपरं

३५
भ
१५

त ब्रह्माजीहूं सो अपने धामको चले आये
और आवनेंही सबदेवताउं को धीरज और अ
भय देतेभये फिर हृदयमें विचार करने ल
गे किमैं अब देवताउंकी भलाईके लिये अप
ना कौन देशविषे अवतार धारन करूं अरु
उनके हृदयके कलेश और विपतीको हरूं
ऐसे देवताउंका हित विचार कर ब्रह्माजीहे
सो मिथला पुरीमें एक श्रेष्ट ब्रह्मणके घर

१५

विषे जनम लेकर मंडिन मिसर नाम करके
प्रसिद्ध होजाते भये औार पृथवीका भार देव
ताउंके भय दूरकरने वाले तीन लोकके ना
यक विस्नु भगवान जोहैं सोभी तिसके सा
मीपही अवतार धारकर उदयना चार्ज क
रके लोगोंमे उजागर होतेभये औार द्रवि
ड देशमें ब्रह्मण वंशविषे शंकर नाम कर
के धरम और मीतीके प्रतिपादन अर्थात

३५
भ
१६

स्थापित करनेको प्रवीन शंभू भगवान प्रव
तार धारते भये अवप्रथम तिनकीही गाथा
जैसीक मेरे श्रवण मारगमे आईहै अर्थात
मैने सुनीहै तैसीही भ्रमके हरने वाली और
जगतमे धरमके प्रकाश करने वाली जो
है सो हे संत जनोमे आपके आगे गायन क
रताहूं सरव देवोंके देव और सर्वगुण निधा
न त्रिपुरारी जोहैं सो श्रमके विना सहजेही

१६

कौतुकसे वेदाध्यायन अर्थात् वेदके पढ
नेमें प्रवीन होयकर ब्रह्मचर्य गृहस्थ वान
प्रस्थ इन आश्रमोंको उलंघन करके फिर सं
न्यस्तपदमें जायकर स्थित होते भये तहां वि
धी पूर्वक पवित्र दंडजोहै सो धारण करके
जहां तहां दंडी स्वामी प्रसिद्ध होय गये तब
अपने बल पराक्रम और विद्याके प्रभावसे
दिग्विजय करनेकी अभिलाषा वाले होय

१५
भ
१

कर देश देशांतरोंकों प्रस्थान करदेते भये
इस प्रकार फिरते फिरते जब तीनोंही दिशा
को जीत चुके और जहां तहां अपना वैस्नव
धरम जोहै सो स्थापित करदिया तब आगे
को फिर चलते चलते धरमके प्रतिपादन
करने वाले शंकर भगवान पश्चिम दिशा
जोहै सो तिसको चले आये तहां एक अथ
म राजा निरंतर करके जैनमतमे मुगाय अ

१७

१

थांत मोहित भयाहुआ देखा और तिसकी
जहांलग प्रजाथी सोभी सब नास्तिक धरम
मै गलित भई हुई देखी तब स्वामीजीने तिन
का हित विचार कर धरमके उदय करने
वाला ज्ञान उपदेश जोहै सो यद्यपि अनेक
प्रकारही कथन करके तिनको सुनाया त
थापि तिन महा मंदोंके हृदयमे कछुभी श्र
द्धा और रुची नहीं उपजती भई तहां एक

१५
भ
१८

वडा इह और उरमती पंडित जोया सो अथम
तिस मूढ राजाको रात्री दिन नास्तिक धरम
ही श्रवण करावता रहता आस्तिक धरमकी
कभीऊककभी चरचा नही होतीथी। ५। कोय
ई। दैवयोगकर अवसर पाई। मनवस भ
यो नवन चतराई। नास मदन सुनि श्रवण
नसासी। निज शिव वोलि धरम अनुरा
गी। भाषा जवन मोर वडपना। नैलद्रोण

१८

18

धरि यतन समेता। गावेहु वेष मास लग
माहां॥ होहिं नमरम प्रकट कलुजाहां। न
रहि अपरंन वहुरिभे आई। रुचिर प्रवेश वध
धनिज पाई। नटरि जयन मन सासन हारा।
करहुं वेदवत धरम प्रचारा। अवमे जहेंा नृ
पति वधुजाई। मवे व्रत क्रिया सकल अ
धिकाई। वेदविहीत धरम मत थापन। य
थाचार करि सकल स्थापन। अवहुं रहो

३५
भ
१९

बहुरि निजकाया। श्रमकरि स्वामि तुरत व

पुराया। जाय प्रवेश कीन व्रतधारी। संकुल

सिद्धि निपुण त्रिपुरारी। सोरठा। नृपति मृ

तक पर जोय। कह्यो सजीवन सो भयो। सा

वधान मन होय। उठि बैठ्यो सब तन्य मन।

टीका। नव दैव भावी करके सो नास्तिक

राजा जोया सो कालवश हो जाता भया फ़े

र तिसका मरण सुनकर स्वामीजी श्रप

१९

ने शिष्यको पास बुलाय कर कहने लगे कि
हे तात मै इहां धरमके स्थापित करनेके वास्
ते कौनकसे अपने शरीरको त्यागताहूं परं
तु तुमने सावधानतासे इस मेरे शरीरको
छे महीने तक संभालकरके तैलमे किसी
खुले पात्रके बीच नाएव छोडना और तुम जा
नोकि इह भेद किसीको विदित ना होने पा
वे अर्थात् जान नापडे छे महीनेके उपरंत

प्राप्त करके फिर अपने शरीर विषें प्रवेश पा
ऊंगा अब मैं उस राजाके शरीरमें जायकर औ
र नानाताडनसे इस अधम जघन मनका भ
ली प्रकार निरादर करकर और वेदकी वि
धी अनुसार यज्ञ व्रत क्रिया दया दान इत्यादि
[illegible] जो हैं सो यथावत सब स्थापन करके
वैष्णव पुरुषोंको भगवानके सन्मुख कर
ताहूं और फिर राजाके कलेवरको त्यागक

र इस मुणनेही शरीरमे प्राप्तकर चैतन्य हो
गाहै ऐसे कहिकर सरव सिद्धियोंमे प्रवीन
और सरव कला सामर्थ शंकर स्वामी जो हैं
सो ततकालहीं राजाके शरीरमे जाय प्रवेश
करते भये तब मृत होय करके राजा जो ए
थ्वीपर पड़ा हुआथा सो तुरतहीं सजीवन
और चैतन्य होयकरके उठ बैठता भया ।८।
चौपाई । ७२ परि जन मृत सेवक सारी । मृत

३५
भ
२१

सुनीहृ जग दशा निहारी। विसमय हरष वि
वस सव काहू। लागे होन विविध उतसाहू।
मोद प्रमोद जायनहिं वरना। आनन्द उदय
सकल जनु तरना। तव लननाथ वचन प्रस
कीना। सुनहु पवित्र मम कथन नवीना।
मै सामीप धरम रूप गयऊ। कौतुक देखि
चकित चित भयऊ। मोरे निरखि धरम प्र
मवानी। बोलि हृत यम वदन वखानी। २१

२१

आसु अजहूं प्रेम नृपपदू । बद जग मास ज
तात जमरेहू । तोते अजहूं प्रथम इहराई ।
मोर दंड कछु सकहिं न पाई । यद्यपि ऐसेहिं
शासना जोगू । नासिक दंड विविध विधि
भोगू । अब इहि जाय हूत तुमनाहीं । आवहु
छाडि नगषष सटमाहीं । विनसहिं अवधि मा
स कट जबहीं । निज कृतपाव दंड जब तब
हीं । जम मृतसाव परम नृपलेहू । मोरे दी

१५
भ
२२

न छाड बंध पट्ट । सोरठा । जबलग सबिबंध बीर । सभा यरम न्टपभेरह्यो । अदभुत चरि त नवेल । देखि हगानन विविध निज । २ । टीका नव पुरके और बाहरके सब लोक राजाके मरने और जीवने की ऐसी दशा देखकर हरषभी मानते और अचरजभी मानते भ ये नगरमे अनेक प्रकारके उत्सव और मंगल होने लगे परे आनंदकी चरचा ऊक ।

२२

कहीं नहीं जाती मानो इहराजा सूरजके
समान अस्त होयकर फिर उदय होयगया
है तब प्रजापाल अपने मंत्रीको निकट बु
लायकर कहने लगा कि हे प्रधान अब मे
री बड़े अस्चर्यके देने वाली वारता तू श्रवण
कर किसै धरम राजाके पास चलागया औ
र तहां अदभुत कौतक देखकर बड़े आचर्जे
को प्राप्त होयगयाहूं क्योंकि मेरेको देख

१५
भ
२३

23

करके परम भूपने यमदूतको बुलाय कर
कहाकि इस राजाकी आयु अवी छे महीने
बाकी रहती है तांते इह प्रथम राजा जो है सो
अवी कुछ मेरा दंड नही पाय सकता यद्यपि
मै जानता हूं कि इह महामंद ताडनाके यो
ग्य और नास्तिक दंडके भोगनेका अधिका
री है परंतु कुछ आयु जो बाकी रहती है इस
तें उरमतीको अवी दंड नही दे सकता हूं हे

यम अब तुम इसको लेजावो और तहांहीं
प्रथमको तिसी शरीर विषे छोड आवो जब
छै महीने की अवधी बतीत हो जावेगी तब
इह मंद अपने किये हूये करमका दंड अवश्य
भोगेगा इस प्रकार धरम राजाकी आज्ञा पा
यकर यमजो है सो मेरेको इहां इस शरीरमे
छोड गया है हे मंत्री जबलग मै धरम भूपकी
सभाविषे रहा हूं तबलग तहां अनेक अदभुत

२५
भ
२८

और नयेहीं चरित देखत रहाहूं ।७। चौपाई ।
आगम निगम सत्य सब भाई । मख व्रत दान ध
र्म समुदाई । जप तप करहिं चरित हरि गा
यन । जे स्वकर्म रत वेद परायण । सो तजि
चतुष्प जात कस देखे । सोस्मि सरूप चतुर्भु
ज लेखे । अरु सरूप वर रुचिर विमाना ।
गंध र्वादि सेवत विधि नाना । आवत तिन
हिं निरखि यमराई । करि प्रणाम नम्रत सिर

२८

नाई। इहि विविध भोजन मनमाना। देहिं
कराय नाक प्रस्थाना। निंदक बेद यज्ञ व
त धरमा। लखहिं न मूढ़ भक्ति पथ मरमा।
नास्तिक निडर ज्ञानविन जयनी। हरि प्रति
कूल अधम दुखदैनी। जब सठ तौन जाव म
न जाहो। तिनहिं विलोकि हृगन जम नाहो।
सहस अनल लैन रत न्यारी। कंपन क्रोध
विवस तन मारी। दीरघ दंष्ट्र विकट विकरा

३५ म २५

ला। भयावन भ्रकुटि विकट मुख भाला। क्रो
ध प्रचंड दंड करधारी। नाडि नदिन जनु वदन
प्रचारी। विष्टा रुधिर राध कृमि कूरे। भ्राति दुः
ख नरक कुंड परिपूरे। तिनमें देत तिनही ध
कठारी। डहडह प्रम वदन उघारी। मै विलो
कि तिनकर गति दंडा। परे नरक सठ घोर
प्रचंडा। भ्राता ईहा कामवस होई। विदित
हमार सचिव गति सोई। हम सव जैनि धरम

2 ?

श्रुति हूला । नास्तिक निडर भक्ति पथ भूला
मन हमार नहिं योग्य प्रसंसन । सचिव कर
न इहि उचित विधंसन । स्वरग नरक सब
दान सुकरमा । जप तप क्रिया हवि र व्रत
धरमा । वेद शास्त्र वर वाक्य सुहाये । संतत
सत्य सचिव समुदाये सोरठा । तांते निज म
नकोहिं लखि असत्य परि हरहु अब । हवि
र वेदमन जोहिं । करहु ग्रहण हितजानि

निज ।८। टीका। फिर कहतेहैं कि हेमंत्री
अगम निगम अर्थात् वेदशास्त्र और यज्ञ व्र
त तीर्थ दयादान धरम इत्यादि शुभ आचार
जोहैं सो सब सत्यहैं जप तप भजन सुमरण
और भगवानके नानाकीर्तन चरित्र जोगा
यन करतेहैं और वेदमें वरणणाहै कि जोरा
त्रीदिन वेद विचारमें लगे रहतेहैं सो शरीर
को त्यागकर किसप्रकार जाने देखेहैं कि

३५ म २९

२९

माने सैामी सद्रूप अर्थात शांतीद्रूप और व
त्तर भुज सुंदर विमानों पर चढे हुये गंधर्वजो
हैं सो आगे गायन करते जाते हैं और परम ग
ज्ञा तिनको आवते देखकर वडी नम्रतासे प्र
णाम करके और अनेक प्रकार पूजन कर
के फिर सनमान पूर्वक स्वर्ग धाममें पठाय
देता है और जो वेदके निंदक हैं यज्ञ व्रत ती
र्थ भक्ती दया दान धर्म इत्यादिक जानते नहीं

हैं और बडे निडर नास्तिक महा आलसी और
भगवान से वेमुख अथम डरवाही जो हैं सो
सब मृत होय करके तहां जावते हैं तो तिन
को देख करके जमराज कैसा भयंकर रूप हो
य जाता है कि कोपके भरे हुये लाल नेत्र और
बडे लंबे दांत महा विकाल डाढी तैसेही क्रूर
भृकुटी और चढा हुआ मस्तक हाथमें फां
सी हुया क्रोधमें बडा प्रचंड दंड और बिजली

१५ म २२

27

२२

वर्त्ता कड़कता हूआ तिन पापियोंको नाना
ताडना करकर और ठहरठहर उचारकर विष्ठा
जोमलमूत्र रुधर जोलहू पीपजोपाक कृमी
जोकीड़े इनकरके भरेहूये महा दुःखदायक
नरक कुंडजोहैं तिनविषे यमोंके हाथसे डल
वाय देताहै इसप्रकार भयाहूआ ईहां चलाआ
याहूं हे प्रधान प्रुव तुम निश्चय जान लेवा कि
हमारीभी उत्पत्ति तैसीही गती होवेगी इसमें

मैतिनकाघोरनरकदंड
देखकरकेभयकेवश

३५
भ
२८

ऊक संशय नहींहै क्योंकि हम सब जयन मत
वाले धरमके विरोधी महा नास्तिक और नि
डर भक्तीके मारगसे भूले हुयेहैं यह हमारा मं
द मत जोहै सो ऊक प्रशंसाके योग्य नहींहै
इसको त्यागदेनाही भलाहै हे भाई स्वर्ग नरक
यज्ञदान व्रत जप तप क्रिया करम धरम और
वेद शास्त्रके वाक जोहैं सो निरंतर करके स
व सत्यहैं असत्य केवल एक हमाराही मतहै

२८

तातें इस अमलको अब त्यागदेवो और सब
मतजो वेदकाहै सोई हृदयमें हित मानकर
ग्रहण करलेवो ॥ चौपाई । संजुत प्रजा ब
महूं समुदाई । निज निज बलहु वेद पथ भाई
आस्तिक होहु परम अनुरागी । नास्तिक जे
धन उह मन त्यागी । सचिव मोर इह आयस
सोई । कबहूंकि करहिं उलंघन कोई । तोमे
हनतहूं तास जन वंसा । इह प्रण मोर सचिव

३५
म
२९

महिं संसा। सब नृप प्रीति तुरग गज साजा।
कंचन चैल रत्नमणि नाना। बोलि विप्रवर
पंडित नीके। लावहु वेद मरम जिनहीके।
मैं तिनकेरि दानदै हेता। करहुं प्रभीष्ट सक
ल करहेता। शालिग्राम शिला छवि पावन।
प्रतिमा देव रुचिर मन भावन। संस्तन हस्त
प्रकार सुहाई। जहं तहं करहु स्थापन जाई
यथा नृपति अनुशासन दीना। सादिर तथा

सचिव सब कीना। जप तप होम जग्य व्रत दाना। लगे सुकरम होन विधि नाना। जंह लग प्रजा नाम नृप रहयौ। आस्तिक धरम निरत सब भयऊ। सोरठा। भूप हमरि भग वान। करि स्नान द्विजवरण कंह। देत दान सनमान। राज काज ततपर भयो। ए। टीका। फिर कहते हैं कि हे मंत्री तुम आपको भी और यह संपूर्ण हमारी प्रजा जो है इसको भी

ग्रौर

१५
भ
१

वेदके अनुसार धरम मारगमे न युक्त करो अर्थात् धरमके रसते लगावो और जहां तक हो आज्ञा प्रचलत करदेवो कि सब कोई आस्तिक वैसव धरमको ग्रहण करके इस नास्तिक जयन मतका त्याग करदेवे जो कदाचित कोई इस मेरी आज्ञाको नही मानेगा तो मेरा सत्य प्रण है कि मे तिसके वंसका ना श करदेऊंगा और हे प्रधान सब तुम हम

१

२०

तो घोडे रथ मुद्रा मणी कंचन इत्यादि द्रव्य जो
है सो शीघ्र मंगावो और अतिथी साथ ब्राह्मण
पंडित कि जो वेदके जानने वाले हैं तिनको
भी वेग बुलावो मै सबको दान देकर भली
प्रकार संतुष्ट और प्रसन्न करूंगा और भी सुनो
कि जहां लग मेरा राज है तिस विषें जहां तहां
देव भवन अर्थात् मंदिर जो हैं सो वन वावो औ
र तिनो मे सब प्रजन के समाज सहित भगवा

३५
भ
३१

नकी सुंदर प्रतिमा स्थापित करदेवो इससे स
ब लोग धरमके सहित होयकर भगवानकी
भक्ती प्रीती वाले होय जावेंगे इसप्रकार राजा
की आज्ञा पायकर परम प्रवीन मंत्रीजो है ति
सने थोड़ेही दिनोंमे संपूर्ण राजमे तैसेही
यथावत सब व्यवस्था बांध देई नव खरव दे
शमे जहां तहां जप तप होम यज्ञ व्रत दान
इत्यादि सुकरम और धरम जोहैं सो नानाप्र ३१

कारके होने लगे और जहांलग राजाकी प्र
जाथी सब आस्तिक धरममें प्रवीन होय गई
और आप प्रजापाल भगवानको समरता
हुआ स्नान करके और अनेक प्रकारके दा
न ब्राह्मणोंको देकरके राजकाज विषे ततप
र होजाता भया । ९ । चौपाई । तद पश्चात स
विव हितकारी । कहिस वदन अमृगिरा उचा
री । यद्यपि प्रजा भूपतव पहू । भई परम रत

३५
भ
३२

विगत संदेहू। तदपि यज्ञ दान व्रत माहीं। वे
द विहित मारग कहु नाहीं। बीते विपुल का
ल महि साईं। धर्माचार लुप्त समुदाई। भ
व नवीन संपत अनुरागा। धरम प्रचार हो
न सब लागा। तातें पंडित वेद बहीनी। चा
हिये नृपति धरम हत नीती। जप तप क्रिया
यज्ञ व्रत दाना। सकल सिखावहिं वेद वि
धाना। मेरी वचन सुनन सुखदाई। बोलो

बदन मुदित दान गई । सोरठा । सचिव धरम
अनुगामि । शंकर चारज नाम प्रसा दीन
पाल मम स्वामि । ईहां याग संज्ञन शिषन ।
तव प्रधान इत जाय । आनहु किनहिं कि
शिष्यन कहं । सरहिं काज समुदाय । होहिं
मनोरथ सकल फर ९ । टीका । तिसतें उप
रांत सो हितकारी मंत्री कहने लगा कि हे रा
जन यद्यपि इह हमारी प्रजा धरम और स

करमोंमे लाग गईहै यद्यपि यज्ञ होम ब्रत
दान इत्यादि सुकरम जोहैं सो कुछ वेदकी
रीती और मर्यादाके अनुसार नहीं होतेहैं
क्योंकि हमारे देसमे पापाचार लपन्न हू
येको बहुत काल व्यतीत होय गयाहै अब
जो मनमान और प्रीती पूर्वक नया धरमका
प्रचार होने लगाहै तांते इस कारजके लिये
वेदके जानने वाले और नीती धरममे प्रवी

न पंडित जोहैं सो चाहिये वे जप तप यज्ञ व्रत
होम इत्यादि सब करम वेदकी विधी इनु सा
र लोगोंको सिखावैंगे इस प्रकार मंत्रीका
कथन सुनकर राजा आनंद पूर्वक कहने
लगा कि हे मंत्री आज सर्वजीवोंके हितका
री और धर्मके स्थापित करणे वाले शंकरा
चार्य नाम करके मेरे स्वामी सब शिष्योंके
सहित ईहां आये हूयेहैं तांते हे प्रधान सब

३५
भ
३५

तुम जाय करके तिनको अथवा तिनके शि
ष्योंको ईहां लै आवो तब हमारे कारज और
हृदयके मनोरथ सब सफल होय जावेंगे
१०। चौपाई। भूप रजाय सचिव अस पाई। श्री
धृ शंकर शिष्य वल्ये लिवाई। सादिर नृप
सामीप विठाये। महाराज स्वामी शिष आये
नृपति देखि तिनकर असवानी। बोल्यो ज
नहु परम रससानी। जपतप यज्ञदान व्रत

३७

नीती। शाखाधेन वेदव वरीती। इह लो
गन कहं देइ सिखाई। होहिं सकरम निरत
ठकुराई। ते सव सास धरण पति पाई। जंह
तंह ग्राम ग्राम प्रति जाई। लगे सिखावन वेद
विधाना। परम प्रेमजुत भूप सुजाना। वेद शा
स्त्र यज्ञादिक करमा। दान दयादि होम शुभ
धरमा। प्रतुदिन श्राध पठिन सव लागा। सु
इ ध्यान तात वड भागा। एस प्रकार सव वेद

पत

३५
भ
३५

35

वहीना। जपतप क्रिया दान मख रीना। सी
ले सकल लोक सुद मानी। भयो प्रचलित ह
रि मत स्वामी। निरत धरम सब प्रजा सु
री। मखव्रत दान करहिं नर नारी। श्राष नृ
पति संयुत श्रनुरागा। धरम सुकरम करण
बहु लागा। वासदेव पद कंज सुहाई। नित
नव उपजि प्रीति अधिकाई। सोरठा। जयन
उग्र मति कोय। रहागाण जोई ग्राम वस।

३५

लिये प्राण निजमोय। गवन्यो पवि हरि देस
नृप ॥ टीका। इस प्रकार राजाकी आज्ञा पा
यकर मंत्री जोहै सो ततकालही आयकर
के शंकरा स्वामी जीके शिष्योंको तहां लेजा
ता भया और वडे सनमानसे राजाके पास वे
ठाय कर कहने लगा कि महाराज यह स्वामी
जीके शिष्य आयगयेहैं तव राजा तिनको दे
खकर प्रीती पूर्वक परम रसकी भीगी हुई

वाणीसे कहने लगा कि हे मंत्रो अब तुम मे
रे राजमे जप तप यज्ञ दान व्रत होम वेद शा
स्त्र नीती धरम और सुकरम जो है सो लोगों
को भली प्रकार सब सिखाय देवो जहां लग
मेरी प्रजा है सो सब वे सब धरममे प्रवीन हो
य जावे तब वे स्वामीजीके शिष राजाकी आ
ज्ञा पायकर और ग्राम ग्राम विषे जाय कर
वेदकी विधी अनुसार सब धरम और सुक

इम लोगोंको सिखावने लगे और राजाभी

भली प्रीतीसे श्रद्धा वाला होय कर वेद शा

स्त्रके पढ़ने मे रात्री दिन अभ्यास करकर य

ज्ञ होम व्रत दान इत्यादि करम सब वेदकी

विधी अनुसारही करने लगा इसप्रकार जब

सं पूर्ण धरम और सुकरम आनंद पूर्वक स

ब लोग सीखगये तब स्वामीजीका मत जो

है सो जहां तहां भली प्रकार प्रचलत होय

ज्ञाता भया सरव प्रजा धरममै प्रवीन और
परम सुखी होय गई यत्त दान होम व्रत सब
नारी नर बडी श्रद्धा और रुचीसे करने लगे
और आपभी राजा अनेक प्रकारके धरम औ
र सुकरम बडी प्रीती पूर्वक करने लगा वा
सुदेव जो भगवान हैं तिनके चरन कमलो
मै नित्य नवीन नहीं प्रेम और प्रीती उपजती
भई नव राजाके राजमै कोई दुष्ट मनवाला

जयनी जो कहीं छिप करके रहा हुआ या सो भयके वश अपने प्राणोंको लिये हूये राजाके देशको त्यागकर किसी और देशको चला जाता भया । ११ । चौपाई । इस प्रकार जब स्वामि कृपाला । रहे प्रविष्ट वपुष महिपाला । न व तिन कहं षट मास विहाया । आयन दीन याल निज काया । रहे जवन शिष्य सेवक स्वामी । तिनमहं एक शीघ्र नर गामी । आ

३५ म ३८

त्वा हृदय गुनन असनाहं। राजे स्वामि नृप
ति वपु जाहं। मंद मंद लगि श्रवणन भासा
करुणानाथ षट्‌मास विनासा। नेल देश पु
भुजवन शरीरा। नास न देश कवन मति
धीरा। सुनि सिद्ध कवन स्वामि अनुरागे। मे
ह मंद अस भाषण लागे। रावह्रु जाय व३
ष ममजाहं। श्रावह्रु श्रानकालमे नाहं। श्र
सकहि ईहां सचिव जनमाही। बोलि भूपसु

३८

स गिरा उचारी। मै अस स्वपन रजनि कछु
देखा। कारण प्राण धरम नृप देखा। अब
मोरे कछु मरन न हेरा। अग्रभाग निज प्राण
न केरा। श्रवण नयन दृग ज्योति मलीना।
सकल अवैव शिथिल बल हीना। तांते तुम
विलंब तजि आजू। सकल राज अभिषेक
समाजू। आनहु यथा उचित अब जोही। मै
प्रिय तनय स्नेह निज कोहीं। सोरठा। देत

१५
भ
३९

राज अभिषेक। निजकर गवहुं परलोक क
हे। संयुत नीति विवेक तुम पाछे मंत्री सक
ल। जाहि प्रकार हित होय। नृप कुमार कर
सचिव जन। सेवहि करहु तव सोय। ग्रह हि
त प्रजा विचारि निज। ११। टीका इस प्रकार
जब कृपाके धाम स्वामीजी महाराज राजा
के शरीरमे प्रवेश पाय हूये कौतुक कर
तेरहे तब तिनको तहां छेमहीने व्यतीत

३९

होगयाथा दीन यात्र अपने शरीरमे नहीं आ
ये तब तिनका शिष्यपास आय करके कि
जहां स्वामी राजाके शरीरमे विराजे हूयेथे
सहजे सहजे कानोमे लागकर कहने लगा
कि हे दीनानाथ छेमहीने तो अतीत होगए
हैं सब तेलमे जो प्रभूका शरीर राखा हू
आहै तिसके लिये क्या आज्ञाहै ऐसे शिष्य
का वचन सुनकरके स्वामीजी आनंदसे स

इसे सहजे कहने लगे कि अब मेरा शरीर ज
हांहै यहांही रहने देवो मै कलको आयक
र तिसविषे प्रवेश पाऊंगा ऐसे कहिकर
राहा अपने संबियोंको बुलायकरके कहने
लगे कि भाई मैने आज रात्रीके समय स्वप
ने विषें प्राणोंके हरणे वाले धरम राजको
देखाहै अब मेरेको अपनी नासिकाका अ
ग्र भे.ग जोहै सो देखनही पडताहै औरका

नभी बोले नेत्रोंकी जोतीभी मलीन संपूर्ण
अंग शिथल और निर्वल होय गयेहैं तासे तु
म विलंभ मतकरो अब राज तिलकका य
था योग्य समाज जोहै सो शीघ्र ल्यावो मै
आजही अपने हाथसे श्रेष्ठ पुत्रको राज ति
लक देकर आप परलोकके मारगको च
लाजाताहूं पीछे तुममंत्री सब मिलकर
सोचो और वही विचारसे जिसप्रकार तुमा

३५
भ
५१

ये राजा और प्रजा का हित होइ सोई यतन क
रिये ।१९। चौपाई । भूप रजाय सचिव जन
पाई । सामग्री अभिषेक सुहाई । कीन त्वरित
संपादन सारी । शोकारत सब विनय उचारी
महा राज अभिषेक समाजू । रघुया योग्य भा
सेचित आजू । अब अनु मास जवन प्रभु क
रहो । दीननाथ सब विधि अनुसरहो । स
चिव गिरा सुनत नरराई । ज्येष्ठ पुत्र निज

41

लीन बुलाई। राज्यभिषेक वेद जस रीती।
दीन नरेश विविध कहि नीती। बहुरि सचि
व सेवक जन नाती। सब कहं जथा जोग
बहु भांती। सिक्षा दीन परम सुखदाई। नहि
पख्यान सुदिन नरराई। करि सनान पूजन ह
रि कीन्हा। विप्रन दान विविध विधि दीन्हा।
पावन सुखद भक्ति भगवाना। सत्व ब्रत
करम धरम मय दाना। सोरठा। सकल ब्र

त
नस्थापहू । कर^ स्थापित नृपति नव । हरि ह
रि हीन सनेहू । रटन कालवश सो भयो । ६।
टीका । नव राजाकी आज्ञा पायकर मंत्री
जोहै सो राज तिलककी यथावत सब साम
ग्री स्थापित देते भये और शोक करके दुःखी
भये हूये मुखसे विनती करकर कहने लगे
कि हे नाथ राजाभिषेक का समाज जोहै सो
सब स्थापित है अब प्रभूकी जो आज्ञा हो सोह

म सी सपर धारण करैं ऐसे मंत्रियोंकी वा
नी सुनकर राजा तरत अपने ज्येष्ठ पुत्रको
बुलाय करके वेदकी विधी अनुसार अने
क प्रकारकी नीती कथन करके राज तिल
क देदेता भया फिर अपने मंत्री सेवक और
जाती जातीके लोगोंको नानाप्रकारकी व
री सुखदायक शिक्षा देकर और भली प्रका
र सबकार्य कर तिसते उपरांत आप सना

१५
भ
४३

न करके आनंद पूर्वक भगवानका पूजन
किया और भक्ती प्रीतीसे अतिथी साधु ब्राह्म
णोंको नाना प्रकारके दान जो हैं सो देता भ
या इस प्रकार इहराजा सरव सखोंके देने
वाली भगवानकी पवित्र भक्ती और यज्ञ
व्रत होम दया दान इत्यादि सब करम औ
र धरमकी अवस्थाको भली प्रकार स्था
पिन करके फिर हरीहरी रटता हूआ कोन

४२

कमे सहजेही शरीरको त्यागकर अपने प
रलोकके मारगको सिद्ध करना भया अर्था
त् परलोकको चलाजाना भया ।३। चौपा
ई। करि कौतक अस स्वामि सुधीरा । बैठ
हूए निज भवन समीरा । तहांप्रवेश करत
तत्काला । उठे कृपाल परम प्रतिपाला ।
निकर शिषन उत कथा अलापा । लागे
करन भवन चैतापा । हरख उत्सव रुचिर

३५
म
धर

निज नाना । भे व्यवहार करत निधि ज्ञाना ।
एक दिवस करुणायत प्रमाना । सन्ध्या पूर्व
ण मह देस मझारा । करहिं निवास उत्तह्
ने भागी । नास्तिक निडर धरम परि त्यागी
तोकर नृपति प्रथम मति जोऊ । बोधाचार
निरत सठ सोऊ । जद्य प्रसंन नास्तिक मू
ला । निंदक धरम वेद प्रतिकूला । आये न
हो गवन करि स्वामी । संघुन निकर शिष

न नरगामी । बोध्या चार लोकरन देखे । शा
स्त्रार्थ शुभ विविध बसेखे ॥ लगे करन स्फनि स्र
ति द्वारा । भयो संवाद परस्पर भारा । यद्यपि
मूढ मंदमति हारयो । तद्यपि करत नहिंन स
ई कारयो । सोरठा । नव आराम मझार । एक
दिवस निज वहिर पुर । पंच भूमि आगार ।
तहां नृपति राजित रह्यो । दोहा । जयनावा
स्त शंकराचारज कृपा निकेत । आये जग

१५
म
५५

45

ल प्रसन्न मन निज निज शिष्यन समेत ।।४।।
टीका । तब इसप्रकार कौतुक करके बड़े
धीरजके धाम स्वामी जो हैं सो अपने तिसी
शरीरसे कि जो तैलके बीच रक्खा हुआ था
प्रवेश मायकरके ततकाल उठ खड़े हूये औ
र अपने संपूर्ण शिष्योंके साथ पूर्व तरह गा
ने आलाप और सब व्यवहार तैसेही करने
लग जाते भये तब एकदिन तिनोंने सुना

कि मरुदेश जो मारवाड़ प्रसिद्ध है तिस वि
षें बड़े उग्र अभागी और महामंद धरम के
त्यागी जयन मतवाले नास्तिक जो हैं सो
निवास करते हैं और तिनका राजा भी वेद के
विरुद्ध धरम का निंदक और वामाचारी म
हा नास्तिक पाप की खानी है तब स्वामीजी
अपने संपूर्ण शिष्यों के सहित गवन कर
ते हुये तहां को चले आवते भये जब तिन

ग्रथमोंको ग्रहणमें रुचे हूये देखा तब अनेक
प्रकार श्रुती और स्मृतियोंके प्रमाण देदे
कर शास्त्रार्थ जोहै सो किया और परस्पर अ
त्यंतही संवाद विवाद हूआ यद्यपि वे जड
बुद्धी वाले नास्तिक और धरमके विरोधी
हारभी गये तद्यपि हटके वश भये हूये
अभागी स्वीकार नही करते भये अर्थात
मानते नही भये तब एकदिन बडे मनोहर

र बागके बीच पंच भूमी अर्थात् पंज मजले
बने हूये महिलमें तिन नास्तिकों का राजा
जोहै सो सभा लगावता भया और तहां अ
पने शिष्योंके सहित तिन ग्रथमोंका बडा
भारी पंडित जयना चार्ज जोथा सोभी आय
गया और ईहां अपने शिष्योंको साथ लिये
हूये कृपाके धाम धरमके प्रतिपादन करने
वाले शंकराचार्य स्वामीभी आय जातेभये ४

२५
भ
४०

47

चौपाई। होन लाग तिनकर अतिभारा। आ
स्वार्थ कल विविध प्रकारा। विजय पराजय
होहिंन काहू। अधिक एकसें एक प्रभाऊ
नव जयना चारज अस बोला। कपट करा
हु मरम निज खोला। सुनहु नृपति निज
शक्ति प्रभाऊ। मोरे पहा जानि सबकाहू
भविष्यत काल आगम गति राई। प्रथमहिं
हृदय मोर सब आई। अकस्मात गत अंत

४०

अघाहीं। भेदत धरनि सलिल जगछाहीं।
इहगटह होहिं मगन तब राऊ। आवहिं अ
कस्मात पुनि नाऊ। जो तम कवहुं सवल
श्रमगूफा। होइ नाह पर नृपति अनूपा।
तवतो अव प्राण तव राई। नतर अगाध स
लिल गति भाई। तव नास्तिक माया निज
कीना। होन लाग मेदनि जल लीना। वेद
वात उतपात नपदू। देखि स्वामि विसमय

३५
म
५८

बस रेहू। जान्यो कौन नास्तिक माया। तोने
धरनि अगम जल छाया। सोरठा। जयन
सिद्धांती जोय। तब बोल्यो विस्मत चित।
हनहु नृपति अब सोय। मोर कथन संशा
य नहीं।।५।। टीका। तब तिस जयनी पंडित
का और स्वामी जीका परस्पर शास्त्रार्थ अ
नेक प्रकार करके होने लगा हार जीत को
ई नहीं मानता एकसे एक अधिक प्रभाव

५८

दिखावतेहैं तब महा कपटी जयना वाकुं
जोहै सो राजाको कहने लगा कि हेराजन
मेरेको अपनी शक्ती और विद्याके प्रभावसे
आगे वर्तमान होने वाला हतांत जोहै सोम
व जान पडाहै और तुमको मै कहि देताहूं कि
ईहां अब थोडी देरके पीछे अकस्मातही ए
थ्वीपर अत्यंत जलका समुद्र छायत होजा
वेगा और इह तेरा शहर तिस अनंत जलविषें

रु५
भ
४५

डूब जावेगा फिर अकस्मातही एक नाउका
अर्थात् बेडी आय जावेगी जो कदाचित तूं बल
और श्रम करके तिस नाउकापर चढजावेगा
तब तो तुमारे प्राण अचल होजावेंगे अर्थात् व
च जावेंगे नही तो इह जल बडा अगम और अ
गाधहै ऐसेकहि करके तिस नासिकने अप
नी माया जोहै सोकरी तब पृथ्वीपर आय
करके जलप्लावन होने लगा तिसको देख

करके स्वामी अवरजके वश होयकर कहने
लगे कि इहतो नाकोई वेदकी वात और ना
कोई उतपात भयाहै किस प्रकार इह अगाध
जल पृथ्वीपर छायत होने लगा जान पडता
है कि जयनी नास्तिकने कोई माया करीहै
इतनेमे सोजयन मतका आचार्य हृदयमे धी
रज धारकर राजाको कहने लगा कि हेराजा
माल देखो समय आयगया मेरे कथनमे ॐ

३५
भ
५।

50

कछु संशय नहीं सब सत्य है ।१५। चौपाई । आवा
सलिल धरणि गत पारा । कहि प्रकार अब नृ
पति हमारा । होवसि रहन भवन इहि माहीं ।
इह निमगण संशय कछु नाहीं । आई नृपति
देख पुनि तरनी । अब इहि काल विपति इख
हरनी । तहिपर हमहुं यतन मन दोई । बेग
अहूद धरनपति होई । अगम अगाध सलिल
गति नरहीं । आलिक पडू बुड जल मरहीं ।

५।

अस प्रकार नास्तिक जनराज। भयो अरूढ़
उदित जब नाज। सोरठा। प्रांकर बलात्तकार
अरु कछु पाक्ति प्रभाव निज। प्रेरत लीन नि
वार। नृपहिं अरूढ़ नरनितें। ९९। टीका। फि
र जयनी कहताहै कि हे राजन देख इह पृथ
वीपर कैसा अगाध जल प्रायकरके व्यापत
होय गया अब हमारा इस घरमे किस प्रकार
रहना होवेगा इहतो अबी डूबा चहताहै परंतु

३५
भ
५१

हे भूप तूं देख किइस कठिन कालमे विपती और कलेशके हरने वाली नाउका भी आय गई है अब यतनसे बलकरके हम तुम इसना उकापर शीघ्र चढजावें और सहजेही इसअ गाध जल को तरजावें पीछे इह नास्तिक जो है सो आपही डूबकरके मरजावेगा इसप्रका र तिस नास्तिकके सहित राजा जब नाउका पर बल और यतन करके चढने लगा तब

५१

सरव सामर्थ स्वामी जोथे सो जोरावरी परा

क्रमसें ओर कछु अपनी शक्तीके प्रभावसे

नाउकापर जातेहूये राजाको पकडकरके

अपनी ओर खैंचलेते भये । ॥ चौपाई । सोऊ

व मध्य जान जल आया । कछु कृपाल स्वामी

निजमाया । दीनसि फेर अंतगत वारी । ततछ

ण भयो लोप महि सारी । सोगत शक्र जयत

सिद्धांनी । नभतें गिरेउ धरनि इहिभांती । दू

रा
म
५२

टे अंग प्राण हन भयऊ। देखि भूप बिस्मम
य चित रह्यो। जोरि जुगल कर वचन बखा
ना। मै कृपाल कछु नाहिं न जाना। कारण
भयो कवन प्रभु एहू। उपजा हृदय मोर सं
देहू। बोले नृपति वचन सुनि स्वामी। इहु स
व रहो प्रथम पथगामी। निज माया बस उ
रजन भारयो। वहुत मोर जड प्राण वडायो
मै एख निज कौतुक राया। प्रेरत तुमहिं प्र

धम हतमाया। प्राण रहित करि धरनि गि
रावा। निजकृत दंड दुष्ट त्राण पावा। सोरठा
अव सुधरँ रतहोय। परि हरि न्टपति अधर्म
तम। निजकुलीन मत जोय करहु ग्रहण हे
दर सुखद।९। टीका जब सो जयनी तिस ना
उका पर बैठा हुआ जल के मध्य भाग मे चला
आया तब स्वामीजी अपनी माया और प्रभा
व का चमतकार दिखावते भये सो अगाध

२५
भ
५२

जल तरनहीं तहां पृथिवीमे लुपत हो जाता भया और वे प्रथम जैनी प्रकाश होयकर मा नो आकाशसे पृथिवीपर गिर पडा और अं ग अंग टूटकर प्राणोंसे रहित होय गया पै से तिसका मरना देखकर राजा अचरजके वश होयगया और हाथ जोडकर स्वामीजी के आगे प्रार्थना करनेलगा कि हेदीनदयाल हेकृपाके धाम मेरे विचारमे ऊछ नहीं आ

या जो इह कौन कारण भया है कृपाक
रके मेरे इस संशयको निवारण करिये
तब राजाका कथन सुनकर स्वामीजी
कहने लगे कि हे प्रजापाल इह जड म
हा अधरमी और नास्तिक वैस्नव मतका
विरोधी था और प्रथम पापकी खानी मेरे
को मारने वहता था मैने प्रथमही अपने
कोतकसे उसको घेर लिया और तिस

अधमको मायाके हर करके ततकाल प्रा
णोंसे रहित करदिया विक्रमादभी कोई
अंगदेव नहीं पड़ा इहने अपने करम कि
येका फल पाय लिया है राजन् अबतूं अ
धरमको त्यागकर धरमके सहित अपना
सुंदर और सुखदायक कुलीन अर्थात् स
नातन मत जो है सो गृहण कर। ८। चौ
पाई। नास्तिक अधम जपन मत जेहू। ल

व नर नाथ जोग कस पहू । स्वामी वचनसुन
त सुखदाई । नृपति वचन नम्रत सिर नाई ।
भाखत वदन शुक्र जगपाना । दीन दयाल तु
व सत्य वखाना । मिथ्यामंद जयन मत जोई
मै प्रभु तज्यो जानि जीय सोई । उचित कृपाल
जवन प्रव तोरे । आत्मिक ज्ञान कहहु प्रभु
मोरे । स्वामी विनय सुनत नरराई । भगव
त मंत्र परम सुखदाई । संशय उरत हरण

२५
भ
५५

जग पावन। सुजस करण कल भक्ति बढा
वन। हित उत परम हरष वशादीना। सादि
र नृपति ग्रहण करि लीना। सेवक सचिव
बोलि ततकाला। तिनहिं न देश दीन महिपा
ल। जहंलग देस सासना मोरी। नास्तिक नि
रत जयन मत जोरी। देहु निकारि वेग समुदा
ई। इह प्रपंच मिथ्या सब भाई। वेद उक्त पथ
तम सब कोई। निज निज चलहु परम रत

५५

होई। सोरठा। जब अधम अमदीन मेत्रि नकहं मेहन पती। तथा तिनहिं सबकी न। भयो जयन मत नष्ट तब। ९। टीका। फिर स्वामी कहतेहैं कि हेराजन इह महा अधमऔर कलंकके देने वाला जयन मत जोहै तुम इसके योग्य नहींहो तब इस प्रकार शंकरा स्वामीके वचन सुनकर राजा नम्र होय करके बारबार चरणोंपर सीस

३५
भ
५८

नावना भया और फिर हाथ जोड़कर विन
ती करने लगा कि हे कृपानिधान आपका
कथन सब सत्य है और मैने निश्चयकर जान
लिया कि इह प्रथम जयन मत जो है सो केव
ल नरक के ही देने वाला है तांते मैने इस उस
मत का त्याग किया अब हे दीनदयाल अनु
ग्रह करिये और मेरे को अपने चरनो का
सेवक जान कर सरब सुखों के देने वाला

ग्रात्मिक ज्ञान जो है सो दीजिये ऐसे राजाकी
विनती सुनकर ग्रोर तिसकी ग्रात्मिक परम
मे श्रद्धा देखकर सरव संशय ग्रोर पापोंके ना
श करने वाला भगवानकी भक्ती ग्रोर सुजस
के वढाने वाला सर्व सुखोंका मूल परम पवि
त्र भगवत मंत्र जो है सो वडे हरष ग्रोर हितवि
तसे स्वामीजी तिसराजाको सुनाय देते भये
तव प्रजापाल मानो सरव भवनोका सुख वि

चार कर बडे सनमान पूर्वक ग्रहण कर लेता
भया तिसतें उपरांत राजा अपने मंत्री और से
वकों को बुलायकर आज्ञा देताभया कि जहां
लग मेरा देश और राजहै तिस विषे जोकोई ड
ह जयन मतवाला देख पडताहै तिसको तत
काल मेरे राजसे बाहिर निकाल देवो क्योंकि
इह प्रपंच नास्तिक मतजोहै सो सब मिथ्याहै
और वेदके वाक्य जोहैं सोसब सत्यहैं तांते

तुम सब लोग अब वेदकी आज्ञा अनुसार
धरम और सुकरमोंमे परायण होय कर
सर्व सुखोंकी देने वाली भगवानकी भक्ती
जोहै सोई आचरण करो अर्थात् सोई धारण
करो जब इसप्रकार राजाने आज्ञादेई तब
तिन मंत्री और सेवकोंने बडे हितसे सीसप
र धारण करके तैसेही यथावत जहांतहां
सब धरमका प्रचार करके जयन मतका

३५
म
५८

अपने देशसे नास कर दिया । ८ । चौपाई ।
लाग सधर्म होन विधि नाना । जप तप य
ग होम ब्रतदाना । सवि सुकरम जुत प्रजा
सुखारी । वैस्नव धरम निरत नर नारी । इ
स प्रकार शंकर अवतारी । जहां तहां निद
रि जयन मन सारी । करत हविर दिग विज
य सहाये । मिथला पुरी मुदित मन आये ।
सो रमणीक द्विजन मन कैसे । मानहु पुरी

सरण श्रुत जैसे। वेदाध्वनी सुभग वर पाव
न। जहां तहां होहि ललित मन भावन। सो
रठा। सांख्य मीमांसा न्याय। अरु वेदांत सि
द्धांत श्रुत। सांगोपांग सहाय। युजरवेद हि
जगण पढैं।।१९। टीका। तिसतें उपरांत दि
नदिन यज्ञ होम व्रतदान धरमजोहैं सो नाना
प्रकारके होने लगे श्रोर सुकरमोंके सहित
प्रजाभी साची सब नारीनर जोहैं सो वेस्नव

३५
भ
५५

धरममैं प्रवीन होय गये इस प्रकार शंकर शंकर अवतारी संपूर्ण जगत मनका निरादर करके दिगविजय करते हूये आनंद पूर्वक मिथिला पुरीमैं चले आवते भये सो नगरी वरनण करके कैसीभी रमणीकथी कि मानो जैसी इंद्रकी पुरी देवताओंके सहित शोभा देती है जहां तहां परम सुख दायक और मनको भावनी वेदाधुनी होय रही

है और सांख्य मीमांसा न्याय वेदांत सिद्धांत
इत्यादि सब सांगोपांग चत्वर वेद जो है सो ब्रा
ह्मणों के समूह पढ़ रहे हैं । ८९ । चौपाई । ग्रा
म ग्राम प्रति होहिं यज्ञ नेहू । कथा कीर्तन विप्र
न हेहू । पूजन परम देव भगवाना । मख व्रत
दान होहिं विधि नाना । अस प्रकार हग देखि
सुहाई । मिथुला पुरी सरव सुख छाई । स्वा
मी हृदय परम हरषावे । बार बार नहिं वद

२५
भ
८

न सिहाये । तहि पश्चात जनक गृह मंडा । दे
खा धनुष भीम जगखंडा । जेवर सीये स्वयंव
र जोरा । श्रीरघुवीर भुजन बलतोरा । देखी पु
नि वैदेह कुलदेवी । गिरजे नाम मनुज सुरसे
वी । बहुरि देत्र वर व्याघर नामी । देखा शिष
न सहि प्रभु स्वामी । तहि पश्चात मुदित मन
माना । विहसर हृद करत स्नाना । दर्सन
शिलानाथ भगवाना । आय गवन करि कृपा

त

८

60

नियाना। जहां मुदित परिवारनि रेहा। मंदि
न मिसर शिषन जुतगेहा। आवत देखि स
ग उठि धाया। मंडिन मिसर हरष उरछाया।
दोहा। संजुत शिषन प्रणाम करि विनय
वदन उच्चारि। पाद्यार्घादिक कीन सवि पूजा
विविध प्रकार। २०। टीका। इस प्रकार ग्रा
म ग्रामविषे वडे आनंद और मंगल होतेहैं
और कथा कीर्तनभी ब्रह्मणोंके समूह वैठे

३५
भ
८१

हूये जहांतहां कररहेहैं भगवानका पूजन य
ज्ञ होम व्रत दान इत्यादि सुकरम जोहैं सो
भी यथाविधी नाना प्रकारहोतेहैं ऐसे मि
थला पुरीमे सुंदर धरमकी रचना देखकर
स्वामीजी हृदयमै परम आनंद मानकर स
खाओंको करके व्यापत भई हूई तिस पुरी
की वारवार श्लाघा और वडाई करते भ
ये तिसतें उपरांत राजा जनकके घरमै जा

य करके महादेवका टूटाहुआ धनुष कि जो
रघुनाथजीने सीताजीके स्वयंवर मे अपनी भु
जोंके वलसे तोड़था सो देखते भये फिर ज
नक भूपकी कुल देवीका दरसन कियाकि
जो गिरजे नामसे मानुष्य और देवताओं करके
सेवत कीहुई है और फिर अपने संकल सि
षोंके सहित व्याघ्रनामा क्षेत्र जो है तिसका द
रसन पाया तिसते उपरांत विह्मरकी निर्म

३५
भ
८२

ल उवरमै सनान करके फिरशिलानाथ भ
गवानका दरसन करते भये ऐसे सब दरसन
परसन करके फिर आनंद पूर्वक तहां चले
आये कि जहां मंडिन मिस्र अपने शिष्योंके
बीच बड़ी शोभासे विराजे हूयेथे तब शंकर
स्वामीजीको आवते देखकर मंडिन मिस्र
जो ब्रह्माका अवतारथे उठकरके आगे ही
लेनेको चलेआये और सब शिष्योंके

62

सहित बारबार दंड प्रणाम और बिनती ब
डाई करके अर्घ पाद्यादिक पूजन जोहै सो
सनमान पूर्वक सब भली प्रकार किया। २०
चौपाई। ल्याय ललित आसन निज शाला।
बैठारे प्रभु स्वामि कृपाला। मंडिन मिसर
हरष रस छाना। बोले बचन जोरि जुगपाना
अनुचित लषिय कबहुं प्रभु मोरे। एकहुं तो
कृपाल करहु तोरे। संशय हरहु मोर उर स्वा

३५
भ
८३

मी। हर सरूप तव जन अनुगामी। जोरिस करहु श्रवण सुनि पहा। तोन करहुं प्रभुक थन संदेहा। मंद हासयुत स्वामि उचारे। द्विजन होहि रिस कबहुं हमारे। जोवशि भूत क्रोध संन्यासी। सो अवश्य द्विज नरक निवासी। एकहु विप्र सज्जव तजि मोही। भाषहु यथा उचित कछु तोही। शंकर वचन सुनत अनुरागे। मंडिन मिसर कथन अस लागे

८३

गे । अहो विपुल अश्चर्य मंभासा । यद्यपि त
मंह नाथ संन्यासा । कीन निषेध काल क
लिमांही । कहि प्रकार अव तमंह गुसांई ।
वलातकार ग्रहण करि लीना । प्रभु तुमार
गति जायन चीना । सोरठा । असत्तव निरबि
प्रबंध । मोरे हृदय कृपानिधी । भयो परम
आनंद । जाहिंन वरणन सो किये । २१ टीका
और फिर घरमै स्थापकरके कृपाके धाम

३५
भ
६४

64

स्वामीजीको संदर आगमन पर बिठाय दिया
तब मंडिन मिसर हाथ जोड करके बिनती
करने लगे कि हे कृपानिधान जो आप दया
करके मेरे अनुचितको क्षमाकरो तो मै प्रभू
तुमारेसे कुछ पूछा चहताहूं तुम साक्षात
शिव सरूपहो आनुग्रह करके मेरे हृदय
के संशयको निवारण करो और जो कदा
चित मेरे पूछनेपर कुछ क्रोध करनाहो तोमै

स्वामी अपने संप्रदायको कभी कथन नहीं
करताहूं ऐसे मंडिन मिस्र जीकी परम व
तराई वाली वानी सुनकर स्वामीजी प्रसन्न
होयकर मंद हाससे कहने लगे कि हे ब्रह्म
ऐां विधि प्रधान ब्राह्मण हमकोतो कदापि
काल क्रोधनहींहै जोजगतमै संन्यासी होय
कर क्रोधके वशहोयगया तो वे संन्यासीभी
निश्चयकरके नरकवासी ही जानो हेब्रह्म

ए। अब सऊचको त्यागकर जो कछु पूछना
है सो पूछ मैं तेरेको जैसा योग्य होगा तैसा उ
त्तर देऊंगा। तब शंकर जीका कथन सुनक
र और तिनको प्रसन्न जानकर मंडिन मिसर
हरष पूर्वक कहने लगे कि हेनाथ वडे अ
चरजकी वातहै देखिये कि यद्यपि तुमने
ही कली कालमे इस सन्यासका निषेध
कियाहै अर्थात वर्जिन कियाहै अब किस

प्रकार हे प्रभू तुमनेही इसको गृहण कर
लिया इह कृपानिधान तुमारी गती वडी अ
गाधहै कोई जाननेको सामर्थ नहीहै इस
प्रकार नाथ तुमारा कौतक प्रबंध देख क
रके मेरे हृदयमे ऐसा आनंद परि पूर्ण होय
गयाहै कि जिसको मै कुछ कथन नहीं क
र सकताहूं । २१। चौपाई । भिन्न भेष धरम
वर रीती । कौन कथन जस वेद वहीती । सो

३५
भ
९९

66

साक्षात आपकर स्वामी। मै सब निरखि जन न अनुगामी। जस सन्मुख्य नाथ तव धारा। बचो कवन अस धारण हारा। मंडिन मिस्सर रुचिर सदुवानी। अस प्रकार जब वदन व खानी। शंकर सुनत नाम रुचि रचना। पर म सुखद कल कोमल वचना। अति प्रसन्न मानस अनुरागे। गिरा गूढ़ जनु भाषन लागे। अति आश्चर्य विप्र जीय मोरे। वेदा मरम

विदित सबकोरे । पुनि कस कहहु काल क
लिमाही । इह सन्यास उचित कछु नाहीं । अ
ब तुम सुनहु काल कलि कैसे । द्विज सन्या
स धरन विधि जैसे । अस कहि शंकर कृपा
अघाये । धरम शास्त्र मुख वचन सुहाये । ला
गे करण अनेक बखाना । सुनत श्रवण हि
ज सुमति निधाना । उनकर पद प्रणव स
खंडिन । लागो करन वदन द्विज मंडिन ।

रा
म
८२

अस तिनकर बहुते दिनमाना। भयो संवाद
परस्पर नाना। अजय युगल विद्या गुण साग
र। निज निज पक्ष उक्त दृढनागर। तब स्वा
मी अस वचन उचारा। बिनु मध्यस्थ न होहिं
हमारा। कछु सिद्धांत विप्रवर नीके। तो ते
फुरहीं मोर अस जी के। सोरठा। तब पन
नी वर जोय। बैठहिं सो मध्यस्थ द्विज। त
व हमार कछु होय। निश्चय हल सिद्धान्त

८२

३३ । २१ । टीका । फिर मंडिन मिस्र कहते हैं कि हे नाथ भिक्षु जो संन्यासी है तिसका धरम भेष और उत्तम रीती जैसे वेदकी विधी अनुसार कथन की गई है सो मैने साक्षात सब आपविषे देखी है हे कृपासिंधु जैसा सन्यास आपने धारण किया है ऐसा और कौन जगतमें धारण करणे वाला है इस प्रकार जब मंडिन मिस्रने बडी सुंदर और कोम

३५
भ
६८

68

ल वाणीसे वचन उचारण किये नव शंकर
स्वामी जिसकी परम सुखदायक और मंद
र रुचीवाली वचनाको सुनकर प्रेमसे गद
गद वानी होयकर वडे गूढ वचनोसे कह
ने लगे कि हे द्विज प्रधान मेरे हृदयमे वडा
आचर्ज आवताहै किंतु वेदके तत्वको भ
ली प्रकार जानने वालाहैं और फिर किस
विचारसे कहताहैं कि इह सन्यास कली

कालमै धारना योग्य नहीहै हे ब्राह्मण श्रव
नै श्रवण कर कि कलीकालमै किस प्रका
र और कोनविधी से सन्यास धारण किया
जाताहै ऐसे कहि करके शंकरस्वामी हरष
और उमंगसे परम पवित्र धर्म शास्त्रके वचन
जोहैं सोमुखसे अनेक प्रकार करके कथन
करने लगे तब मंडिन मिसर स्नान करके ति
नके वचनोका अपनी उक्तसे नाना प्रमाण

३५
भ
९९

देकर खंडन करदेते भये स्वामीजी फिर अ
पने पक्षको सिद्ध करतेहैं और वे फिर असिद्ध
करदेतेहैं ऐसे तिनकी चरचा और संवाद जो
है सो परस्पर बहुत दिनोंतक होता रहा दो
नो विद्या और गुणोंके समुद्र अपने अपने प
क्ष और तर्कमे बडे प्रवीनथे तब स्वामीजी क
हने लगे कि हे मंडन मिसर इस हमारी चर
चामे जबतक कोई मध्यस्थ नही होगा त्र

र्थात् बीच साक्षी नहीं बैठेगा तबलग कछ
भी सिद्धांत नहीहोगा अर्थात् हमारा सत्य असत्य
त्य कछ भी जाना नहीं जावेगा तांते मेरे विचा
रमै भावनाहै कि इह तमारी परम प्रवीन श्री
र श्रेष्ट पतनी अर्थात् स्त्री जोहै सो मध्यस्थमै बै
ठे इसके बीच बैठनेसे हमारे संवादका निश्च
य करके सिद्धांत हो जावेगा इहविजे पराजय
अर्थात् हार जीत सब आपकहि देवेगी ।२१।

१५
भ
१.

चौपाई। सुनहु विप्र तुम प्रिया सयानी। मैं सा
लात शक्तिवंत जानी। अस प्रकार जब स्वामी
उचारा। मंडिन मिस्र कीन सुईकारा। तब अ
स पतनि विप्र कहैबानी। शंकरस्वामि निज
वदन बखानी। है सुशील हिन जाति हमारा।
सत्यसत्य सिद्धांत प्रकारा। हृदय विचारि भल
हिं निज सोई। सुभ्रे पक्षपात गत होई। नु
वनयाय करि देहु हमारा। अस जब शंकर

70

वचन उचारा। हरष विवस तब द्विजवर ना
री। कहसि वदन मृदु वचन उचारी। शास्त्रा
र्थमै सुनहु हमारा। अरु कछुकरहु काज
श्रृंगारा। हम संवाद करहु निज दोई। मेरेय
था उचित कछु होई। तहिपर मै निजमति
अनुसारा। करहु कथन सिद्धांत हमारा।
अस कहि सो पतिव्रता सुहाई। पावन भूमि
थपाक विरचाई। राजे ग्रन्थ जवन विहाना

३५
भ
७१

देखत सवन निपुण मनमाना। तिनपे आय
वदन उच्चारी। कीन संवाद जुगल तम भारी
आतुर भये नाथ अवकीजे। भिक्षा वर्ण उक्त
श्रम कीजे। मंडिन मिसर मोन भावनी। श्री
यकर मुनि कटाक्ष रससानी। स्वामी हृदय
हरष अनुरागे। देन असीर वाद बहु लागे।
सोरठा। श्रम प्रकार समुदाय। जाना तुय ज
न हृदय निज। द्विज त्रिय दीन जनाय। अव

७१

ग्राहर मन्यस्त इह ।२३। फिर शंकर कहते
हैं कि हे ब्राह्मण इह हमारी स्त्री जोहै सोघर
म वर्त्तरहे है मे इसको साक्षात शक्ती रूप जान
ताहूं इस प्रकार जब स्वामी जीने कथन कि
या तब मंडिन मिसर स्वीकार कर लेते भये
फिर शंकर स्वामी ब्राह्मणकी पतनीको
कहने लगे कि हे सुशीले प्रवन्त हमारा हि
त जानकर श्रोर हृदयमे सत्यसत्य विचार

३५
भ
७२

कर हमारे संवादका न्याय करदे तब ऐसे शं
करकी वाणी सुनकर मंडिन मिसरकी स्त्री
जोहै सो हरष पूर्वक बडी कोमल वाणीसे
कहने लगी कि महाराज आप शास्त्रार्थ क
रिये मैं सुनतीहूं और अपने घरका काजभी
करतीहूं इसमे जैसा मेरी बुद्धी और विचारमे
आवेगा सो आपके आगे कथन कर देंगी
ऐसे कहि करके सो पतिव्रता भामनी अपने

घरमै भोजन वनाने लगी श्रोर घरका सेवा
दभी सुणने लगी जब सनती सनती जाब
भोजन वनाय चुकी तव संपूर्ण विद्वानोंके
देखते उठकर श्रोर तिनके पास जायकर क
हने लगी कि हे नाथ तुमने परस्पर वडाभा
री संवाद कियाहै तांते श्रातर होयगये हो
श्रव कृपाकरके भोजन पाईये श्रोर इस व
रवाके श्रमको दूर करिये श्रैसे स्त्रीकी सं

३५
भ
७३

दर कटाक्ष वाली वानी सुनकर मंडिन मि
श्र हृदयमै विचार कर मौन होय रहे और
शंकर स्वामी तिसकी चतुराई जानकर वडे
हरषसे वारवार आसीसा देने लगे तव सव
विद्वान जोथे सो हृदयमै जानगये कि इस
महा प्रवीन ब्राह्मणकी पतनीने अव आन्तर
सन्यास जो है सो जणाय दिया है । २३ । चौपा
ई । तव मंडिन द्विज वचन उचारा । कृपानाथ

कलि काल मझारा। इह ग्रातुर सन्यस्त गु
साई। रहेगोच्छाय सब संस्रति माहीं। तांते ह
मरे दीन सनेहू। करबो गरहण उचित ग्रव
एहू। इहिमे चतुरथ ग्राश्रम जोई। होहि न
सिद्ध कठिन प्रभु सोई। सुनहु स्वामि तव स
हश जेहू। वेद निपुण विद्या गुण गेहू। ग्ररि
वर्ग जिन जीति प्रचंडा। कीने दोष डंद गण
खंडा। दुरलभ तुमहिं कवन जगमाहीं। स

३५
भ
७८

७५

कल स्रलभ संशय कछ्नाही। इह सन्यास्य
रुचिर पद जोई। तमहिं जोग कहण विधि
सोई। इस प्रकार द्विज वचन सुहाये। स्वामी
सुनत श्रवण हरषाये। परम प्रसन्न वदन मु
सकाई। बोले वचन जनन सुखदाई। सोरठा
सुनहु विप्रजव कीन जे वरणन निज वदन
श्रव। सम्मति पद्ह प्रवीन। संहरण सिद्धांत
कर। ३४। टीका। तव मंडिन मिसर कहने

७८

लगे कि हे कृपा निधान इह प्रकार संन्यास
जो है सो कलि कालमै संपूर्ण जगत विषे लु-
प्त होय रहा है तातै हे भूप यद्यपि इसमै चौ
थे आश्रम का सिद्ध होना बड़ाही कठिन है त
द्यपि हमको यही ग्रहण करना योग्य है और
हे कृपानिधान तुमारे जैसे महानमा कि जो
वेद विद्या और गुणों मे प्रवीन और जिनोंने अ
ति प्रचंड शत्रुवर्गको जीतकर सरव दोषों

३५
भ
७५

75

और पापोंके समूहका नाश करदियाहै हे
प्रभू तुमको संसारमे कुछभी दुरलभ नहीं
है सब सुलभ अर्थात सब सहजे सुखालाहीं
है इसमै कुछ संशय नहीं इह जगत विषे से
न्यास जोहै सो दयाकी निधी तुमकोंही यो
गहै इस प्रकार मंडिन मिसरके वचन सुन
कर स्वामीजी हरषके वश परम प्रसन्न भये
हूये मुखमे मुसकाय कर कहने लगे कि हे

ब्रह्मणो विषे श्रेष्ठ है गुणोंके धाम तूने जो
कथन किया है सो निश्चय करके संपूर्ण शा
स्त्रोंका मत और सर्व सिद्धांतोंका मूल यही
है ।२४। चौपाई । द्विज उहिमे कुछ नहिंन से
देहू । कौन विचार जवन तव यहू । अब उचि
करहु संत समुदाया । भोजन दिवस दिवस
विपुल न भक्षाया । मंदिन मिसर हनन त
तकाला उठे वचन शंकर प्रति पाला । संज्ञ

रा
म
७९

न सिषन स्वामि मनमाना। करत पषारि च
रण अरुमाना। विनय वडाई विविध विधि की
ना। पाक जिमाय विप्र वर दीना। नव जुत
शिषन जनन अनुगामी। भोजन पाय मुदित
मन स्वामी। ज्ञान विचार बहुरि कछु आना।
करत परस्पर कृपा निधाना। होत विदाय
हरष उरछाये। मिथिला पुरी बहुरि प्रभु आ
ये। सोरठा। शंकर कृपा नकेत। अरु पावन

मंडिन मिस्र। चरित ललित सुख देत। य
था विदित संस्कृति सकल। तथा कथन मै
कीन। जो शङ्किकर सादिर सुनै। होहि भक्ति
हरि लीन। विगत शोक संशय सकल।२५
टीका। फिर शंकर कहतेहैं कि हे मंडिन मि
स्र इहजो तैने कथन कियाहै सो सत्यहै इ
समै कछु संशय नही अब सब संत उठिये
और भोजन पाईये दिनमान बहुत आय ग

३५ भ ७७

याहै तब ऐसे शंकर स्वामीकी आज्ञा पायक
र मंडिन मिसरजी ततकाल उठ खडेहूये ओर
जलका पात्र लेकर संपूर्ण शिष्योंके सहित
स्वामीजीके चरण ओर हाथ प्रक्षालन करवा
ये फिर सनमान पूर्वक पंक्तीमे बैठाइ कर
मुखसे नाना प्रकारकी विनती ओर बडाई
कर कर यथारुची भोजन जोहै सो जिमाय
दिया तबस्वामीजी प्रसन्न चित होय कर प

७७

इसपर कुछ और ज्ञान विचारकी चरचा क
रने लगे जिसके उपरांत फिर विदाय होयक
र सब शिष्योंके सहित आनंदसे मिथुला पु
रीको चले आये इसप्रकार यह शंकर स्वामी
और मंडिन मिसरजीकी मनोहर गाथा जैसी
क जगतमे प्रसिद्दहै तैसी मैने ईहां गायन
करदेईहै यह कैसीभी फलदायक गाथाहै
कि जो इसको प्रीती पूर्वक पढेगा अथवा

२५
भ
७८

सुनेगा तिसके शंकर भगवानकी कृपासे सब कलेश श्रोर दुःख दूर होजावैंगे श्रोर भगवानके चरण कमलोंकी पवित्र भक्ती जोहै सो प्रापत होवेगी ।२५। चौपाई। श्रव त्रितिये नारायण श्रेसा। कृपानाथ भव भीत विधंसा उदयना चारज नाम उजागर। मति प्रवीन विद्या गुण सागर। तिनकर कथा महातम सोहा। लोम हरष प्रद मानस मोहा। सो श्र

व करहुं कथन सब वदाई। मिथिला पुरी वि

पुगटहु आई। अवनरथो हारन दुःखदीना। वि

दित वेदपथ परम प्रवीना। गौतम मुनिकर

तल्प सुहाई। न्याय निपुण तिनकर प्रथिकाई

नव तहां समय काहु इक आवा। बोधा चरज

सुमति सुहावा। किरणावली ग्रंथ कलटीका

रचो करत श्रम नाम अलीका। सो श्रम पर

व जयनमत नागर। दरप मत्त विद्या गुण सा

रा. स.
म
७९

गार। लिये संग शिषगण अनुरागे। मिथला
पुरी हरष युत आगे। बोध सिद्धांत प्रकटवे हे
तू। बोल्यो शिषहिं जयम नद सेतू। पत्र द्वा
हिं कल्याण तुमारी। तजि बिलंब अब जाहु सि
धारी। राजे जहां भूपमिथलेसा। उनकर देहु
मोर संदेसा। सुनहो भूप वेद पथ जेहो। मिथ्या
भ्रांति मानि त्रव रेहो। मोर धरम वरवाका सु
हाये। कबहुं कि सुनहु श्रवण मनलाये। तो

निश्चय उपजहि तोहि ज्ञाना। मिटहिं ऊनर
क मोह भ्रम माना। वा कोई निपुण नीति म
ति वारा। वेद मरम सव जानन हारा। होहिं
तुमार देस नृप जोई। शास्त्र अर्थ मम मनसु
ए सोई। करहिं आय निज मति अनुसारा। वि
जय पराजय परहिं निहारा। गुरु अनुसास
पाय शिष तांहां। आवावेग नृपति गृह जा
हां। गुरुकर कथन वदन सव वरना। वोले

३५
भ
८

श्रवण सुनत पति धरना। तुम आपन गृहस
न जन जाई। मोर कथन मुख देहु सुनाई। मो
रे हृदय भ्रांति के तोरे। आवहु प्रात काल पै
मोरे। मैं तुमार विद्या चतुराई। देखहुं यथा उ
चित बनि आई। अस कहि नाथ विसरजन की
ना। इहां नदेश नृपति अस दीना। सुनहु वच
न मम पंडित सैनी। आवा एक निपुण मत
जैनी। सोरठा। आज मोर पुर माहिं। सो ना

८

80

तिक अत्यंत जड़। जहि वया कर पाहिं।
पावन पंडित जगतकौ २८। टीका। नाभा
दासजी कहते हैंकि अवजो तीसरे रूपाके
धाम संसारका भय हर करने वाले विसू
अवतारी उदयना चारी नाम करके बुद्धीके
प्रवीन विद्या और गुणोंके सागर सबलोगों
मे उजागर होतेभये तिनकी मनोहर और
हरषके देनेवाली सुंदर महानमके सहित

३५
भ
८१

81

गाथा जोहै सो हेमंत जनो आपके आगे गा
यन करताहूं कहतेहैंकि वे भगवान दीनें
के उख हर करणे वाले मिथिला पुरीमे आ
य करके बडे उत्तम ब्रह्मणके घरमै अवता
र धारण करते भये और थोडेही कालमै वे
द विद्या और नीती धरममें भली प्रकार प्र
वीन होय गये न्याय शास्त्रमै तिनकी अधि
कता जोहै सो गौतम मुनिके तुल्य होय जा

८१

ती भई तब तिसी कालमे एक कोई महा प्र
वीन वेदाचार्य किरणा वली नाम करके
टीकाके सहित बडा अद्भुत ग्रंथ यतन और
श्रमसे रचाय करके शिष्योंका समूह साथ
लिये हुये मिथिला पुरीमे वला आवता भया
तहां सो जैन मतका आचार्ज विद्या और गुणों
का समुद्र अभिमानसे मत्त भया हूआ अपना
बोध परम प्रकट करनेके वास्ते एक शि

षको बुलाय करके कहने लगा कि हे उत्त
मारी कल्यान होवे अब विलंबको त्यागकर
मिथिलाका राजा जोहै तिसके पास चले जावो
और मेरी ओरसे इह संदेस कहो कि हे राजन्
वेद शास्त्रका मारग जोहै तिससे तू भूला हू
आहैं और मिथ्या भ्रम करके ऊछ और मान
रहाहैं अबजो तूं श्रद्धा पूर्वक आय करके ह
मारे धरम शास्त्रके वाक्य श्रवण करैगा तो

निश्चय करके तेरे हृदयमै ज्ञान प्रकाश
होजावेगा और नरक ऊनरक भ्रम भय
इत्यादिभी सब मिट जावेगा अथवा तुमा
रा कोई बडा ज्ञानी विद्वान पंडित कि जो
वेदके तत्त्वको जानने वालाहो सो आय क
रके मेरे ज्ञानमुख शास्त्र ग्रंथकरे मे जिस
की विद्या चतुराई देखूं और ऊक्त दिखा
ऊं तहां हार जीत जोहै सो आपही जानी

३५
भ
८३

जावेगी तब गुरूकी आज्ञा पाय करके सो
शिष्य ततकाल राजाके पास चला आया औ
र गुरूका कथन भली प्रकार सब सुनाय
दिया ऐसे तिसके मुखसे वचन सुनकर रा
जा सुसक्याय करके कहने लगा कि भाई
तुम अपने गुरूके पास जायकर अब मेराभी
इह कथन सुनाय देवो कि मेरे हृदयमें औ
ती अज्ञानहै कि अथवा तेरेमे अब विलंब म

न लगावे प्रातःकालही हमारे इहां चले आ
वो मै तुमारी विद्या वल और चतुराई जेसे व
न पडेगा तेसे सव देखलेऊंगा ऐसे कहिकर
तिसको विदाय करदिया और ईहां अपने स
व पंडितों और विद्वान जनोंको बुलाकर क
हने लगा कि भाई आज मेरे नगरमे एक वो
य मतवाला महा नास्तिक और वडी उग्र बु
द्धी करके युक्त पंडित जोहै सो आयाहै और

84

जढ कैसाभी सामर्थहै कि जिसकी विद्या व
नराईका जगतमें कोई पंडितभी पारनंही पा
य सकताहै २९ चौपाई। आवहिं परम दरप
वश होई। तम तहिसन निजमति अनुसारा
शास्त्र अर्थकरि विविध प्रकारा। जोजीतहु
पंडित परिज्ञानी। तोमे अतिशसत्व सब भा
ती। ततर पराजय होत तमारे। उचित गृह
गमत ताख हमारे। हानि अस वचन भूप ज

व कह्यौ। अथो वदन सब तृष नि रह्यौ।
तिनमहं निपुण ज्ञान गुण धामा। रहे उदय
ना चारज नामा। सोबोले तब भूप सुजाना
सत्यवचन निज वदन बखाना। सुनिजै वि
जै नृपति जगदोई। हरि आधीन जानत सब
कोई। तुम चिंतापरि हरि समुदाई। देवहु
मोर उकत बलराई। यथाशक्त संभाषण हा
रा। एंबिडिन करहुं तासमन सारा। सुनि अस

१५
भ
८५

वचन भूप सब माना । विरच्यो सभा ज्ञान नि
जनाना । ऊहां हुत नरनाथ नदेसा । जाय गु
रुहिं निजदीन संदेसा । सो सुनि हरष्यो विउ
ल हंकारी । लिये संग सेवक निजसारी । आवा
शात सभा नृपमाहीं । सउव ज्ञास मानस क
छुनाहीं । सोरठा । तब नरनाथ प्रवीन । शास्त्र
ग्रंथ तरहिसन करन । हरषि रजायस दीन ।
उदयनाचारज कंह वदन । २७ । टीका फिरा

85

ना कहताहै कि मेरी सभाके बीच हंकारके
वश भया हूआ सो वाधाचार्ज प्रातःकाल अव
श्य आवेगा तब तिसके साथ अपनी बुद्धी
विचारके वलसे शास्त्र अर्थ करकर जोकदा
चित तिस अभिमानीको जीत लेवोगे तवतो
मै सरव प्रकार करके प्रसन्न होऊंगा नहीतो
तुमारे हारजानेपर हमको तिसकाही मत
ग्रहण करना योग्य होवेगा जब इसप्रकार

३५
भ
८९

राजाने वचन उचारण किये तब सुन करके
सब विद्वान जो थे सो अपने अपने सीस झुका
य हूये मौन ही होय रहे कोई भी कुछ उत्तर न
ही देता भया तहां तिनों विषे उजागर और स
थान बुद्धीवाले विद्या और गुणोंके सागर प
क उद्धवनाचार्ज होथे सो कहने लगे कि हे
राजन् यद्यपि तेरा कथन सब सत्य है तथापि
जगतमे जीत और हार रहदोनो जो हैं सोतो

भगवानके आधीनहैं इसमें किसीका बल
पराक्रम कछुनहीं चलताहै परंतु हे प्रजापा
ल अवंत् अपने हृदयकी चिंता और शोक जो
है सो त्याग और मेरी उक्त सामर्थ्य और मेरे ब
ल पराक्रमको देख जो मैं अपनी संभाषण
शक्तीके द्वारा अर्थात् वरवा अलापके द्वारा
जिसके अखंड मतको कैसे खंडिन करता
हूं इस प्रकार उदयना वासजके वचन सुन

३५
भ
८०

कर राजा अत्यंत प्रसन्न होयकर प्रातःकाल
होतेही नानाप्रकारकी सुंदर सभाजोहै सोर
चाय देताभया और जहां तिस जयनावाजेके
शिष्यने राजाका संदेश और कथन जोथा सो
अपने गुरूके पास जायकर सब स्पष्ट करके
भली प्रकार सुनाय दिया तब सो अभिमानी
सुनकरके हसा और प्रातःकाल होतेही अ
पने संपूर्ण शिष्योंको साथ लिये हुये अभय

होयकर राजाकी सभामे आय प्रापत भया
तिसको देख करके फिर तिसके साथ शा
स्त्र चर्चा करनेके वासते राजाजोहै सो उस
त होय करके उदयनाचार्जजीको आज्ञादे
ताभया। २७। चौपाई भूपवचन सुनि साधु उ
दारा। दरस मत्त जड़ नास्तिक भारा। मोरे
पडु मनोरथ राया। सोफुरकोन समझ्ह क
रिराया। तब द्विज श्रेष्ठ उदयनाचारी। तर

१५
भ
८८

48

न नाम मत खंडिनकारी। हृदय विचारि प्र
स करि दीना। हनत श्रवण सोई जयन प्र
वीना। उत्तर देतगुणन हंकारी। भयो विवा
द परस्पर भारी। करहिं एक हठ दूसर खं
डा। इस प्रकार संवाद प्रचंडा। करत परस्प
र तिनकर नाना। बीत गये बहुते दिनमा
ना। तवगत शास्त्र उक्त बलहीना। भयो श्रे
तमन जयन प्रवीना। जाना अजय वीर बुध

कोऊ। बोल्यो विप्रन धीरमत सोऊ। मै प
कल इह सकल जुडाने। कोऊन वचन मोर
न्रपमाने। इहसब करहिं पन्न प्ररिकेरा।
तोते सुनहु वचन न्रप मेरा। परि हरि शास्त्र
ग्रंथमै राई। करहु विचित्र चरित्र अधिकाई।
सोतुम सुनहु श्रवण मन भावन। शालिग्रा
म शिलावर पावन। जहिमध व्यापिरहो
हरिराई। सोमोरे नव देहु मंगाई। करहु वि

३५
भ
८९

मै निज मंत्र प्रभाव प्रचंडा। करहुं भूप देव
न तुम खंडा। पुनि जल सदृश देहुं वहाई।
तोमन मोर सत्य दृढ़ताई। जो एरव मम वि
प्रवीना। शिलावनाय वहुरि नसदीना।
तो निश्चय कर इहि मनसांचा। मेरो कथन
भूप सब कांचा। अब सई कार नृपपति व
र पहू। मिटहिं मोर मानस सन्देहू। सुनि अ
स भूपवचन नहिकेरा। उदयना चारजके

तनहेत। सोरठा। जब देख्यो रतनाथ। पा
यो द्विजवर मरम सब। कहिस वदन सुनिमा
थ। शास्त्रग्रंथ कछु रहनहीं। हरि प्रसादमे
राई। मै निजमंत्र प्रभावतें। जलकर शिला
वनाई। हरहूं प्रवश्य प्रपंच जड़ २८। टीका।
तब ऐसे राजाका वचन सुनकर सो जयनी
मुखसे साष्टसाष्ट उचारकर कहने लगा कि
हे राजन मैभी यही कहताहूं तूने वडी कृपा

३५
भ
पृ.

करके मेरे हृदयका मनोरथ फलकियाहै प्र
शांत सिद्ध कियाहै इतनेमें सर्व ब्रह्मर्षिओं विषे
श्रेष्ठ उद्दयना चार्यजी जोथे सो तहां ततका
लही तिस जयनीके मनको खंडिन करने वा
ला प्रस्नजोहै सोकर देतेभये तवसो वोधर्का
आर्चर्ज मनकरके ओर हृदयमें विचार कर
के उत्तरदेने लगा ओर उद्दयना चार्यजी तिस

मत

की उक्तको खंडिन करने लगे इस प्रकारपक

पृ.

के इष्ट और दूसरेके खंडन करनेमें तिनका
बहुतही संवाद होता भया और परस्पर वचका
आलाप करते करते तिनको बहुत दिन ।
बीत गये तब अंतको वे जयन मतका प्रवी
न पंडित उक्त और पाक्रमसे रहित बल हीन
होयगया और तिसने भली प्रकार जानलिया
कि इहकोई बुद्धीका समुद्र महावीर और अ
जय शुरुबीहै तब धीरजसे रहित और व्याकु

३५
भ
५१

ल होय करके कहने लगा कि हे राजन तुं देख कि मै अकेला और इह सब मिलकर एकाकार हुवे होय रहे हैं अर्थात सबकी एक सम्मती है मेरे कथनको कोई भी नहीं मानता है और इह सब शत्रूकाही पक्ष करते हैं तांते हे राजन अब मैं शास्त्र अर्थको त्यागकर एक औरही बडा अदभुत चरित्र करताहूं सोक्या है तूं श्रवणकर कि एक सुंदर और पवित्र

शालिग्रामकी शिला कि जिसमें साक्षात् भग
वान आपकेहैं सोमेरेको मंगवाय देवो मैं ति
सको अपने मंत्रके प्रभावसे सबके देखते ए
ड एंट कर देऊंगा+ तबतो मेरामन सत्य प्रतीत
होगा और जो कदाचित इसको सबके तस्म
ब्रह्मणने फिर शिला बनाय दिया तो निश्चय
करके इसकाही मत साचाहै हेराजन मेरा
मत काचा और असत्य होजावेगा परंतु अब

+ औरफिरतिसकोजल
समानकर्केबहायदेऊंगा

३५
भ
९२

यही दृढ रहना चाहिये मेरे हृदयका संशय
भी सब मिट जावेगा इस प्रकार निसजयनी
का कथन सुनकर राजा उदयना चार्जजीको
ओर देखने लगा तब उदयना चार्यजी राजाको
देखतेही सब मर्म पायकर ओर सीस धुनाय
कर अर्थात् सिरको फेरकर कहने लगे किइ
हकोई शास्त्र ग्रंथ नहीहै परंतु हेराजन् तूह
दयमें सोच समझकर देखमे भगवानकी कृ

पा करके अपने मंत्रके प्रभावसे अवी जलकी
सर्व तत्त्व शिला बनायकर इस प्रथमके प्रपं
च अर्थात् मायाको हरकर देताहूं ।२१। चौपा
ई । नव नरेश ततकाल सहाई । लीनरुचिर
हद शिला मंगाई । हेमपात्र धरि सभा मझारा
देखि बोय निज मंत्र उचारा । शिला विचित्र त
रत जलहोई । पुनि जल भयो लोप तण सोई
मंत्र प्रभाव प्रबल तहिकारी । देखत भये च

२५
भ
८३

कित चितसारी। तव द्विज श्रेष्ट उदयना चारी
सोष्ठभाव नहि सके सहारी। रिसकि बोधमत
खंडिन वारा। तुरत मंत्र निज वदन उचारा।
तव सवकर अविलोकत ताही। भा उतपत्न
सलिल महिमाही। पुनि हरव वन वन्या सहा
वन। सालिग्राम शिलामन भावन। भूपसहि
त पंडिन जनसारी। अस विचित्र अविचरत
निहारी। साधुसाधु कहि मन अनुरागे। वहु

८३

विधि वदन प्रसंसन लागे। तब बोले प्रभु व
चन प्रचारी। सुनहु सत्य जन बात हमारी।
मै फुरकीन कथन इहि केरा। अब इह कर
हिं भजन फुरमेरा। सिखर उतंग नाल द्रुम
जाई। हम जग करहिं प्रतत्ता राई। वेद प्रमा
ण मोर प्रभ काहा। अप्रमाण इहि करम त
राहा। प्रभ कहि होहूं विटप चुनदोई। जाक
र नृपति सत्यमत होई। तांकर रहहिं प्राणव

पु प्रता। करिहिं आपुवेद नहि रता। अस नरे
स मिथ्यामत जासा। सोमहि परत होव तण
नासा। कहिस भूप सुनि प्राण अविज्ञा। को
न तुमहु रह जवन प्रतिज्ञा। सोरठा। सोमोरे
मन माहिं सुनहु विप्रगण तव। अस कछु
भावति नाहिं रहिहैं होइहु विराम तव। २९।
टीका। ऐसे तिनका कथन सुनकरके राजा
ने हरषसे एक सुंदर पवित्र और बडी हद।

सालिग्राम भगवानकी शिला जोथी सो सब
ोंके पासमे रखवाय कर सभाके बीच तुर
तंही मंगवाय लई तिस शिलाको देखतेही
जयनीने अपना मंत्र जोहै सो उच्चारण किया
तब सबके देखते तुरतंही वे शिला जलसरू
प होय जाती भई और फिर जलभी ततकाल
सब तहांही लोप होयगया इस प्रकार तिस
के मंत्रका अद्भुत प्रभाव देख करके सबलो

ग अपने अपने हृदयमै बड़ा आचरज मानते
भये तब उदयनाचार्जजी तिस जयन्तीके ग्रे
से प्रभावको सहार नहीं सके कोपसे तुरत
ही तिसकी माया और मनको खंडिन करने
वाला मंत्र जो है सो उच्चारण करदेने भये तब
सबके देखतेही तहां अकस्मात् पृथवीपर
जल प्रकट होयगया और तिसनें वही सर्व
वन सुंदर और पवित्र शालि ग्रामकी शिला

५५

जोहै सो वनगई नवतो राजाके सहित सब
पंडित जन इस आचर्ज कौतक को देखकर
साधू साधू कहते हूये आचारी जीको बार बा
र शलाघा और वडाई करने लगे और फिर आ
चारीजी कहते भये कि हे सभाके संपूर्ण लो
गो अब मेरी और वार्ता सुनिये कि मैने इसके
कथन और मनोरथको पूर किया है अर्थात
पूर्ण किया है अब चहता हूं कि इह मेरे भी क

३५
म
९६

9 6

थान ओर मनोर्थको पूर्णकरे सो मेरा मनोर्थ
क्याहै कि मै ओर इह दोनो वडे ऊंचे नाल हूल
के शिखर पर जायकरके प्रतिज्ञा करनेहैं मै
कहता हूं कि वेद सत्य ओर प्रमाणहै इसका
मत इह रहा कि वे असत्य ओर प्रमाणहै ऐसे
थापन करकर हम दोनो तिस नमाल हूल
के शिखरसे कूद पडनेहैं तव होरा जन जिस
का मत सत्य होगा तिसका शरीर ओर प्राण

८ ग्र

प्राण रहेंगे अर्थात् नासको प्राप्त नहीं होवें
गे और वेद जिसकी आप सहायता करलेवें
गे और हे प्रजापाल जिसका मन प्रसन्न हो
गा सो पृथवीपर गिड़ताही अंग अंग टूट क
र प्राणोंसे रहित होजावेगा जब इस प्रकार उ
दयना चार्जजीके मुखसे प्राणोंके नासहोने
वाले वचन सुने तब राजा कहने लगा किहे
उदयना चार्जजी इहतमारी प्राण बालक प्र

२५
भ
९२

97

तिहारो जो है सो मेरे चित्त को नीको नही लगी
अर्थात् मेरे को भावती नहीं है तांते तुम कृपा
करके इस प्रणको त्यागदेवो कोई और वस
तकार देखो और दिखावो २५ चौपाई। नृप
बोले अस द्विजवर ताहीं। तुमहिं न काहू दो
घन रनाहीं। हम निज भक्ति शास्त्र बल पाई।
लागे करण प्रतिज्ञा घाई। होहिं नरेस सत्य
मन जासा। करिहौ तुम उपासना तासा।

ग्रह मिथ्यामत जासु निहारह्‌। तासु ग्रंथ ग
हि जलनिधि डारहु। ग्रह तिनमे ततपर नर
जोई। तासु प्रचारि कोपवश होई। देहु नरे
स दंड निजभारी। आस्तिक होहिं धरम रत
सारी। राउ विप्रहति गिरा सुहाई। जयनी श्रो
र हर्षि निजपाई। सो प्रमाण करि उक्तो दिसा
ई। शिखर तुरंत ताल द्रुमजाई। संप्रत वि
प्र जाय सट काढ़ा। वेद प्रमाण विप्र मुख

निज निजमत प्रभाव उरगाढ़ा॥ ८

रा॰ प॰ ७८

राखा। अप्रमाण नास्तिक असभाखा। सोर

ठा। असकहि चुतभये सोय। महाविटप कर

शिखरतें। आस्तिक नास्तिक दोय। इमरि इ

ह निज निज हृदय। २०। टीका। नव उद्भवना

थजी कहने लगे कि हेराजन् इसमे तुमारे

को कुछ दोषनहींहै हम परस्पर अपनी म

ती और शास्त्रका बल पायकरके इस प्रका

रकी इह प्रतिज्ञा करने लागेहैं कि अब इस

98

विषें हे नरेस जिसका मत साचा प्रतीत हो
गा तुम तिसकीही उपासना करियो अर्था
त् तिसकेही मत अनुसार चलियो और जि
सका मत असत्य देखोगे तिसके ततकाल
ही सबग्रंथ लेकरके समुद्र विषें डुबाय देबो
और जोकि तिन ग्रंथोंके पढनेमें तत्पर
होंगे तिनको कोपसे पकडकर और भली
प्रकार ताडना करकर अपने देससे बाहिर

३५ म ५५

निकाल दीजो तबतो हमारे राजमे सबलोग सुंदर धरमके सहित आस्तिक और भगवानकी भक्ती प्रीती वाले होय जावेंगे इस प्रकार आचारीजीके वचन सुनकर राजा निस जयनी की ओर देखता भया कि इहकया कहता है तब सो अभिमानी सईकार करके बड़े कोपमे तमककर उठ खड़ा हूआ और आचारी जीको लेकर ततकालही निस ।

अत्यंत ऊंचे तमाल वृक्षके शिखरपर जाय
करके स्थित हो जाताभया दोनोके हृदय
मे अपने अपने मनका प्रभाव उमड रहाहै
वेद प्रमाण आचारी जीने मुखराखा और अ
प्रमाण मुखसे तिस नास्तिकने भाखा ऐसे
कहिकर वेदोको आस्तिक और नास्तिक अ
पने अपने इष्टको स्मरतेहूये तिस बडे दी
र्घ तमाल वृक्षके शिखरसें कूदकर पृथवी

३५
मे
१०

108

पर गिर पडते भये । २० । चौपाई । तब बेदन नि
ज बिरद संभारी । आवत पंथ उदयनाचारी ।
साहिर गहित करन हरषाई । राख्यो धरनि
सहज डुत लाई । नारायण निज हृदय बि
चारत । आवा नृपति निकट गत आरत । सो
सठ बोध गगन पथ नाना । भ्रमत भ्रमत ज
ब धरनि गिराना । सकल अस्थि खंड मत भ
यो । बिक्रमात्र कछु शोधन रह्यो । देखत

१०

नृपति सकल विद्वाना । श्रुति प्रवरज निज
निज मनमाना । करि प्रणाम चरनन समु
दाई । लगे करण द्विज श्रेष्ठ बडाई । भक्ति ए
रवक वेद पुराणा । तव नरनाथ सत्य जीय
जाना । श्रुतजे ग्रंथ बोध मनभाये । दीन भूप
सव सलिल बुडाये । जहांलग रहे नयन मन
वारे । करि नरेस अन्वेषण मारे । ततक्षण
वहिर देस निजकीने । विपुल सुधरम निरत

३५
भ
१०

करिलीने । आए भक्ति पूर्वक अनुरागा । रवि
र स्यंदम कारण नृपलागा । रवि उपदेश वि
प्रवर पाई । वन्यो नाम सिव सेवक राई । बहु
विधि कीन भूप मनमाना । दीने चैल द्रव्य म
णि नाना । सोरठा । एक समय द्विज सोय । ज
गननाथ दरसन करन । चले मुदित मन हो
य । आये पुरुषोत्तम पुरी । २१ । टीका । तब वे
दीने अपना दया पाल विरद सुमरण करके

१०

मारगमैंहीं आवते उदयना चारजको वडे ह
रष और सनमानसे हाथोंमे धारकर सहजे
हीं स्नाय करके पृथवीपर राखदिया तव उः
ख और कलेशसे रहित सावधान होयकर
भगवानको सुमरते हूये आचारीजी राजाके
पास चले आवते भये और सो प्रथम वोध
अर्थात् जयनी आकाशके मारग भ्रमना
भ्रमता जो पृथिवीपर गिरा तो सव अंग अंग

टूटकर ततकाल मूर्छाको प्रापत होयगया
तब तिसकी ऐसी दशा देख करके सब वि
द्वान बडे अचरजके वश होय कर उदयना
चार्यजीके चरनोपर बार बार दंड प्रणाम क
रके अनेक प्रकारकी श्लाघा और बडाई कर
ने लगे राजाजो है सो भक्ती पूर्वक वेद और पु
राणोंको सत्य जान कर तिन जैनियोंके ग्रंथ
शास्त्रोंको मंगवाय करके जलविषे डुबाय

देता भया और जहां जहां कोई जयन मत
वाला देख पड़ा पकड़ करके तुरत अपने
देशसे वाहिर कर दिया और वहुत से सथर
मके सहित आस्तिकभी वनाय लिये और
आप भक्ती प्रीतीवाला होय करके राजा ना
ना प्रकारके धरम और सुकरम जोहैं सो
करने लगा उदयनाचार्ज जीका मंत्र उपदेश
पायकर तिनकाही सेवक होय गया और

३५
भ
१०३

कंचन भूषण वस्त्र मणियों करके तिनका अनेक प्रकार सेवन सतकार करता भया तब तिसतें उपरांत कछुदिन पाय करके उदयना चार्जजी जगन्नाथ स्वामीके दरसन करनेको आनंद पूर्वक पुरुषोत्तम पुरीको चले आवते भये। २१। चौपाई। मज्जन कीन प्रात मनमाना। उदय ग्रहण द्विजनाथ सु जाना। मनसुख जाय रुचिर हरिद्वारा। क

१०३

रि दरसन हृगकीन ज्हारा। वहुरि प्रवेश भ
वन जब वाह्ना। तव कपाट सनमुख जोई रा
ह्ना। भा संलग्न आपहुत ताह्ना। दूसर श्रीरग
वन द्विजनाह्ना। मुंद्यो सोऊ तव तीसर वोरा
आये विप्र सो वनहिं घोरा। प्रमप्रकार त्नपति
ये वतराया। मंदिन द्वार परनि स्तरपाया।
विसमय विवस लोग सब देखी। सकहिंन
वरित वाह प्रभुलेखी। तव द्विज श्रेष्ट उदयना

वारी। निजवर भक्ति दरप अनुसारी। कहिस
मन कछु भये मुरारी। निज ऐश्वर्य विवस मद
भारी। लागे मोर करण अपमाना। मूंदि द्वार
तब कृपानिधाना। पै तुमार इच्छित नी बडाई।
मोर अधीन सनहु सुरराई। तुम महिमा परि
हरण करंता। उपजे बोध विपुल भगवंता।
जब द्विजवर अस वदन उचारा। तत्क्षण खु
ले जुगल जुग द्वारा। रहे जवन तहं निकर १

जागी । देखत भये चकित चितसारी । लिये
संग द्विजनाथहिं ताहां । गये उदय भवन प
ति जाहां । दरसन ललित दिव्य भगवाना ।
दीनकराय सर्व सुखदाना । देखि दृगन द
रसन द्विजनाथा । करत प्रणाम धरनिधर
माथा । भक्तिपूर्वक बहुरि सुहावा । पूजन
कीन देव मन भावा । पुनि भेटादि राखि प्र
भु आगे । प्रसन्नति करण विप्रवर लागे । प्र

३५
भ
१०५

105

स प्रकार हरि दरसन पाई। ग्राये वहिर भव
न हरखाई। कछुक दिवस लग विप्रप्रवीना
तहां निवास रुचिर निजकीना। विश्वनाथ
कर जवन पुजारी। तव तिनकहं निसि स्वप
न उचारी। दीन जगाय दयानिधि पहूं। पाव
न मोर पीतांवर जेहू। मोरे भक्त रुचिर व्रतधा
री। विदित प्रवीन उदयनाचारी। सोरठा। ति
नकहं देवहु प्रात। मम प्रेमा ग्रवतार जग।

मोरी स्थिति विख्यात। तहि प्रसाद संसृति सकल। नतर बोध दुखदाई। दुराचार नास्तिक निडर। तेसामर्थ्य सतुदाई। करबे हिन विसकार मम। टीका। फिर उदयनाचार्यजी कहते हैं कि हे भगवन तुमारी स्थिती और वडाई जो है सो तो सब मेरे आधीन है अर्थात मेरे ही हाथ है देखिये कि तुमारी महिमा के दूर करने वाले बोध अर्थात जय

३५
भ
१०६

106

नी बहुत उत्पन्न भयेहूयेहैं जब इस प्रकार
उदयनाचार्ज जीने मुखसे उचारण किया त
व ततकालही मुंदे हूये चारो द्वार खुल जा
ते भये इस अद्भुतको देख कर पुजारियों
के सहित सबलोग बडे अचरजको प्राप्त हुये
नरनही बडे सत कारसे साथ लेकरके पुजा
री जोहैं सो भगवानके भवनमे चले आये औ
र तहां तिनको सरब सुखोंके देने वाला ज

गन नाथस्वामीका दिव्य दरसन जोहै सोभ
ली प्रकार करवाया तव भगवानका प्रेमासम
नोहर दरसन पायकर आचारी जी पृथिवीप
र माथाधरकर वारवार दंड प्रणाम करने ल
गे और फिर भक्ती प्रीतीसे सवपूजन सेवन क
रकर और दीननासे भेटा आगेराखकर नाना
प्रकारकी प्रसन्नती जोहै सोकरते भये प्रेमसे
भगवान कृपानिधानका दरसन पाय करके

३५
म

107

फिर हरषमे मगन भये हूये आचारीजी ततका
ल भवनके बाहिर चले आये और कितनेक
दिन तहां भगवानकी नगरीमे निवास करते
भये एकदिन रात्रीके समय पुरुषोत्तम भग
वान अपने पुजारियोंको स्वपनेमे कहने लगे
कि उदयना चार्ज नामकरके मेरा परम हित
कारी और व्रतधारी भक्त जोईहां मेरे नगरमे
निवास करताहै तुम प्रातःकाल होतेही मेरा

इद पीतांबर अर्थात् पीतवस्त्र जोहै सो श्रोढ
ने केलि ग्रंतिम मेरे प्रवीन भक्तको देदेवो
क्योंकि वे मेरा ऐसा अवतार है और मेरी स्थि
ती जगतमै तिसकेही प्रसादसेहै नहीतो अ
नेक महामंद और अधम दुःखके देनेवाले
दुष्ट बोधाचारी पृथ्वी तलपर मेरे निरादर
करनेको सामर्थ्य है। २२। चौपाई। देखि रज
नि अस स्वपन अजारी। सकल परस्पर हृदय

विचारी। पीतांबर भगवन सुखदाई। तिनहूं
दीन द्रुत द्विजहीं लयाई। पाय दिव्य हरि चेल
नवीना। विप्र प्रवीन सीस धरि लीना। करि
प्रणाम पूजन मनमाना। लीये प्रसाद कीन प्र
स्थाना। मिथिला पुरी हरष उर छाये। संजुत शि
षन भवन निज आये। तहां रजनि दिन विवि
ध प्रकासू। लग्यो होन वर धरम प्रचारू। वेद
प्रवीन लोक सब कीने। देसदेस पंडित भरि

108

दीने। विमउत भयो धरम पथनीके। विप्रप्र
साद सुलभ सबहींके। अजहूं नाम वेसवर
केरे। वेद निपुण पंडित बहुतेरे। सो अस वि
प्र उदयना चारी। भये जदपि अवसर अनुसारी
जरा ग्रस्त जब भयो शरीरा। तब आये समिथ
र धरिधीरा। कछुक दिवस जबगये विहाई।
करत निवास तहां द्विजराई। तब जोई बस्र
नाल विताता। मणीकरण काकर सुख दा

३५
भ
१०९

ता । तहां आय अवसर अनु सरयो । लीलामा
त्र प्राणपरि हरयो । तजि नरकाय भुशातन दे
हू । वैसव रूप चतरभुज जेहू । धरि विचित्र नि
ज लोक सिधाये । अस प्रकार अवनी तल आ
ये । रचक धरम उदपना चारी । बोध प्रचार प
रनि तपकारी । तिनकर कथा महातम एहू
सादर सुनहिं श्रवण नरजेहू । सोरठा । होहि
धरम रत सोय । उपजहि हरिपद भक्ति उर । अ

१०९

रु निश्चय तहि होय दिन दिन सुमति प्रकास
जग २३। टीका। इस प्रकार रात्रीके समय स्व
पन देखकरके और सब पुजारी परस्पर वि
चार करके भगवानका बडा दिव्य पीतांबर
जोहै सो लायकरके प्रीति सनमानसे उदयना
चार्यजीको देदेते भये तबसो आचारी ऐसे पर
म पवित्र और सुखदायक भगवानके पीतां
बरको लेकरके हरषमे मगन भयेहुये वारवा

र सीसपर धारन करते हैं और अपने आपको ध
न्यधन्य मानतेहैं इस प्रकार कृपासिंधुका पीतां
बर प्रसाद पायकर और भक्ती प्रीतीसे भजन से
वन करकर फिर बारबार दंड प्रणाम करते हू
ये विदाहोयकर सब शिष्योंके सहित मिथिला
पुरीमे अपने घरविषे चले आये तहां तिनकी
कृपासे दिन दिन अधिकही धरमका प्रचार हो
ने लगा सब लोक वेदमे भली प्रकार प्रवीन

करदिये देस देसविषैं जहां तहां पंडितही प्र
कट होयगये सरव ठौरमै धरमही देख पड
ताहै अब लगभी तिनके वंसके वेदमै प्रवीन
बहुत पंडितहैं सो ऐसे धरमके स्थापित क
रने वाले उदयनाचार्जजी समय पाय करके
वृद्ध अवस्थाको प्रापत होय गये तब शरीर
को सिथल विचार कर मिथिलाको त्याग
कर श्रम और यतन करके शिवपुरी जो।

३५
भ
॥

काशीहै तिसविषे चले आवते भये तहां नि
वास करते और विश्वनाथका दरसन पावते
हूये जब कछुकाल वतीत होयगयें तब सम
यके अनुसार एकादिन मणिकरणकाके अ
स्थानाल विषे आयकर कौनकसे सहजेही प्रा
णोंका त्याग करदेते भये और इस मानुष्यका
याको छोडकर अपना सर्वला वैसव चतुर
भुज रूप शरीर जोहै सो धारण करके आने ॥

इसे अपने लोकको चले जाते भये इस प्रका
र इह धरमके रक्षक और बोध प्रचारका ज
गतमे नामकरने वाले उदयना चार्जजी लो
गोंमें प्रसिद्ध होते भये तिनकी इह बडी मनो
हर और अदभुत गाथाजोहै इसको जोकोई
प्रीती पूर्वक पढेगा अथवा श्रवण करेगा
तिसको भगवानकी कृपासे अवश्य धरम
की प्रापती होवेगी और हृदयमे दिन दिन

२५
भ
११५

सत्व और सुमती की अधिकता होती जावे
गी ।२३। इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भ
क्ती महात्म्ये भाषाटीकायां शंकराचार्य त
था उदयनाचार्य चरित वरणनं नाम
सरगः ॥ मीहांसिंहकृत

का हीन और मोहकी फासीमे बंधा हूआ नि
पट मूढ और अमाध है कृपा निधानकी माया
के जाननेको इहमंद कहां सामर्थ होय सक
ताथा कृपा करके इस जडके अपराध को
क्षमा करिये हे दीनदयाल त्रणके मरदन क
रनेसे तुमारा ऊछ यश नहीं होताहै इस प्र
कार तिस दैत राजकी स्त्रीका वचन सुन क
रके भगवान कहने लगे कि हे दैतपतनी

२४
भ
११३

1113

इह प्रल्हाद मेरा भक्त जोहै सो मेरेको प्राणोंसे
भी अति प्याराहै और इस दुष्ट ग्रानमाने मेरे भ
क्तको दिनदिन तिरसकार करके नाना प्रका
रका दंड दियाहै सोइह ऐसे अपने प्यारे भक्त
का कलेश मेरेसे कैसे सहारा जाताहै क्यों
कि मै तिसके हृदयमे व्यापकहूं मेरे भक्त
का शरीर जोहै सोमेरीही कायाहै ३७। चौपा
ई। छत्र पवाँप्रकन कीना। मानहु हृदय वज्र

११३

सठ४

थरि लीना। कीन अनर्थ विपुल गत दाया।
नाना दीन दंड दुःख काया। मोर भक्त प्रति कु
ल अभागी। कहि प्रकार अव देवहु त्यागी।
जीयहिं वदन नव देत वखैना। प्रिया कुरंग शा
व वर नैना। कसत वेग अंता घर जावहु। कव
न हेतु दारुण दुख पावहु। निकसत प्राण मो
र अव देवी। होहि कलेश तुमहिं अवसेवी।
वकतर भीम जासु मृगराया। अखिल लोक

३४
म
॥४

ब्रह्मंडनि काया। मैं कवलाय मान पिय देख

हूं। अति अनंत माया कछु लेखहूं। अरु कल

पांत काल जोई अगनी। सो न कोय इहि सह

श दचनी। तांते अहित करन इहि केरी। मोत

प्रतीत कवन विधि मेरी। पति मुख गिरा सुन

त असरानी। आरत करत दीन वन बानी।

वाहन चलन प्राणपति तोरे। कहि कर धा

रण आज प्रभु मोरे। अव पश्चात जियन संसा ॥४

114

रा। कहहु प्राणपति कवन प्रचारा। अस कहि
रुदन सहित कर जोरी। हरि सनमुख करुणा
नहि थोरी। कहत प्रणत मोचन भगवाना।
धीर वीर प्रभु कृपा निधाना। तोसे अस साखा
न विवेकी। लागे करण चपलता शाखी। सो
रठा। तो करहुं कसनाहिं। प्रति निसर्ग चंच
ल मनुज। चपलताई मनमाहिं। तव बोल्या
प्रल्लाद अस। ३८। टीका फिर भगवान कहते

हैं कि देखो इस महा मंदने कुछ पत्र पलका
विचारभी नहीं किया मानो हृदयमे वज्र धा
र कर महा अनर्थ किया और नाना प्रकारका
दंड डाल दियाहै ऐसा अभागी जो मेरे भक्तके
विरुद्धहै अर्थात् मेरे भक्तका वैरीहै मै तिस
दुष्टको किस प्रकार छोडदेऊं ऐसे भगवान
का कथन सुनकर देन राज अपनी स्त्रीको क
हने लगा कि हेप्यारी हेमृग नयनी अवन्ते अंतः

115

पुरमै अर्थात भवनोंके भीतर क्यों नहीं च
ली जाती किसलिये परम दुःख और कलेश
को प्राप्त होय रही है अब मेरे इन प्राणोंको
निकसते देखकर तेरेको और भी कलेश हो
वेगा और तू कैसे सहार सकेंगी तांते अपने घ
रको चली जा हे प्यारी तू देख कि जिस प्रचंड
पराक्रम वाले मृग राजका महा भयंकर मुख
है कि जिसमै अनंत लोक और अनंतही ब्रह्मं

इसे नगीरण अर्थात निगले हूये देखताहूं और
अनंतही मायाभी लखता हूं प्रलय कालकी
अगनी जोहै सोभी जिसके क्रोधके समान
दगध करने वाली नहींहै ऐसे महा कालके
हाथोंविषे पकड़ा हूआमे कैहा प्यारी अब के
से छूट सकताहूं इस प्रकार पतीका वचन
सुन कर पती जोहै सो दुःखी होयकर दीन
वाणीसे कहने लगी किहे नाथ अब तुमारे

११८

प्राणतो चलने चहतेहैं मै किसकी शरणको
प्राप्त होऊंगी ओर पीछे संसारमे मेरे जीवने
का कौन आधारहै ऐसे कहिकर ओर वडे ह
दनसे हाथ जोडकर परम विलापसे भगवा
नके सनमुख विनती करने लगी कि हे दीन
जनोंकी पीडा हरणे वाले हे वीर धीरों शि
सिरोमणी हे कृपा निधान अब जो तमारे ने
सेही साक्षात विवेक ओर विचारके धनी ऐसी

२४ म ११७

चपलता करने लगे तो इह चंचल सभाव वाले मानुष्य जोहैं सो क्या उपद्रव नहीं करेंगे ऐसे माता का वचन सुनकर प्रह्लाद जिस प्रकार कहने लगा सो आगे कथन किया जाता है। २८ चौपाई। अब साहस परिहरि महतारी। ऐता परकहु जाहु सिधारी। हठ परिणाम मातु भल नाहीं। समय विचार देख मनमाहीं। अन हित तजहु जानि हितजीके। करहु न सोच ज

११७

नति उरपीके। सुनि सुत वचन कहत अस मा
ता। तुमकहु राखि उदरमै ताता। जनम्यो दै
भूरि सुतनपाता। वरधित कीन पाय श्रम ना
ना। करत सुतनचतुराई अवलेवा। अब फलहीन
पङ्गु सुत अंवा। जनक मरण कर तुमहिं उछा
हा। सुनि अह्लाद वदन अस काहा। जनक उ
पाय मात हन मोरे। विरचे जवन विदत सब
तोरे। पितुकीन्यो अनुचित अतिभारी। सोहु

३४
म
११८

पाल प्रण नारन हारी। सहिन सके जनकर
अपमाना। अब कस छाडहिं कृपा निधाना।
सोरठा कहिस वदन नव मात। जनक मरण
नमरे सजस। कृत्य कृत्य भा तात। सुनि वो
ल्यो प्रह्लाद अस। ३५। टीका प्रह्लाद कहताहै
कि हेमाता अब विलापको त्यागकर भीतर
घरको चली जा इह हठ करनेका फल शुभ
नहीं होताहै अब देश और समयको हृदयमे

विचार गुन हिनको छोड और सुंदर हिनको
मान पतीका सोच मतकर वे सोचनेके योग्य
नहींहै ऐसे पुत्रका वचन सुनकर माता कहृ
ने लगी कि हे तात मैने तेरेको नौ महीने उदर
मे राखकर जनमा और फिर प्रीती पूर्वक अ
पना दूध पिलाय पिलाय कर बडे श्रम और
यतनसे नानाकलेश सहार कर पालाहै अब
कृतघ्नताई करके माताको निसपालने योग

३४
भ
११५

११९

णोका यही फल देताहैं कि पिताके मरणेका
ह्रदयमे अत्यंत उतसाह मानताहैं नव प्रल्हाद
कहने लगा कि हे जननी तूं भली प्रकार जा
नतीहैं जो पिताने मेरे मारनेके वासते अनेक
ही उपाय कियेहैं और बुद्दीका हीन भगवान
के दीन पाल विरदको ऊकुभी जान नही स
का कि कृपा सिंधूको अपने जन कैसे प्यारे
होनेहैं तोने यही तिसका अनुचित और आप

११५

राय विचार कर दीन वंधु सहार नहीं सके ग्र
व कोपके वश भये हूये भगवान तिसको के
से छोड सकतेहैं ऐसे सुन करके माता कह
ने लगी कि हे पुत्र ग्रव मैने जान लियाहै जो
पिताके मरनेका तेरेको सजस शापत भया
है ग्रौर तूं हत कृत्य हो गयाहैं जो कुछ कर
नाथा सो कर चुकाहैं तब जिस प्रकार प्रल्हा
द उत्तर देताहै सो ग्रागे कथन कियाजाताहै

३५ भ ९.

१२०

३९। चौपाई। जपतप योग जतन बहु साधन। करहिं जवन भगवान अराधन। संत सिद्ध तापस मुनि ज्ञानी। जोगीश्वर रत ब्रह्म अभिमानी। तिनकर अंतकाल भगवाना। चिंतन किये मात्र प्रभु ध्याना। आवत नाहिं त्रास भव हारी। सो प्रतक्ष अबदीन उधारी। धरि उछंग तेरे पति प्राणा। बैठे दीननाथ भगवाना। सरव काल कल्याण सहाई। इह दूषण भू

९.

छगा सुरमाई । सुनि प्रह्लाद जनक सनवानी
भाखी जनहुं अमिय रस सानी । धन्य तात त
व धन्य प्रशंसा । उपजत कीन जासु सव वंसा ।
करि वैकुंठि कंठरय निंदा । किये विदलन
उरन कर हृंदा । पावन पद सरोज जनपाला
प्रभु सख कंद मुकुंद कृपाला । प्रापत भयो
तात वड भागी । दोष कलेश किलख वसु
त्यागी । तव पितु धन्य धन्य प्रभु सोई । तम

पे कृपा जासु ग्रस होई। सोरठा। मोरी दंड प्रना
म। तुमकहं ग्रह भगवान कहं। दीन जासु नि
ज धाम। पित तुमसे रन देष कहं। ४५। टीका
प्रह्लाद कहताहै कि हे माता संत सिद्ध तपस्वी
मुनी ज्ञानी ग्रौर बडे बडे योगीश्वर ग्रमानी कि
जिनके हृदयमे कछु मान नहीहै सो ग्रनेक
जप तप योग जतन ग्रौर हठ साधन कर कर
भगवान का ग्राराधन करतेहैं पंरंतु वेपरण

१४
भ
२२।

२२।

परमात्मा और अनंत मायावाले भगवान
तिनके ध्यान मात्रभी नहीं आवते हैं देख आज
तेरे पतीके उदय भाग्य कि सो दुराराध्य भग
वान कि जो बडी कठिनतासे आराधे जाते हैं इ
स तेरे पतीको अब अपने उत्संग अर्थात् गोदीमे
लिये बैठे हैं हे माई आज सर्वदा शुभ और कल्या
णहीहै और इसके रह दूषणभी सब भूषणही
होयगये हैं फिर पक्षाद अमृत रसकी भीगीहू

ई वाणीसें पिताको कहने लगा कि हे जनक हे धन्य तूं धन्य है तेरी मै कहांलग श्लाघा ओर व र्णई करूं कि जिसने आज संपूर्ण अपने वंसका उद्धार कर लिया है ओर वैकुंठ निवासी नरसिंह भगवानकी निंदा करकर अपने पापोंके समू हका नास कर दिया है ओर संपूर्ण कलेशोंसे र हित होकर सरव स्रष्टिके मूल भगवान कृ पा निधानके चरण कमल जो हैं सो प्रापत क

१२२

अथ ज्ञानदेव चरित्र वरणनं । दोहा । मंगलवि

स्वसंपदा करन पवित्र महान । विस्वभक्त मे

चारिवर लोकविदित यशमान । भक्ति मुक्ति ज्ञ

न ज्ञानविधि सकललोक हितकारि । तिनकर

कथा यथामती करहुं कथनभ्रमहारि । चौपा

ई । विस्वस्वामि परम व्रतधारी । निंबादित्त माध

वाचारी । रामानुज गौरव गुणलीना । इहूवल्ल

भ हरिभक्ति प्रवीना । इनकरसिष परसिष

समताई। सम्मत भक्ति महातम पाई। पूजनीय
संसार कहाये। जीव अनंत पतित उधराये।
अजहुं प्रभाव भक्ति निज साहीं। करत अलं
कृत भेदनि काहीं। विप्र स्वामि वेस व्रतधारी।
संभव भये वल्लभाचारी। उज्जतैलंग विदित
दाहानी। तिनकर कथा सुनहुं भ्रमहानी।
अवसर एक विप्र वडभागी। त्रिय समेत १
निजदेस तयागी॥ अस्तन अजा विसंत ष्टचित रही अरचन
चितलीन

विपुल लोक पतिलोक असनाह महानमवीन
सिषसेवक नाकेभये करम वचन मनकाय ।
निसिवासर सेवत सकल भक्ति प्रीति सरसाय ८
टीका। अविविस्तु संप्रदाके प्रविरन करनेवाले
वडेवैसनव भक्त और यशमान भक्ती मुक्तीके
सहित ज्ञानकीनिधी सर्वजीवोंके हितकारी
और व्रतधारी चारमहात्मा होतेभये तिनको
वडी सुखदायक और भ्रमके नासकरनेवाली

४८
भ
२

गाथाजोहै सोजैसीकबुद्धीके अनुसार होयसकतीहै
कथन करताहूं परमपवित्र व्रतकेधारनेवाले वि
ष्णुस्वामी और निंबादित्य तैसेही माधवाचारी औ
र सर्वगुणप्रधान रामानंदजी इन्हचारोंजोहैं सो
भगवान के परमचतुर भक्त होतेभये औरउ
नके अनेक शिष्य पराशिषजोहुये सो भक्तीके
प्रभावसे संसारमे बडी मान प्रतिष्ठावाले हो
यकर अनंतनहीं जीवोंका उद्धार करतेभये ॥

२

२

आजलग भी तिनकी भक्तीका प्रभावजोहै सो ए
थ्वीतलपर शोभायमान होयरहाहै तिसीके
प्रभावसे लोगोंका उद्धारहूआ चलाजाताहै वि
ष्णुस्वामीजीके वंससे दक्षणी ब्राह्मणोंकी तैलं
गजातीके विषें वल्लभाचारी भी उतपन्न होते
भये अवतिनकी वडी अदभुत और प्रेमके ह
रनेवाली गाथाजोहै सो कथन करताहूं एक
समयसोवडभागी ब्राह्मण अपने कुटंब और

४५
भ०
२

3

देसकोत्यागकरके कहीं और देसकोचलाजा
नाभया और अजा चितवनजोहै सोधारनकर
लिया किसीसे कुछ मांगनानहीं अनिछतजो
आयजावे सो पायलेना नहीं तो हरि हरि जपते
रहना ऐसे तिनकी भक्तीका प्रभाव देखकरव
हुत लोग राजेराजे इत्यादि सब सिष सेवक
बन गये और मनवचन काया करके भ
ली प्रकार भक्ती प्रीतीसे तिनका ।

२

सेवन सतकार जोहै सो करने लगे ।९। चौपाई
एकदिवस भगवान अराधू । आवाविप्र सदन
इकसाधू । पटकौशेय वसहत चाहू । शालि
ग्राम केव शिलधाहू । तहांजवन हरिभवन स
होवा । तोके द्वारनिंब द्रुमछावा । तहिपादिपस
न सेन सजाना । करन शिला निज करन निधा
ना । गयो आप मनभावे आचारी । करि प्रणा
म भावे विनय उचारी । नाथ रुचिर वरठाकर

८८
भ०
४
4

नोरे। देखन दृगन लालसामोरे। भेते मदिन
मन वदन अचारी। जाहुभवन दृगलेहु निहारी
सोनदेस असडज वर लययो। आयभवन हरिदे
खनभयये। सिलानिकर वर शालिग्रामा। एक
तेंएक अधिक अभिरामा। तुलसीदाम सुमन
सितचंदन। किये अलंकृत अनक सुगंधन। दे
खन भवन भूरि सुठिसोभा। गीरवाण सुनिमा
नसलोभा। करिप्रणाम विनवृत पराव। पादि

४

प निंब निकट जब आवा। टीका। सो निपुक्त सुत
माखे हृदनिज गाकुर दिखनाहिं। मखेविला
प सखे विगत डाख लाखि लखे मानसमाहिं।
प्रमावरतन नरतनतर अभिलाखे आव भजाबि
कहत नाथ तरुतें गई आप हुत शिला हमारि

२

टीका। तब एक दिन तहां तिनके द्वारपर एक
साधु आय प्रापत होता भया सो कैसा कि भ
गवानके भजन सेवनवाला और को शेयसो

४८
भ॰
५

पाट तिसके वस्त्रमे बांधीहुई शालिग्राम भगवा
नकी शिलाकंठविखे धारन कीहुईहै। और न
हो भगवानका संदरभवन जाया तिसके द्वारके
सनमुख एकनिंवकाबृक्ष लगाहुआया सो सा
धु तिससिंव बृक्षकी साखाके साथ अपने शालि
ग्रामभगवानकी शिलाको निधान करके अर्थात
लटकाय करके आप आचारीजीकेपास चला
आया और प्रणाम करके तिनके आगे बिनती

५

करनेलगा किहेनाथ आपके सुंदर गाऊरजीहैं

सोमैं तिनके दरसन करनेकी अभिलाषारखे

ताहूं ऐसेसुनकर आचारीजी प्रसन्नहोय करके

कहिनेलगे किहे संतमहात्मा भीतर भवन

मैचले जाइये और आनंदपूर्वक श्रीगाऊरजीका

दरसंपाइये तबसो अतथी आचारीजीकी आज्ञा

पायकर भगवानके भवनमैं जो चलाआयाती

का देखनाहै कि शालिग्राम भगवानकीशिला

न

६८

भ.

६

तहांएकतें एक अधिकही विराजीहुईहैं और त
लसीपुष्प चंदन इत्यादि सुगंधियोंकरके सृंगा
रतकीहुई अत्यंत शोभाका उदयकररहीहैं तैसे
हीं वहींमनोहर भवनकी शोभा कि जिसकोदे
खकर देवतामुनी सबमोहित होजातेहैं ऐसेर
चनादेखकर सो अतथीसंत अचरजके वशभ
याहुआ प्रणामकरके तुरत पीछेकोफिर आ
या और निंब वृक्षकेपास जो आयकर देखेते।

6

६

लगा तोबे अपने शालिग्राम भगवानकी शिला
कि जो निम्ब वृक्षकी साखाके साथ बांधगया था
देखनही पडी तबतो संतहृदयमे मानो लाखवज्रव
मानकर विलापकरताहुआ भक्तभाचारीजीके
पासचलाआया और रुदन करकर कहनेलगा
किहे नाथमे अपने शालिग्राम भगवानकी सुं
दर सिलापाटके वस्त्रमे बांधीहुई इसनिंब वृक्ष
की साखाके [illegible] साथ राखीथी सो कोई

८८
भ.
८
7

हर करके लेगयाहै ।२। चौपाई । कोजानै कोकेम
नभाये । मोरेदेव प्राण सुखदाये । उनबिन मोरजि
यन जगश्रेम । तरफत मीन बिरहं जलजैसे । तासु
उचित तकिभने   अचारी । तजहो शोक संतव्रत
धारी । जायभवन भीतर भगवाना । जोनप्रीय
तमेर मनमाना । सोतानजि सकुच संत हरषाई । ल
होशिला लालन लवपाई । नवबोल्या अनथी अ
सवानी । सनहोनाथ सत्य जियजानी । मोरशिला
८

दिसव वंदिविनायक। प्रान मंगला चरन नवीना
करिप्रारंभ भक्त वरदीना। सोरठा। नवकंछ्ह सा
मजपाय। विघन रहित निरमन। नहांभई ग्रंत
समदाय। हरिटीका श्रीभागवत। १। टीका।
भगवान कहतेहैं किहे श्रीधरस्वामी नम अव
चिंताको त्यागकर ग्रोर सब लोकोका भलाजा
नकर इह श्रीभागवतकी सुंदर ग्रोर सुखदा
यक टीका जोहै सोकरो क्योंकि इसमै इमन

महात्म कि जिसकी कोई मिती नहीं है गोपपति
पूर्णहोय रह्योहै तिसकोकोई लाखनहीं सकता
है तातै तुम तिसभक्तीके महात्मका यतन औ
र श्रमकरकै जगतमै प्रकटकरो हेभक्त प्रधान
मेरे वचनसे तुमारा कथन जोहै सोसब सत्य
होगा इसमै कुछ संशय नहींहै औरभी सुनो
किजबलग पृथ्वीतलपर मेरानामहै तबल
ग संसारमै तुमारा सुजस भी कायम रहेगा

इसप्रकार जब भगवान कृपानिधानने प्रबोध
किया तब श्रीधरस्वामी निद्रासे जागउठे और
स्वपनेको समरण करके परम हरष को प्राप
त होतेभये तिसी दिनतें भगतपाल भगवान
के चरनोको हृदय मै धारकर और गणपती
शारदा इत्यादि देवताउंको हृदयमै मनायक
र प्रातःकाल होतेंही सुंदर मंगला चरणजो
है तिसकाप्रारंभ करदेते भये इस प्रकार ।

४६

भ०
८

श्रम करते करते कछुक समय पाय करके सो श्री
भागवतकी टीकादी नानाप्रकी कृपासे निरवि
घन होय करके सब समाप्त होजाती भई ॥३॥
चौपाई। नव श्रीधरउर आनंद छाये। नामललि
त बहुग्रंथ लिखाये। हर पुरि विदत जवन वि
हाना। तिनपै यथा उचित सनमाना। करिविभ
क्त सब दीन पठाये। विनय वदन श्रम स्वामि
भुलाये। भजन मंद नरन मतिफीका। विरचित्र

८

रसक कछुक इह टीका। नव लायक कसमो
र ढिठाई। पैकछु कृपादृष्टि निजपाई। कवहूं
कि करहु संत सुईकारा। तोइह सफल मोर
श्रमसारा। श्रमजव मधुर मनोहर नीका। श्री
धर स्वामि ललित कृतटीका। वुधजन देखि स
कल सुखमाने। हरषि परस्पर वचन वखाने।
कृति जन प्रवर आज जगमारी। श्रीधर स्वामि
धन्य व्रतधारी। जास सिंधु मथि आगम अपारा

भं॰ ५

प्रकट दिखाय रतन संभारा। जेजड़ मगध मंद समुहाई। तिनकर हृदय ईरखा छाई। नाम्ह नि दरि सब आपन नीका। लगे सयनतन रचन सो टीका। जवतिन लीन सकल विरचाई। भवन विंड़ माधव नव आई। सभासद निजनिज कृत काहीं। लगे प्रसंसन वदन सवाहीं। काहू क हत कृतमोर सुहाई। काहू भनत मोर अधिका ई। करत परस्पर विविध विवाहू। नवजेरहे नि

५

पुण गुणसाधू। सोरठा। तिन अस भन्यो बुझाय
कृपाकरहु हव नमहुं कस। अब निज निज कू
तल्याय। राखहु भगवन भवन सव। दोहा। विं
हू माधव जाहिपर चरन चिह्न निजधार। पटु
प्रवीन तोकर सकल करहिं सदिन सईकार।
टीका। नव श्रीधरस्वामी वडे आनंद पूर्वक तिस
के वहुत ग्रंथ लिखाय कर हरषरी जो कासी
है तहांके विद्वानोंके पास योग्य जान जान कर

भ० १०

सनमान पूर्वक पठायदेते भये और अपनी विनय पत्रकाभीलिख भेजतेभये किहे महाप्रभो मै मंदजड पकातच्छ बुद्धीवाला महामूगध अर्थात कुछभी जाननेवालानहीहूं सोअपनी जडता और मंदमतीके अनुसार इह अप्रसकसी टीका किजिसमै कुछभीरसनहीं है बनायकर्के आपकेआगेभेजदईहै यद्यपि इहमेरी ढीठाई आपलोगोंके योग्यनहींहै तद्यपि अपनी ॥ ।

१०

कृपादृष्टी ग्रौर उपकारके विचारसे जो कदाचित
इसको स्वईकार करलेवोगे तोमेरा इहू श्रमजो
है सो सफलहो जावेगा इसप्रकार जब श्रीधर
स्वामीजीकी रचीहूई टीका तिन विद्वानोके पास
पहुंची तो तिसको देखकर भक्त विद्वान जोथे
सो सब प्रसन्न होजातेभये ग्रौर ग्रनेक प्रका
रशलाघा कर कर कहने लगे कि ग्रहो ग्राज
जगतमे कवि जनोमे प्रधान श्रीधरस्वामी जी

भ० ४५

॥ धन्यहैं और धन्य तिनकी अनंत बुद्धीहै किजिन्हों
ने इस समुद्र रूपी भागवत को मथन कर कर
रत्नोंके समूहजोहैं सो जगतमें प्रकट दिखा
य दियेहैं ऐसे विद्वानजन तो सब हरषको प्रा
पत होतभये परंतु जो अगाध मूरखजनथे ति
नके हृदयमें ईर्षा और द्वेषका प्रवेशहोजाता
भया मंदमती स्वामीजीकी टीकाका निरादर
कर कर अपनी अपनी नवीन रचना करने ल ॥

गज्ञानभये तो जव संपूर्ण कर चुके तवविंह
माधवजीके भवनमे आय कर सभाके वीच
अपनी अपनी टीकाकी शालाघा और वडाई
करनेलगे एक कहता कि मेरी अधिकहै ह
सराकहता मेरी अधिकहै ऐसे तिनका वि
वाद सुन कर तहां जो विद्वान साधुथे सो क
हने लगे किभाई तुम क्यों वृथांही विवाद
करते हो सव अपनी अपनी टीका ल्यायक

४६

भ· १२

कै भगवानके भवनमै तावदेवो नहांजिस पर वि
ह्समाधव कृपाकर्कै अपने चरनका चिन्हलगाय
देवैगे तिसीको सवपंडित विद्वान स्हूजानकर
आनंदसे सर्ईकार करलेवैगे ।४। चौपाई। सुनिस्र
सवचन सभसमदाये। साधु साधु सव वचन
अलाये। श्रीधरपें पुनिविप्र पठावा। ताके अग
प्रबंध समझावा। तासजाय तिनकर सवभा
खा। कहिस प्रथक कछु मरम नराखा।

श्रीधर सुनत कथन नहिनीका । दीन परायन
रत निज टीका । आपुन आयभक्त व्रतधारी । प
ठीनस्व मल विनय उचारी । मै असाधुर्विवक
मतिवारा । इह सुननतनक नास अनुसारा ।
कहो आगम विद्वान जड़ाने । मोरे कवन ना
न नहंमाने । तम इह विनय मोर सवजाई । दे
हु वतस निजवदन सुनाई । अस प्रकार जव
स्वामि उचारा । लियेग्रंथ सोऊ पंथहि धारा ।

४८

भ
१२

13

प्रथम कथन कहि श्रीधरजीका। दीन्योविप्र ब
हुरिनिन टीका। सुनन सकल विद्वान प्रवीना
श्रीधर सुनत सादर गहिलीना। चलिआये हरिभ
वन सुहाये। औरहुं सब निज निज सुनलाये।
राखि सदिन हरिचरनन आगे। नमन विनय
करन असलागे। इह हमार निज निज सुनस्वामी
कृपा नकेन भक्त अनुगामी। इन महं तुमहिं
जवन सुईकाहू। तापर चरन चिह्न निजवाहू

१२

करहु कृपाकरि भक्त सनेहू। होहिं हमार न
चित संदेहू। अस प्रकार निज विनय उचारा
मूंदे वहुरि भवन हरिद्वारा। वहिर आयमा
नस अनुरागे। कीर्तन भजन करन कलला
गे। कल्लुकवेर पाल्ले ध्रुनिआई। कादेखेहिं
वुधजन समुदाई। श्रीधर ग्रंथ प्रकट सिरता
जा। सब ग्रंथन के सीस विराजा। अहविहू
नतिन चरन निहारो। जेनिजवक्त्र शंभअज

धाये। सकल लोक मान सबि समाये। सादिर ली
न्हे सीस उठाये। ताहु प्रणाम करत सबलोगा।
कपट द्वेष दुख मान सत्यागे। श्रीधर सदन ह्रर
षिसवन्नाये। कहिहंतात सावे असनतिगाये।
स्वामि तुमार धन्यजग करनी। कीरति इमत
जाय किमिबरनी। जासु विंडमाधव भगवाना
दीन सुजस असमंसरति नाना। वंदन जोगत
महुं जगआजु। भनत नम्र प्रम उजनसमाजु १४

नव मतसरगन स्वामि प्रवीना। बोले वचनम
धुर रसभीना। सुनहो संत सजन सनमान्या
मे अधीन नमरे सवजान्या। भक्त पाय नव सु
पा वसेवे। मैतिन भाग धन्य जगलेखे। नम
हि जोगय सुन जवन हमारा। करहु नकरहु
संत सहईकारा। विनय युक्त सुनि वचन सुहा
ये। मुनिजन हृदय सकल हरषाये। दोहा।
निश्रण भक्त भगवान लखि विविध प्रसंसा

भ॰
१५

गाय। भक्तिभाव जनवंदि पद निजनिज चलेसि
धाय। असहरि कृपानिधान जग भक्त भक्ति व
स होय। विस्तृन करहिं सभक्त निज विसद सुज
स सवलोय।५। टीका। इसप्रकार तिनका क
थन सुनकरके और जो संपूर्ण सभाके लोग
थे सो साधु साधु उचारन करने लगजातेभये
कि इहवारता वहुत शुभहै इसमै किसीका
पक्षपात नहींरहा तव तिनोने श्रीधरस्वामीके

१५

पासभी एक ब्राह्मण सब वृत्तांत समझाय कर
के पठायदिया सोब्राह्मण स्वामीके पास जाय
कर और प्रणाम कर कर तिनका सब कथन
भिन्न भिन्न करके सुनाय देताभया तब श्री
धरजीने ब्राह्मणके मुखसें तिन विद्वानोंका स
ब कथन सुनकर्के स्वामी आपतो नहींआये
परंतु अपनी टीकाजोहै सो ततकालभेजदेते
भये और ब्राह्मणको कहनेलगे कि भाईतुम

८५
भ०
१८

सबविद्वान जनोंके आगेमेरी हाथजोड करके इहवि
नती करियो किमै तो असाध्य एक तुच्छबुद्धीवाला
किसीगिनतीमे नहींहूं और इहमेरी कृतभी ति
सी तुच्छबुद्धीके अनुसारकी हुईहै इहां अगम औ
र अनेक मतोंवाले विद्वान जेउहूयेहैं मेरेकोतहां
कौन जानता पहिचानताहै इसीतें अपनीबुद्धी
की कायरता जानकर शंकाके वशभयाहूआ आ
पनहीं आय सकाहूं इहजैसी कैसी ढीठाईसें क

16

छ हुनकी हुई है सो आपके पास भेजदई है ऐसे
स्वामीकी विनती पायकर बल्लभजो है सो उस
तक लेकर्के धावनाहु आमारगको काटकर
तहां विद्वानोंकी सभामे चला आया और प्रथ
म श्रीधर स्वामीकी सब विनय प्रार्थना सुना
यकर फिर तिनकी टीका जो है सो दे देना भया
तब साधु विद्वान जन स्वामीका कथन सुन
कर और तिनकी टीका लेकर और सबका वि जनो

भं॰ १८

केटीकाग्रंथों सहित विंदुमाधव भगवानके चर
नोके आगे रखकर नम्रतापूर्वक हाथजोड़कर
विनती करनेलगे किहेकृपानिधान हेभक्त
नेही इन्हरमारे अपने अपने रचेहुये भागवत
की टीकाके ग्रंथजोहैं सोप्रभूहमने आपके च
रनोंके आगे स्थापरखेहैं अब इनमें जोनसा टी
नवंध्र तमको सईकारहै अर्थात मनजूरहै तिस
पर कृपाकरके अपने चरनकमलका संदर।

१८

17

विन्हकरदीजिये तिसतें हेक्रुपासिंधु हमारेह
दयका संशय विवाद सवमिट जावेगा इसप्र
कार तिनोनेविनती करकर भवनके कवाड
लगायदिये और आप वाहिर आयकर वडी
प्रीतीभक्तीसें कीर्तनभजन गायन करने ल
गजातेभये और फिर थोडीदेरके पीछे सव पं
डित विद्वान हरी भवनमें जायकर जोदेख
नेलगे तोक्यादेखतेहैं कि श्रीधरस्वामी जी

भ०
१८

काग्रंथजोहै सोसब ग्रंथोंकासिरताज होयकर
सबके ऊपरविराजाहै ग्रौर हे ग्रोर तिनचरनो क
रके चिह्नभीहै कि जोचरन शिव ब्रह्मादी देव
ताऊंनेभक्ती पूर्वक हृदयमै धारनकिये हूयेहैं
नवरस अद्भुत कौतकको देख करकै सबवि
द्वान अचरजके वशहोयगये ग्रौर श्रीधरजी
के ग्रंथको जायकरकै सनमानसे सीसपर उठा
य लेतेभये ग्रौर बार बार प्रणाम करनेलगे ।

१८

तिसतें उपरांत अपने हृदयका कपट और द्वे
ष सबत्यागकर धावतेहूये स्वामीजीके पास
चलेआये तहां तिनके चरनोंपर दंडवतप्रणा
म कर कर फिर अनेक प्रकारकी प्रसंसनी
गायकर और सब वृतांत सुनायकर कहने
लगे किहे स्वामीजी तुमधन्यहो और धन्यज
गतमै तुमारी करनीहै नाथ तुमारी महिमा
और प्रभावजोहै सोकुछ कथन नहींकिया

भ.
१९

जाताहै आननमंही वंदनाकरनेके योगपहो कि
जिनको विंदुमाधव भगवानने जगतमे ऐसा
सज्जन और वडाईदिईहै ऐसे सब विद्वान साधुज
न अपने अपने भावसे तिनकी अनेक शलाघाव
डाई करतेहैं नवकपटसे रहित सयेसरलवि
न स्वामीजोहैं सो वडी मधुर और कोमल वा
णीसे कहनेलगे किहे संतमको इहजगतमे
सज्जन और सनमानजोहै सोतोमैने सब आप

के आधीन जानाहूआहै तुमारी कृपाको पाय
कर आज मैभी धन्य भागोंवाला होय गयाहूं
इह मेरी कृत अर्थात मेरी कविताजोहै सो ग्र
हणकरो अथवा नाकरो तुमको हीं योग्यहै
और तुमारेहीं आधीनहै ऐसे विनती करके
श्रुत श्रीधरस्वामीके वडे नम्रवचन सुनकर
सब विद्वान प्रसन्न होजाते भये और तिनको
भगवानके परमहद्भक्त जानकर वारंवार

भ० चरनोपर दंडप्रणाम करकै सबसे सजन गाव
२० ने हुये अपने अपने घरोंकोचलेगये नाभादास
जी कहतेहैं किहेसंतो देखिये इसप्रकार भगवा
न कृपानिधान भक्तोकेवशहोयकर अपने भ
क्तका सुंदर सुजस और बडाई जोहै सो संसार
मै विख्यातकरदेतेहैं अर्थात तिसकोजगतमै उ
जागर करदेतेहैं ।५। दोहा। अबमै श्रीधरस्वामि
कर ज्ञानभक्तिमनहार। करहुं कथन संतन

कछु ललित प्रेम रस माहू। चौपाई। अवसरपा

य स्वामि मतिधीरा। पीडत ज्वरहुज कृशपसरी

रा। बीतेविपुल दिवस उपवासा। छूटन चहत

प्राण वपुग्रासा। कृपापात्र माधव अस्तनामा।

सेवक स्वामि विप्र निसकामा। करम वचनम

न भक्ति अभेवा। निसिदिन करत रुचिर गुरु

सेवा। सोस्वामी निजवेद विचारी। माधव भ

यो जीवित जियभारी। कछु विचार वन आव

भ०
२१

ननाहीं। चिंताकुल सोचित मनमाहीं। इतसंता
प गरन जियमारी। उतप्रति जठर जनक ज्वर
धारी। पीडितहृषप काय ज्वरदाहा। मूर्छित प
सो मदन निजवाहा। सोरठा। नासनप रवतिना
रि। पतिहिं देखि मूर्छित परत। आईवेगसिधा
रि। रुदनकरत मनमथ सदन। ६। टीका। अब
औरप्रेमरसकी भरीहुई बडी मनोहर श्रीपर
स्वामीजीकी भक्तीकी गाथाजो है सो कथन क

रताहूं हेसंनो व्याख्यान देकर श्रवणकरिये
समय पायकर्के धीरजके धाम श्रीधरस्वामी
जोहैं सो ज्वररोगककें पीड़नभयेहूये कृशप श्र
यीन वडेउ[illegible]वल होयगये श्रोर खानपान भीस
वछूट गया प्राणोका कुछ भरोसानहींरहा
तव एकमाधव नामकरके ब्रह्मण स्वामीजी
का कृपापात्र श्रोर हृढ सेवकथा रात्रीदिन म
नवचन कायाकके तिनकी भक्तीसेवामे लीन

८५
भ०
२२
रहताथा सो इसप्रकार गुरुजीका महांकलेश
देखकर हृदयमें अत्यंत दुखमानताभया तिस
को कोई उपाय बननहीं आवता दिन दिन चिंता
और शोकमेंही व्याकुलभया रहताथा इहांतो
तिसको गुरुस्वामीजीकी चिंता और उहांघरमें
पिता ज्वररोगसे क्षीणभयाहुआ मरनेपर्यंतहो
गरहाथा तिसको मूरछापर मूर्छाआवतीथी
तब तिसकी तपस्वनी स्त्री किजोमाधवकी माता
२२

यी पतीका हृथवीपर मूर्छापडेह्रय को देख

कर बडेवेगासे धावती श्रीर रुदनकरतीहुई

पुत्रके सनमख चलीश्रावती भाई ॥८॥

चौपई । श्रोर लवचन सुनत निजमाई । म्हा

हादेव रटन श्रकुलाई । माधव हृदय खिउन

गा भययौ । गरूपित जनु विमक्त करिलययौ

सम्भ्रम गृहण त्याग वसहोई । गुहतेपं श्राव

जनहु नियिवोई । सज्जन भक्ति उगलकरजो

री। करि प्रणाम मनिविनय नशोरी। भनन्त वव
न स्वामिन पिनमोरा। ग्रसन हपास रोगजव
घोरा। आज हपर्सा थरति मवछाई। मानकव
न रोटन पमआई। नव ग्रनस्पचिन आकुल
गेहू। नजिन सकहु छिन दीन सनेहूं। काह्
करहुं सासन ग्रवकाहा। मोरे हृदय उपज प्र
भराहा। सेवाजनक देव गरजोई। दीनयाल ड
रलभजगाहोई। माधव वचन सुनन सखदाये

स्वामि सुमति निजवदन सुनाये। मोर सुपे
स्लाकर सुवताता। विमल हृदय उचित अति
माता। पयोधि जनक भवन सुरछाई। जननी
रुदन करत सुत आई। तांते तमहुं विलंवत
यागी। जावहु वतस जनक हितलागी। मो
रन देस तात सुवपाई। पितकर लेहु सुखना
जाई। दोहा। यद्यपि माधव कीन हठ गहस
न विविधप्रकार। तदपि भवन पठाव तहि

४६
भ०
२५

स्वामिन वलानकार।८।टीका।नव ऐसेमाता
के वचन सुनकरकि जोपरम कलेशसे होद
व होदेव प्रकारनीथी माधवकाहृदय दोखंड
होयगया अर्थात दोटुकडेहो जाताभया सो
मानो गुरुजीने और पिताने एक एक बांट
लियाहै प्रयोजन इहकि जिसका एकहीं चित
दोनोंपासे फैलगया किसको ग्रहणकरूं और
किसको त्यागूं ऐसे भ्रमकेवश भयाहुआ संको

२५

चमे मानो सर्वस्व गवायकर्के गुरुजीकेपासच
लाआया तहां भक्तोंओर दीनतासे चरनोपर
प्रणाम करके हाथजोडकर विनतीकरनेल
गा किहे कृपानिधान मेरापिताजोहै सो ज्वर
रोग करकेयसाहुआ आज घरमे प्राणअंतहो
यरहाहै इसीते माताव्याकुल होयकर रोदन
करतीहुई धावतीचलीआईहै ईहां आप अब
स्याचित ज्वरसेव्याकुलघरमे पडेहोकि जिनको

४६
भ०
२५

मैछिनभरभी त्यागा नहीं सकताहूं अहोप्रभु पि
ताकी इहदशाहै मैवडे कलेशको प्रापत भयाहूं
नाथ अवकाकरूं मेरेको कैसीआत्ताहै इहगुरू
पिताकी सेवाजोहै सो संसारमै वडीउरल
भैहै इसप्रकार माधवके भक्तीप्रीतीवाले वच
न सुनकर स्वामीजी प्रसन्न होयकर कहनेलगे
किएवइ नरीकल्याणहो जोतेंने मेराउखदेखक
र आपने हृदयमै वडाकलेश मानाहै ।

२५

अबहे पुत्र पिताके घरमें दुखी और मलीनहोनेसे
माताजो रुदनकर्तीआईहै तोतुममेरी आज्ञासे
विलंबकोत्यागकर प्रथम जायकर्के पिताकी
खबरलेवो और पिताकाउपकारजोहै तिसको
अपने सिरसेउतारो ऐसे गुरुका वचन सुनक
र यद्यपि माधवने बहुतहीं हठकिया कि प्रभू
मै आपको अकेले छोडकर कदाचितनहींजा
उंगा तद्यपि स्वामीने अनेक प्रकार समझायक

४५
भ०
२६

र और तिसकाहत लोइकर जोरावरीसे माता
के साथ घरमे भेजदिया।७। चौपाई। जाँभवन
निज जनकनिहरयो। विकल अचेत धरनि न
लपरयो। मरणतुल्य तांकर वडपाई। रोदन
करहिं विपन सुनमाई। सामाजिकजन इतउत
आये। मरदनादि तिनकीन उपाये। सोमसपर्श
तिनकर जवलागा। उठ्योजवधिर दुज मूर्छितजा
गा। स्वामीउक्ते विगतज्वर भययो। तथ्याप्रवल

२६

वपुष तव छ्यये। आपु अशक्त निवल कृश

काया। हृदय करत चिंतन नियदाया। दोहा

कस कीजे अब पाक कछु नाहिन वनत उपा

य। माधव गवन्यो भवन निज स्नान जनक

मरछाय। ८। टीका। तव माधव घरमे आयक

रके का देखताहै कि पिताजोहै सो मूर्छाहो

य करके पृथ्वीपर पड़ाहै मरणोकेतुल्य तिस

की दशाहोयरहीहै ऐसेदेखकरके माधव और

४६८

भ॰
२८

27

माधवकी माता व्याकुलहोयकर रोदनकरनेल
गजातेभये तब तिनके पड़ोसी सज्जन बांधवजो
थे सो सब आयकरके मरदन आदिउपाय जोहैं सो
करनेलगे तब तिनके हाथोंका गरम स्पर्शजो
भया तिससे तिस वृद्धके शरीरकी ^ जागउठी औ अगनीजोहैसो
र मूर्छाभी खुलगई तरत उठकरके बैठगया ऊ
हांस्वामीजोथे तिनकाज्वर अर्थात तपछूटा तो
तथाजोभूखहै तिससेवडाकलेशदिया आपश

रीरमे बडेनिरबल और क्षुपथ्य भोजनबनानेकी
सामर्थ्यनहीं रखनेथे हृदयमे सोच करनेलगे
कि अब भोजन कैसे बनाऊं कोई उपाय सूझन
हीं पड़ताहै इससमय ईहांमाधवभी नहीहै सो
पिताका मूर्छापड़ा सुनकर घरकोचलागयाहै
मेरे भूखसें प्राणनिकसे जातेहैं देव अब काय
तनकरूं।८। चौपाई। असडर कीन सोच जबस्वा
मी। तबभगवान भक्त अनुगामी। रक्षकभक्त भ

८५
भ॰
२८
28

क्तभयहारी। भक्तकल्पद्रुम भक्तउधारी। भक्तपाल
प्रभु भक्त सहायक। रंजनभक्त भक्त वरदायक।
आरत हरन भक्त सुखदाता। वतसल भक्त भक्त
जनत्राता। माधवरूप ललित निजधारी। आयेहृ
दय भक्तउरविहारी। करत प्रथम गुरुचरन जु
हारा। वहुरि नमनमव विनय उचारा। कृपानकेत
दासनव आवा। अवप्रभु तुमहिं जवन मनभावा
सो सासन मोहि देहु जगाई। ॥ २८

मैसव करउं चरन सिरनाई। स्वामी सुनत हृद
य हरषाये। कहत कृपाजत वचन सुहाये। कु
सलतात कछु जनक हमारा। तव माधव अस
वचन उचारा। दीनदयाल तव कृपा महाना। पा
वा मदन जनक कल्याना। मित्रग्राम रक्षादिक
उरवसारा। भयो सुखित संकुल परिवारा। तव
स्वामी व्यधातरवानी। सुनहु वनस असवदन
वखानी। मोरवहीन अन्नजलपाना। चाहत च

४६

भ.

२९

लन जठिर जढ्माना। सुनत वचन अस स्वामि
अधीरा। माधव रूप हरन जनपीरा। अमिय अ
लौकिक ककचिर सुहावा। कोनक दिव्यपाकवि
रचावा। सादिर विमलपात्र धरि सोई। दीनजि
माय मुदित मनहोई। पुनि उछिष्ट सम्मार्जनसा
री। करन करन कल परन सवारी। सोरठा।
पुनि सेवा कछु आन। वैठि निकट लागे करन।
कृपासिंधु भगवान। नव आवा माधवनहीं। ९।

२९

टीका। जब इसप्रकार श्रीधरस्वामीने हृदयमें
चिंतन अर्थात सोचकिया तब भक्तोंके आधीन
और भक्तोंकीरक्षा करनेवाले भक्तोंके भयहर
नेवाले भक्तोंकेलिये कल्पवृक्ष भक्ततारक
भक्तपाल और भक्त सहायक भक्तोंके हृद
यको आनंददेनेवाले भक्तवरदायक और भ
क्तजनोंकी पीडाकलेशोंके हरकरनेवाले भ
क्तवत्सल भगवान तरनहीं माधवजीस्वामी

४६

भ०

३०

30

जीका सेवकथा जिसका रूपधार करके आयजाने
भये तब पहिले स्वामीजीके चरनो पर प्रणाम
करके पीछे हाथजोड़कर दीनताकीभरीहूई न
म्रवाणीमें विनती करने लगे किहे कृपानिधा
न आपका दास आयगयाहै अबजैसी मनकी
रुचीहै तैसी आज्ञाकरिये मैदीनानाथकी सेवा
करनेको सावधानहूं ऐसे माधवरूप भगवान
की वाणी सुनकरके स्वामीजी बडे प्रसन्नभये

३०

और कृपाके भरेहूये वचनोंसे कहनेलगे किहे
पुत्र प्रथम इहलोकहै जोतुमारे पिताको कुस
लहै अर्थात सो राजीहै तवमाधव कहनेलगा
किहे दयानिधी आपकी कृपासें पिताकाडुख
और मूर्छा सव दूरहोय कर सहजेहीं कल्यान
होयगईहै कृपानिधान अवतिसकी कुछचिंता
नहींहै तव स्वामीउद्धाकरके व्याकुलभयेहूये
कहनेलगे किहेमाधव मेरेतो अन्न और जलके

४६

भ०

३१

3

विनाभूखेके प्राणनिकसे जातेहैं तातकुछवातक
रनेकी भी सामर्थनहींहै ऐसेलक्षणाके वशस्वामी
जीकोव्याकुल देखकरसर्वदोष दारिद्रके हरने
वाले माधवरूप भगवानजोथे सो तरत अपने
कौतकसें अमृतकेसमान अलौकिक औरवडा
दिव्य भोजन वनायकर और पवित्रपात्रमे धरक
र स्वामीजीको चौकेमे विठायकरके भक्तीसन
मान से जिमायदेतेभये और फिर मार्जन लेपन

देकर स्वामीजीको स्वावपूर्वक विमनतरपर पोफा
य करके मरदनचापीकी सेवाजोहै सोकरनेलगे
तवश्तनेमे माधवभी स्वामीजीकी चिंतामे व्याकु
लभयाहूआ धावताचलाआया। ९। चौपाई। ता
स्वविलोकि चराचरनाहो। भये तुरंत लुपत प्रभु
ताहो। माधवआय चरन गहलागा। भाषत न
म्रवचन अनुरागा। कृपाअयन करुवयन वि
हावा। मोरेरहो सोच निसिछावा। दीनयालय

८५

भ०

३२

32

कल गृहमाहीं। सेवकप्रान निकट कोनाहीं। स्वा
मीसनन कथन प्रसतासा। भये चकत सखव व
चन प्रकासा। काप्रमभयो नातमतिनोरे। नमहूं
कीन सेवा निसिमोरे। अन्नदान मोहिदेत जिया
वा। कसप्रम हृदयतात नवक्षावा। माधव सुन
त चकत चितहोई। लागेयो भनन जक्ष करदोई।
सैसव रजनि नाथनिजगेहू। वसेकरत चिंनन
जियएहू। गरुकृपाल नहं भवन इकाकी। नम

३२

हूं सहायक कृसपिनाकी। अनतनाथजे प्रससि
वकाई। मैनकीन प्रभु चरन उराहीं। श्रीधरस्वा
मि मरम नवजाना। सोतोकृपा सिंधु भगवाना
माधव रूप ललित परिधाये। कौतक प्रमिय
पाक विरचाये। सोहि जिमाय सहित सन माना
भयेलपत प्रभु कृपानिधाना। अहो भागजग
मोर सुहावन। जाहि इन हगन दरस प्रभुपाव
न। दुरलभ जोगि मुनिन कहं जोई। देखो आ

जसुलभ मै सोई। तासरूप माधव कहनाना। क
रत मनहिं मन दंडप्रणामा। नहिदिनतें औष
ध पथ्यहीना। भयेविगत ज्वर स्वामिप्रवीना। मा
धव रजनि वृतांत सुहावा। सादर सबकहंदी
न सुनावा। सुनत लोग मानस बिसमाये। श्री
धर स्वामिधन्य सबगाये। मनवच करम भक्ति
रतहोई। भजनलगे तिनहिं सबकोई। असप्र
कार इहचरित नवीना। मैकछु कथन तनक

मतिकीना। दोहा। भक्तिमहातम ललित इहजे

रतिजुत सुखगाय। धौं सादर कानन सुनै हरष

प्रेम सरसाय। तांके उरविदारद विकट रोगसो

ग अभिमान। नासहैं हरिप्रसादतें उपजहिं

भक्तिप्रधान।१। टीका। नव माधवको आव

ते देखकर सर्वचराचरके स्वामीभगवान न

हां तुरतहीं लुपत होजातेभये और माधव आय

कर गुरुजीके चरनोपर सीसधरकर प्रार्थनाक

४६

भ॰

२५

रनेलगा किहेकृपानिधान कहिये रातकैसेवीती
मुझेमे रात्रीभर चिंतामेंहीरहाहूं कि दोनपालव
रमे अकेलेहैं सिवसेवक और कोई भी पासनहीं
हैं तब ऐसे माधवका कथन सुनकर स्वामीव
डे अचरजके वशहोयकर कहनेलगे किहेपुत्र
तेरी बुद्धीमे इह कैसा भ्रमहोयगयाहै क्योंकि तु
म आपहीं रात्रीभर मेरीसेवा करतेरहेहो और
अपने हाथोंसे भोजन जिमायकर मेरे प्राणोंकी

रहाकरीहै अब इहकैसा तुमारे हृदयमै भ्रम
उतपन्न होयगयाहै तब माधव आचर्ज होय
करके हाथजोड़ह्वये विनतीकरनेलगा किहे
दीनदयाल मै तो आपकोईहां घरमै अकेलेजा
नकर तहांसारीरात सोचमैंही वतीतकरीहै
प्रभुमैरेको तुमारे चरनोकी इहाईहै मैने आ
पकी इहसेवानहीं कीहै तबतो श्रीधरस्वामी
हृदयमै जानगये कि अहो सोतो भगवान

४८

भं०

३५

35

कृपानिधान माधवकारूपधारे हृये आपहींथे और आपहीं दीनबंधु अपने कोनकसे भोजन बना धकर और मेरेको जिमाय करके लुप नहोय गयेहैं आजमेरे धन्यभाग्यहैं कि जो भगवान मुनी और जोगी जनोंका देख ने डरलभथे सो मैने नेत्रभरकरके घरमें देखलियेहैं तिसमाधव रूप भगवान को स्वामी बार बार हृदय मै प्रणाम करनेलगे

और तिसीदिनतें तिनकाज्वर रोगजोथा सो भी
औषधीके विनाही नष्टहोजाताभया तव मा
धवने रात्रीका वृतांत जोथा सो सवमान एव
क सवको सुनायदिया लोगसुनकरके हृ
दयमें वडाअचरज मानकर स्वामीजीको स
व धन्य धन्य कहनेलगे और भक्तीप्रीतीसे
तिनको भगवानके दृढभक्त जानकर सव
पूजने और सेवने लगे इसप्रकार श्रीधरस्वा

४५
म०
२६

36

मीकी भक्तीमैंने कुछ मंदमतीके अनुसार क
थनकीहै इसको जोकोई श्रद्धापूर्वक पढेगा अ
थवा सुनेगा तिसके दुखदारिद्र और रोगशोक
सबनास होयकर हृदयमें भगवानकी भक्ती
उतपन्न होजावेगी ।।९।। इतिश्रीभक्तविनोद ग्रं
थे भगवदभक्ति महातमें भाषाटीकायां श्रीधर
स्वामी चरित्रवरणनं नाम सरगः ।।

मीहांसिंहकृत

अथ निमानंद चरितं । दोहा । अब वरिणउ ज
ग विदत वर भक्ति महानम आन । करहुं क
थन जहि सुनत स्रुति वढहिं सुमति सुभता
न । चौपाई । गौडदेस इक विप्र सुहावा । निमा
नंद नाम जहि गावा । अति प्रवीन द्विज धरम
अचारा । वेद तंत्र सब जानन हारा । बसिति
ज सदन विप्रवर सोई । संतन हृदय भक्ति
रतहोई । वेदा ध्यापन लोगन काहीं । सदा

११
भा०
२

करावन हित चित माहीं। एक दिवस सुंदर
सुख साहू। देख्यो नाम भागवत चाहू। पूर
व पुण्य प्रसाद प्रभाऊ। तामध नवल प्रीति
छवि ताऊ। दिन दिन उपजि अधिक सुखदा
ई। कमल सरोज चरन मन लाई। ताहि इकांत
रटन पर भययौ। तब तहि दिव्य ज्ञान उरझ
ययौ। सरब विश्व भगवन मयजानी। ब्रह्म
वेद मगन भयौ ज्ञानी। इष्ट अनिष्ट मीत रिपु

२

नासा। जनम मरण द्वन्द्वादि पनासा। सीत उश्न गुण अगुण समाना। हरष विषाद मान अपमाना। ब्रह्मरूप सब जानि जगाना। भयो छकित जिमि वारुणि माना। दोहा। एक दिवस घर वहिर उज नित्य नंद प्रवीन। नकि। समूह त्रिण सशाक तहं हट आसन निज कीन। तव मारुत वल वेग गहि अनल चंद्र सहाय। नहि समूह त्रिण सशाक कहे अकस्मा

३१ भ० २

न लगि आय। जिमि जिमि निज बल वेगतें।
मारत महन ककोर। तिमि तिमि होत प्रचंड
अति ज्वलत ज्वाल बहु वोर॥१॥ टीका। नाभा
दासजी कहतेहैं किहे संत महंतो अब एक।
और परम पवित्र और मनको आनंद देनेवाला
भक्तोका महातम कि जिसके श्रवण करनेसे
हृदय मे ज्ञान और भक्तीका प्रकाश होता
है मै आपके आगे गायन कर्ताहूं क्योकि गोड

२

देस विषें धरम मै प्रवीन और बडा आचार्ज
वेदके तत्वको जाननेवाला नित्यानंद नाम
करके प्रसिद्ध एक ब्रह्मण होताभया सो
भगवान की भक्ती मै लीनभया हुआ आप
ने घरमै निवास करता बडे हितप्यार और
सत कारसे लोगोंको वेद पढावताथा एक
दिन तिसने सर्व साख और सिद्धियोंके देने
वाला श्रीभागवत जोहै सो देखा तब सर्व

श्री
भ०
२
3

न्यके प्रभावसे तिसविषें तिसकी अधिकातें
अधिक नित्य नवीनही प्रीती और रुची उप
जतीभई और कृष्णभगवानके चरन कम
लों को हृदयमै वसाय कर रात्रीदिन श्री
मत भागवनके रटन करने मै ततपर हो
जाताभया तव तिसके हृदयमै दिव्य ज्ञान
जोहै सो छायत होगया सर्व जगत को भ
गवानका रूपही जाननेलगा और ज्ञानवि

ज्ञानके सहित होकर ब्रह्मानंदमै मगन
होगया इष्ट अनिष्ट शत्रू और मीत जनम
मरन लक्ष्या [illegible] मीत उसन गुण अव
गुण हरष विषाद मान अपमान इन स
वमै एकरस होकर और सब कुल प्रमा
नमाका रूप विचार कर वारुणी जो शा
रावहै मानो तिसके मदमै उनमत भया १
होआ आनंदमै लीन होय र हाहै तव एक

३१
भ०
४

दिन नगरके बाहिर कहीं त्रिण समूह ग्र
थीन फूसोंका ढेर जो लगाहूआथा तोभ
क्त प्रथान जाय करके तिसपर हठ आसन
लगाय कर बैठ जाताभया तहां पवनके प्र
बल वेगसे दैव इछ्या करके अकस्मात ही
आयकर तिन फूसों के ढेरको अगनी जो
है सो सलग जातीभई तब थोडीही देरमें
ज्यों ज्यों पवन के झकोरे लगते हैं त्यों त्यों

४

हीं ज्वालाभी चारो ओर से प्रचंड होती जाती है।१। चौपाई। नित्य नेट भक्त भगवाना। देखि अनल अस प्रबल महाना। विचक हृदय धीर नहीं त्यागा। कृष्ण सरोज चरन मन लागा। रहो प्रलीन ध्यान निजमाहीं। पावक प्रबल त्रास कछु नाहीं। यद्यपि लोगन विविध बखाना। उठो नतदपि भक्त भगवाना। नव पावक बहु ओरन जारी। भ

२। भ ५

ई आप निरवापन हारी। देखहु भक्ति प्रभाव सुहावा। जहि सपर्श त्रिण अगन पावा। जेरे नसे ऊभक्कक सजरना। ऐसो प्रभाव भक्त मन हरना। अस प्रकार इह चरित सुहावा निज्यानंद विप्र मै गावा। दोहा। भा जोगी ज न भक्तवर जग जड भरथ समान। जहि ह रि भक्ति प्रसादतैं पावा पद निरवान। २।
टीका। नव निज्या नंदजीने देखा कि अगनी

५

महा प्रचंड होय रहीहै ऐसे धीरजके धाम

भक्त प्रधान किंचक भरभी नहीं डोलतेभये।

सावधान होय करके कृष्णभगवान के च

रन कमलों मे हीं चित्तको लगाय राखा।

और प्रमानमाके ध्यानमे हीं लीन रहे ऐ

सी दाहक और महा प्रबल ज्वालाका हृद

य मे कुछ भी त्रास नही माना यद्यपि लो

गों ने वहुत हीं कहा तद्यपि वदेह भयेहुये

३। भक्त प्रधान नहीं उठते भये तब अगनीजो
है सो चारो ओरसे जलाय करके फिर हार
कर आपही शांतीको प्राप्त हो जाती भई
अब देखिये कि भक्तीका कैसा अधिक प्रभा
व है जिन त्रिएो का भक्त राजके शरीरके
साथ स्पर्श होय रहाथा सोतो तिस अगनी
की दाहक शक्तीसे जलेही नहीं अब कहि
ये कि तिस भक्त प्रधान को कौन जलाय स

कनाथा अहो भक्तीका अदभुत प्रभाव और
अगाध महिमाहै जिसके वडे उदय भागहैं।
कि जिसको इह अनंत महिमा वाली भगवा
नकी भक्ती प्रापत होवे इसप्रकार इहनिमा
नंद जीकी मनोहर गाथा जोहैं कि महायो
गी जनो और भक्तो मे सब जगत मे साधा
विषे न जड भरथ के तुल्य हुयेहैं और जिनोने
भक्ती के प्रसादसे भगवान के निरवाण

सोमैनेगायनकीईहै
५कैसेभीनिमानंदहैं

२१ भ॰ २

पदको प्रापत कर लियाहै।२। इति श्रीभक्त विनोद ग्रंथे भगवद भक्ति महातमे भाषा टीकायां नित्यानंद चरित वरणनं नाम सर्गः

मीहांसिंहकृत

महेश जगमाहीं । कौ साक्षात देवसमनाहीं । अ
सकहि गवन भवन हरिकीना । अदभुत चरित
हेरत तबचीना । जहं लग शिला भवन वररहयो
निजठाकर महेश सबलहयो । देखिचरित अच
रज मनमाना । लेहुं कवन सब एकसमाना । तब
बोले तहि वदन अचारी । संत जाहु तवबेग सि
धारी । जहितें तोरप्राण सुखदाई । गई ललित
सम शिलाहराई । दोहा । सुनिअस वचन महात

९८
भ.
८

मन निंब विटपछिनाआई । सोऊ सनातन देखिनि
जशिला स खेद नकछूआई । १ । टीका । हेसंत उदा
र अबमैं नहीं जानताहूं कि मेरे प्राणसुखदायक
देवजोहैं सो किसके मनमें भायेहैं प्रभू उनके वि
नामेरा जीवना ऐसेहै कि जैसे जलके वियोगसे
मछलीका होताहै तबतिसको बडेदुखी और
आकुल देखकर आचारीजी दयाके वश होयक
र कहनेलगे किहे साधु अब तुम शोक और

४

८

संकोचको त्यागकर भगवानके भवनमें चलेजा

वो तहां जो शिलातुमारे मनको भावती औरप्या

रीलगतीहो सोतुम प्रसन्नहोय करके लेलेवो ऐ

से आचारीजीका कथन सुनकर साधु कहने ल

गा किहे महात्मा मेरावचन आपसत्यकरके जा

निये जोमेरी शिलाके समान संसारमे औरकोई

भी साक्षातदेव प्रभु नहींहैं सोवडीही दुर्लभथी

ऐसे कथन कर कर भगवान कृपानिधानके

भवनमै चलागया और तहां अदभुतहीं चरित्र देखताभया क्योंकि भगवानके भवनमै जहांलग शिला स्थापितथीं सोतिसको सव अपनी शिला के समानहीं देखपड़ी इस अदभुतको देखकर अचरजके वशभयाहू आकहनाहै कि इहतो स वठाकर मेरेही शालिग्रामके तल्यहैं मैकिसको लेऊं और किसकोनालेऊं तव तिसको अचरजभ येहुये देखकर आचारीजी कहनेलगे किहेसंत

नम तहांहीं जाको कि जहां निंव वृक्षकी साखा
से लगीहुई सुखदायक और मन भावनी शिला
जानीरहीहै ऐसे आचारीजीका वचन सुनक
र सोमसाधु तरत निंव वृक्षके नीचे चलाआया
तहां क्या देखताहै कि सोई अपनी संदर और
सुखदायक शिला तैसहीं निंव वृक्षकी साखा
के साथ पाटके वस्त्रमें बांधीहुई लटकरहीहै
चौपाई। सादिर हरषि संतगहि लीन्हा। तहां

४८
भ०
१०

10.

निवास रुचिर निजकीन्हो। असप्रकार अवरजस
दभारी। चरित्रपुनीत भक्तआचारी। रहे अनेक य
शीतलछायो। मैसंक्षेप कछुक इहगायो। अ
वतोकर वरवंस सुहावन। प्रकटे ज्ञानदेव जस
पावन। तिनकर कथा मोद मनछायन। मैअब
करहुं वदन निजगायन। दक्षणदेस विदत अ
सनामा। इंद्राणी सरिता प्रदकामा। पावन वि
मल ललित जह्निनीरा। रहोएक तीरथनहिती

१०

रा। सोअनंद नासिक जगगावा। विप्रवृंद जन
धरिलभावा। तिनमै एक विप्रवरकाहू। कलह
मूल भामनि भवताहू। देत कलेश निसनछमा
री। सोनविप्रवर सकैा सहारी। वंवितनास तजि
ग्रंतअगारा। उन्नसन्यास्त लीनपद धारा। अस
प्रकार कछुकाल बिनासा। ताकर निरत भेष
सन्यासा। तवतहि पतनि नासहिपपाई। पतिह
रि सदन नासछिगयाई। भाषत नम्र वचन

४८
भ.
॥

तिसकीजै। अंगीकार नाथ मोहिकीजै। दोहा। ना
म वचन सुनि भक्त उजैसै नेनार पतिभाम हो
हु नभ्रम वस तमहूं अव जाहु ललित निजधाम ४
टीका। तव प्रसन्न होय करके तिससंतने अपनी
शिलालेलेई। और आनंद पूर्वक तहांहीं वासक
रताभया इसप्रकार वडे पवित्र और अचरजके
देनेवाले भक्तभा चारीजीके संसार मे अनेक
ही चरित्रहैं इहां एक मैने संक्षेप करके कुछ ॥

गायन करदियाहै अबआगे तिनके वंसमै जैसे ता
नध्यानकीनिधी वडे उजागर तानदेवजी प्रकटभ
येहैं तिनकी पवित्रगाथाजोहै सो कथन करताहूं
दक्षण देसविखे वडी सुंदर निरमल जलवाली
इंद्राणी नामकरके नदीजोहै तिसके किनारेपर
एक आनंद नामसे प्रसिद्ध वडा पवित्र तीर्थहोता
भया सो ब्रह्मणोंके समूह करके परिपूरणथा
अर्थात तहांवहुत ब्रह्मण निवास करतेथे नव

४८
भ. १२

तिनब्र्ह्मणोविषें एकब्र्ह्मणजोथा तिसकी वडी
कलहकारनी मानोलडाईका मूलथी सोतिसअ
पने पतीको दुरवचन बोल बोलकर रात्रीदिन ब
डाकलेशदेतीरहतीथी तब सोभीतिसके कलेश
को ब्र्ह्मणसहार नहींसका दुखीभयाहूआ कप
ट चतुराईसे तिस दुरमतीको छलकर और घर
कोत्यागकर जायकरके सन्यासजोहै सोधार ले
ताभया इसप्रकार सन्यासभेष धारेहूये तिसब्र्ह्म

१२

णको कुछकाल वर्तीतहो जातामया नवतिम

की स्त्री जोथी सोतिकी सथीपायकर चरकोत्या

ग करके तहांआय प्राप्तहोतीभई और पतीके

आगेहाथ जोड़कर नम्रवाणीसे विनती करने

लगी किहेनाथ अवकोपसे शांतहोयकर दया

करके मेरेको गृहणकरिये असेवचनसुनका क

थनसुणकर ब्राह्मण कहनेलगा किहेभाम

नीमैंतोतेरापती नहींहूं तेरेहृदयमें कुछभ्रम

४८
भ.
१३

होयगयाहै तं विचारकर और अपने घरको चली जा ईहांतेरापती कोइनहीहै ।४। चौपाई । पतिमु खवचन सुनत असरमनी । उठिनिराम तहि गु रुपगवनी । करिप्रणाम सब विनयउचारी । म मनपनदीन हितकारी । जनक जननि वरजि न संभारा । पतीमोऊसिषनाथनमारा । मोरेघा लशरण अवकाकी । गुरुअस गिरानसुनि तोकी । अनहितदेवि उपजिउरदाया । ताहवो

१३

लिगुरुदीन सुहाया। भनेमोर सासन सुतमानी

इहि सुसील पतिदेवत जानी। अंगीकार नातन

व करहै। संसय सोच सकल परिहरहै। याक

र गृहहण दोष सुततोही। सोतोरहो सकल अ

वमोही। जोमै प्रथम वनस नहिंचीना। विनअ

पिकार तोहि सिषकीना। पेअव मोर वचन अ

नुसारा। इहनि जपतनि करहु सुईकारा। सरव

सुषजग देव प्रभाऊ। तोर विमल वरवंसवढा

ऊ। चारुभागवत संसृतिधन्या। यातैं होहिं पुत्र
उतपन्ना। दोहा। अस गुरु वर अनुसास उजासि
रुषि पतनि समेत। करि प्रणाम निवसत भ
ये विरचिन कितहूं नकेत।५। टीका। इसप्रका
र पतीके मुखसे वचन सुनकर सोभामनी नि
रास होयकर तिसके गुरुकेपास चलीगई त
हां प्रणाम करकै हाथजोडकर विनती करनेल
गी कि हे दीनहितकारी हे संत उपकारी ।

मै जगतमे संतानसे रहितहूं और मेरे मातापि
ताभीनहींहैं केवल एकपत्नीही आधारथा सो
भी आपकाशिष्य होयगयाहै अबहे दीनदयाल
मै अभागन किसकी शरणकोजाऊं प्रभु मेरे
को कौन आश्रयहै ऐसे तिसकेदीन वचन सु
नकर और वश अनहित देखकर गुरुजीका
हृदय कोमलहोयगया दयाजोहै सोरोम रो
म छायतहोय गई तिस अपने शिष्यकोपास

४८
भ.
१५
15

बुलाय करकेकहनेलगे किहेपुत्र अबतूं मेरी आ
ज्ञामानकर इससुशीले अपनी पत्नीको पतीव्र
ता जानकर और सबसोच संशयको त्यागकरके
आनंदसे ग्रहण करले यद्यपि संन्यासी होनेसे
इसके ग्रहणकरनेका तेरेको दोषहै तद्यपि सो
दोषजोहै सोमैं अपने परलेलेताहूं क्योंकि प्रथ
म जबतेरेको भेषदिया तोमैंने विचारकर नहीं
दिया अधिकारके बिनाही तमकोमैंने शिष्य

करलिया आनंदजोहूआ सोहूआ अवपुत्रनें मेरी
आज्ञासे इस अपनी पतनीका सईकार करले भ
गवानकी कृपासे जगतमें स्रष्ट और देवताके प्र
भाववाला तेरे वंसका उजागर करनेवाला भग
वानका वडाप्रधानभक्त इसतें पुत्रजोहै सोउतप
न्नहोवेगा इसप्रकार सोब्रह्मण गुरुजीकी आज्ञा
का सीसपर धारन करके स्त्रीके सहित चरनो
परवारंवार प्रणाम करकर चलाजानाभया और

४८
भ॰
१६

किसी अस्थानपर जायकर और अवधनाथ करक्त
स्तभगवानको भजनाहुआ निवास करनेलगा।५
चौपाई। यद्यपि उज विरक्त अवसेषी। तद्यपि विन
अवसरविषयेलखौ। भयोप्रति करत कामनातेहू। या
विधि तीन सवन उजगेहू। संभवभये भक्त भगवा
ना। तिनमै ज्ञानदेव निधिज्ञाना। सवनै प्रवर जेष्ट
सुतरहयो। तेजव सपत वरषकर भययो। पितव
नप्रीति संगनिजलीनो। कोविद विप्रगवन गृह

कीन्हो। प्रथम चरन वंदन करवायो। विनय व
हुरि निजवदन सुनायो। इहिमन कहं इनवर उ
पकारी। विधिजन प्रथम सुत्रसभधारी। विद्या
वेद वहुरि सुखदाई। करि दाया नवदेहु पठाई।
सुनिश्रम वचन ताम उजरासी। लगे करन नि
जनिज सव हासी। इहि प्रव सम्पलयराना। व
हुरि अधम प्रमदारतिमाना। अवमति मंद ह
वन जनयावा। हमपे नाम पढावन आवा। नव

८८

भ. १७

17

महिखा इकानिक [ट] निहारी। बोलेताम्ह विप्र असमा
री। जोइहि महिषवेद पढिलीना। नवतो हृदय स
त्य हमचीना। निश्चय पठहिं वेदसत तोरा। सुन
न विप्रअस वचन कठोरा। लाजित वैठ मौनधरि
न्यारे। नववालक मडुवचन उचारे। हरिमायाक
कु परहिं नजाना। काइहु नमहं असंभव माना।
दोहा। ज्ञानदेव असभाखिमख महिषहिं वचन
वखान। घट घट व्यापक कहत अस कृपासिंधु

भगवान। नमहुं गोविंदरूप अब सरब सखदन
नपाल। भक्तकामना सिद्धिहित इवैसे दीनकृपा
ल। सो सुंदर निजबिरद प्रभु हृदय समुझि गिरधा
रि। इहि अब सबदेवत सेवन करहु मोर रखवा
रि॥६॥ टीका। जद्यपि विशेष करके ब्रह्मण हृदय
से विरक्त हीं थे तथापि समयके अनुसार स्त्री को
विनती भई हुई देखकर ग्रहण कर लेना भया
नवतिसके घरमें तीन पुत्र भगवानके भक्त हीं उ

४८

भ.
१८

तपन्न होतेभये तिन तीनोंमै जेष्ट अर्थात वडे गु
ण और ज्ञानकीनिधी ज्ञानदेवजीरहे सोजब सा
त वरषके भये तब पितातिनको साथलेकर
वडेविद्वान ब्राह्मणके घरमैचलागया तहां वा
लकतें प्रथम चरन वंदन करवायकर फिर
हाथ जोड करविनती करनेलगा किहे पंडित
प्रधानहे उपकारकीनिधी अब कृपाकरके प्र
थम इसबालकको विधीपूर्वक यज्ञोपवीत अर्था

१८

न जनेऊजोहै सो धारन करवाईये तिसतें उपरां
न फिर विद्याकाप्रारंभ करवाय दीजिये इसप्रका
र तिसका कथनसुनकर तहां जितनेब्राह्मन बै
ठे हुयेथे सो अपने अपने सब हासीकरने लगे
कि देखो इसब्राह्मणने पहिले सन्यास धारनकि
या और फिर आयकरके प्रथमने स्त्रीका ग्रहण
करलिया अब महामंद बालकको विद्यापढा
वनेकेलिये हमारे पासलेआयाहै पंडितजोथे ।

४८
भ. १५

सो ऐसे कथन कर कर और सनत्सुखे एक महि
षजो संछाहै तिसको देखकर तिसब्राह्मणको क
हनेलगे कि जो इहमहिष वेदको पढलेवेगा न
वहम सत्पजानेगे कि तेराबालकभी निश्चयकरके
वेदको पढजावेगा ऐसे तिनका महांकठोर और
अगम वचनसुन करके ब्राह्मण लज्जासे मौनहो
यकर न्यारेजायबैठा तब बालक बडीकोमल वा
णीसे बोल उठता भया कि हे पिता भगवान की

१९

माया वशी अगाधहैं नहीं इहवारता छुछडर्लभन
हींहैं दीनवंधुजोबाहैं सोकरसकतेहैं ऐसेकथ
नकरके ज्ञानदेवजी फिर महिषको कहनेलगे
किहे महिष वेदशास्त्र सबभगवान कृपानिधा
नको घट घट व्यापक कहतेहैं नाते सरव सु
खदायक और दीनोपर दयाकरनेवाले अब
तुमभी गोविंदभगवानको कृपहो आपने भ
क्तकी कामना सिद्धकरनेकेलिये हेदीनघाल

४८

भ.
२०

कोमल होजाइये और कृपाकरिये अपनाशर
णपाल और दीन पाल विरदजोहै सोहृदयमे
स्मरकर इससमय सबकेदेखते प्रभूमेरीरक्षा
करिये॥६॥ चौपाई॥ ज्ञानदेव सब वचनसुहाये
सुनिब्रह्मसमहिष तरत प्रकटाये॥ वेदविचन क
रगायनलागे॥ मंजलमधुर सबसर अनुरागे॥ वि
प्रहेद ब्रह्मचरितनिहारी॥ कहतपरस्पर हृदय
विचारी॥ भेया नहोहिं अगम संसारा॥ इहअद्भुत

२०

जे हरगन निहारा। हरिमाया कछु जाय न जानी। क
छुन बिप्र अस बिसमन बानी। बिपुल लोग अचर
ज बस धाये। चरित्र अस भव देखन आये। भनत
बिप्र तव धन्न न थोरा। अहह इह धन्य सुवन वर तो
रा। जहिं हित लागि महिष मथ होई। लागे वेद प
ठन प्रभु सोई। कृत्य कृत्य उजगउ तुमारा। वंदन
जोग बिदन संसारा। हमतें भयो जवन अपराधु
अजु बिन जानि तुमहु तव साधु। अवते हम जत

४८
भ.
२१

प्रीति महाना। सादिर वेदमरमज्ञे नाना। सिसकहं
देउव वदन पठाय। असप्रकार जव विप्र प्रलाय
दोहा। ज्ञानदेव तवभने मावेकरि प्रणाम सहि
माथ। कीजैतमा नगविप्र अव कृपासिंधु जननाथ
थ। १। टीका। इसप्रकार ज्ञानदेवके भावेसे वच
नसुनकर महिषजोथे सोवेदनहीं प्रकट होय
कर वेदकी संदरारिचोंको मधर मधुर स्वरसे क
चीपूर्वक पठनेलगे जानभये तव इस अदभुत

२१

कौनककौ देखकर सवब्राह्मणजोथे सोपरस्प
र कहनेलगे किभाई इहुवडा-अचित्र चमतकार
जो हमने प्रकटदेखाहै असासंसारमे नातोक
हींहुआ औरनाहोवेगा भगवानकी मायाव
डी अगाधहै कुछजानी नहींजातीहै असे अ
चरजके वशभयेहुये ब्राह्मण परस्पर भग
वानकी अगाधगतीको चिंतनकरतेहै इन
नेमे औरभी वहुत लोग इसअलोकिक और

भ. २२

और प्रदमन चरित्रको सुनकर देखने केलियेया
वने चलेआये और सबमिलकर ज्ञानदेवकेपि
ताकी अनेक शलाघा वड़ाई कर कर कहतेहैं
किहे ब्राह्मणा तुं जगतमें धन्यहैं और धन्यतेरा इ
ष्टदेवहै किजिसकी भक्तीके वशभगवान कृपा
निधान महिष रूप होयकरके वेदको प्रकट
गायन करने लगेहैं तांते आज इह तमाशाञ
जगतमें सफल रूपहै और वंदना करनेके यो

रके ज्ञानदेवजी प्रसन्नहोयकर कहनेलगे कि
हे कृपानिधान तुमारीहीं सब कृपाहै जोमेरेको
दरसनदेकरके जगतमें ऐसा सुजस और बड़ा
ईदियाहै प्रभु इह तुमकोहीं योग्यहै और तुम
हीं सर्वसामर्थ और सर्वगुणनिधानहो ऐसे प
रस्पर शलाघा और बड़ाई करकर अपने अपने
आश्रमको चलेजातेभये इसप्रकार इह सुखदा
यक और मनवांछित फलके देनेवाला चरित्र

४८
भ. जोहै सोहै संतजनोमैने यथामती अर्थात मे
१९ दमतीके अनुसार जैसेहोयसका आपके आ
२१ गे गायन करदियाहै ।१९। इतिश्रीभक्तविनोद
ग्रंथेभगवदभक्ती महातमें भाषाटीकायां ज्ञा
नदेव चरित वरणनं नाम सरगः ॥

मीहांसिंहकृत

१५

अथ शशिदेव भूपचरितं। दोहाछंदः। गुरु वर
ज्ञान प्रकाशि तिमर अज्ञान विनाशी। हृदय
भवन आनंद हरन भव दारुन पासी। चंद्रहा
स कर चरित मोर मति यथा वखाना। अव
मैं कथा विचित्र करहुं वरनन कछु आना। भ
क्ति महातम ललित भूप शशिदेव सहावा।
उदित उरमति अग हरन प्रीति हरिचरन व
ढावा। दायक संपति सजस सकल सुख मे

३८
म
१

गलमूला। नामन विषय विकार बंधव सवत्रास
न सूला। भूमंडिल पर भयो भूप शवि देव उ
दारा। दानिसिरो मणि वीरधीर जग कीरती
[illegible]। परम चतुर वर धरम भक्ति भगवंत
परायण। परि हरि श्रीपति नाम आन कछु
करहिं नगायन। सोरठा। सोछिन नाथ सुजा
न। कनक [illegible] चेल वित धेनु नित। करहिं दान
सनमान। [illegible]मदेव अरपण सकल। १टीका
१

नाभादास जी कहतेहैं कि हे दासजनोंके हृ
दय मै आनंद और ज्ञानके प्रकाश करनेवा
ले और अज्ञान रूपी अंधेरेका नास करने
वाले हे संसारकी कठिन फासी के काटने
के सामर्थ गुरुदेव स्वामीजी चंद्रहासकी
गाथा जैसीक मेरी बुद्धीके अनुसार होस
की गायन करदेई है अब और बड़ी मनो
हर गाथा और भक्तीका महातम जो है सो

३८
भं०
२

कथन करताहूं कैसा भी महात्महै कि इख
इरमती विषय विकार और पापमूल इत्यादि
कों के नास करनेवाला संपती सुख सुजस
और मंगलोंके देने वालाहै भूमी मंडलपर
एक परम उदार दानियों विखे सिरोमणी
महांवीरधीर जगतमै बडे सुजस वाला ध
र्म मै प्रवीन भगवान की भक्तीमै लीन श
विदेव नाम करके राजा होताभया सो के

२

सावनधारी कि श्रीपती जो लक्ष्मी
के स्वामी भगवान हैं तिनके नाम
बिना मखमै कुछ और उचारण हीं
नहीं करताथा और नित्यदिन प्रती
बडे सुंदर दिव्यवस्त्र कंचिन भूषन
और गौऊंकादान जोहै सो वासुदेव

१८
भ.
२

भगवानके निमित्त ग्रतथी साथ ब्रा
ह्मणोंको देताथा ।।२।। सवैया । नाग
र नीत वनीत उजागर सागर सील
सुधा निधिदाई । गोउज दीनन पा
लन ध्यान महांवन नाथ प्र
जा सुखदाई ।। एक

१
२

समय करि मज्जन श्रीपति श्रीभगवान त्रिभुवन
नाई। बोले मुनीस्वर भूपति पावन भोजन भा
व पदार्थ जिमाई। आउ लगेण जब जेवन महि
पति आय कपोत तबै कर नासें। वेढयो कंप
त गात थराथर मयवस भीरु अने अमभाषा
मे सरणागत रावर आरत पाहि प्रकारत प्रा
ए निरासा। कोपित सेन लगेण मम पाछिल
छाडि न नासठ श्रोणत प्यासा। सो सुनिकै य

३८
भ०
५

रमानम भूपति राज संघासन वैठयो जाई। संजन प्रीति सनेहसों सादिर पाननलीन कपोन वि ठाई। लछमन सेन निहार निवारन कीन प्रवी न कृपानिधि राई। प्रेरतहो जननाथ अभय व [illegible]नस सेन निरादर पाई। रोडाछंद। लछम न [illegible]कुल सेन धृष्टवन बोलत वानी। तव प रमत [illegible]स विदन सब लोकन दानी। इहक स करहु [illegible]थरम दैव खिगमोर अहारा। जो

४

सो प्रथमहिं करिदीन कीन तब न्रपति निवा
रा। [illegible]पन अतिरह्या भूप बहु दिवसन के
रा। करिश्रम यतन अनेक आज इहि खगक
र घेरा। तम रलक इहिवने मोहि इत दीन
निवासा। मैनजहं अब प्राण नाथ छिन वि
गत अहासा। सुनत बैन प्रमसेन धेनु उ
ज रद कराई। बोले बचन बनीत प्रीति से
जुत हरषाई। इह मति लष्यो अनद भवान

३८
म
५

वसन करु खरारी। पुनि इहिमै इकवनौ वानत्र समंजस भारी। शरण गन इहभयो दीनमोहि रक्षक जानी। जो इहिकर अवनज हुं धरम करहो वसिरानी। सुत विन देह कुटंवरान [illegible] सव परि हरहीं। धरम पुरष कहें उचि[illegible] शरण गन त्यागन करहीं। तोते अस प्रण [illegible] तासमै रक्षक भयौ। जानहुंन नर [illegible] परम नव साध्य नरहयौ। सोरठा

५

अरु इन्द्र मन्त्र तुम्हार। मैं जानहु संशय नहीं। इहि कर हृदय विचार। करहु यतन धीरज धरो २

दोहा। फिर कैसा भी राजा शविदेव है कि नीति मे बड़ा चतुर और तैसा ही नम्र सब लोगो मे उजागर दया और शीलता का समुद्र गौ ब्राह्मण और दीन जनो के पालने वाला महा राजा और प्रजा का रक्षक सो एक समय तीन लोक के नायक श्रीपती जो हैं तिनका

स्नान करके फिर अमृत के समान बड़े पवित्र।
भोजन जो बनवाये हुयेथे सो सनमान पूर्वक
विदाय करके ब्राह्मणों को जिमाय देताभया
तिसते उपरांत जब आप भोजन पावनेलगा
तब एक कपोत जो कहून रहे सो उड़ताहूआ
भयके वश थर थर कांपता आय करके ति
सके हाथपर बैठ जाताभया और कहने ल
गा कि हे राजन मै प्राणोंसे निरास और दुखी

भयाहुआ तेरी शरण को आयाहूं तूं इसस
मय मेरी रक्षा कर क्योंकि इह देख बाज जो
है सो मेरे लहूका प्यासा पीछे लगाहुआ
छोडता नहीं है इस प्रकार तिस कपोतके
मुखसे दीन वचन सुन करके राजा तत
काल उठकर अपने सिंहासनपर जाय बै
ठा और बडे हित चितसे प्रीती करके ति
स कपोतको अपने हाथपर बैठायलिया

३८
भ॰ ८

और वाजजो भूखा भयाहूआ कपटसें मारता १
था तिसको निवारण करदिया तब राजाका
फेराहूया सो वाज बडा निरादर पाय करके
[illegible]क्षकहरीपर हटकरके मनमेंखेदहो बैठ
गया और व्यथासे व्याकुल और क्षीणभया
हूआ कहने लगा कि हे राजनतें सब लोगों
में प्रसिद्ध बड़ादानी और धरम की मूरतीहैं
अब इस कैसा अधर्म करताहैं कि जो प्रथम

८

हीं विधाताने इस पंखी मेरा अहार वनाय या
खा है ने इससे मेरे को निवारण करदिया है दे
ख राजन मै वहुत दिनो का अनसे करके भू
खा था आज वडा यतन और श्रम करके इस
पंखी को मैने वे राखा सो ने इसका रक्षक वनग
या और मेरे को निवारण कर दिया है अब मै
क्षुधा के वश भई हुआ प्राणो को त्यागता हूं
इस प्रकार तिस वाज का वचन स्नन करके ।

भ॰
८

गौब्राह्मण की रक्षा करने वाला राजा जो है सो भी
नो पूर्वक वडी कोमल वाणीसे कहनेलगा
कि हे पक्षियोंके शत्रू मै जानताहूं जो इह सम्प
[illegible]रके तुमाराही भलाहै परंतु इसमै एक वडी
क[illegible]न वारता आय वनीहै क्या कि मेरे को रक्ष
क[illegible]न करके इह पंछी मेरी शरण को आय
प्रापत[illegible]याहै अब जो मै इस को त्याग देताहूं
तो अनसे [illegible]करके धर्मकी हानी होतीहै हे सेन

राज धन शरीर स्त्री पुत्र कुटंब इत्यादि सबका
त्यागहै सकताहै परंतु धर्म पुरुषसे शरण
गतरहों त्यागाजाता अर्थात धर्मात्मा शरणाप
त्रदेह को त्याग नहीं सकता तोते ऐसा विचा
र करके हे मनमे इसका रक्षक भयाहू नहीं
तो मेरेको विदनहै कि तु तृष्णा करके परम
पीडत होय रहाहैं और इह सत्य करके तेरा
भवहै मै भली प्रकार जानताहूं परंतु हे से

न अवतं हृदय मे धीरज को धार मै विचार करके तेरी व्यथाके निवारणका उपाय करदेता हूं ।२। सोरठाछंद । करि करि विघन अहेर अम्ब ... मृग भवनन मेरे । परैयो अनेक प्रकार ... सर्ज न अवतो रे । पै इहि कहेनम तजहु । मैरा ... शरणागत परयो । जब अम्ब वचन नरेस वदन ... ज वरणन करयो । तव कोपित महा बैन ... विकट वखाना । मै इहि पति हरि क

सेन

९

रहूं अनवद्य भक्षण नहिं आना। कबहूं कि इहि
सम सेद्य मांस निज भूपति मोरे। तो मै भक्षण
करहूं हरषि उर सन मख तोरे। सुनि अस ध
र्मधुरिंद इंद्रनर प्रमुदित माना। अहो सुहृद
हित वचन सेन तव वदन बखाना। प्रीय मो
रे मन मान वचन तव रचन सुहाई। अस कहि
उरु निज मांस काटि शीघ्र नरराई। सोरठा।
तुला पसो जब दोय। अधिक मांस महिपति भ

३८ भे १०

ये। तब प्रसन्न मन होय। कहा सेन सुन सत्य
निधी।३। टीका। राजा कहता है कि शाकार कि
ये हुये मृगोंका मांस नाना प्रकारका मेरे घर
मे पड़ा है हे सज्जन इसके बदले सो तेरेको मै
देताहूं तूं उसको आनंद सर्वक भक्षणकर
और इस दीन पंखी को त्यागदे क्यों कि इहमे
री [illegible]को आय प्राप्त भया है जब इस प्र
कार राजाने कथन किया तब सेन जो है सो

१०

कोपसे कहने लगा कि सुन राजन मैं इस क
पोत[illegible]त्यागकर और कोई मांस कवी ग्रह
णनहीं करूंगा परंतु एक करताहूं कि जो
कदाचित इसके बराबर तोलकर तूं अपने
शरीरका मांसदेवें तोमैं आनंद मान कर अ
वश्य भक्षणकर लेऊंगा ऐसे तिस बाजका
वचन सुनकर धर्म और सत्यकी निधी राजा
अति प्रसन्न होय करके कहने लगा किहे

भ॰ ११ ३८

महद मेन तैने वहुत शुभ और मेरे चित्तको भावता परम हितका वचन उच्चारन कियाहै मै अत्यंत प्रसन्न भयाहूं ऐसे कहिकर परमदानी और महांउदार शिविदेव राजा जोहै सो तुरत ही अपने उरू अर्थात पटुकामांस काटकर तुलामों तराजहै तिसपर एक छाबेमे धरदे नामकी और हमरे छाबेमे कपोतजो कबुतर है सो बिठाय दिया ऐसे जब दोनोंको तुला

जा

मै यरकर बोलने लगे तोरांका मांस कछु अधि

कहीं हो[illegible] भया तव मैन परम प्रसन्न होय क

रके [illegible] कहनेलगा किहे परमपाल राजन अव

मै जिसप्रकार कथन करताहूं सो तं श्रव

णकर ।१। रोलाछंद । मोर अहार नमित्त तोर

देह अभख वसेखा । अवजनि काटहु आन य

तम निश्चय तव देखा । इह पावक मै इंद्र क

पट निज भेष बनाई । लीन परीक्षा तोरभक्ति

३८
भ॰
१२

पावन ललताई। सुरपुरतें हमआव अमरावु कछु नाहिन इच्छा। केवल निश्चय भक्तितोर न्पकर न परिच्छा। अबदेखा हम नमहिं करम मान स वच काया। भक्ति परायण भक्त निपुण भ गवान पतिमाया। अव प्रसन्न जीय जानिहम हूं वरमांगहु राई। मंजल अभिमत जवन तो र मानस खावदाई। हमरे नहिंन अदेव भूप तोरे वरकाहू। अस कहि लीन सिधार हवि

रनिज मूरति ताहू। पावक इंद मनहु भूपजव
मनमहुं गाढे। परो दंडवत चरन धरनिछि
न पन सावेगाढे। मागहु मागहु धरनि नाथ
मुख बहुरि बखाना। तब बोल्यो महिपाल
जोरि नेम्रत जगपाना। धन्य जनम जगमोर
आज प्रभु दरसन पाये। भयो कृतारथ दीन
दोष उरव त्रास विहाये। जो प्रसन्न प्रभु भये
दीन पर दीन दयाला। तो मागहुं वर जनम

३८
म
१२

जनम हरि भक्ति रसाला। मोरेउर दृढ होहिंकि
लषदारद छाव हरनी। प्रेम वधावन देम सु
जस सुख मंगल करनी। सुनि अस वचन न
रेस अनल जन दुजरनराई। एव मस्त कहि
दीन रुचिर वर उर हरषाई। पुनि शविदेव नरे
स सुभ गुणगण सुखदाये। करत प्रशंसाव
दन मंगल सुर लोकसि धाये। इह संवतपन
वेचह चेह शविदेव सुहावा। मे लघु मति

अनसार बदन निज गुहवर गावा। कीन पुरा
रान [illegible] विविध विसतार नरूपण। कथा
अलौकिक ललित देव शिव भूप अनूपन।
जो इहि कर नर करहिं श्रवण सहित प्रेम स
मेता। चारि पदारथ छाव सहज नहि हवि
रन केता। व्याधि पीर सब हरहिं मोद मंगल
सुख पावहीं। सुंदर ज्ञान विवेक तास उर
निरमल छावहीं। सहजहिं आपन होहिं भ

३८ मं १४

क्रिभगवान सहाई। लोक सजनम परलोक पर
म पावन गतिपाई।४। टीका। मन कहताहै
किहे राजन मेरे अहारके नमित इह तेरामां
स वहुतहोय गयाहै अब और मत काटना
मैने तेरा धर्म और निश्चय भली प्रकार देख
लियाहै अबदेख कि इह कपात जोहै सो अ
गनीहै और मै मनजोहूं सो इंद्रहूं हमने अ
पना कपट भेख वनाय करके राजन तेरी प

१४

त्रि भक्तीनाहै जिसकी परीक्षा लईहै और ते
रेको मन वचन काया करके भगवान की भ
क्ती मे दृढ निश्चयवाला देखाहै अब हे भूपा
ल हमतेरे पर अत्यंत प्रसन्नभये हैं जो तेरे
मनको भावनाहै सो वर मांग हमदेने को
सामर्थहैं ऐसे कहिकर तिनोने अपना यथा
र्थ रूप धारन कर लिया तव अग्नी और इं
द्रको प्रतक्ष सनमख देखकर राजा दंडवत

२७
भ०
१५

चरनोंपर सिर पड़ता भया तब तिनोंने फिर मां
ग मांग हे राजन मांग ऐसाही शबद उचार
ण किया तब राजा हाथ जोड़ कर नम्रवानीसे
कहने लगा कि हे प्रभु मेराधन्य जनम है जो
मैंने आपका दरसनपाया आज मैं संपूर्ण दु
खदोखोंसे रहित होकर जगत मैं कृतार्थरू
प होय गयाहूं अबजो हे कृपानिधान मेरेप
र तुम अनकूलही भये हो तो यही आज्ञ दृ

१५

हकरो श्रोर एही वरदानदेवो जो मेरेको जनम
जनम विषे सर्व दुख श्रोर दारिद्रों के हरनेवा
ली श्रोर प्रेमके सहित सुख सुजस श्रोर क
ल्यानके देनेवाली सर्व मंगलोंका मूल भ
गवानकी भक्तीजोहै सोई प्रापतहोवे । इसप्र
कार राजाके मुखसे वचन सुनकर अगनी
श्रोर देवराज प्रसन्न होय करके एव मसत
शवदको उच्चारण करदेतेभये कि ऐसेहीहो

३८
भ०
१६

गा तिसतें उपरांत फिर आनंदमें मगण भये
हुये दोनोदेवता राजाकी अनेक प्रकार शाला
का और बड़ाई गायन करते करते अपने स्वर
ग धामको चलेजाते भये नाभादासजी कहते
हैं किहे संतो इसप्रकार इह शविदेव राजाकी
कुछ संक्षेपसी गाथा ईहां मैंने अपनी तुच्छम
ती के अनुसार आपके आगे गायनकीहै श्री
व्यासदेवजीने पुराणों मे इसको विस्तार पूर्वक

16

१६

भली प्रकार कथन कियाहै इस गाथाको जो
लोग भक्तीसे श्रद्धा पूर्वक पढेंगे अथवा सु
नेंगे सो भगवान की कृपासे तिनको अर्थ
धर्म काममोक्ष इह चारोंहीं पदार्थ प्राप्तहो
वेंगे और व्याधी पीडाकलेश इत्यादि सब उ
पाधियोंसे छूट कर बडे सुंदर सुख और
मंगलोंके लाभको देखेंगे और तिनके हृद
यमें सहजेही ज्ञान विवेकके सहित भगवा

नकी निरमल भक्तीजोहै सो भी छ्वायत हो
जावेगी औार लोक परलोक मै सुजसके पा
त्र होयकर परम पवित्र गतीको प्रापत हो
वैंगे ।४। इति श्री भक्तविनोद ग्रंथे भगवद
भक्ती महातमे भाषाटीकायां शविदेव च
रित वरणनं नाम सर्गः ।

मीहांसिंह कृत

अथविस्वसरमाचरितं। दोहा। ग्रानमहातम
भक्तिवर जासुसुनत सबकोय। लेहि विमल
पदभक्ति कल करहुं कथन अवसोय। चोपाई
मथुरा निकट हुति इकग्रामा। तहांविस्व स
रमा असनामा। वसिहें विप्र परम ब्रतधारू
वेदतत्व सव जानन हारू। ताकुलीन क
रम परधीरा। धरम प्रवीन गुणन गंभीरा।
अवसर पायकीन मनभावा। पानिगृहण

४१

भ० १

तहिंसबवेद सुहावा। तहिंतें रुचिर भक्तिउपजायो
असप्रकार कछुकाल विहायो। एकदिवस त्रि
पतासु निहारा। कौनउ मह कछु वचन कठोरा।
तासु क्रोध वस उजवर होई। तजि सुन दार सदन
सुखखोई। ब्रह्माग्रामस्वामी पस्याना। अविनाशी
न शंभु भगवाना। तहांनिवास जायनिज कीन्हो।
गैरक वपुष वसन करि लीन्हो। सिवास्तव धा
रतसवनेहा। भसम रमाय रुचिर निजदेहा।

शेभुध्यान ननपर थिर भययौ। वहसन्यस्थभे
षधरि लययौ। ममता मोह मदन मदत्यागी। भा
विरक्त संस्मति वडभागी। दोहा। ग्राम विरक्त न
हि ग्राम तकि वृद्धलोग समुदाय। निज निज
वदन सिखोवहीं अनक प्रसंग वनाय। टीका।
नाभादासजी कहतेहैं किहेसंतो अव श्रोर भ
क्तोंकी मनोहर गाथाआपके आगे गायन क
रताहूं किजिसके श्रवण करनेसे ननकालहीं

४२
भ०
२

भगवानकी सुंदरभक्तीजोहै सो हृदयमें छाय
न होजातीहै कहतेहैं कि मथुराके निकट एक
चूर्णीनाम करके ग्रामहोताभया तहां परमव्रत
के धारनेवाला और वेदकेतत्वका जाननेवाला
धरम सुकरममें प्रवीन सर्वगुणोंका धामवि
सुसरमा नामकरके एकब्राह्मण वासकरता
था सोसमयपायकर पानीगृहण अर्थात वि
वाहजोहै सोकरताभया तिसनें तिसकेघर ।

२

विखें एकपुत्र उत्पन्न होयगया इसप्रकारकुछ
काल वतीत होताभया तवएकदिन तिसकी
स्त्री अपनी जड़ताके वशकोई दुखदायक कठो
र वचनजोहै सो बोलउठतीभई तिसकोसुनक
र विस्मसरमा महारनंहीसका क्रोधकेवशभया
हुआ घरवार स्त्री पुत्र सवत्यागकर ग्रामके बाहि
र एकवडा प्राचीन अर्थात पुराना महादेवजीका
मंदिरथा तहां जायकरके निवासकरताभया सि

खोसहु जोकोटी जनेऊहै सो धारे हूये गेरीके रंग
मे वस्त्रोंको भगवे करकर और शरीर परभस
म रमायकर कामक्रोध मोह ममता इत्यादि।
विकारोंको त्याग और जगतमे विरक्तहोयकर
मानोसंन्यास भेषको धारन करके वैठगया
ऐसे तिसको विरक्तभयेहूये देखकर ग्रामके
वृद्धस्यान सव आयकर और अनेक प्रकार
के प्रसंग सुनाय सुनायकर वारवार सम

भ॰ २

२

ऊावेन लगे ।। चौपाई । पुत्र पतनि आरत भनिता
सा । करि करि नम्र वदनसंभाशा । यद्यपि विवि
धभांति समझाना । तद्यपि उन विरक्त नहिंमाना ।
करिविवि सकार पुत्रनिजनारी । चल्या अनंत क
हं विप्रसिधारी । तव निरास मन सवन लिलामा
संज्जन हुइलोग निजग्रामा । निज निज आय स
दन सवकाहू । करन वदन अप कीरनिताहू ।
सोअयथा विधि विगत प्रयासू । धारनमयोभेष

४०

भ० ५

सेन्यास्। परिहृरि करमजाल जगनाना। श्रुति
संज्ञा निजलीन धयाना। विरत निरनयल विछ
न विहारी। आवाभ्रमत भ्रमत तनसारी। महा
देव भगवन सरनाहा। राजेशिलारूप प्रभजा
हा। तिनकर कथा प्रथम सखेदाई। मैकछुक
रहुं कथन मनभाई। अवसर एक शंभ अरंभी
होतमानवलि उरत विभंगी। गावन करत विंह
सरआई। तहांदीन निज वउष गिराई ॥ । ५

पाछेमहांदेव प्रभुपाये। विरहंविवस मानस यञ्ञ लाये। प्रियाग्रव यवदेवन गिरिराई। तिनहु दीन निज वपुष गिराई। तव इंद्रापति विधिहरराई। लियेसंग देवन समदाई। शिवहिं प्रसंसि विविध मडुवानी। विनय करत जग जोरितपानी। यद्यपि कृपानाथ तवदेहा। देवन मात्रलोक ह गरेहा। वास्तव भेदकाहु नहींआना। सदा अ काय तमहुं भगवाना। तद्यपि हम एकहुं नि

४२
भ०
५

पिदाया। कीन्हो पातकवन हितकाया। हरिवि
धि वचन सुनतत्रिपुरारी। हँसिप्रसन्न असगिरा
उचारी। सुनहु देववर जुगल सुजाना। मैनिजहृ
दय लोगहितमाना। यद्यपि इहविंह सरभाए
अतिप्राचीन देवसंसारा। तद्यपिमोर वृषभक
रताहू। भावशेष संसार प्रभाउ। सकल लो
क उपकार विचारी। मै इत दीन वृषभ नि
जडारी। याविंह सर ललित सुहावन।

ऊकमला सरिर्त मनभावन। प्रीति भक्ति जुतज
वन अनावहिं। मोर वपुषवर दरसन पावहिं।
ब्रह्मघात इत्यादिक पापा। आन अनर्थ सकल सं
तापा। मचित सकल संशय कछुनाहीं। सर्वहिं
मन वांछित तिनकाहीं। दोहा। ईहां अराधनक
रहिं मम एक मास लगकोय। तासु मनोरथक
रहुं मे सफल इछत मन जोय। २। टीका। और
तिसकी स्त्री पुत्रभी उखीभयेहुये आयकर दीन

6

वाणीमे यद्यपि वहुतहिं समझावतेभये तद्यपि
वैरागी भयाहूआ सो ब्राह्मणएक नहीं मानताभ
या तिनकाति सत्कारकरकर तहांसे उठकरकेक
हीं और प्रस्थानको चलाजाताभया तवतिसके
स्त्रीपुत्र निराश और दुःखी होयकरके ग्रामके
तिन वृद्धलोगोंके सहित तिसकी अनेकप्रकार
निंदा आपकीरती करतेहूये आपने आपने घ
रोंकोचलेआये और सोब्राह्मण शास्त्रकी विधी

के विरुद्ध अघोरपरीनोंसे संन्यासधारकर और
जगतमें कर्मजालको त्यागकर पुरीसंज्ञाकर
के प्रसिद्ध होजाताभया तब वैरागीचित्तभयाहु
आ अनेक अस्थान और वण पर्वतोंमें पृथ्
वीपर भ्रमता भ्रमता जहां शिलानाथ महादेव भगवान विराजेहूयेथे।
भगवान प्रकटभयेहैं प्रथम तिनकोमनोहर
गाथाजोहै सो श्रवणकरिये एकसमय महा
देवकी अर्धंगी पार्वतीजोहै सोमानवतीहोय

तहां आयप्राप्तभया
ताभारासकहतेहैंकि
हेसंतोअवजिसप्रकार
शिलानाथ

८२

भ. ८

होयकर अर्थात महादेवके साथ हठीहूई कोपके
वश गवनकरनीकरती का चलती चलती विंहस
र नामकरके जोवश उजागर देखेहै तिसपरचली
आई तहांआवतीनेहीं अपना शरीरजोहै सोछो
उदिया तवपीछे विरहंके वशव्याकुलभयेहूये
महादेव भी आयगये तहां अपनी प्यारी पार्वतीके
अंगदेखकर तिनोंने भी ततकाल शरीरको त्या
गदिया ऐसे तिनकी दशादेखकर विस्मभगवा

८

तब्रह्मा इंद्र सबदेवताउंको साथ लियेहुये तहांविं
हस्मरपर तरतही आयजातभये और वडीनम्र
वाणीसे महादेवकी अनेकप्रकार प्रसन्नतीक
रकर विनतीकरनेलगे किहे कृपानिधान हे
दीनहितकारी त्रिपुरारी प्रभु यद्यपि तुमारा
शरीर लोगोंके नेत्रोंमे एकदेखने मात्रही हे
वास्तव करके कुछभी नहींहे नाथतुम सदेव
अकायहो अर्थात कायाविकारसें रहितहो ।

भ० ८

यद्यपि हृदयाकी निधी हमपूछतेहैं और ह
मको कृपाकरके कहिये कि आपने कौन नि
मित्तकरके शरीरको पातकियाहै अर्थात श
रीरको छोडदियाहै ऐसे विष्णुभगवान औ
र ब्रह्माके कोमल वचन सुनकर महादेव प्रस
न्न होयकर और मुसकायकर कहनेलगे कि
हे विष्णु हे ब्रह्मा मैंने हृदयमे लोगोंका हितउपकार क
रकेहीं अपने शरीरको इसलिये गिराय दियाहै ।

विचार

कि यद्यपि इसकारण इहविहसर जगतमे अतसेप्रा
चीन और वडभारीतेत्र प्रसिद्धहै तद्यपि ईहांमे
रे शरीरके गिडनेसे इसका संसारमे और अपि
कहीं प्रभावहोय गयाहै अब इस परम पवित्र
विहसरमे और संदर कमलानदीमे जोकोईश्रो
ती श्रद्धासे आयकर स्नानकरेगा और सुवादर
सनपावेगा तिसके शरीरके ब्रह्मघातआदिपा
प अनर्थ और डुःख दारिद्र सबसब मिटजावेगे

४२
भ०
९

और सुंदर मन वांछित फल जोहै सो प्रापत होवे
गा इसमें कुछ संशय नहीं है इस अस्थान पर जो
कोई निश्चय धारकर एक महीने लग मेरा आरा
धन करेगा तो मैं अवश्य करके तिस भक्त के मन
की सब कामना पूरण करूंगा। चौपाई। मणी
करणका तुल्य सुहावा। इह अस्थान ललित मन
भावा। जस कासी विश्वेश्वर गाये। तस इह विश्व
नाथ इत छाये। जे नर ईहां तजहिं निज काया। से

तिनदेहूं भक्ति सुखदाया। जो उरस्मरण करहिं इन आई। मैतिन सपदि सिद्धि वरदाई। नमहु देवकरुणानिजकीने। इहि कहंप्रिय तीरथ उरचीने। करहुनिवास सकल इन आई। कविदाया इहिदेहुवराई। असकहिभे शिव अंतरध्याना। ब्रह्माविष्णु मोदसुखमाना। अतिपुनीत प्रतिमावर आपन। तहंकरत निजकरन स्थापन। गयेबहुरि निज भवन सिधाई। असप्रकार भगवन सुखदाई॥

८०

भ॰ शिलानाथ भगवान सहाये।विंहसरतो रघुप्रकटा

१० ये।सोविसू सरमा ऊजनजोई।ब्रह्मचरज ब्रत तनपर

होई।तहंस्थितहै शंभुअराधन।लगेपाप्रेलोक रु

चिरनिज साधन।भयोवतीन वरष जव आये।तव

सासिधर भगवान सहाये।सपने भनन कृपायति

धाना।सनहु श्रवणऊजनाथ सुजाना।होइहिनमा

र रुचिर कल्याना।मोर अराधन तव हितमाना।

मैप्रसन्नमानस हरषावा।संकुलअर्थसिद्धिमनभावा

१०

बिस्वमंत्र मंगल जगपावन। तोहि देहुं सुख सुजस
बढ़ावन। चारहु अस भोग जग भोगी। अंत बिमल
गति उर भ जोगी। मानव लेहु भक्त हितकारी। अह
दीरघ आयु बिनिज धारी। करहु उजेंद्र दार परिग्रह
होहि संतति सुख संपति लेहू। असकहि दीन शं
भु मट भवना। द्वादस वरण मंत्र तहि श्रवणा। त
द पश्चात भक्त सुख बिदाई। भे अंतर गत भक्त सहाई
स्वपन सुमरण करत उजनाथा। सम्भ्रम हृदय गु

८०
भं०
११

नन अमगाथा। हरप्रभु कथन वदन सभवानी। कसमोहि परहिं सत्यजियजानी। असप्रकार उज हृदयविचारी। वनसज अमन अजाविनधारी। स रव सावद जगमंगलमूला। जपन निरन्तर मन अनकूला। दोहा। ग्रणिग्राम करलोग मिलि वाक महत सवपाय। हररजनीदरसन करन पिला ना‍थ प्रभ आय ॥ २ ॥ टीका। फिर महादे व कहते हैं ॥ ॥ ॥

१२

कि इहअस्थान मणीकरणिका के तल्प मेरे मन

को भावताहै जैसे कासीमे विश्वेश्वरभगवान प्र

सिद्धहै तैसे ईहां इह विश्वनाथभगवान लोगों

के उद्धार करनेको विराजमानभयेहैं जोकोई

ईहां निवासकरके शरीरको त्यागन करेगा मै

तिसको सर्वसुखदायक मुक्तीजोहै सो अवश्य

देऊंगा और जोकोई ईहां श्रद्धापूर्वक वैठकर

पुरश्चरण करेगा तिसकोभी मै शीघ्र सिद्धीके

सु

४० भ. देनेवालाहूं अर्थात जिसके मनोरथोंको नतकाल

१२ हीं सिद्धकरदेऊंगा अवहे देव प्रधान जमभीजी

वोंका उपकार और उद्धार विचारकर इसक्षेत्र

को प्यारा जानकरके ईहांहीनिवासकरो और

इसको परमवडाईजोहे सोदेवो ऐसेकथन कर

के महादेव अन्तरध्यान अर्थात लुपतहोजातेभ

ये और ब्रह्माविस्नु आनंद करके प्रफुल्लतभयेहु

ये अपनी अपनी सुंदर और पवित्र प्रतिमा तहां

१२

अपने हाथोंसे स्थापित करके फिर हरष पूर्वक अ
पने अपने धामकोचलेगये इसप्रकार शिलानाथ
भगवानजोहैं सोविंहसर तीर्थपर प्रकटहोतेभये
वे विल्सरमा ब्राह्मणजोथा सोब्रह्मचरय धारन
कियेहुये तहांविंहसर तीर्थपर स्थित होय कर
के अपने परलोकके सुधारनेकेलिये शंभुभ
गवानका आराधन करनेलगा जब महादेव
का स्मरण करते करते तिसकोवरष बतीत

83

भ.
१२

होयगया तब एकदिन शंभुभगवान प्रसन्नभ
येहुये सपने मै कहने लगे किहेभक्त तेरीक
ल्याण होवे तैने वैरहित चित्तसे मेराआराधन कि
याहै मैअत्यंत प्रसन्न होयगयाहुं अबतेरेको स
र्व अर्थोंके सिद्धकरनेवाला जगतमै परमपवित्र
और सबसे सनसका मूल विद्यामंत्रजोहै सोदेता
हुं जिसके प्रसादसे तु संसारमे असेषभोगोंकि
जो पीछेनारहिजावें सोसब भोगकर फिर जोगी

१२

13

जनोंको डरलभजो गतीहै तिसको प्रापत होके और

वसीलंवी आयुषाधारन करकर और दारजो स्त्री

संतती जो पुत्र संपती जो धन इत्यादि सर्व सुखोंके

सहित होयकर आनंदपूर्वक अपने घरमें वा

सकर इसप्रकार कथन करकर शंभुभगवान

तरनंही द्वादसवरण अर्थात बारांअक्षरका मंत्र

जोहै सो तिसको कानमें सुनायकर फिर आ

पभक्त हितकारी त्रिपुरारी नहांहीं लुपतहो

भ० ५५

जानेभये जवविस्तरमा निद्रासेजागा तवसप
नेको समरण करके वडाआमिकचित होयक
र कहताहै किस्वप्नमें शंभुभगवानने जो
कथनकियाहै सो मेरेको सत्य कैसे प्रतीतहो
ऐसे हृदयमें विचारकर्के कंठमें तुलसीकीमा
लाधारकर अनाचितवतजोहै तिसकाग्रहणकर
लिया किजाअनिकृत आयजावे सोपायलेना नही
तोहरीइक्षा औरजगतमें सर्व मंगलों का ।

१५

मूलहरीमंत्रजोहैविशेष करकै सोई आधारराख
लिया तिसकोहीं भक्तीप्रीतीसे रात्रीदिन जप
तारहताथा नवसमय पायकरके तिसत्रुणी
ग्रामके लोग कि जहांकाविस्र सरमारहनेवा
लाथा सब मिलकरकै शिवरात्रीके मेलेपर
शिलानाथ भगवानके दरसन करनेको आव
नेभये।२। चौपाई। सादिर करि पूजन प्रभुका
मा। उजेपं आयलोक सिलिग्रामा। करिप्रसन्न

८२

भ॰
१५

बहुविधि सम्मकाई। ताम्हसंग निजचेले लिवाई। आयेमदिन सकल मिलिग्रामा। विप्रनिवास कीन निजधामा। भयोम्हनिरन दास गुणखीरा। वैस्नव प्रवर चारुमतिधीरा। कछुक दिवसबीवे उजनाथा। नवलीने बाधव निजसाथा। एक घोतमऊरि हरष अगावा। हर हर रटत विप्रव रुआवा। तहं भागवत केरि सुहाई। लीनासिक धारुविर मनभाई। करिनिज नवल उक्त अभि

15

१८

रामा। रामविभक्ति रतनावलिनामा। प्रथमहिं
करि प्रणाम जनगावना। जगन नाथ जग पाव
न भवना। सादर भक्ति प्रीति सरसाई। हरिहिं
मधुर स्वर गाय सुनाई। तहि पश्चात महित म
नलाये। सामिपद उरी विम वरलाये। सन माव
दीन घाल भगवाना। माथो विंड भक्त वरदाना
हादिस वरण मंत्र जग पावन। लागेणाजपनल
लित मनभावन। धारि हृदय निजध्यानरसाला

16

गरबेलनम प्रभुदीनदयाला। रति ज्वत मपन लाग
हरिकाहीं वीतिगये कछुवासरताहीं। एकदि
वस गरुषेलनमदेवा। जेप्रवीन पूजकरनसेवा
सोरठा। तिनहिं सपन प्रभुदीन। जेभक्तीरतनना
वली। जुजप्रवीन निजकीन विलसरमा नव
लकृत। दोहा। सोसुंदर मोहिपरम पीये तोक
र। वगमंगाय। मोरेग्रीव नपुम्क तव करहुक
रननिजलाय।४। टीका नव वेइणी ग्राम के

लोग जोथे सोप्रथम शिलानाथ भगवानकोवडे
मनमानसे सुंदरदरसन ओर मजन करकर फि
र सब मिलकरके विस्वमरमाजीके आश्रमपर
चलेआये तहां तिनको देखकर सबनेवडे हरष
से प्रणामकिया फिर कुसल पूछकर ओर तिन
को प्रसन्न करकर आनंदसे साथलियेहुये अप
नेग्राम विषेचले आये तहां तिनको वडे सनका
रसे घरमै पहुंचायकर अपने अपने सबचलेग

भ० ९

ये नवपरम व्रतधारी वैस्नवभक्त विस्नमत्रमाजी
अपनी स्त्रीके सहित गृस्थीहोयकर घरैमे वासक
रैनेलगे जब इसप्रकार कुछदिन बतीत होयगये
तवएकदिन अपने बांधव स्त्रीपुत्रको साथलेकर
चलता चलता जगन नाथपुरीमे आयप्राप्त भ
या तहां कुछदिन निवास करकर और श्रीभा
गवत पुराणकी सुंदर कथालेकर अपनीही उ
क्तरचनासे भक्तीरत्नावली नामाग्रंथजोहै सोव

१८

नायलेतेभये तब प्रथम जगन्नाथ स्वामीके भ
वनमैंजायकर और प्रणाम करकर सोभक्तिर
त्नावलीग्रंथ भगवानके आगे बडी मधुर मधु
र स्वर और भक्तीप्रीतीसे गायन करके सबसुना
य देतेभये तिसते उपरांत फिर तहांसे चलकर
शिवपुरीजो कासीहै तिसविषे चलेआये तहां
आयकर विंदुमाधवभगवानके सन्मुख स्थि
त होयकर और हृदयमें पुरुषोत्तम भगवान

भ०
१८

का सुंदर ध्यान धारे हुये द्वादसा अक्षर मंत्रजो
है सो जपने लगे तव जपते जपते एक दिन दी
नबंधु जगन्नाथ भगवान अपने पुजारियों को
सपने में कहने लगे कि विल्व सरमा भक्त की
रची हुये भक्ती रत्नावली जो है सो मेरे को
अत्यंत प्यारी है तुम तिसके गुटके को लाय
कर बडे सनमान पूर्वक मेरे गले में पहिराय
देवो ॥४॥ चौपाई । सोउ जन वसहिं श्रीपुरि

१८

माहीं। पठैहोंहत बेगतुमताहीं। जबलग सोन त
मेंहू परिहरोते। तबलग मोहिन आभरनभाते। अ
सप्रकार रूपमन तिनजाई। स्वपन मरम सबदी
न सुनाई। त्रिभुवननाथ प्रथमरूपकांहीं। दीन
बुकाय स्वपन निसिमाही। तिनहिंभूप असवद
न उचारा। तबसुजन प्रभदीन उचारा। करहुप्रीति
पूर्वक मनलाई। मैलेहौं तहिबेग मंगाई। असक
हि भूपति हत पठाये। इतसुजिक सुजन प्रभुआये

भ॰
१५

मणिमाला भूषण सवनाना। देखैयशनि पडे भगवाना। दोहा। उनहूतन उजनाथ कहंभूप पत्रिका जाय। दीसा देखत हगन उज महामोद सखे पाय। वार वार पूछत कुसल हूतन हृदयलगाय। करि सेवासन कारसव पावन पाक जिमाय।५। टीका। फिर भगवान कहतेहैं किसो ब्रह्मण प्रधान जोहै कासीमे वासकरताहै तम नंदा निसके पासहूत भेजदेवो जव लग भ १

कीरतनावली विलसरमाकी हुतनहीं आवती
नवलगा मेरेको भूषणवस्त्र कळुभावतेनहीहैं
ऐसे स्वपनको पायकर और सुजिकजायकर रा
जाको सवप्रसंग सुनायदेते भये तवराजाकोदी
नंबधुने आगेही सपनेमे सवजणाय दियाहूआ
था तिनको कहनेलगा किभाई तुमप्रीती सन
मानसे भगवानका सुजन सेवनकरो मैशीघर
तहां हूतभेज करके तिसभक्तोरतनावलीके गुट

भ॰ के कोईहांहीं मंगवायलेनाहूं ऐसेकहिकर राजा
२॰ ने हुतजोहैं सो नहांको पठायदिये और ईहांज
व ऋजिक भगवान कृपानिधानका भूजन स
वनकरनेको भवनमे आये नोको दखिनेहै कि
भगवान भक्त स्वावदानके मणिमालाके स
हित सुंदर भूषणजोहैं सो सबनीचे हृथवीप
र पडेहूये हैं और जहां जवविलसरमाको हू
तोंने राजाकी पत्रका जाय करकेदई नवभक्त

२॰

प्रधान तिसकोदेखिकरिके अत्यंत प्रसन्न होयगये और
उन्होंको वारंवार हृदयसे लगायकर और भली
प्रकार सबकुसल पूछकर बड़ीसेवा सतकारसे
भोजन जिमायदेतेभये। ५। चौपाई। बहुरि भक्ति
रतनावलिचाहू। निजकृत विप्र प्रेमरसमाहू। हू
तन दीन जुगल करजोरी। वार वार करि विनय
अथोरी। बहुरि विदाय कीन मनमाना। लेहुतन
तवकीन पयाना। न्टपपे आयवेग हरषाने। लिये

भ० २१

सुभूप प्रेम सुखमाते। बुधपंडित जन बोलि मंगाये

विप्र समाज रुचिर विरचाये। सो भक्ती रतनावली

भाती। पावन प्रेमसार सुखदाती। मानस मोद

प्रमोद बढायन। कीनजगत पति सन सुख गा

यन। नवप्रभु भक्तवनस भगवाना। नृपकहं १

नि अस सपन बखाना। इहिकहं भूपति ललित

लिखाई। कंचन पटिक शलोक मढाई। मोरेके

ठ प्रीतिसरसाये। नवदेह्यो छितपति पहिराये। क

२१

छुकर महक माहिं नहाई। मोरे करहु अलंकृत
ताई। सासन पाय भूप भगवाना। सो सब प्रथम
कीन मनमाना। पाछे आन आभरन भायो। नल
सी मुक्तमाल पहिरायो। असप्रकार भगवन
सुखकंहू। सदा भक्तवस दीनन बंधू। देत जनन
निज रुचिर बडाई। कृपानकेत भक्त सुखदाई।
असरहु चरित यथा मनी गावा। मैंसे लपत कछु
क मनभावा। दोहा। जेसादिर रतिप्रेम जन सुन

४०
भ०
२२

हिं अवणपरपहू । ताके उर उपजव विमल जगन
नाथपदनेहू ।६। टीका । फिरव आपनीकृत माना
प्रेमरसका सार भक्ती रतनावली जाथी सोविस्
तरमा हाथ जोडकर और वार वार विनती कर
कर राजाके हतोंकादे करके मनमानसे विदा
य करदेनाभया मालेकरके वडे हरषसे आय
कर राजाका देदेनेभये नवराजा आनंदमे म
गन भयाहुआ निसीदिन सव ब्रह्मण पंडित ।

२२

अथ रघुनाथ चरित वरणनं दोहा कलिमल भक्ति कलि करन हरु दमन उरन उरव भाहु। भक्ति महातम आन अव करहुं कथन मनहाहू।

चौपाई। उतकल देस परम गुणधामा। वसि हैं एक भूप अभिरामा। तास पुत्र हरि भक्त प्रवीना। विप्र संत सेवन मनलीना। पित्र स प्रीति संजत अभिलाषा। रवि रघुनाथ नाम नहिराखा। सो जब भयो तरुण वडभागा॥

२ भ १

नृप जब राज देन पद लागा। तेवि चारि बंधन मनमाहीं। लागकरन बोधन पितुकाहीं। सि

ष्या नात सकल जग देखा। मोहिन राज कछुकाज अपेखा। तब जब राज आन सनकाहीं

देहु जनक मोहि लालसनाहीं। अस कहि धाम भाम सब त्यागी। चलेउ भजन भगवन हि

तलागी। जगन नाथ सामीप सुहावा। सुंदर सिंह द्वार मन भावा। तहां निवास करन नि

जलागा। देव सरोज चरन अनुरागा। चाहुमा
जाचित व्रत मन लीना। माघ मास इक समय
प्रवीना। सोयो अवनि अर्थ निसि छाई। कंपन
लाग सीत दुख पाई। तव भगवान भक्त रख
वारे। वैस्नव रुचिर रूप निज धारे। सीत त्रा
ण पटदीन उढायो। भक्त निगुण निद्रा सुख
पायो। पूजक आय प्रात जव देखा। ओढ़न ना
रुदैव पट लेखा। पूछन लाग सकल विस

भ०
२

माई। कहि मोहि दीन देव पद भाई। दोहा। त
व बोल्यो रघुनाथ अस मोहि न मरम जनके
ह्रु। सीत कंप नकि अरथ निसि दीन दयावस
एहु।२। टीका। नाभादास जी कहते हैं कि हे
संतो अव कुल प्रमानमा की सुंदर भक्तों के
हृद करने वाला मैं और भक्तों का महात्म
जो है सो कथन करता हूं आप कान देकर।
श्रवण करिये कहते हैं कि उतकल देस।

२

विषे एक धर्म और गुणोंका धाम राजा नि
वास करताथा आगे तिसका पुत्र भी भग
वानका प्रवीन भक्त और साध ब्रह्मणों की
सेवा करने वालाथा पिताने प्रीती पूर्वक
तिसका नाम रघुनाथ राखा हूआथा सो ज
व जवा अवस्था को प्रापत भया तव पिता
तिसको परम चतर और लायक जानकर
जब राजकी पदवी जोहै सो देने लगा सो

राज कुमार हृदय मै बड़ाभारी बंधन जान
कर पिताको प्रबोध करने लगा कि हे तात
इह संपूर्ण जगत जो है सो मेरे को मिथ्या रू
प दीख परताहै तातें इस राजकाजकी मेरे ।
को कुछ अभि लाषा नहीं है तुम कृपा करके
इह जुवराज पद जो है सो मेरे छुटे भाईको
देदेवो मेरे हृदय मे इस की कुछ लालसा न
हीं है ऐसे कहि करके पिता माता और माता ।

३

पिता श्री आज्ञा को त्याग करकें केवल भगवा
नके चरन कमलोंका आधार राखकर भ
जनके नमित्त अकेला निकल करकें चल प
ड़ता भया तब गवन करता हूआ जगन्ना
थ स्वामीके समीप सिंह द्वार नाम करकें अ
स्थान जो प्रसिद्ध है तहां आय करकें निवास
करताभया अजा चित व्रत धारन कर लिया
जो अनिच्छित कछु आय प्रापत होवे तो पा

श्री भ ४

य लेता नहीं तो संतोष मै मगन रहता इस प्र
कार तिसको जब मास महीना आयगया तो
एक दिन पृथिवीपर सोये हुये को आधीरा
त बतीत जो भई तो तीनके मारे घर घर को
पेनलगा तहां भक्त जन की रक्षाकरने वाले
भगवान तिसका कलेश देखकर तरत
हीं वैस्नव रूपधारकर चले आये और।
तीनके निवारने वाला वस्त्रजोथा सो दया

४

करकै तिसके ऊपर उढाय देतेभये तव रघु

नाथ भक्त वस्त्र के आधारमे निद्राके सुखमै

मगन होयगये जब प्रातकाल भयेतब जनो

ने आय करकै देखा तो कोई पुरष भगवान

का पवित्र वस्त्र ओढे हुये सोय रह्याहै तब

आश्चर्ज होयकर तिसको जगाय करकै पूछ

नेलगे कि अरे भाई इहनेरे पर भगवानका

पवित्र वस्त्र कि सने उढाय दियाहै ऐसे ति

नका कथन सुन करके रघुनाथ भक्त कहने
लगे कि भाई मेरेको कुछ खबर नहीं है आ
धी रातके समय सोनेसे व्याकुलभया हूआ।
कांप रहाथा कोई सुधरमी पुरष दया करके
इह वस्त्र मेरेपर उढाय गयाहै।१। चौपाई। त
व इह मरम सुजकन जाना। इहि पट दीन
आप भगवाना। दीनदाय विन कवन उदारा।
जनपें करन हार उपकारा। तास भक्ति अस

देखि सहाई। लगे करन अस्तुति समुदाई।
जाति प्रधान भक्त भगवाना। वंदित लगे क
रन मनमाना। नव समझ कछु अब सरपा
ई। करत गवन मथुरा पुरि आई। राधा कुंड
वैठि मनमाना। हरि पूजन मानसि भगवाना
लागेपा करन भक्ति सरसाना। चनो डगथ नै
वैद लगाना। पुरव वन संतन नहिं दीना। ए
कल आप पान सब कीना। ताहि दिवस नहि

उदर मझारा। उपजेउ सूल प्रबल उर भारा॥
वैद्य बुलाय धमनि दिखरावा। तासु प्रकट
गमदीन जणावा। उगाथ पान कीन्हे तब
गाढा। नहितें उदर अजीरण बाढा। सो वो
लेउ निसिदिवस सहावा। भै न उदर कछु भो
जन पावा। इह कस भयो वैद प्रति कूला। मो
रे उदर अजीरण सूला। अवहिं दिखाऊं प्र
कट करिनोही। भोजन देन विलम कछु।

मोही। अस कहि वैद निपुण उरखचीने। अ
ति प्रचंड श्रौषदि कछु दीने। भयो नाश नी
दाण तन काला। नहि प्रभाव वल वमन
उछाला। दोहा। निकसि परेउ अति सघन
नव उदर उगय सवनास। लोक विलोकन
चकितभे भवन सूल उरवनास। २। टीका।
तब इह भेद सुजनोंने जानलिया कि इसके
ऊपर दया करकै आप भगवान भक्त सवदा

भ० ८

नेने वस्त्र उप्पाय दियाहै दीन बंधूके विना श्रो
र कौन ऐसा दीनजनो कीरक्षा करने वालाहै
इस प्रकार जिसकी भक्ती देख कर सब लो
ग सावसे अनेक प्रकार श्लाघा करनेलगे
श्रोर भगवानका प्यारा भक्त जानकर वार ।
वार वंदना करनेभये नव सो भक्त कुछ स
मय पाय करके तहांसे उठकर मथुरा पुरी
को चले आये श्रोर प्रीती पूर्वक श्रीराधाजी

८

उपर वैद कर भगवानके मानसी पूजन मे
चित्त की वृती को लगाय देतेभये तब तिनो
ने भक्ती प्रीतीसे भगवान कृपा निधानको व
हेवने दूधका नैवेद लगायकर फिर पूर्ववत
जैसे संतों को देलेतेथे नहीं दिया अकेलेसब
आपही पायलिया तिसतें तिनके उदर मे वडा
भारी शूल दुख उतपन्न हो जाताभया तब
वैद्यको बुलायकर नाडी जो दिखाई तो तिस

यो॰
भ॰
८

ने कहा कि तुमने बडागाफ्का द्वगाघ पान कि
याहै इसीतें तुमको अजीर्ण होयकर शूल उ
तपन्न भयाहै तव रघुनाथ भक्त कहनेलगे
कि भैया मे तो दिन रात्रीमे कछु भोजनमात्र
पायाही नहीं है मेरेको अजीरण कैसेहूया औ
से तिनका कथन सुन करके वैद कहने ल
गा कि औषधीके देनेकी विलंभहै मै अबी
दिखाय देताहूं ऐसे कहि करके वैदने तत

८

काल एक औषधी देदई जिसके खानेंहीं तिन
को वमन जो उछालाहै सोहूआ सबके देखते
ज्योंकान्योंहीं गाफा हथ निकल पडा और सू
लभी सब नरन मिटगाया इस अद्भुत को दे
ख कर सबलोग आश्चर्य के वश हो कर मुख
से साधु साधु शब्द उचारण करने लगे।२।
चौपाई वैद बचित्र की न चतुराई। पूछन ला
ह मरम समुदाई। तब बोल्यो रघुनाथ सुजा

रा॰ मे
८

ना। मै नैवेद उगाथ भगवाना। लावा मानसि ध्या
न जराई। एकल वड़्रवि लीन सव पाई। ओर
न नहि विभगन कछु कीना। सो पवि पाक प्र
कट अव लीना। सनन लोक मानस विस मा
ये। साधु साधु सव वदन अलाये। अस प्रकाव
रघुनाथस जाना। भाअति सष्ट भक्त भगवा
ना। नास भक्ति कर विदन सहावन। अन्य स
ह्यानस मानस भावन। ईहा एक संतपन उवा

सो। मै कछु अलप यथा मति बासो। दोहा।
जीयत रहो इह भक्तवर निरत भक्ति निस
काम। पायो मरत पञ्चान कल हास धाम
अभिराम।२। टीका। नव वैद की चतराई।
देख करके लोग पछने लगे कि इस मे का
कारणरहा और तम कैसे जाना तव माथ
व वोल उठे कि भाई मैने मानसी ध्यान ल
गायकर भगवान को हथका नैवेद अरप

१० ए किया था पीछे किसी को बांटकर नहीं दि
भ० या मैंने अकेले सब आपही पान करलिया
१० सोई फल मेरेको अब प्रकट मिल गया है
10 ऐसे रघुनाथभक्त की वाणी सुनकर सब।
लोग मन करके प्रसन्नभये हुये साधु सा
धु कहने लगे कि भक्तप्रधान तुम धन्य हो
इस प्रकार रघुनाथ जी जो हैं सो भगवान
के परम सखा और बडे दृढभक्त होतेभये
१०

तिनकी भक्तीके अनेक और भी महात्मैहैं
ईहां संक्षेप करके एकहीं कथन किया ग
याहै इहभक्त रुद्र जबलग जीवतेरहे तब
लग भगवान की भक्ती मै लीनरहे और
जब शरीर को त्यागते भये तब आनंद
पूर्वक डंकावजावते हूये कल्प प्रमानतमा
के परमधामको चलेगये।१। इतिश्रीभक्ति
विनोद ग्रंथे भगवदभक्ती महात्मे भाषा
मीहांसिंहकृत

२॰
५॰
॥

टीकायां रघुनाथ चरित वरणनं नाम स
र्गः ॥

॥

गयेहै फिर पंडित विद्वानजोथे सोदीनहोयकर वि
नती करनेलगेपडे किहे ब्राह्मणोविवेक उत्तमब्रा
ह्मणो हमअपनी जड़ताकेवश होयकर तुमारे को कुछ अनुचित वचन
बोलचुके हैं सो हम को अज्ञ और अपराधी जानकर तुमकृपाकर
के क्षमाकरो अबतें हम बैरहित चित और प्रीती
मनमानसे तुमारे इस गुणनिधान बालकको
वेदविद्याजोहै सोसब पढायदेतेहैं जब इसप्र
कार पंडित विद्वान जनोंने कथनकिया तब ।

ज्ञानदेवजी प्रणाम करके महर्षिभगवानको क
हिनेलगे किहे दीनबंधु हे कृपासिंधु अबताप
ठिये मौनधारिये दयाकरके क्षमाकरिये ।७।
चौपाई। मधुरबचन सुनितासु रसाला। भयेवि
राम महर्षि ततकाला। तबसादिर उजगण ह
र्षाये। लियेतासु निज सदन सिधाये। यज्ञोप
वीत रीतजुतपावा। वेदादै प्रनीत पढावा। थोर
हिं दिवस रुचिर श्रमकीना। भयोविप्र वरवेद

प्रवीना। अमृत हि देखि लोग सम्हदाई। अलपकाल विद्या वरपाई। निज निज हृदय चकित सवकाहू। तव इक सिद्ध आन घलताहू। दोहा। रसमी काल कराल कर व्याघ्र अरुफन सोय। कहत कह्यो निजवदन अमृतान देवऊजसोय। ८। टीका। तव ऐसे ज्ञानदेवके वडे वनीत और मधुर वचन सुनकरके महिषसोएय सोतरत सोमान होयगये तिसतें उपरांत हरखके वशभये

ह्ये ब्राह्मण वडेप्रीती सनमानसें ज्ञानदेवको
अपने घरमैलेगये तहां प्रथमवेदकी विधीस
न्स्कार यज्ञोपवीत अर्थातजनेऊजोहै साधारन
करवाया और फिर वडेहित प्यारसे रात्रोदिन
करके वेदाभ्यासजोहै सोपढायदिया इसप्रकार
थोडेही दिनोंमे श्रमकरके ज्ञानदेवजी वेदवि
द्यामे प्रवीन होयगये तब तिनकी ऐसीचतुरा
ई देखकरके सब लोगवडे अचरजको प्राप्त

होयगये किदेखो इसबालकने थोडेहीकालमें
सबविद्याप्राप्त करलईहै ऐसेतहां निवास क
रते करते एकदिन कोई बडाभारी सिद्धजोथा सो
आयगया सिंहजोशेरहै तिसपर चढाहूआ
और महांभयंकर सरपका कोटडा हाथमें लिये
हूये ऊंचीस्वरसे कहताहै कि मेरेको बतावो
ज्ञानदेव ब्रह्मणकहांहै ।८। चौपाई । सिद्धवच
न सुनि उजवरकाना। रहीनिकट इकभीत म

९८

भ. २९

ह्वाना। नरननतासपर होत अरूढ़ा। तांके कहत नव
चन असगूढ़ा। कौइक सिद्ध सिंह चढ़ि आवा।
76 व मोपै भीति दरपँ मधावा। तवतोपरगणि रूप अद
कामा। नमहिं मोरँ दंड प्रणामा। मेलहु मोहि
अव आगल चलि तासा। जब उजवर असवचन प्रका
सा। भीति निरंतर वेगपरिधाई। सिंह अरूढ़ सिद्ध
फिरि आई। अदभुत देखि लोग विसमाये। उजपै
सिद्ध सिंह तजि आये। आलिंगन करि विविध।

२९

प्रकारा। बक्रहरि बदन अमल बचन उचारा। नवज
गधन्य प्रवर उजराई। जायन नव प्रभाव कछु
गाई। सकलकला गुणनिपुण सुहावा। सुनि
अस ज्ञानदेव हरषावा। कहत नकृपा निधि कृपा
तुम्हारी। जो मोहि दीन सुजस अस भारी। तुम्हं
विदत समरथ जग जैसे। करत अलाप परस्पर
ऐसे। सोरठा। निज निज आसन थाय। अस प्र
कार इह चरितनै मे। कविर सरव सुखदाय। गा

४८
भ॰ २८ 27

वाकाम अभिष्प्रद ।९। टीका । नवसिद्धका व
चन स्रनकरके ज्ञानदेवजी एकनिकट माटी
कीदिवालजो खडीथी ततकाल तिसपरसवा
र होजातेभये और तिसकोकहनेलगे कि हे
दिवाल कोई एकसिद्ध बडे अभिमानसें सिंह
पर सवारभयाहूआ मेरेको हंकारता अर्थात
बुलावताहै तोतेमैंभी पाऊं मर्यादानहीं जाय
सकता इसलिये तेरेपर सवारभयाहूं और

तेजोहैं सो पृथ्वीरूप सर्वकामनाके देनेवा
ली और सर्वसामर्थहैं अबतेरेको मेरीदंड प्र
णामहोवे कृपाकरके मेरेको सिद्धके साथ
आगेहीं चलकरके मल इसप्रकार जब ज्ञा
नदेवजीने पृथ्वीके आगे प्रार्थनाकरी त
बभिमीजो दिवालथी सो तरत वेगसेधाय
कर ज्ञानदेवको लेकर सिंहपर आरूढभ
येहुये सिद्धकेपास चलीआई इसअदभुतको

९८

भ॰
२८

नकको देखकर सवलोग अचरजके वश होय गये और सिउ जो या सो सिंहको त्यागकर रान देवजीके पास चला आया तिनके साथ वड़ी प्री तीसे आलिंगन कर कर अर्थात गलेमिलकर फिर मुखसे कहनेलगा किहे महात्मा तुम जगतमें धन्यहो सर्वकला और सर्वगुणप्रवी नहो तुमारे प्रभावकी कुछमहिमा कथन न हीं कीजाती ऐसे सिउके मुखसे वचनसुनक

२८

~28

हाथ जोड कर विनती करने लगे कि हे भ
गवन इह ब्रह्मण जोहै सो आपके चरनो
का हृढ भक्तहै देखिये इसने बहुत काल
परयंत बडा आडंबड ओर महा उग्रतप कि
याहै चहताहूं कि आप अनुग्रह करके
इसको बरदान दीजिये ओर संसार मे स
फलकीजिये ।८। चौपाई । मुनिकर वचन
सुनत हितकारी । चतुरानन मुखगिरा

३९
भ.
२८

उचारी। कहासमन नव पुत्र प्रवीना। इहिउज
विपुलकाल तपकीना। मै निज हृदय प्रथ
म गुण अपना। सोचित रहो अवसि वरदे
ना। कीआे अव सुमरण नवमोरा। करहु अ
भिष्ट सकल फरतोरा। तात देहुं मंजल व
रपही। भनत वदन असदीन सनेही। पर
सत वलमि वचन कुनतासा। विप्र विप्र अ
स वचन प्रकासा। भामपरस जवनास वि

२८

76

धाता। ननक्षण उठ्यो विप्र उनि गाता। विधि
वसिष्ट मन माव दैदेवे। उदय भाग निज
से स्वति लेवे। पद्यो लकट इव चरनन पर
नी। दृष्टानजाय मोद कछु वरनी। नव निज
करन कमल भव गेही। भन्यो उठाय वदन
श्रमतेही। होहु ब्रह्म ऋषि नम सुभचारा।
वालमी कि श्रम नाम तुमारा। श्रम जब वि
धी दीन वरनासा। विप्र परम निज हृदय हु

३५
भ
५८

27

लासा। आगम निगम समय तहि माहीं। सो
गो पांग रूप धरि नाहीं। कृत्त प्रचार परम
धृतिदाया। ह्री कीरति प्रज्ञादि निकाया। श्रु
ति स्मृति मति शांति सहाई। क्षमा तहीं र
टर सुखदाई। ऋद्धि सिद्धि मानस कुलमानी।
सादर विधि आयस अनुमानी। वालमीक क
र सन सख आई। ठाढि भई ननदाण समदा
ई। प्रेम करि उजहिं कृतारथ नाहीं। गाथेव

रिंचि भवन निजकाहीं । मुनि वसिष्ट आपन

मग लीना । वालमीक वरपाय प्रवीना ।

मुनि ऋषियन कर वेदित सोई । सुरुएस

कल मनोरथ होई । परि हरि काम निवृत

अनुरागा । उत्तम अमल करन तपलागा

राम नाम अरु भक्ति प्रभावा । मै संतपत

कछुक अस गावा । ततर यथावत वेदन

गाऊ । इह जस जगत अनंत प्रभाऊ । तस

सामर्थ्य कथन कहुंकोई। सुनहु संतजननना
हिनहोई। तांते मैं जड लघु मतिवारा। इह
प्रभावकस मनहूं अपारा। जहिंते वालमी
क संसारा। प्रथमहिं रुचिर राम अवतारा।
रामो[illegible] घा[illegible] रचना वरसाधी। मानहुं छंद
सरस्वति वाधी। आजहूं वालमीक मुनी को
हीं। सुमरहिं प्रातकाल नर जोहीं। गत अ
ज्ञान जाफ्रता खोई। होहिं ज्ञान रत पंडित

सोई। अस इह भक्ति महातम सोहा। वाल्मी
क मति मानस सोहा। दोहा। दमन दोष दा
रद सकल सनहिं भक्ति जनजोय। लोक सु
जस परलोक सुख हरि चरनन रतिहोय।
टीका। इस प्रकार वसिष्ठ मुनीके वडे हितका
री वचन सुनकर ब्रह्माजी कहनेलगे किहे
पुत्र तैने सत्य कहा जो इस ब्रह्मणने वहुत
काल पर्यंत तप कियाहै परंतु हेमुनी प्रथा

३८
म
२८

न मैं प्रथमहीं इसके वरदेने को अपने हृद
यमें सोचकर रहाथा अब तैंने जो मेरेको स
मर्पण किया तोतें तेरे मनका अर्थ जोहै सो
सव सिद्ध करताहूं अर्थात इस ब्रह्मण को
वडा सुंदर और अपूर्व वरदेताहूं ऐसे कथ
न करके विधाताने तिसके वरसी रूप शरी
र को प्रवेस हेब्रह्मण हेब्रह्मण उच्चार कर
स्पर्श किया जब तिसको इसप्रकार ब्रह्मा

१८

का सपर्शी भया तब ब्रह्मण मेने केचिन ब

तनबीन कायाधार कर तत कालहीं उठ खे

डा हूआ और ब्रह्माके सहित बसिष्ट मुनी

को सनमुख स्थितभये देखकर और आप

ने भागें की बडाई जानकर दीनतासे तरत

हीं चरनोपर गिरपडा तिस समयका तिस

का आनंद और सुख जोहै सो कथन नहीं

कियाजाता तब ब्रह्माजी अपने चरनोपरसे

३५

भ
३०

३०

तिसका सीस उठाय करके कहनेलगे कि
हे पुत्र तूं मेरे वचन से ब्रह्मऋषीहो और
अबतें बालमीक तेरानाम होताभया जब
इस प्रकार ब्रह्माने वरदेदिया तब सो ब्रह्म
ण परम आनंदको प्रापतहूआ और तिसी
समय वेदशास्त्र शुभआचार यज्ञ धर्म धी
रज सजस लज्जा शांती श्रद्धा दया सम्मती
कृति सिमती क्षमा लक्षी इत्यादि सब सिद्धी

३०

सिद्धीनोहैं सो विधाता की आज्ञासे आय क
रके वालमीक के सनमुख स्थित होय जा
नीभई ऐसे तिस ब्रह्मणको जगत में सृज
नकापात्र और कृतार्थ करके ब्रह्माजी जो
हैं सो आनंदसे अपने धामको चले जातेभ
ये और इहां वसिष्ट मुनीभी आसीर वाद
देकर अपने मारग को चलेगये नवईहां वा
लमीक जोहै सो वर पाय करके सर्व मनो

३९
भ०
३१

रथोंसे परिपूरण और मनी ऋषियों करके
वंदितभया हूआ कामनासे रहित शुद्धवि
नहोय करके बडा निरमल और अखंड न
प जोहै सो करनेलगा नाभादासजी कहते
हैं किहे संतो इह राम नाम और भक्तीका
प्रभाव जोहै सो मैने कुछ संक्षेप करके
गायकर दियाहै नही तो इह राम नाम औ
र भक्तीका प्रभाव जैसाकि वेदने गायनकि

३१

याेहू सोता वश अगमहै तैसा कथन करने
को कोई सामर्थ्य नहीं है तांते मै जड़ और
तुच्छ बुद्धीवाला ऐसे अपार प्रभाव को कै
से कथन कर सकताहूं देखिये राम नाम
और भक्तीका अनंत प्रभाव कि जिसके प्र
तापसे जगतविखे वालमीकने प्रथमही
रामा अवतार के रामायण की कैसी रम
णीक रचना साधीहै माना छंदों विखे प्रन

३८
भ
३२

32

त सरस्वती बांधी हुई है आज भी तिस वालमी
क मुनी का जो कोई आर्तकाल विषे स्मरण
करेगा तिसके हृदयकी जड़ता और अज्ञा
न सब नाश होयकर ज्ञानध्यानके सहित
शास्त्रके जाननेवाला पंडित विद्वान होय जा
वेगा ऐसा इह बड़ा मनोहर और उत्तम वाल
मीक की भक्ती का महात्म है इसको भक्ती श्री
तीसे जो कोई श्रवण करेगा सो सर्व दोष उ

33

३९

भ.

२२

ख और दारिद्रोंसे छूट कर भगवानके चरन
कमलों की भक्ती और प्रीतीवाला होजावेगा
६। इतिश्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद भक्ती म
हातमे भाषा टीकायां वालमीक चरित्र वर
णनं नाम सर्गः ॥

मीहांसिंहकृत

अथ खोजीभक्तचरित्रं । दोहा । मोदभरन मंगल
करन भक्ति महात्मएह । करहुं यथामति कथ
न कछु हृदय हरन संदेह । चौपाई । रहा भक्त
सत्यम अभिरामा । खोजीनाम विदत गुणधा
मा । कृष्णसमान जानि गुरुदेवा । मनवच काय
करहिं नित सेवा । गुरु कृपाल अस लोगन गा
ये । पारगामि आगम समुदाये । त्रिविधकाल
गति जाननहारे । सरव भूत सज्जन हितकारे ।

९१
मं०
१

अवसर एक तिनहुं मन भावा। अतिउतंगकल
धंट बंधावा। सबकहं प्रकट बदन समकायो
अबप्रस्थान समय नियरायो। जोगन्हहिमरत अ
वसर इनआये। कलहनलै जाहिं सहाये। नव
इहू अकस्मात सबजाने। करहिं धंटकलशाव
टमहाने। जोरवभयो घंट कुछु नाहीं। तामम
गवन आनयलकाहीं। असप्रण सनननलोग
अनुरागे। तामरन अवसेरनलागे। नवाके

नी निज सेवक काहीं। गृह बर बाहिर ग्राम इक मा
हीं। कल्कारज बसदीन पठाई। ग्राउबले पठलो
कसिधाई। आम्रबिटपतर सिषगण आई। नवम
उलि ग्रंरु नबिरचाई। लेपन देत कुसादि बिछाये
गृहकहं ग्रंतकाल नहं लाये। उर्द्ध दृष्टि देखन गु
रुदेवा। नैनप्राण सह नहिं मन लेवा। घंटानाद
बिलोकहिं लोगू। मोन भयो नव मानि अजोगू।
गृहकहं दीन सिषन तब साहा। हम सब दिवस रवा

१९
मं.
२

निउतमाहा। आयेगुरुसत सुनिप्रनितागा। रुद
न करत दीरघ सुरलागा। तवलोगन करि वदन
प्रबोधू। कीन्यो शोक प्रवाह निरोधू। गंठनाद प्र
छन अभिलाषा। मोनभयो शिषगण असभाषा
दोहा। पुनि सद्गुरु सतकाल तव गुरुकाहिथल
पोछाय। आसविटपतर अमरनिज सिष सव
दीनसुनाय। विगत प्रकादन उर्ई मव कुसम
कुसादि विछाय। तव सहज हिं ।

गुरुदेव जिन बिन प्रजास नजिकाय ॥ ॥ टीका ॥
प्रब आनंद मंगलके देनेवाला और संसयभ्रमके
नासकरनेवाला भक्तोंका महातम जो है सो जैसा
किमेद मतीके अनुसार होय सकता है गायन
करता हूं एक प्रकट गुणोंके धाम और भक्तोंवि
र्वे स्रष्ट खोजी नामकरके उजागर भक्त होते
भये सो अपने गुरुजीको कृष्णभगवानके त
त्वज्ञानकर मनवचनकाया करके नित्यप्रति न

१०२
भ०
३

3

कीसेवाभक्ती करते रहतेथे तबवे तिनके गुरुजी
कैसेथे कि भूत भविष्यत वरतमान इन तीनो कालों
कीगतीके जानने वाले सर्वजीवोंकेहितकारी वे
दविचारमे परमप्रवीन और सबलोगोंमे माने हुये
थे एक समय तिनोंने बडे ऊंचे अस्थानपर एकसे
दरघंटाजोथा सोबांधदिया और अपनेशिष्योंके
सहित सबलोगोंको प्रकटकरके सुनायदिया
किभाई हमारे प्रस्थान अर्थात परलोककोजाने

३

कासमयजोहै सोनिकट आयगयाहै जब हमश
रीरकोत्यागेंगे और ब्रह्मभगवानके हतोंकेद्वा
रा ब्रह्मलोककोजोजायेंगे तो अकस्मात आपने
आपहीं इसब्रह्मांडकाविनाशहोवेगा और शावदजोहै सोहोजा
वेगा और जो कदाचित इसका शावदनहींभया
तोतमनेजानलेना किएह किसी और अस्थान
कोचलेगये इसप्रकार तिनका अग्ण सुन करके
शिष्योंके सहित सब लोगतिनके अंतसमयको

१८१
भ
४

देखनेलगे तबएकदिन गुरुजीने आपने सुहृद
सेवक खोजी मीको कहींबाहर ग्रामविखें किसी
कारजके लिये भेजदिया और तिसकेपीछे आप
परलोकके जानेको तयार होयगये तब तिनकी
आज्ञासे शिष्योंने अंदरुणविखे आपके हस्तकेनी
चे लेपन देकर सुंदर मंडलीजोहै सोरचायदेई
और कुसापुष्प इत्यादि भी सबविछायदेए फिर
अंतसमय जानकर गुरुजीको सनमानसेलाय

करतहो पैफायपदिया तबवेकपाल नेत्रोंकी दृष्टी
सोहै सोऊपरकोलगाये हुये एकमहूरतकेबीच
यतनकेविना सहनेहो प्राणोंकोत्याँकर मरतहो
जातेभये तिस समयलोगजोथे सोघंटेके शब
दकोदेखनेलगे किकवहोताहै पयंतवेनहीहो
ताभया इसमें सबलोग अनचित औरअनहि
त मानकर परस्पर चरचाकरनेलगे तबशिष्यों
नेरीती अनुसार गुरूजीके शरीरकोदाहदेदि

११
भ०
५

या और बड़ा शोक मानकर अनेक प्रकारसे रो
दन विलाप करनेलगे फिर हमसेरे दिन बड़े उत
साह पूर्वक खोजी भक्तजो वरपर आये तो गुरु
जीका मरण सुनकर व्याकुल होय गये और हृ
दयका धीरज छूटगया बड़ी दीर्घ स्वरसे रोद
न करने लगजाने भये तब लोगोंने अनेक प्र
कार समझाय कर तिनके शोकके प्रवाहको
कुछक शान्ती किया फिर स्वरन संभालकर बैठके

५

शवदका द्वतांतपछनेलगे तवलोगोंनेकहा कि

वेतोनहींभयाहै इसप्रकारसुननेतेंही खोजीभक्त

शिषोंसे पछनेलगे किभैयामेरेको इहकहो जो

अंत समय गुरुजी तमने कहा ओर कौन आस्या

न पर पौढायेथे ऐसे खोजीजीका वचन सुनकर

शिष्य कहनेलगे कि इस आंब वृक्षके नीचे आप

ने अंतरणमें भली प्रकार लेपन देकर ओर छ

घा कुशा इत्यादिसब बिछायकर बहांनिवासहैय

६
भ
६०१

खेलेमरव ऊपरकी वोरध्यान लगायकरके गहजी
को सनमानसे पोछ्यायदियाथा कुछभी विलंवन
हीभई किदीनद्यालने यतनके विनानरत सहजे
हीं शरीरकोत्यागदिया।। चौपाई। खोजी सनत
शिषन असवानी। अतिविसमय मानस निजमानी
नहिं थल गरु कृपाल सरनपाई। पोख्योअयो वदन
नहंजाई। सोखोजिवर आम्र नरवोरी। देखन ल
गेदृष्टि इगनोरी। तहांपक्क फलआम्र निहारा।

व्येयो करत निज हृदय विचारा। तहिं पंच ध्योजा
यत्रन धारी। लेत नाम जब नचाउ नारी। तहिं भीन
रलयु कोटर माला। देखत भयो लपट ततकाला
बेटयो ख तव भयो प्रवेश। मानहुं सकल लोक म
न मेश। सकल तलोग सनत समदाई। इहगुरु कमल
कसकाल विहाई। वाम्यो आज मरम हम काहीं।
सज्जन जानि परत कछु नाहीं। तब बोली मिनह
दय सवेत। लाग्यो कथन करन सब हेत। गुरु

१९१
भ०
८

मनलगेपा आम्रफलपही। पायोकीट जीवतिनदे
ह्री। भोगेपातास आज्ञ निकसाना। गावमेनिकट
कृस्नभगवाना। प्रससामीप भक्तिजिनदेखी।
चेतनाद तव भयो वसेखी। जोकरहोत अंतमत
सोई। सेतनन लेत संत गतिसोई। ज्ञानतिपान प्र
वर गुरुदेवा। देखहु कवन कीट गतिलेवा। आ
गमनिगम भनन समुदाई। सेसातिप्रबलषासुना भाई
जोतेरहस व विषयविकारा। जीतन जोग ऐहिं संसारा

मिन निज हृदय मोद हविमाना। तिनकहं पङ्क उ
चित निशि भाना। आनको रसैं ध्यान बिसारी। ला
गेरहिं चरन शिरधारी। सनन लोग अस मानस
रागे। साधुसाधु सब भाषण लागे। दोहा। अस प्र
कार करि परस्पर बचन आलाप सुहाय। तब स
भरत उर हुलस सब निजनिज सदन सिधाय।१।
टीका। तब इस प्रकार तिनकी वाणी सुनकर खो
जी भक्त अपने हृदयमें बड़ा अचरज मानते भये

११
भं०
८

और जिस अस्थान पर गुरुजी अंतसमय पौंहचेथे
अर्थात लिटायेथे तहां आयकर तैसेहीं ऊपरको मु
खकरके सीधेलेटे परगये और नेत्रोंकी दृष्टी जोड़
कर तिस आव हलके सिखर साखाउंमे भलीप्र
कार देखनेलगे तब क्या देखते हैं कि तहां एक
साखोकेसाथ पक्का हुआ एक आव लटकरहाहै
तिसको देखतेहीं कुछ्मरम विचारकर तुरत उ
ठखड़े हूये और तिस आवके हक्षपर चढगये।

८

जाँनेही तिसपकेहुये आंबफलको तोड़लियाऔ
र तिसकी त्वचा उतार करने देखनेलगे तोतिसके
बीच एक छोटासा कीट अर्थात कीड़ा देखपड़ा
सो तत्तकालही लपतहोयगया तिसीसमय स
वे लोगोंके हृदयमे आनंदके देनेवाला घंटेका
आनसे करके प्रचंड शब्द जोहै सोहोनानाभया
नव तिसके ऐसे शब्दको सुनकर आचरजकेव
श भयेहुये लोग पूछनेलगे किहे भक्त हमको

१०१
भ
४

इसका भेद कुछ जान नहीं पड़ा इह गरुड़जी के प्र
ण अनुसार तिनके प्राणंनके पीछे तो नही ब
ना कहिये कि अब किस प्रकार इसका जनम होइ है ऐ
से तिनका कथन सुनकर खोजी भक्तजी सावधान
होय करके तिसके श्रवण करने का कारण जो है
सो कहने लगे कि हे भाई इसमें इह प्रयोजन है कि
गरुड़जी का मन जो था सो इस ग्रांव के फल विखे ना
स लगा था कि जो तुमारे देखते मैने इसके हृदय मे उ

४

मरकरके कीलशलाहै तिसकारणतें तिनका
जीवजोहै सो कीटके शरीरको धारन करलेताभ
या और आंवमैं निवासकरकर तिसकेरसको भो
गकरके आजनिकल कर भगवानकी शरणाग
तको प्रापत होयगयाहै इसीतें आजघंटेका शब
दभी होताभया कोंकि गुरुजीने पहीं प्रश्न कि
याथा कि जबमैं भगवानकी शरणको प्रापतहो
ऊंगा तब इसघंटेका शबद होजावेगा सो आज

११
भ
१०

गुरुजी भगवानकी सामीपताको प्रापत हुये अ
धीन हुत्सपरमातमाके निकट जायनिवास क
रनेभये इसतै इहचेटाभी अपनेनियमके अनु
सार वाजउवाहै हुसेतो जिसका अंतसमय जै
सामनहो तिसको निरंतर करके तैसीहीगती
प्रापतहोतीहै देखियेकि गुरुजी कैसे सूक्षमहा
त्मा और ज्ञानध्यानकी निधीथे परंतु वासना
के आधीन होयकर कौन कीटकी ननीकोप्रा

१०

गनहोयगये तोतोवेद पुराणोने सत्यकरकेक
थनकियाहै कि संसारमें इहकामनाजोहै सोव
डीप्रबलहै इसीतें इहसव विषयविकार जोहैं
सो जीतनेके योग्यहैं जिसपुरुषको हृदयमेंभा
वकी रुची अभिलाषाहोवे और सबतोरसे इ
नोको तोड़कर केवल भगवानके चरणारविंद
मे जोड़कर [illegible] रावे ऐसेवोजी भक्तके
सबवेसे वचनसुनकर सबलोग प्रसन्नभयेहै

१०१
भ०
॥

ये धन्यधन्य कहने लगजातेभये इसप्रकार पर
स्पर वचन आलापकरकर फिर भक्तौकी शला
घा करते और हुलस हुलस सुमरतेहूये सवलोग
अपने अपने आश्रमको चलेआये और ईहां सो
जीभक्तभी सव संत समाजके सहित भगवान
कृपानिधानको सुमरतेहूये सुखपूर्वक अपने
आश्रममेनिवासकरनेलगे ।।२।। इतिश्रीभक्तविनोदग्रं
थेभगवद्भक्तौमहात्मेंभाषाटीकायांसोनीचरित्रवर्ण
ने ।। नामे सर्गः

मिहांसिंहकृत



अथ बिल मंगल चरित्रे ॥ दोहा । उदय होत जहि सवनन नर अानम निमरनिमेक । भक्तिभान प्रज्वलन इत इरवन उलक अनेक

चौपाई । सोमै चरित परम मन भावन । करउं कथन उरव दोष मिटावन । दक्षिण उजन वेस उजकाहू । रह्यो धनक गुण सील सराहू । सो जव भयो वृद्ध वश आई । तोके उपज सवन सुख दाई । सरव अंग सुलम सि

सुरामा । रावो बिल मेंगाल नहि नामा । अतिस
नेह लालन जतन पाला । भयो तरुण नव बाल
क आला । विद्यावेद धर्म उज जोई । नहिं ते र
हो सुगाथ जड सोई । बृद्ध जनक जब परिहरी
काया । समय पाय परलोक सिधाया । सोरठा
नव सुतेत्र उज होय । पितु सेवित धन विषय र
त । दिन दिन लागो खोय । नृत्य गीत नाटिक
निरत । टीका । नाभादास कहते हैं किरे मेंतो

आवा विप्रहि डरनेहू। मनसुखे कृपासिंधु

भगवाना। करि प्रणाम जोरत जुग पाना।

सादर राखि भेट कछु आगे। विनय कीन

मानस अनुरागे। कबहुं कि कृपानाथ गृह

मोरे। उपजहिं जो प्रसाद कछु तोरे। सो मैं

तान प्रथम प्रभु पाई। तोरे करहुं नेवेदन आ

ई। अस प्रण करत वेदि पद गवना। आवा ह

रषि विप्र निज भवना। सोरठा तब कछु सब

४४ भ० २

सर पाइ। अथनतास इन्द्र वर भवन। अश्र सर व सखदाई। जनमी कन्या शीलनिधी। ८।

टीका नाभादास कहतेहैं कि हेसंतो अब औ र भक्तीका महातम जो है सो आपके आगे गायन करताहूं इह कैसाभी महातमहै कि जिसके श्रवण करनेसे भगवान कृपानिधान के चरन कमलों मे प्रेम उपजकर हृदयमे दृढ भक्ती होतीहै जगन्नाथपुरीके पास उत

कल देस जोहै तिसमैं बिल्वबिह नाम करके
एक ग्राम जोथा तहां ब्राह्मणोंकी उत्कल जा
ती विषे एक जयदेव नामा ब्राह्मण प्रसिद्ध
होता भया सो कैसाथा कि रात्रिदिन हरि सु
मरणमैं लीन निरमल चित्त होय करके हे
दर कथा कीर्तन गायन जो है सो करता रह
ताथा काम क्रोध मद लोभ इत्यादि विषय
विकारोंमे रहितथा तब तिनके निकट एक

४४
भं॰
३

और ग्राम था तहां स्त्रीके सहित एक देवशर्मा ।
नाम करके ब्राह्मण वास करताथा परंतु संता
नेसे हीन और अपने धरममें प्रवीनथा समय
पाय करके सो ब्राह्मण श्रीजगन्नाथस्वामीजी ।
के दरसनकों चला आया तहां प्रीती भक्तीसे
आयकर और भगवानके सन्मुख जायकर ।
भेटा जो है सो रख देता भया और हाथ जोड
कर बिनती करने लगा कि हे दीनबंधु जो ।

कदाचित आपकी कृपा प्रसादसे मेरे घरमें स
तानहो तो मैं प्रथमही पुत्र वा पुत्री जो उत्प
न्न होगी सो आपकोही निवेदन करूंगा अ
र्थात् चढाय देऊंगा इस प्रकार विनती और
प्रण करके ब्राह्मण आनंद पूर्वक अपने घर
कों चला आया तब समय पाय करके तिस
की इस्त्री गर्भवती होय कर बडी सुंदर सील
की निधी कन्या जो है सो जन्मती भई ।१। वो

४४
मं॰
४

4

पाई नहि उपरोत सील हम साधू। गुण निधान
भगवान अगाधू। जनमे हत नहि हविर अवासा
अस प्रकार कछु काल बिलासा। तब सुमरण
तोके उर आवा। मैन प्रभुहिं संतान चढावा।
अस बिचारि हत हना समेता। अह भामति
ज्ञत नजतन केता। अस करि जगननाथ प्र॰
रि चाह। आवा भक्त बिप्र हत थाह। मनभु॰
ख ठाढि हविर हरि द्वारा। जोरि करनज्ञग॰

करत जुहारा । भनत कृपाल तोर वर दीना
मै जन जथा उचित सब लीना । दीननाथ ए
रव करएहू । उपजी सुता सुभग मम गेहू ।
सो अब करउं निवेदन तोरे । लीजिये कृपा
भवन प्रभु मेरे । असकहि सुता लेत निज
पानी । दीन बताय हरिहिं सुख मानी । ता
से देखि अस हगन पुजारी । लागे पढन व
दन उचारी । तब प्रसन्न मानस द्विज भावा ।

सु
मं॰
५

कहि सुनीत सब प्रकट सुनावा। बहुरि प्रणा
म करत हुत गवना। आवा निकसि बहिर ह
रिभवना। भई रैन मग भोजन कीना। लेत
हिं शयन स्रम स्रस चीना। दीन बंधु प्रण तार
त हरना। कृपा नकेत भक्त सुख करना। बो
ले वदन वचन गंभीरा। सुनहु देवशर्मन
मति धीरा। मैं प्रसन्न तो पें व्रत धारी। इ
ह सुशील जे सुता तुमारी।

मोरे तुमहुं हरष अत दीनी । अंगीकार कि
य मै कीनी । पै अब मोर रजायस एहू । जो
जयदेव विप्र शरण गेहू । सो मेरो हढ भक्ति
प्रवीना । मन वच काय रुचिर अत लीना ।
मै जानऊँ नहि आपन काया । ताके हृदय
विदत मम माया । तुम परिहरि संशय स
ब ताहू । देहू विप्र निज सुता विवाहू ॥ सो
रठा अस प्रकार जब कीन । सपने नाह्ह य

४४ भा॰ मा॰

बोध हरी। उहो एकाकन चीन। देव स्थापन र
जनी प्रकट १ टीका तिसके उपरांत वडे सी॰
ल साधु गुणोंकीनिधी पुत्र जोहैं सो तिसके घ
रमें जन्मते भये ऐसे जब कुछ काल विती॰
त होय गया तब तिसको स्मरण भया अर्थात
याद आया कि मैने भगवानको संतान नही
चढाया ऐसे विचार कर पुत्र पुत्री और स्त्री
के सहित घरको त्याग कर सो देवशर्मा ब्रा

6

लिए श्रीजगन्नाथ स्वामीकी पुरीमें चला आ
या तहां श्रमको निवारण करके फिर भग
वानके भवनके द्वारमें स्थित होय कर दोनो
हाथ जोडे हूये प्रणाम करके कहने लगा
कि हे दीनानाथ मैने आपका वर दियाहूआ
जैसी इच्छाथी तैसा पाय लियाहै अब कृपा
निधान इह प्रथमहीं उत्पन्न भईहूई कन्या
जोहै सो प्रभु मै तुमको नवेदन करताहै

४४
भ०
१

७

अर्थात चढावता है आप कृपा करके ग्रहण क
रिये ऐसे विनती करकर कन्याको तहां भग०
वानके भवनमें चढाय दिया जब पुजारियों
ने मरम जो भेद है सो पूछा तब तिसने सब
हतांत प्रकट करके सुनाय दिया और फिर
प्रणाम करके आप भवनके बाहिर निकल
आया और अपने मारगको चल पडा तब जा
ते जाते जहां रात पडगई तहां आसन लगा

य करके भोजन किया और सबने पाया फिर तहांही सोय गये तब भक्तपाल दीनोंके दुः ख हर करने वाले भगवान तिस ब्राह्मणको स्वप्नमें बडी गंभीर वानीसें कहने लगे कि हे बड़ी और धीरजके धाम देवशर्मा मैं तेरे पर अत्यंत प्रसन्न हूं और इह सुशील तुमारी क न्या जो है सो भक्त मैंने आनंद पूर्वक ग्रहण करलेई है परंतु अब मेरी इह आज्ञा है कि जो

४४
भ०
८

8

जयदेव नाम करके ब्राह्मण मेरा परम प्यारा
भक्त वात्सल्य करके एक मेराही शरीरहै और
मेरी मायाको भली प्रकार जानताहै तुम हृ
दयके संशयको त्याग करके इह कन्या जोहै
सो जाय करके तिसको विवाह देवो इस प्रका
र जब दीनबंधु भगवानने तिसको स्वपनेमें
प्रबोध किया तब इहां जगन्नाथ स्वामीके भ
वनमें पुजारियोंनेभी रात्रीको यही स्वप्न देखा २ ॥

चौपाई। देवशर्म तब प्रान पराई। कियो प्रणा
म भवन हरि आई। दीननाथ कर जवन पुजा
री। तिन मन सब निसि कथा उचारी। उनहूं
स्वप्न निज दीन सुनावा। परम आनंद परस्पर
पावा। जब द्विजवर उर हरष अघाई। पाय
तरत हरि भृत नरजाई। लिये संग निज बा
ल कुमारी। चल्यो नंदसु सीस प्रभु धारी। ज
हो भक्त जयदेव सुहावा। तहां तुरंत कुवरि

५४
भं.८

ज्ञत आवा । सुद्दा भक्त देखि हग कैसे । वैठो
मनऊे शांति रस जैसे । परण कुटीर रचित ज
हि गेहा । दारदि निवल काष्ठ कछु देहा । पै
निरपेक्ष निरत हरि ध्याना । निगम विचार नि
पुण मति माना । श्रुति प्रसन्न आनन हग दे
खी । कवि प्रणाम ज्ञत हरष वसेखी । भनत
वचन श्रम द्विजवर धन्या । पद्मावती मोर इह
कन्या । जगन्ननाथ मानस अनुसारी । मै तोहि

देहु भक्त व्रतधारी ॥ दोहा नाम कथन शुभ ।
सुनत श्रम हुज जयदेव प्रवीन । बोले वदन
प्रसन्न मन गिरा मधुर रस लीन । सुता दान क
र ग्रहण करुं मैं समरथ नहि देहु । दार दरत
पितु मात गत नहि न धरनि धन गेहु ३ । टी
का तब देवशर्मा प्रातःकाल होते फिर परत
करके भगवानके भवनमें आय कर प्रणाम ।
करता भया और पुजारियोंके साथ सभेका ह

४४
भ०
९

10

जोत सुनाय देता भया तिनोंनेभी अपने खमेका प्रसंग तिसकों सुनाय दिया असे परस्पर बडा सुख और आनंद जोहै सो पावते भये तब देवशर्मा ने तिन द्विजकोंके कहे अनुसार भगवानकी आज्ञाको सीस पर धारन करके अपनी कन्याको लेकर जहां भक्तप्रधान जयदेवजी निवास करतेथे तहां चला आवता भया तब तिसने । जयदेव भक्तकी कैसी श्रद्धा देखी । ।

कि मानो शृंगारी रस जो है सो रूप धार कर बैठा हुआ है परण जो पत्र हैं तिन करके रची हुई जि सकी कुटिया और दारिद्रीसा बडा निबल औ र डबला शरीर परंतु निरपेक्ष जो किसी वस्तु की इछा नही भगवानके ध्यानमें लीन और वेद विचारमें प्रवीन ऐसे तिनको प्रसन्न मुख देख कर देवशर्मा प्रणाम करके कहने ल॰ गा कि हे भक्तउत्तम इह पद्मावती नाम करके

४४
भ०
११

मेरी कन्या जो है सो मैं भगवान जगन्नाथस्वामी
की आज्ञानुसार तुमको देता हूं भक्तप्रधान तु
म इसको अंगीकार कर लेवो इह तुमारे चर
नौंकी दासी है इस प्रकार देवशर्माकी वाणी सु
न कर जयदेव प्रसन्न होय करके बडे मधुर व
चनौंमे कहने लगे कि हे ब्राह्मण इस कन्यादा
नके ग्रहण करनेकों मै सामर्थ्य नहीं हूं क्यौं
कि मैं महा दरिद्री धन संपत्तीसे हीन अतसे

हीन और माता पितासे वरजित हूं अर्थात मेरे माता पिताभी नहीं हैं । ३ । चौपाई तोते जा ऊ विप्र तम ताहा । हता समेत सदन निज जाहा । जगननाथ मासन भनि भाई । कस वेचऊ मोरे द्विज आई । सपनेऊं मेन करऊं सह ईकारा । इह विवाद सब वृथा तमारा । देव॰ शरम तव सकल प्रसंगा । भाखो आय एज कन संगा । इन कहं तमहे तात समझाई ।

धध
भं०
१२

हरि नदेस सब देऊ सुनाई। तब तिन दीन स
कल समझाई। हरिनदेस सुंदर सुखदाई।
पै जैदेव मन्या कछु नाही। देवशरम सोच०
त मनमांही। सुता बोलि निज निकट बिठाई।
कहि मृदु वचन विविध समझाई। इह स्वा०
मी तव प्राण अधारा। सुजन उचित भक्ति स
तकारा। सदा चलहु इनकर अनुसारी। सु
ताहोहिं कल्याण तुमारी। पतिसेवत सुंदर

12

अनबारी। लेहि अतसरव मेहरत नारी। अस
कहि कौन पतनि ज्ञत गवना। द्विज पें छा
डि सुता निज भवना। तब जयदेव देखि त
न तासा। सहज वदन मृड वचन प्रकासा।
भामनि तुमहू कवन हित लागी। बैठी इ
हो सदन निज त्यागी। करी किहरि बड़वि
पुन बराहू। हेम समीर अतप अति दाहू।
घोर विपति डःख प्राणन हानी। निज गृह

४४
भं॰
टी॰
73

गवहु वचन मम मानी। अमम्यावन जब गाथ उचारी। द्विज जयदेव भक्त व्रतधारी। पदमाव ती जोरि जग पानी। लागी भजन वदन म्दड वानी। भगवन विदत जान सब कोई। कन्या जगत जनक दय होई। सो मोहि तुमहिं सौं पिनिज गवना। अब इह विछन मोर प्रभु भव ना। तोते तनहु घाल जनि मोही। जानहे प्राणनाथ प्रभुतोही। केकरि वरन चारु प्रण

ठानी। सेवा करहु करम मन बानी। तास

बचन अस रुचिर सुहावा। मुनि जयदेव श्र

वण सुख पावा। सत्य जानि तो कर सब का

हा। अब कम तजहु मौन धरि राहा। बहुरि

भनत उर हरष उमंगा। अब मोरे विधिवत

इहि संगा। करन विवाह उचित जग राहा।

अस विचारि उज नायक काहा। चलहु सु

शील जनक निज घरहू। पाणिग्रहण तव

पप
भं.
५

14

विधिवत करहू । पदमावती सुनत श्रम गाथा ।
पितगृह गवनि विश्ववर साथा । आय हु तात
सकल समुझावा । सुनत देवशर्मन सुख पा
वा । विधि संयुत तब भयो विवाहू । एरि हू
रष उरनाहनि नाहू । विदा होत जग प्रेम स
याये । गवन करत आश्रम निज आये । बढ
त जात दंपती सुहाई । दिन दिन प्रीति रीति
सुखदाई । नृत्य गान पूजन हरि सेवा । क

रहिं प्रेम पूरन जयदेवा । एक दिवस उर चिंत
न ठाना । मै विरचन पद गुनि जन आना ।
गावहुं नित्य प्रेमयुत सोई । अब हुलत कर
हुं ललित निज कोई । अस उज अवर गुनत
निज जीके । विरचन लग्यो ललित पदनी-
के ॥ दोहा रसक प्रेम सागर कविर ग्रंथ गी
तगोविंद । तास प्रेम पावन सहत लाग्यो
करन प्रबंध । ४ । टीका तांते हे आलिण व

४४
भं.
१५

15

म इस अपनी कन्याको लेकर जहांसे आयेहो तहांही फिर करके घरको चले जावो भाई। अब जगन्नाथस्वामीकी आज्ञा कहिकर मेरेको क्यों वंचतेहो अर्थात् क्यों छलतेहो मै तो इस वारताको कदाचित् भी स्वईकार नही कहेगा तुम वृथाही विवाद जो जगडाहै सो मत करो। तब देवशरमाने आय कर के भगवानके पूजारियों।

को सब हवाल सुनाया कि वे नही मानते हैं
तब सुजनोंने तत्काल आय करके जयदेव
को जैसी भगवानकी आज्ञाथी तैसी सुना
यदेई परंतु जयदेव एक नही मानते भये।
तब देवशर्माने अपनी पुत्रीको पास बिठाय
कर बडी मधुर वाणीसे अनेक प्रकार शिक्षा
देदे कर कहा कि हे पुत्री इह जयदेवजी तेरे
पती स्वामीहैं और तेरेको इह सदैव पूजनेके

योग्यहैं ते इनकी आज्ञाके अनुसार रहना इ
समें तेरी कल्यान होवेगी हे अवी जो पतीम
वत स्त्री होतीहैं अर्थात् जो पतीकी सेवा क
रने वाली होतीहैं सो संसारमें अत ह्यव जो
है तिसको पावतीहैं कि जिस ह्यवका कवी
ना सही नही होताहै ऐसे पद्मावतीको समु
झाय और सिखाय कर तहां जयदेवजीकेपास
छोडकर आप देवशर्मा स्त्रीके सहित अपने घर

76

चला आया तब पीछे जयदेव निस देवशर्मा
की कन्या पद्मावतीको अपने पास बैठी हुई
देख कर कहने लगे कि हे भामिनी तू घर
को त्याग कर ईहां हमारे पास क्यों बैठ रही
है सुशीले तू देख कि ईहां महा घोर वण
और जिस विषे बडे भ्यानक हसती सिंह सर्प
वाराह जो क्रूर और अत्यंत सीत तैसेही पवन
और दगध करने वाली महां धूप इहतो सर्व

४४
भं
१

17

प्रकार करके प्राणोंकी हानी और परम क्लेश
के देने वाला अभ्यान है तू मेरा वचन मान औ
र उठ करके अपने घरको चलीजा तब इसप्र
कार जयदेवजीके बड़े भयानक वचन सुनक
रके पद्मावतीजो है सो नम्र वाणीसे हाथ जो
ड़कर विनती करने लगी कि हे भगवन् इस
वारताको सब कोई जानताहै जो कन्याका
देना जगतमें पिताके आधीनहै जिसको पा

हे देवे सो कृपानिधान पिता तो मेरेको अब
आपके आश्रय कर गया और आपकी दासी
बनाय गया अर्थात् आपकोही देकरके च-
ला गयाहै अब प्राणनाथ मेरा ईहां बन विषे
आपके चरनोंमेंही यरहै दया करके अब मे
रेको ना त्यागिये अपनी किंकरी दासी जोहै
सो जानिये मै मन वचन काया करके आप
के चरनोंकी भक्ती सेवा करूंगी औमे पश्चाव

गी० भ० १८

नीके प्रीति और प्रेमके भरे हुये वचन सुनकर जयदेवजी बडे प्रसन्न होजाते भये और तिसका कथन सब सत्य जानकर मौन होय गये मन में कहतेहैं कि अब इसको कैसे त्यागूं ऐसे विचार कर इही सिद्ध किया कि अब इसके साथ विवाह करनाही योग्यहै तब तिसको कहने लगे कि हे सुशीले अब तू अपने पिता के घरमें चल तहां विधी अनुसार तेरे साथ।

मै विवाह करूंगा ऐसे तिनका वचन सुनक
र पद्मावती आनंदसे तिनको साथ लिये हूये
पिताके घरमें चलीआई और तहां आय कर
के सब वृत्तांत सुनाय देती भई तब देवशर्मा
तिसका पिता जो है सो सुन करके परम ह
र्षको प्राप्त भया और सुंदर शुभदिन देख
करके तुरतही विवाह पढाय दिया तब
आनंद पूर्वक जयदेव और पद्मावती दोनो।

४४
भं०
१९

ह्री भर्ता तहांसे बिदा होकर अपने आश्रमको
चले आवते भये तिनकी परस्पर प्रीती जोहै
सो दिन दिन अधिकहीं होती जाती भई जय
देवजी अपने नियमअनुसार रात्रीदिन भग॰
वान कृपानिधानके पूजन सेवन और नृत्य
गायनमें लीन रहतेथे तब एकदिन तिनके
चित्तमें ऐसी आई कि मै जो नित और और कवी
जनोंके रचे हूये पदोंको गायन करताहूं तोते अ॰

॥ भक्तमालमाधुर्य ॥

अनमतम मधुर और ललितपदोंकी रचना क
रकर दीनानाथके आगे गायन करुं ऐसे चिंत
न कर कर हृदयमैं गणपती देवकों वंदना क
रके प्रेम रसका समुद्र गीतगोविंद जो है तिस
के मधुर और ललित पदोंकी रचना करने ल
ग जाते भये ४। चौपाई दिन दिन परम मधु
र मन भाये। निरतत नवल ललित पद गा
ये। राम चरित मय हरिहर प्रसंगा। एक दिव॰

४४
भं॰
१॰

स निकस्यो अग भेगा। भई मानवति राधा प्यारी। तव मनायवे हेत अरारी। भने सुवचन नम्र र स वोरे। रावहु चरन सीस प्रिया मोरे। इह अ संग जयदेव निहारी। प्रभु अपमान जान जीय भारी। धरिन सक्यो अनुचित पद काहीं। लेख नि पत्र छाडि इत ताहीं। गयो सरित तट कर न मनाना। ईहो विचारि धरहु पद आना। पा छे [illegible]देव प्रभु आये। धरत रूप जयदेव स

20

होवेग पदमावति कहं कृपानिधाना। हरषि व
दन अस वचन बखाना। तजि विलंब भामनि
अतगाई। मोरे उसतक देहु लगाई। तब त
हि दीन उतायल आनी। कौताकि कृपानाथ
निज पानी। मोउ जवन पद उजडे नदीना।
घरन हरेत गवन प्रभु कीना। तब जयदेव
आय निज गेह। करि हरिपूजन एरि सनेह।
अति अनेद युत भोजन कीना। निज कृत भं

५५ भं ३१

ये बहुरि जब लीना । देखो लिखत पत्र पट सोई । शोकित गय छबाडि द्विज जोई । भनत वदन उ व अचरज आययौ । इह पट ईहो कवन लिखि गययौ । निज त्रियतें एकत व्रत धारी । कौनै लिखो कहो तव प्यारी । पदमावती भनत प ति बानी । अति अचरज मानस निज मानी । क हत प्राण नायक कछु तोरे । का अस भयो सोच जिय मोरे । ।

21

जबहिं सनान हेतु प्रभु धाये। बहुरि तुरत पाछिल फिरि आये। सोरठा। नाहक पत्र कर लीन। लिखे नाथ पद कछुक तब। बहुरि गवन नहि कीन। भ्रम भ्रम कर कारन। कवन। ५ टीका। नव दिन दिन तिन अपने ललित और नवीन रचे हुये पदोंको प्रीती। भक्तीसे भगवान कृपानिधानके आगे गाय। न कर कर नृत्य करते रहतेथे एक दिन दे।

ध्व॰
भ॰
२२

22

खेते देखते रामचरित्रमै इह प्रसंग निकला कि राधिकाजीने मान किया अर्थात् रुठ गई तो तिसके मनावनेके लिये नंदलाल भगवान् बडी नम्ररसकी भीगी हुई वाणीसें कहतेहैं कि हेप्यारी तू इह अपना चरन कमल मेरे सीस पर धरदे तब इस प्रसंगको देख कर और प्रभुका अपमान विचार कर जयदेव प्रेम प्रेरीणाम ।

पदको लिख नही सकते भये तरत तहांहीं ।
पुस्तक ग्रोर कागीको छोड कर उठ करके न
दीके किनारे स्नान करनेको चले गये ग्रो
र मनमें कहते जातेहैं कि ईहो कोई उचित ।
पद विचार करके राहेगा ऐसे जब जयदेव
जी चले गये तब पीछे तरतही कृस्न परमा
त्मा जयदेवका रूप धारकर तिसके घरमे ।
चले ग्राये ग्रोर पद्मावतीको कहने लगे कि

४४
भ०
२३

23

हे सुंदरी तें बिलंबको त्याग कर झलकजोहै
सो मेरेको ल्यायदे ऐसे सुनकर पद्मावतीने
तरतहीं झलक ल्यायदिया तब कौतुकी
भगवान तत्काल अपने हाथसे सोई पद कि
जिसको जयदेवने शंकित होय कर नही ।
लिखोथा लिख करके अपने धामको चले
जाते भये इतनेमें स्नान करके जयदेव ।
भी आय गये । तिनोंने घरमें । ।

नीलेसे भगवानका पूजन किया और फिर आ
नेटसे भोजन पाया तिसके उपरान्त आय क
रके अपनी काव्य कृतमें वृती लगाय देते भ
ये जब पुस्तक पर ध्यान दिया तो क्या देखते
हैं कि जिस पदको हृदयमें शंका मानकर
छोड गयेथे तहां वोही पद लिखाहुआहै तो
वेतो बडे अचरजके वश होयकर कहने ल
गे कि इह पद कौन लिख गयाहै और फिर

४४
भ॰
२४

२४

स्त्रीसे पूछने लगे कि प्यारी तू तो इहांथी सत्य
कहो कि इह किसने लिखोहै और वे कौनहै
तब पद्मावती पतीकी ऐसी वानी सुन कर
परम आश्चर्यके वश भई हुई कहने लगी कि
हे प्राणनाथ बडे चमत्कारकी वातहै इह के
सा वचन कहतेहो क्या आपकी बुद्धीमें कछु
भ्रम होय गयाहै नाथ आप जब स्नान कर
ने को गयेथे तो थोडी देरके पीछेही घरमें च

लै आयेथे ईहां पुस्तक और कानी लेकर कृपा
निधान तुमने कछु पद लिखे और फिर तुर
तहीं सनान करनेको चले गयेथे अब जो
आपको भ्रम होय गया तो प्रभु इसका क्या
कारणहै ५। चौपाई। तब जयदेव कहत भ
य काहा। बिसमय बिवस मौन धरि राहा।
चिंतन करत गयो रवि सारा। भई रयन तब
सयन निहारा। कृपान केत भक्त भय हारे।

ध्ध
मं·
३५
25

पीत बसन उर बन स्रज धारे । भाल तिलक श्री
खंड बिराजा । कनक क्रीट कच मधुप समाजा ।
भुज आजानु स्याम घन काया । मदन कोटि
छबि देखि लजाया । बिधि सनकादि शेष ह
र कारा । तकत रहत जहि एकटि अपारा ।
सो असकरनधार भव सागर । भनत अनत
भक्त हृत नागर । चिंता शोक तजहु सब
नेहू । गाहा ईहो उचित पद एहू ॥ ६

तोते मै निजकर लिखि दीना। जानि उचित पद भक्त प्रवीना। असकहि कृपासिंधु भगवाना। भये तुरत तहं अंतरध्याना। तब जागे जयदेव प्रवीना। हृदय स्मरण स्वपन निशिकीना। पदमावती कहं निकट बुलावा। स्वपन वृतांत सकल समुझावा। सो॰ लिखिगये आप जदुराया। तोपे डारि अगम निजमाया। भातव जनम सफल शीय श्री

४४ भं. पु.

26

न्हु। जहि इन हगन हरस जडराजू। दलन
दुरनदावद दुःख पावा। कवन ग्रन्थ तव म
हेश गावा। अस कहि शुण गण भक्त महा
ई। दिन दिन प्रेम भक्ति सरसाई। लगयोक
रन गायन मन भाये। तब गोविंद गीत
विरचाये। प्रभु आगे नग्रत गति दीना।
सो जयदेव नवेदन कीना। अस प्रकार
रुरु चरित सुहावा। मै संक्षिपत यथामति गावा।

सो इहि पढै सुनै मन लाई। पावन प्रेम भक्ति
सरसाई। दोहा। जाके रंजन भक्त पद पाव
न कंजन प्रीत। उपजहि दिन दिन अधिक
नित हरन भीम भव भीत ९। टीका। तव
जयदेवजी पद्मावतीकी वानी सुन कर ब-
डे अचरजके वश भये हुये मौन होय गये
तहां तिनको सोच करते करते दिन व्यतीत
होय गया और रात्री पडगई जब निसी सो

चैमें बिसतर पर सोय गये तब स्वपनेमें पी॰
त वस्त्र धारे हुये गलेमें तुलसीकीमाला मा
थेमें चंदनका तिलक और सीस पर कंचन
का हेदर मुकट भमरयोंकेसमाजको लज्जा
देनेवाले स्याम केश लंबी भुजें और स्याम
मेघवत शरीरका स्यामहीरंग जिसकी
शोभाको देख करके कोटि कामदेवभी ल
ज्जाको प्रापत होजाताहै ब्रह्मा शिव सनका

रिक और इंद्रादि देवता जो हैं सो सब जिस प
रमात्माकी भृकुटी अर्थात् भवों के इशारे को
देखते रहते हैं कि किसको कब क्या आज्ञा
होती है ऐसे इस संसार समुद्र के करनधार
अर्थात् मलाह जो भगवान हैं सो प्रसन्न हो
य करके जयदेवको कहते हैं कि हे मेरे प्या
रे भक्त तू हृदयमें चिंता और सोच मत कर
क्यों कि इहां यही पद लिखना योग्यथा सो

ते हे भक्त मैने अपने हाथसे लिख दिया है ऐसे

कथन करके भगवान कृपानिधान अंतर्ध्यान

होही लोप होय गये तब ईहां प्रातःकाल हो

ते जयदेवभी जाग उठे और स्वपनेको स्मर

ण कर कर पद्मावतीको पास बुलाय कर

के सब वृत्तांत सुनाय देते भये कि प्यारी ते

रे पर अपनी माया डारकर वे पद तो दीन ब

न्धू भगवान अपने हाथसे आप लिखगयेहैं

५५ भ० मू०

28

परंतु हे भामनी आज जगतमें तेरा जन्म जोहै सो सफल होय गयाहै क्यौं कि जिसने सर्व दुःख दारिद्र और घोर पापोंके नास करने वाला त्रिलोकीके नायक भगवानका इन नेत्रोंकरके दरसन पाय लियाहै आज जगतमें तू धन्यहैं और धन्य तेरे उदय भाग्यहैं तेरे समान आज हमरा कोईभी दरसका पात्र नहीहै ऐसे कथन कर कर जयदेवजी

धध
म॰
भ्र
21

दिन दिन अधिकसे अधिक भगवानके गुण गा
न गायन करनेमें प्रीती भक्तीवाले होय कर
बडे मधुर और ललित पदों करके युक्त गीत
गोविंदजोहै सो रचाय करके भगवानके आ
गे नम्रता और दीनतासे जाय कर नेवेदन ।
कर देते भये अर्थात प्रभुके आगे चढाय देते
भये नाभादासजी कहतेहैं कि हेसंतो इस प्र
कार इह गाथा मैंने कछु संक्षेप करके गाय।

न कर देईहै इसको जो कोई श्रद्धा और प्रेम
से पढेगा अथवा सुनेगा सो संसारके भयसे
निवृत्य होय कर भक्तपाल भगवानके चर
न कमलोंकी भक्ती प्रीती वाला होय जावे
गा ॥ चौपाई आन चरित जयदेव सुहावा।
करडं कथन अब मानसभावा । उत्कलोत्तम
पुर भूप सुजाना । सुनि गोविंद गीत हरषाना ।
उपजी हृदय प्रीति अधिकाई । हरषि लीन इ

त ताम्ह लिखाई। बहुरि भक्ति संजुत अनुरागा।
पढिन ताम्ह निसि बासर लागा। एक दिवस
उर द्वेष बढाई। मोह विवस मानस छितरा
ई। भनत रचितमैं निज पद चाहू। करहुं ल
लित गायन मन हाहू। अस विचारि निज
हृदय नरिंहू। विरच्यो नवल गीतगोविंहू।
सकल देस निज सासन फेरी। सब नर ना
रि ललित कृत मेरी। सादिर पठहु भक्ति स

र साई । असन देस नर नायक पाई । पढन
लाग सब विदन हदेसा । भयो गीतगोविंद
नेरेसा । एक समय तब भूप हजाना । जग
न नाथ हरमन हवि माना । चल्यो तजत नि
ज भवनन काहीं । आयो प्रतपानम पुरमा
हीं । तहां भक्त जयदेव सहाये । देखे भूप
भक्ति सरसाये । निज गोविंद गीत हवि सा
ह । तापद ललित मधुर मन हाह । गायन

४४
भ०
१९

करत नृतन ज्ञत रागा। आनंद मगन भक्त बड
भागा। असो भूप सब मैं इज जाना। मम हू
तकर तव करि अपमाना। आपन मोह मग
न ह्वावे पाये। करहु गान निरंतर इत आये।
तब जयदेव कहत भय मान्यो। लजित भू-
प मन वचन बखान्यो। विरचित तोर गीत
गोविंद। हम गावत उर धरि अनंद। पैन
करहु कछु भूप बडाई। मोरी हात भगवत

मन भाई । दोहा । जो मोरे अस कथन मध शुए
ति तासे संदेह । तो भावति मानस जथा तब
प्रीता करि लेह । १ । टीका अब जयदेवकी
भक्तीकी और मनोहर गाथा जोहै सो कथन
करताहु उत्कलानम पुरीका अर्थात् जगनना
थ पुरीका राजा जोहै सो जयदेवजीके रचे हु
ये गीतगोविंदको देख करके बडा प्रसन्न भया
और परम प्रीतीके वश भया हुया तिसको लि

४४
भ॰
५२

32

ध्याय करके रात्री दिन भक्ती प्रीतीसे पढने श्रो
र गायन करने लगा एक दिन मोहके जाल॰
मे फस कर और ईरषा द्वेषके आधीन होय
कर कहने लगा कि मै भी काव्य कलामें प्रवी
न हूं इन जयदेवके रचे हुये पदोंको क्यों रट
ता हूं अपनेही रचकर क्यों ना गायन करूं ऐ
से विचारकर राजाने श्रम करके थोडेही दि॰
नोंमे अपनाही नवीन गोविंदगीत निरमाण क

र लिया अर्थात् रखलिया तब अपने संपूर्णदे
समें आज्ञा प्रचलत करदेई कि मेरे राज्यभर
मैं सब कोई इस मेरेही गीतगोविंदकौ भक्ती
श्रीतीसे पढे और गायन करे ऐसे राजाकी
आज्ञा पाय कर सब नर नारी तिसी राजाके
रचेहुये गीतगोविंदकौ श्रद्धा पूर्वक गायन क
रने लगे इस प्रकार सो राजाका गीतगोविंद
सब देसमें जहां तहां प्रसिद्ध होजाता भया त

४४
भ०
३३

33

व समय पाय करके एक दिन राजा श्रीजगन्ना
थ स्वामीजीके दरसनकी रुची अभिलाखासें
घरको त्याग कर चल पडता भया तो जब
पुरुषोत्तमखंडविखे आया तहां क्या देखताहै
कि भक्तप्रधान जयदेवजी आनंदमें मग्न भये
हुये अपने अमृतरूपी गीतगोविंदके परम
रसक और ललित पद जोहैं सो भक्ती प्रीती
से नृत्य कर कर मधुर मधुर स्वरसे गायन क

रहेहैं तब द्वेष और मोह करके ऐसा हुआ
राजा तिनके आनंद और प्रेमका सहार नहीं
सका कहने लगा कि हमने इसलिए मैने जा
न लियाहै जो तुम मेरी कृतका अर्थात मेरे
रचे हुये गीतगोविंदका निरादर करके अ
पनेकोही प्रधान जान कर आदर सत्कार
देतेहो और प्रीती भक्तीसे नृत्य कर कर गा
यन करतेहो इस प्रकार कोप और द्वेषके भ

४४
भ.
३४
34

रे हुये राजाके वचन सुन कर जयदेवजी हृ
दयमें संकोच और भय मान कर कुछ लज्जि
तसे भये हुये कहने लगे कि हे राजन् हम ते
रे रचे हुये गीतगोविंदको अवश्य करके आनं
द और प्रेमसे गावते रहते हैं परंतु सत्य प्रजा-
पाल मैं कुछ बडाईकी बात नही करता हूं
सत्य कहता हूं इह मेरा गीतगोविंद जो है इस
पर भगवान रीझते हैं और इह दीनानाथको

ग्रतसे करके प्यारा है इसमें हे राजन जो तेरे चि
त्तमें कछु संदेह भ्रम हो तो जैसी तेरे मनको
भावती है तू तैसीही परीक्षा करले १ चौपाई
अस नृप सुनत विप्र वरबानी। लेत तुरंत
काव्य युग पानी। सादिर जगननाथ प्रभु
आगे। राखे ल्याय प्रेम रस पागे। करि प्रण
म पुनि जोरित पानी। लाग्यो विनय करन
मृदुबानी। इन महं जो कृपाल सुख कंद।

भ॰ मं॰ ३५

35

तैरे शीये गीतगोविंद। नागर चरन चिन्ह निज
वाह। करहो हृदय भक्त श्रम हाह। श्रम श्र
ए वदन ज्गल मति नागर। विप्र रूप हरि
भक्त उजागर। भवन कवाड खोदि अनुरागे।
श्राये बहिर भक्ति रस पागे। लागे ललित म
धुर पद गायन। निज निज वचन रसक म
न भायन। कछुकवेर पाछिल उनि जाई।
देखन लगे ज्गल उजराई। तव जयदेव का

ग्रमनभावन। ऊपरथहो जानिप्रभपावन। कि
योचरननिजचिन्हतचाहू। देखिभूप उजवर स
नकाहू। भयोलजित शोकारनभारी। गयोनव
ननिजभवनसिधारी। खानपानसवदीननया
गी। परेहोमोननमुखकफ्तनवागी। कलपनव
यनवयन नहिपरयो। भईभोरनवनीद ग्रवरयो।
सपनेहरनदोषडुखपीरा। पीनवसनघनस्याम
सरीरा। वनेकरनकुंडिलग्रपिकाई। मोरमुक

भ॰
३६

रचनमालसुहाई। होतप्रनतजनमनतसुखकेहू।
तवहुतनभक्तगीतगोविंदु। मोहिभावनउरस्यो
वसाई। पैजयदेवललितकृतगाई। मोरेजियला
गतवहुप्यारी। तातेतनमहंभक्तवनतयारी। ताकरप
दभ्रमदेछतयोगे। गावहुप्रीतिभक्तिजनरागे। सो
तमारविरचतपदनीके। हरषिकरहिंगायनक
विजीके। हृदयपरस्परप्रीतिवढाई। करहुभजन
कीर्तनसुखदाई। इहगोविंदगीतसंसार। मोरेह

देयमंत्र अतिप्यारा । असप्रकारजबसपनसुहावा

देखाभूपभवनमनभावा । प्रातकालजागेब्रत

धारी । भयेहृदयबसमतासुबिचारी । चरनसरूरनउ

खभगवनकाहीं । करतप्रनामभूपमनमाहीं । जा

निनसकोमोहमतिहेरा । दसमहुनाथइहअनुबि

तेमरा । असकहिप्रजापालअनुरागी । तबतेंकपट

हेषभ्रमत्यागी । बैठिपरस्परउजबरसंगा । तेसेबि

हगीतभयभंगा । करतरहतगायनसुखछाये ॥

सुनतलोगसबप्रेमभराये। दोहा। इहतरजय
तजैदेव करगाथाललितसुहाई। कौनकथन
संलापनकैंहृदयहरनउरलाई। ८। टीका इसप्र
कार जयदेवकीवानीसुनकर राजादोनोंगीत
गोविंदोंको अपनेहाथमें उठायकर ओरलाय
करके जगननाथस्वामीके आगेराखदेताभया
फिर प्रणामकरके नम्रवाणीसे हाथजोडकर
विनतीकरनेलगा किहे कृपानिधान इहदोनो

५७ भ॰ ५८

५८

गीत गोविंदमेंहैं एकमेरा रचाहुआ और एक जय
देवका इनमें जोनसा दीनबंधुतुमको प्यारा और
मनको भावताहै तिसपर कृपाकरके अपने चरन
कमलकाचिह्न करदीजिये क्योंकि इससेतुमारेच
रनकाभ्रमजोहै सोमिटजावेगा ऐसाप्रणधारकर
के राजा और जयदेव भगवानकेभवनके कवाड़
मूंदकर दोनोंबाहरचलेआये फिरतहांबैठकरके
भक्तीप्रीतीमें लीनभये हुये बड़ेरसिक और मधुर

४४
भ०
१८

ललित अपने अपने रचेहुये गीत गोविंदके पदजो
हैं सोमधुरमधुर स्वरसे गायन करनेलगे तिसतें
परांत फिर थोडी देरकेपीछे दोनोहीं उठकर और
भगवानकेभवनमें जायकरके देखनेजोलगे तो
कादेखतेहैं कि राजाके गीत गोविंदके ऊपर
भगवानने उत्तम जानकर जयदेवजीका गीत
गोविंद धराहूआहै और अपने चरनकमल
से चिन्हनभीकिया हूआहै अर्थात तिसपर।

१८

58

भगवानका चरनलगाहुआहै इसप्रकार राजाजय
देवजीका सतकार और प्रभावदेखकरके लजितभ
याहुआ वडाशोकमानकर तरतभवनसे निकल
कर घरकोचलाजाताभया और खानपानसवत्या
गकर मौनहोयगया किसीसे कुछवातचीतन
हींकरताहै सोचकरतेकोरात्रीभर वयन नहींपडा
जवकुछथोडीसीरात पीछेरही तवतिसकोनिद्राआ
यगई क्यादेखताहै किसपनेमे सर्वदोषडरव औरभ

यकलेशोंकेहरनेवाले पीतवस्त्रधारी स्याममेघव
नशरीरकी आभा कानोंमेसजेहुये मकराकारकुं
डिल सीसपरमोरमुकट हृदयमेतुलसीकीमाला
ऐसेध्यानकरके शुक्रभगवानजोहैं सोप्रसन्नहो
यकरके कहनेलगे किहेभूपभक्त इहांतेरागरचाहु
आ गीतगोविंदजोहै सोमेरेमनकोभावताहै और
मेरेचित्तमेवसाहुआहै परंतहेभक्त इहांजयदेवका
रचाहुआ गीतगोविंदजोहै सोमेरेकोअधिकहीप्या

59

ताहै और तिसपरभी बहुतरीकताहूं तांते है भक्त
तुम अपने हृदयका हुए और प्रेमन्तागकरके
तिसमेरभक्त जयदेवके रचेहुये ललित और म
धुर पदोंको प्रीतीभक्तीसे गायनकरो और वे त
मारे रचेहुये मनोहरपदोंको आनंदपूर्वक प्रेम
और प्रीतीसे गायनकरे हे राजन इसप्रकार तुम
दोनो वडीप्रीती और मैत्रीभावसे परस्परमिल
करमेरे गुणानुवाद और भजनकीर्तन गीतगो

५५
भ.
५.

40

विंदके पदजोहैं सोमैंवहीं गायन करतेरहोकों
कि इहगोविंदगीतमेरेको अत्यंतहीप्याराहै ऐसे
जवराजानेस्वपनदेखा तोप्रातःकालहोतेहीं जाग
उठा और तिसकोविचारकरके हृदयमैंपरम हर
षमानकर भगवान कृपानिधानके चरनोंकोम
नमेंहीप्रणामकरके कहताहै किहेदीनवंधु मै
मोहकाग्रसाहूआ जयदेवजीकेप्रभावको कछु
जाननहींसका तांतेकृपाकरके इहमेराअपराधक्षमाकरिये ५.

ऐसे प्रार्थनाकरके राजाजोहै सो नवतें कपटद्वेष औ
रभ्रमकोहृदयसे त्यागकर जयदेवजीकेसाथ परस्प
र मिलकर वडीप्रीती औरहृचीसें गोविंदगीतकेव
डेललित और मधुरपदजोहैं सोनित्यगायनकरता
रहताभया नाभादासकहतेहैं किहेसंतो इसप्र
कार इहराजाकेसहित जयदेवजीकीभक्तीकी म
नोहरगाथाजोहै सोमैंने कछुसंक्षेपकरके आ
पकेआगेगायन करदेईहै इहकैसीभीगाथाहै।

५५ किजिसके श्रवणकरनेसे हृदयकीउरवडी कुट
भ॰ लतासवहरहोजातीहै ।८। चौपाई। अवकेवल नय
५८ देव सुहावन। जथाप्रसिद्धभक्तिजगपावन। सोक
छुकरहुं मोदसुखदायन। सादिरसंतवदनगिजग
यन। जगननाथप्रभुप्रांतअकामा। गुणप्रवीनरति
रूपललामा। उतकलदेससमद्धमनहरनी। वसहिं प
क मालिननववरनी। सोइकससमयसरदऋतुपाई
नावकंदरवांदनिविकसाई। अर्धरयनहूंताकविपनम
५८

मं॰ [illegible]इलेनफललललितस्यमनकरहं। उरगेगोविंदगी

तपदल्याई। मधुरमधुरस्वरवदनअलाई। इतउतभ

क्तिप्रीतिरसपागी। वीननफिरतस्यमनफलरागी।

स्वनितहि रसक मधुरपदआछे। लागेफिरहिंनंद

सुतपाछे। नवविहरनतहूंताकविपनमहं। छिदग

येहरिकेपीतवसनतहं। प्रेममगणऊेलतजऊवी

रैं। भूलिरहीतवसुधीसरीरैं। जवमालिनिलेस्यमन

पराई। चलिआयेनवविकलकह्राई। प्रातभवन

४४
भ॰
४२

प्रजकजवग्राई। लागेकरनजजनसिवकाई। तवदे
वकरुणानिधिनीरा। फटेकटेकंटिकसवचीरा।
भयेसोववमसकलगुनारी। लीनलवंतभूपहंका
री। तासुहटगानसवदीनदिखाई। भयोदेविग्रवर
जवमराई। दोहा। कोनमरमरहकाभयो कहत
सकलग्रकुलाई। प्रभगतिजानिनजाय कछुसो
चितरैनविहाई। ९। टीका। आगेतोराजाके महि
मा ...देवकीभक्ती कथनकीगईहै अवकेवल

४२

जयदेवजी की भक्तीजैसीक लोगोंमेंप्रसिद्धहै हेसंतो
आपकेआगे गायनकरताहूं जगननाथपुरीकेपा
स उतकलदेसमें रतीजोकामदेवकीस्त्रीहै तिसके
समानसुंदररूपवाली और सर्वगुणोंमें चतुर प
क पुष्पवेचनेवाली मालनजोहै सोनिवास कर
तीथी एकदिनसरदरितुके समय आधीरातको
चंद्रमाकीवडी उज्जलचांदनी खिलीहुईथी सोमा
लन वृंताकजोवेंगनोंकीवाडीहै तिसविखेफल

५५ म० ५२

4-3

और पुष्पोंकेलेनेकोचली आवतीभई तहांवे गीत
गोविंदके परमपवित्र औरललित पदजोहैं सोहृद
यमें स्मरणकरके बडीप्रीतीभक्तीकेसाथ मधुर
मधुर स्वरमें गायन करकर इधर उधर फलोंको
लेती और पुष्पोंकोचुणती फिरतीथी तबतिसके
मत्वेसे ऐसे रसिक औरललितँकिजोभक्तीमेंलीन ५८
होयकर गायनकररहीथी सुनकरके प्रेमकेवशभयेहुये
भगवानकृपानिधान तिसकेपीछेपीछेहींलागेफिरतेहैं ऐसे ५३
निसमाल

सकेपीछे फिरते फिरते दीन बंधुके संदरपीतांबर जोहें सो कांटयोंमें फस फसकर सबफटजातेभ ये प्रेममेंमगणभयेहुये विहारीलालजीको अपने शरीरकीसुधीभीनहीरही जबमालनी पुष्पोंको लेकरके अपने घरविषेंचलीआई। तबपीछेभग वानभीवैसेही प्रेमसेविकलचितभयेहुये अपने भवनमेंचले आवतेभये जबप्रातःकालभया तब सजनजनोंने आयकरके दीनानाथके पूजन से

४४
भ०
४४

वनकरनेकेलिये भवनकेकवाड़खोलेतोक्या
देखतेहैं कि कृपासिंधुके पीतवस्त्रोंमें कांटेफसे
हुये और सबफटेहुयेहैं इसअद्भुतकोदेखकर
पुजारी सबसोचके वशहोयकर राजाकोतुरत
बुलायकरके भगवानकेवस्त्रोंकी दशासबदि
खायदेतेभये राजादेखकरके बड़ेआश्चर्यको प्रा
प्तहुआ तबतोसबमिलकर परस्परविचारकर
ने और कहतेहैं कि इसकोतो कोतुक औरक्या है

४४

याहै प्रभूकीगतीकछुजानीनहींजातीहै इसप्रका
र सोचकरतेकरते तिनको रयन बतीत होजाती
भई।९।चौपाई।प्रातकालतिनसबपननिहारा।
दीनबंधुप्रभदीनउवारा।भनतवदनमंगल सइ
वानी।सवजनहृदयकवनलखिहानी।छिदेव
सनकछुसोचनकरहो।भक्तसकलसवधीरजध
रहो।उतकलदेसजवनमनभावा।इस्थानतहांइक
नगरसुहावा।तामधवसहिंकविरमनहरनी।गु

४४
भ॰
४५

45

एप्रवीनमालन नवतरनी। सोहंनाकविहुनम
यजाई। बीननलटकीसमनहरबछाई। चांदनिरयन
बोपवितवाहू। पदगोविंदगीतमनहाहू। गावत
मधुर मधुर सुरबेवागी। संतनभक्तिप्रेमरसपागी
मैसुनितासभक्तिवसभयैयो। सुधिसरीरककुना
हिंनरहयैयो। जिनजिनगावतिफिरतसभागी। मै
तिन तिन नहि पाछिललागी। फिरतरहोंरतप्रेम
बेनेरे। नहितेंछिदेपीनपटमेरे। असकहिभयेल

प[illegible]गवाना।जेगभ्रातइजनभूपसजाना।स्वपनवि
चारिपरमपरलागे।तोकेविविधप्रसंसनलागे।
धन्यसोऊमालनिवडभागी।जासप्रेमवसपाकिल
लागी।फिरनरहेनिसितिभुवनराई।तजतसकल
निजमानवडाई।असकहिभूपहरषमरसाये।न
हिमालनिकहूहनपठाये।लीन्मोबोलिविविधस
नमाना।परमप्रीतिजतवचनवखाना।मैपालन
करहोंसवतोरी।तवप्रवीनरहुमासनमोरी।दिन

४४
भ.
४६

46

दिन भवन भवन पति आई । मधुर मधुर स्वर वदन
सुनाई । ललित गीत गोविंद सुहायन । करे होम
नि प्रीति जनगायन । पै मो उर रसिक मधुर पद भाये
नहिं प्रभु वन हूं ना करि काये । सम प्रकार मालति क
हे गाई । दै मा सन सब वदन सिखाई । पाछे कवि प्र
जन जउ गाया । सादिर सुवि नै वेदल गाया । नवनि
जनि जम व लोग गसि पाये । भूपति सदिन भवन नि
जगाये ॥ नादिन तैं सादिर नरगाई ॥ ॥

४६

नजनसकलनिजमानवडाई । भक्तप्रधानज्ञानिनिजपदे
वहिं । निसिवासरजनप्रीतिनिअभेवहिं । दोहा । लागेपा
मेवनसदननहिंप्रेममगनगननितनाय । भयेसफलजन
मपरस्परतिरथरतुगणगणनाथ । असभक्तोवसभ
वनपतीका नकरहिंसंसार । लोकअर्थस्थापननमि
नयुजनहुंभक्तिआधार ।।९।। टीका । नवप्रातःकाल
होते तिनकोकुछ निद्राजोआयगाई तोदीनवंधुश्री
र दीनहितकारी भगवान सपनेमे वडीकोमलवा

नीसें कहनेलगे कि भाई तुमने अपने हृदयमेंको
नहानीकोमानाहै इहमेंदेवसेनोंके फटनेकामतसो
चंकरो तुमहृदयमेंधीरजधारो उतकलदेसमेंए
कवडारमणीक ग्रामहै तिसविखे वडीसुंदरमन
के हरनेवाली और गुणोंमें प्रवीन एकमालिन नि
वासकरतीहै सो हेताकवणोमें अर्थात वेंगनोंकी
वाडीमें आधीरातके चांदकी छिटकीहुई चांदनीमें
फलोंकोलेती और पुष्पोंकोचुणतीहुई गोविंदगी

तके ललित और रसिकपदजोहैं सोमुखसेमधुर
मधुरस्वर आलापकरके भक्तीमैउनमत्तहोयकर
गायनकरतीफिरतीथी तबमै स्मरणकरके तिसकी
प्रीती और भक्तीकेवश भयाहूआ उनकीसबस
धीविसारकर जहां जहांवैष्णवोंकी चुणतीहूई
लावती फिरतीथी मै तहां तहांही प्रेममै मगण
भयाहूआ तिसके पीछेलागा फिरताथा हे भक्त
जनो इसीकारणतें मेरेवस्त्रजोहैं सोतहां कांटयों

मेकस कसकर सब फटगये हैं इसमे और हमसा
कोई है न नहीं है इस प्रकार भगवान कृपानिधान
अपना सब वृत्तांत सुनाय करके फिर नारतनहीं ल
पन होजाते भये जब माता काल भया तब राजा के
सहित ब्राह्मण पुजारी जो हैं सो सब जा गउवे और पर
स्पर सपने को विचार कर तिस मालन की अनेक
प्रकार शलाघा और बडाई करने लगे कहते हैं
किसो वर भागन आज धन्य है और धन्य तिसका

जगतमें जनमहै देखोजिसकेप्रेमकेवशहोयकर
तीनलोककेनायक भगवान अपनामान औरब
डाई त्यागकर राधीके समयकाटयोंकीभरीहुई
बैंगनोंकी वाड़ीमेंतिसकेपीछे पीछे फिरतेरहेहैं
औसेपरस्पर कथनकरकर फिर राजाजोहै सोति
समालनको हतभेजकर वरेमनमानसे अपने
पासबुलायलेताभया और वडेस्नेहकेभरेहु
ये वचनोंसेकहनेलगा किहेस्वामीले हेगुणग्र

गी
भा.
४९

प्रवीन मैसर्वप्रकारकरके तेरीपालनाकरूंगा पर

नरूपाकरके नित्यभगवानभक्तसुखदानके

भवनमै आयकर सोई गीतगोविंदके ललितऔ

र मधुरपद किनिनकरके दीनानाथनैने ७छाव

णतीहुई नेरिकायेथे प्रीतीभक्तीसे गायनकर

तीरहो ऐसेभलीप्रकार मालिनकोसमझाय

और सिखायकर फिर प्रीतीभक्तीसेभगवानका

पूजनकिया और सनमानपूर्वक नैवेदलगायानिसते

४९

उपरांतलोगजोहैं सोसब अपने अपने घरोंकोचले
गये और राजाभी हरषमें मगनभयाहुआ अपने
राजभवनोंमें चलाआया तिसदिनते लेकरके रा
जाजोहै सो जयदेवजीको भक्तोंमें भगवानकेप्र
धानभक्त जानकर आपनीमानवडाई सबत्याग
कर नित्यतिनके घरमेंचलाजाता और सेवनप्र
नकार करताबहुताथा इसप्रकार राजाऔर ब्रा
ह्मणदोनो परस्पर बडीप्रीतीभक्तीसें निरयरभ

भ. मा.
५०

गवानके गुणगण और कीर्तन भजन गावने ह्वये संसारमें सफल होजाते भये नाभाजी कहते हैं कि हे संतो ऐसे भगवानके प्रधान भक्त के स्वरूप भये ह्वये संसार में कौन नहीं करते हैं संत सर्व अर्थों के सिद्ध करनेके लिये आज भी जगत में एक भक्ति ही प्रधान और आधार है ॥ १ ॥ चौपाई ॥ आगे आन विमल मन ह्वाह ॥ जय जय देव भक्ति जगवाह ॥ क लंक ... खेद ओ रद हरनी ॥ हृदय प्रकाश सम

५०

नि[illegible]नी। सोजयदेवसवनहितकारे ॥ सव
करमहूतमानराखवारे। निजध्यानमस्तममनीवति
काया। देखनरह्रनसदाउजराया। सोछालवयभो
गगातिपाई। वधेकरमवंधनमपटाई। एकयन्
खवनकवडभागी। संतचरनसेवनअनुरागी।
सोमनवचन करम जयदेवा। भक्तिप्रवीन लीन
पदसेवा। एकसमयसादिरहहरषाई। तासभक्त
गृहलियेवुलाई। कृपासतसषटरसएककाना।

४४
भ०
५।

विरचित भक्त भवन सनमाना । कहि अनेक सुख
विनय बडाई । गुरु कहं भोजन दियो जमाई । देहु
पति राखे बहु दिवस लग मुदित भवन उजनाथ
लगे पा विसरजन करन जब चाहत चरन पति साथ
के विन पट मणि आभरन विविध भक्ति जुत लाय
दै सादर करि करि विनय गुरु वर किये विदाय ॥

टीका । अब आगे ओर वडी निरमल ओर मन के
हरने वाली जयदेवजी की भक्ती जो है सो कथन ५।

करताहै किजिसकेश्रवणकरनेसे सबदोषदारि
द्र हरहोजातेहैं हृदयमेसुख श्रोर समतीकाप्रका
सहोताहै ऐसेसरवजीवोंके सजनहितकारीश्री
रसबकामान रावनेवाले अपनेसुखदुखकेस
मान सबकाउखसुखजाननेवाले जेदेवजीजोहैं
सोश्रालस्यभोगके श्राधीनहोयकर महाप्रबल
करमबंधनजोहै तिसमेफसजातेभये एकको
ईवराभागमान धनीछत्रप किजोनित्यसापसं

52

तोंकीसेवकाईमै प्रीतिभक्तीवालाथा ओर मनव
चनकायाकरके जयदेवजीकावडाहढभक्तओ
रसेवकथा सदैवतिनकीसेवाभक्ती कियाकर
ताथा एकसमय निसधनीभक्तने गुरुजयदेव
जी वडेआदिरसतकारसे अपनेघरमैवुलायलि
ये और अमृतकेसमान खटरसके व्यंजनपक
वानजोहैं सोप्यारेप्यारेसव वनवायकर प्रीतीभ
क्तीसेतिनकोभोजनजिमाया ओसेनितनवीन

हीं सनमानकरते करते धनीने तिनको वहुत दिनोंत
क अपने घरमें राखा फिर जव विदाय करने लगा तव
के विनवस्त्र मणी भूषण इत्यादि धन देकर और चरनो
परसी मथ धरकर मनमे अनेक प्रकार की विंनीवत
ई कर करके विदाय कर देना भया ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ साथ
न लेन गवन झजराया। एकल काहू नसंग सहाया।
भावन विघुन देखि मगनाहीं। लगे विचार करनउ
जनाहीं। अहो उपाधि आजय धन पहू। करहिं कुसल

न

४४
भं०
५३

53

अभदीनसनेहु । असकहिदीनवामनवकानी । परे
हरिहिनवचारपदानी । सोलंखिकसठपयिकविदारी
अरिरिवशक्तिविरगाकरधारी । निरदयसूरकाल
वतपापी । मानहुंहोनहारइहव्यापी । देवतविप्र
पीरउँत्यागी । असवधहिंलोभधनलागी । नी
तिनिउणउजनतानिधाना । असविचारमानसनिज
ठाना । सोरठा । अबहोहिंजिमिप्राण । कीजैसोऊउ
पायअब । नवइजप्रवरवखान । वतसकवननवग

५३

वनकहा ।। २ । टीका । नवसाधन लेकरके जयदेव
जो हैं सो बलपडने भये परंतु अकेले हैं और हम
ताकोई भी साथ नहीं है ऐसे मारगमे महाभयान
कवणदेवकरके हृदैमेंच विचार करने लगे
कि अहो हृदयधन जो है सो मेरे साथ वडी भारी उ
पाधी है अव भगवानही कल्यान करेंगे और
तोकोई आधार नहीं है ऐसे कथन करके जव
वाईं ओरको नेत्र फेर करदेखा नवनंदाचारणर

६

५५
भ॰
५५

घटोत्कच पड़ते भये सो प्रथम कैसे कि पथिक जो रस
ते चलते हैं तिनका घात करनेवाले लुटेरे और म
हा निरदय कालवत क्रूर और बड़े पापी कि जिनो
ने हाथों मे धार हुये हैं बरछी तलवार इत्यादि श
स्त्र ऐसे मेड़इयों को देखकर जयदेवजी हृदय मे धीर
ज को त्याग देते भये और कहते हैं कि इहलोक हो
न हार आय करके आपत भई है अब इह प्रथम
धन के लालच सें मेरे को अवश्य वध करेंगे तब नी

५५

54

नीमें महाप्रवीन औरज्ञानविचारकी निधीजयदे
वजी हृदयमें सोचकर कहतेहैं किअव कोई उ
पाय करनाचाहिये जिससेप्राणोंकीरक्षाहो ये
सेविचारकर तिनलुटेरोंकोकोमल वाणी
से कहनेलगे किहेप्यारे तुमकौनहो औरक
हांकोजानेवालेहो॥१२॥चौपाई॥लखिकसननत
विप्रवरवानी।वोलेहृदय कपटसनुगानी।त
मेरेसंगविप्रवनसगारी।हमहूंचलव पुरषोत

४४
भ०
५५

58

मनगारी। तवहूजवहमहूवचनउचारे। तवसंसगीमो
रहितप्यारे। मैप्रसादतनमेरेहरखपाई। चलहूंसग
ममगविपनविहाई। विनयपक्रैपैमोरप्रवीना। मै
गतशाक्र जविरवलहीना। इहविनभारमोरस्रपि
काई। सोनवत्समगामकहूंउवाई। तांतेतमहूं आप
करिदाया। जानिनिवलमोहिहोहूसहाया। भनत
विप्रअममणिगणवाहू। कंचिनवसन आभरन
भाहू। तिनहिंदेनपाछिलपदवारी। मेरमंदगति

५५

वलेगासिधारी। जवरघुनाथइव्यागतभयऐो। तवनि
जहृदयहरषिग्रसकहयेो। ग्रतिग्रतिशइहसंसति
माया। जहिसंसर्गीहोइउविपाया। ग्रववेतागतपाछि
ललागी। निरभयचलेहु सोवसवत्यागी। इतग्रसह
दयगुनतउजतााना। उतभावीवलमानमहाना। दीर
घस्वरनिजवदनग्रलापी। वोलिउठेसववलेठिकपापी
ग्रावहुउजतववेगासिधारी। इहग्रापनथनलेहुसंभा
री। तवजयदेवसतनतग्रकुलाये। मसिगविनवसनस

४४
भ०
५६

50

कलइनपाये। अवकसमंदवदनमोहिदेवत। करिक
कुसुमहष्टिहगाहेवत। काग्रवकरहिंकपहिवयप
ला। मोरेहृदयहोतसंदेहा। उतमंदनमनलविकाल
नछिरविग्रहहमूरतभारा। हमरामदम जानिसवलो
ना। नवइहलिजसंपतिसवदीना। मोरका। जछह
मारजवेदाई। होहिंनइहितेंकमलकछु। तोतेनि
ग्रयभाई। होहिंनइहिंतेंकमलल। वयनमफकर
उलिनग्रव।।१।। टीका। नवइसमपकार जयदेवकी

मं
५६

वाणी सुनकरके लंबिकजोमहापापी लुटेरेहैं सो
कपटसे कहनेलगे किहेईस्वरण हमसारीवाट
तुमारेसाथहीं अरषोतमनगरीकोचलेंगे ऐसे
तिनकाकथन सुनकर जयदेवजी कोमलवा
नीसे कहनेलगे किप्यारे बहुतशुभभया इह
तुमारासंसर्गमिलायजोहै सोईहांवणकेमारग
मे मेरेको परमहित और सुखकेदेनेवालाहै क्यों
किमे तुमारीकृपा और सहायतासे आनंदसर्व

४४
भ.
५०

57

कसहजेही इसवेरेकविनवणाके मारगमे पारहो
जाऊंगा परंतहेहितकारी जनोतुमारेआगेमेरीप्र
कविनतीहै किमैशक्तसेरहित निरवल और हु
उहं इहमेरेपासधनकाभारीबोझहै मैइसकोउ
ठायनहीं सकताहूं तांतेतमक्रपाकरके मेरे स
हायकवनो और इहधनकाबोझ जोहैसोमेरेसे
लेलेवो ऐसेकहिकरपरमप्रवीन जयदेवजीसो
मणीकेतिनभूखणावस्त्र इत्यादि धनजोथा ।

सबतिनकोदेकर फिरआपकछु हरीपर पीछे स
हजे सहजेचलेजातेहैं और मनमैंकहतेहैं किदे
खो इहमायासंसारमे बडाभारीरोगाहै जिसकेसं
सर्ग अर्थात संगतसे ऐसामहांदुख और कले
शपायाहै अबजोइस दुखदायकधनकोत्याग
दिया तोचिंताशोकसेंरहित निरभयहोयकर
पीछे पीछे चलाजाताहूं हृदयमेंकछुभीसो
चनहींहै ऐसेईहांभक्त प्रधानतो अपने हृदय

४४
भ०
५८

मेंइहविचारकरतेहैं औरजहांभावीजोहै सोवडी
वलमानहैं वेपापीलटेरे जबीसरमेंउकारक
रकहतेहैं किहेहवउर्बसिण शीघ्रवेगसे धाय
करकेआवो और इहअपनाधनजोहै सोहमारे
सेसंभालकरके लेलेवो तव ऐसेजिनकाकथ
नसुणकरके जयदेवजीहृदयमें कछुआकुल
से होगये किदेवोंकेविनमणीभूषणवस्त्र
न्यादिधनजो इनोनेसवपायलियाहै अवअथममें

रेकोकोंतुलावतेहैं औरकैसे कपटकीभरीहुई क्रूर
दृष्टीसें देखतेहैं मानलियाहै किपापीमेरेको अवश्य
वधकरैंगे अर्थात्मारदेवेंगे तबउनधर्मीने परस्पर
इहमता हद्धकिया किइहहुउर्वब्रह्मणजोहै सोबडा
कपटी और पाखंडीहै हमारेभेदकोभलीप्रकार जा
नगयाहै इसीने अपनासबधनहमकोदेदियाहै भा
ई तुम सत्यकरकेजानो किइहु उक्षहमाराडुखदाय
कहै इसलेहमकोकदाचित कल्याननहीं होवेगी

तौंतेप्रथमकोमारदेनाहीं दीयपहै ।।१२।। चौपाई ।। अस
लीन्होतिनमंनविचारी । तोलोप्राग्रविप्रव्रतधारी ।। उ
पनत्नरतवांधिभजलीन्हो । षट्उगमहातिकोगवधकी
न्हो । उजकरवरनखेडखलकारे । लियेद्रमुद्रतविप्र
नक्षियारे । तवजपदेवभक्तहदनागार । भक्तप्रधान
ज्ञानगुणसागर । जेप्रालब्धभोगनिजरहयो । कह
नसोउदय आजजगभयो । उनहिंनदेनदोषकुजको
ई । होनहारग्रवसंसतिहोई । खेदतिरननत्वधनतन

परयो। नयपिनहिनधीरउरहरयो। हरनदोषदारद
समदाई। समरत हृदय उगाथनिधसाई। करिहैंसो
कृपालकल्याना। असविंतनउजनायककाना।
नवमरज्ञाननविउनविहाहू। उरषोतुमउरभूपति
बाहू। चंचलनरगग्रहफनग्रावा। तीव्रवेगमरग
पाक्लिलधावा। एणग्रधीरमरनउजलीना। ठाढ्या
निकटब्रासबसदीना। असतहिदेखिविहगनदत
राया। नमाकीनउपजीउरदाया। उनिउजदशा

४४
भ॰
६॰

देखिनरूपसोई। सुन्दरनवदनचकितँसोई। सोरठा। तव
वरण्योअजराय। भुक्तभोगसालवधनिज। सहित
पलीनमंगाय। वेगानरतस्वामनहविर। दोहा। ताप
रलियेविदाय उज नत सनेहसनमान। लैगँन्त्रो
तव भवननिज भूपभक्तभगवान। ४। टीका।
इसप्रकार जवतिनोने ईसएकामारदेना हद
यमैनिश्चयकरलिया तवइतनेमै परमव्रतधारी
जयदेवजीभी वहांआय जातेभये। ॥

चित
व
६॰

60

तिनदुष्टोंनेमतातो कियाहमाघा नरनहीं पकड़
कर भुजाबांधलेईं औरकिरपापियोंने निरदय
होयकरके खड्गजोतलवारहै तिसकाप्रहारदे
कर दोनोहाथ औरदोनोचरन काटडाले तिस
नें उपरांत पापकीखानी धनजोहै सोलेकरके
बणकेमारगकोचलेजानेभये नवभक्तोंमेंप्रधा
न ज्ञान औरगुणोंकीनिधी भगवानकेदृढभक्त
जयदेवजी कहतेहैं कि अपनामालवधभोग

४४
भ॰
८१

जोथा सो आजसंसारमै प्रकटभोगलियाहै देखि
ये ऐसे विचारके धनीकि उनश्रधर्मोका कळुभी
दोषनहींलगातेहैं एहीकहतेहैं एहीकहतेहैं कि
होनहारभावी जोथीसो आपकरके आपनहोय
गईहै ऐसे यद्यपि परमखेद श्रोत्वथाकरके आ
कुल पृथवीपरपडेहूयेहैं तद्यपि हृदयकाधीर
जसोहै सोनहींत्यागतेभये सर्वत्रखेदोष श्रोर दा
रिद्रोंकेहरणकरनेवालोवीरसमद्रमै विराजेहूये भ

८१

गवानजोहैं रामरोमतिनकाही स्मरणकरतेहैं
श्रोरकहतेहैं किसोई कृपानिधानमेरीकल्यानक
रेंगे इसप्रकार जयदेवजी विंतनकररहेथे किइत
नेमें पुरषोतमपुरीका राजावणविषें शाकारखे
लता वरेंचंचलघोडेपरसवारभयाहूश्रा तीब्रवेग
सें एकहिरनकेपीछेधायाचला श्रावताहै तबसो
हिरन राजाकेभयसें व्याकुल श्रोर श्रधीरभयाहू
श्रा जयदेवजीकीशरण श्रायपडा श्रोर थर थर

५५
भ०
६२

कांपताहुआ दीनहोयकरके तिनकेपासस्थितहो
यगाया ऐसेतिसकोदेखकर राजाभीदयाकेव
शहोयगया औरतिसपर दयाकरदेताभया प
रंतुसव जयदेवजीकीदशादेखी तबसबजनके
वश होयकरके राजातिनको पूछनेलगा कि
हेउजनराज इहक्याकारनहै तबजयदेवजी आप
नासव वृत्तांतप्रकटकरके सुनायदेतेभये कि
हेराजन इहहमाराप्रालब्धकरमथा सो भोग

62

लियाहै ऐसेतिनकेमखसे वचनसुनकरराजा
हृदयमे परमउवमानताभया ओर ततकाल
कोमलसिजावाली पालकी मंगवायकर तिस
परतिनकोवसीपीती सनमानसे पौढायकर आ
पने घरकोलेजाताभया। ७४। चौपाई। राखेभूप
विप्रनिजगेहा। उजनपतनीप्रतिवोलिसनेहा। प्र
मप्रीतिजनभक्तिप्रभेवा। लागाकरनदंपतिनितसेवा। कविराजनकहंभूपउचारा। सुनहूतिप्रए

५८
भ.
९२

हितनजानिनिजमाया। करहुउपायबेगिअबसोई। ज
याकुसलइजननायकहोई। सासनपायभूपकवि
दाई। लागेकरन यतनसमुदाई। थोरेहिंदिवस
मउदूतनकेरे। मिटेचरनकरघाउघनेरे। अस प्रका
रकछुकालबिहाया। सोजुग्मयमलंठिकपुरआ
या। आयेकपटभेषमिलिचारी। मुद्रामालतिल
कतनधारी। कपटसाधुनिजवेसबनाये। जुजउ
पकारनिहारन आये। आवत तिनहिं ॥

देखिउजमानी। कहिकहिवदन नवमउवानी। सो
रठा। सविश्रासनवैठारि। पुनिकुसलसादिरस
कल। पुनिनिजवदनउचारि। विप्रकहेंसासनदीन
उज। विप्रपतनिपरवीन। हरषतसादरप्रेमज
न। सविप्रजननतिनकीन। अरघपादआदिकस
कल।।४।। टीका। नवराजाजयदेवजीको आपने
घरमेराखकर पदमावतीतिनकी स्त्रीजोहै ति
सकोभी वुलायलेनाभया औरराखीदिनवडीभ

४४
ज भ॰
६४
64

कीप्रीतीसेतिनदोनो स्त्री भरताकीसेवा करनेलगा
कविराँजोंवैदहैं तिनकोबुलायकर् आज्ञादेताभ
या किभाईतुमसेमराहित अर्थात मेरीभलाई जान
कर अवसोईउपायकरो किजिससेमेरेपरमहित
कारीजयदेवजीको शीघ्रकल्यानप्रापनहोवे ऐ
सेराजाकी आज्ञापायकरकवीराजजोवैदहैं सो
अनेक प्रकारके उपायकरनेलगे तवभगवान
की कृपासें थोडेहीदिनोमे भक्तप्रधानकेहाथों ।

औरपंडकेघाउजोथे सोसवमिटजातेभये इसप्रकार
जवकुछकालवतीत होयगयातवसोई अधमलुटे
रे कि जिनोने भक्तउतमके हाथपाऊं काटेथे क
पटकेमल साधुऊंकाकपटभेष वनायेहुये औ
र महामालातिलकधारेहुये जयदेवजीका उप
कारदेखनेकेलिये चारोहीउह तहांचलेआवते
भये तवतिन अपने घातियोंकोआवते देखकर
जयदेवजी वडीमधुर और कोमलवानीसेवला

४४ यकरसनमानसे आपनेपास आसनपरविठायलेते
भ येआवतीपीतीसनकारसे कुसलप्रश्नकर पद
६५ मावतीकोकहनेलगे किभामनी संतमहानमावर
मेआयेहैं इनके चरनोकीभक्तीसेवाकर नवपरम चतरपदमावतीपतीकी
आज्ञाकेअनंतरलेहो यकरअरघपादआदिक तिनकाप्रजनसेवनजोहे
सोभक्तीपीतीसे सवकरतीभई । १५ । चौपाई ।
बहुरि दिव्य भोजन बनवाई । कंदमूल
फल ललित लयाई ॥ ॥ ६५

हरषप्रतितिनकहंउजगाये। साहिरकारिकरिविन
यजिमाये। मेलेवहुरिमूपमनवारी। विविधमं
सिवदनवचनधारी। वरनीविमलकपटगतवानी
सनहूनेरसभक्तजगमानी। इहप्रधानगुरुसद
शचारी। अतिशास्त्रनिपुणव्रतधारी। सचिव
पाश्वविद्वानकुलीना। चाहभक्तिहदयधरमप्रवी
ना। सोरठा। नवरसभमनिनिधान। इनकरसे
वाइव्रजत। करहुधरमपथजान। इहपुनतथी

७७ भ॰ ९९

भगवतप्रीये । १९ । टीका । फिरग्रामस्तकेसमा
न भोजन बनवायकर और सुंदर कंदमूल फल
भीलखायकर भक्तप्रधानवड़े सनमानसेविन
ती करके तिनकोजिमायदेतेभये तिससेंउप
रांत फिरनिस्कपट होयकर और लेजायकर
तिनकी अनेकप्रकार शलाघा और वड़ाईक
रकरके वड़ेसनमान पूर्वक राजासेमिलाये
और कहनेलगे किहे दयादान औरमानकी

66

निर्धीराज्ञन इहवारीमहानमाजोहैं सोवेदके पर
मवेत्ता अर्थात वेदशास्त्रके तत्वकोभलीप्रकार
जाननेवाले संतप्रधान साक्षातगरुडके समानहैं
ग्रौर सुपात्र कुलीनहैं भक्तीविवेंहफ ग्रौर ध
र्ममेप्रवीनहैं तातेहेगुणनिधान राजन अवत
धर्मकेमार्गकोविचार करके इनसंतनभक्तोंको
धनके सहितसेवाभक्तीकर क्योंकि इहनरेन्द्र
रमै सुतेसिद्ध अन्तर्यामीभगवानके प्यारे प्रायक

67

रके प्रापनहोयगयेहैं इनकीसेवालेरेको लोकप
रलोककैमें सुजस ग्रौर कल्यानकेदेनेवालीहै। ९
चौपाई। सुनिउजननाथवचन असराई। अंबररतन
इत्यअधिकाई। सनेहरगकेचिनविधिनाना। ढेत
नविंदसकविसनमाना। कीनविदायचरनासिरना
ई। सोजवचलेरमतयनपाई। नवजयदेवहरषउ
रछाये। न्पहिंवदनअसवचनउलाई। आगल
भूप उदयिवनधोरा। फिरहिंवधिकलंठिकमरा।

वेरा। ताकूरतरणहेतनरराई। इनसनदेहूस
वलमतलाई। जसनदेसउजनाथकदीना। सारि
रसकलभूपतसकीना। अयेकपटभेषमगवा
री। भूपमनननतवविनयउचारी। सोरठा। क
विसनकवनतमार। सोसंबंधमहानमन ज
हितैंविवधप्रकार विप्रकरावामाननव। ९
टीका। नवइसप्रकार जयदेवजीके मखसेव
चनसनकर राजाजोहै सोतवतनहीं वडेदिम

भ॰ ६८

वस्त्र और भूषण रतन कंचिन इत्यादि नानाधन और रथ घर जरीसाजसे संगारेहूये घोड़े देकर हा थजोड़कर चरनोपरसीस नायकर मखसे अने क विनती कर करके विदाय करदेनाभया और सेजब सो कपट साध राजासे बड़भारीधनपा य करके चलनेको तयारहूये तब जयदेवजी प्रसन्नभयेहूये राजाको कहनेलगे किहेराज न आपने इनसंतोको बहुतभारी धनदियाहै

परंतु मारगमें समुद्रके समान महांघोर वणए
रहुयाहै किजिसविषें मानुषोंकोवधकरने
वाले अर्थात मारदेनेवाले लूटिक लूटेरेचोर
बहुत फिरतेरहतेहैं तोतेजिससमुद्ररूपी व
णकेतरनेकेलिये इनसंतोंकेसाथतुम अपने
शस्त्रधारी बलमान सेवकजोहैं सोलगायदेवो
सोइनकोवणमें पारकरकेचलेआवें श्रेसेभक्त
प्रधानकी आज्ञामानकर राजानिनकेसाथ ।

४४
भ.
९५

अपनेसरवीसेवकलगायदेताभया इसप्रकार
जबवे चारोकपटभेखी वणकेमारगमे चलेआ
ये तबराजाकेसेवक तिनकोविनती कर कर पू
छनेलगे किहेसंतो इहजयदेवकवीजोहैं इन
के साथ तुमाराकौन संबंधथा कि जिससे
राजाके पास तुमारी अनेक महिमा वर्ण
ई कर कर धनके सहित ऐसा आदरस
न्मान करवाया है ॥ ८ ॥

चौपाई। भनत भनत सनि सो सठ बोले। कपट ग्र
न्थ मरम म रख बोले। करनाटिक इक देस सहा
वा। इहाँ जनम भ्रमत भ्रमत नहीं आवा। जानत रहा
काव्य कला मरमा। हम हूं करत भिखारिन धरमा। एक दिवस गावन गए जन पह। चौरंजक रम
कवन पति गेह। नव तिन पकरि बांधि भजलीना
करि डर दशमान गनकीना। नृप पैं ल्याय बदन
स्याह कीन्हा। महाराज डर जन सठ राहा। चौरंजक

५५
भ.
७.
70

रमनिरतनदिननगानी। निरदय उष्टमंदमतिघा
नी। नवल्लदपवदन बोलिबांसला। दीननदेस
तिसकिहगलाला। मोरराजतें वहिरनिकासी
जफकहंवबपद्रुग्रीवधरिपासी। मासनपायभू
पश्रमहोई। लावानासकोपवमहोई। हमकहं
देखिदयाकछुलागी। कहिकहिविनयद्युक्त
महवागी। वधतेंराखिलियोधनदीन्यो। करउं
रुविजगक्छेदनकीन्यो। पाछेवछुरि मंदनिजसोई

सरवकरम कियोकछुहोई। तांतेभयोचरनकर
हीना। निजक्रतदंड प्रकटजनफलीना। अस्रस
कारतांकरसबकरनी। हमसबपृथक बदन
मनबरनी। सोनिंदानिजप्रथमनिहारी। अरु
हमार उपकारविचारी। नृपसनविविध सुजस
मुखगायो। सठहमार सनमानकरायो। दुज
सनमकर कपट कहानी। जबप्रथमन अस
बदनबखानी। दोहा। भयोविमल नव गगनप

४४ यअनिप्रबंउरवषार। अकसमानहृदयोपरन व
भ० नुपानकरिपोर। सोउजनिंदककपटिमठ नि
७१ परमलअगवारि। पडतनलडितकेलखननर भये
नरनजपरारि। ९८। टीका। नवराजाके सेवकों
कीवानी सुनकरके सोमंदकपटी और पापकी
खोनी मिथ्यामहा अनर्थजोहै सोकपटसेवना
य करके कहनेलगे किभाई करनाटिकनाम
करके प्रसिद्ध पकव उामंदरदेसहै पकस

७१

मथनिसविषे इहब्रह्मणकहीं भ्रमना भ्रमनाव
लाआया और काय्यकृतजोकविनाईहैतिसको
जाननाथा तहांहमभी ब्रह्मणोंकाभिलादिन
धर्मजोहै सोकरते और विचरतेथे एकदिन
इहजड अपने कर्मके अभ्याससे चोरीकरने
को किसीधनीके घरमें चलागया तव अपमन
होपकडागया और तिनोंने भजोंसेवांधलिया
अपमान करकर वहुतहीउरदशाकी फिर

४४
भ·
७२

72

राजाकेपास लेआये और कहाकिमहाराज इहमें
दराचोरीहैनचोरी कर कर लोगोंकोलूटता रहता
है बड़ाभारीदुष्ट निरदय और मानुषघातीहै
तबराजाने कोपसेलालनेत्र कर कर और चां
डालको बुलायकर आज्ञादेई किइसअधमको
मेरे राजसेबाहर लेजायकर गलेमेंफांसीलगा
य करके मारडालो ऐसेराजाकी आज्ञासे चां
डालोंने तरतबांधलिया औरकोपसेलेचले तब

इसकोदेखकरके हमकैहृदयमै कुछदयाआ
यगई तिनचोरलोंके आगेविनतीके वडेदीन
वचनकरकर और कुछधनकालाभदेकर व
धतें तोनिवारणकरलिया अर्थात जानसेतो
वचायलिया परंतूराजाके दिखावनेकेलिये
तिनोने इसकेहाथकीदोअंगुली काटलई औ
र छोडदिया तिसकेपीछे महामंदने फिर अ
पनाओई पूर्वला चोरकर्मकियाहोगा तिसतें

अधमकेहाथ पाउंभीकाटेगये अपनेकियेहूये
करमका प्रकटफलपायलियाहै भाईइसप्रका
र निसकावृतांतजोहै सोहमनेतुमकोसबसु
नायदियाहै अवइसकपटीने हमकोपहिचान
कर हृदयमें सोहमारा उपकार सुमरकर औ
र अपनीनिंदाके भयसे किमतकहीं इहभेदाभे
दप्रकट करदेवें राजाकेपास लेजायकर माव
से हमारा सुजस और वडाई गायन करकर

इह धनके सहितवश आदिसनकार भी करा
याहै इसप्रकार जब सत्यकीमूरती जयदेवजी
की तिनपापियोंने मिथ्यानिंदा और कपटकी
कहानी सबसें कथनकरी। तबतिससमयआ
काशनिर्मलहीथा अकस्मात तिसनें महाप्रचं
डशब्द और घोरशोर करके वज्रपातजोबिजली
है सो कडकतीहुई टूटपडी तहांउपकारकीनि
धी और धर्मात्मा जयदेवजीके सो चारोनिंदक

म

४४
भ०
७४

महांकपटी औरऊ छपापकीखानी जेथे सोतत
कालहीं तिसविजलीकी आंचसेजलकरके भ
सम होजातेभये ।। १८ । चौपाई । अमतजबभये अ
धमहतचारी । तिनहिंहरान भतभूपनिहारी ।
करतसोच अबराजबसभयऊ । नृपधनदान
नवन तिनरहयेऊ । सोसबलेतभूपपैंआये । अनेकतनमदनतनुकाये
महाराजतेसंत छत्रीनेंकाजमन लक्षुपानलपकीने । लहनतभूप
सानलपलतनाये । बिलपत बिकल बिप्रपैंआये ।

भनेहूनांन वदन समझाये। महाराजसौ संतप्रवी
ने। काननवज्रपान वधकीने। सुनतभूपमानस
पछताये। विलपतविकलविप्रपैंआये। तिनक
रमरण वदन जववरना। मूर्छितगिरेसुनतउ
तपरना। पुनिजवउठे शोकउरवछाये। हाहाका
रकरत पछताये। विथनअधीर नयनभरिवारी
रोदनकरहिं विप्रव्रतधारी। हायहायदई वदन
उचारत। ताउनधरति भुजनउजआरत। तासक

पदगान शोकनिहारी । अघेदयावसदोषनिवारी

सोरठा । हवि रनवलप्रकटाय । उज्जवरवयपद

सेवनकर । सकललोकविसमाय । हरिविहगान

अदभुतचरित ।।१९।। टीका । इसप्रकारजब सो

चारोंही उष्ट नामको प्राप्तहोयगये तब तिन

कौदशादेखकर राजाके सेवकजोथे सोपरम

प्रेमवरजके वशहोयगये और हृदयमें विचारक

रकर तिन कपटीसंतोंको राजाकादियाहु धन

[illegible]गया सो सबलेकरके राजाकेपासहीं चलेगा
वतेभये और प्रणामकरके तिनकासैसावृत्तांत
भयाथा सो प्रकटकरके सवसुनायदेतेभये कि
महाराज वेवारोसंतमहात्माजोथे सोवणवि
खे अकस्मातही वज्रपातजोविजलीहै तिसने
भसमकरदियेहैं ऐसेजिनके मुखसे ववनसु
नकरके राजामोनहोयगया और अनेकप्रका
रपछुतातासुया विलापकरताकरता जयदेव

४४
भ०
७६

जीके पासचलाआया और शोकसेदुखी होयक
र जबभक्तप्रधानको बिजलीकापड़ना और तिन
कामरनासुनाया तबजयदेवजी सुनतेही मूर्छा
होयकरके पृथवीपरगिरपड़तेभये फिरथोड़ी
देरकेपीछे उठकर और शोकमेंघायलभयेहुये कु
छसुधीसंभालकर जोउठे तोधीरजसेरहितव्याकुल
भयेहुये हाहाकारशब्दसे नेत्रोंमेंजलभरभरकर रोदनकरे
लगे और हायदेव हायदेव ऐसापुकारतेहुये दोनोभुजाओंसे

७६

होउखीहोयकरके पृथ्वीपर पछाड करमारते
भये इसप्रकारतिनका कपटसेरहित शोक दे
खकरके सर्वशोक और दुखदोषोंकेहरकरने
वाले भगवान परमकृपाकेवशहोयगये दीना
नाथकी आनुगृहसे जयदेवजीकेहाथ औरपाउं
जो कटेहूयेथे सोतत्क्षनही नवीन अर्थातनयेउ
त्पन्न होजातेभये इसअद्भुत कौतकको दे
खकरके सबलोग अपनेहृदयमें बडाआश्चर्ज

५५ भ० ७८

मानेनेलगे ॥ ८९ ॥ चौपाई ॥ तिनमैं रहे जवनव्रुथनाग
र। हराषिभनन मुखवचनउजागर । अनहितदेखि
करहिंहितजोई । तिनकहंकछु उरलमनहिंहोई ।
परउखदेखि जिनहिंउखमाना । सोऽधन्यनरजग
तप्रधाना । तवललननाथकोरिकरदीना । करिप्रणा
म विनती असकीना । कारनकवनविप्रवरपहू ।
उपजाहृदय मोरसंदेहू । उजप्रवीन तवप्रकटउ
दारा । रहेसोहूतोन जवननिजसारा । सुननभूपसा

७७

७८

सहरखावा। मुनिभुनिविप्रवरनसिरनावा। कीन
विविधमखवसनसवजाई। कोतमारसहप्राइजना
ई। आजयलयनसंस्तिआना। जहिपरहितनित
मानसमाना। नवसंसर्गविप्रबनधारी। हमहूं
धन्यजगकीरतिधारी। सोरठा। आसचरननन
नराय। चलिआये निज भवननव। सवसनदी
नसनाय। विप्रप्रसंसाविविधविधी। दोहा।
रहगाधासभमनमोमे उजवरमक्तिभनीत। आ

गेयान जथामतीकरहुं कथनजनप्रीत ॥२४॥ टीका

नवतिनमें जोजो बुद्धीमान और चतुर पुरुषये सो

एक मूल मनके कहनेलगे कि देखोभाई जो

अनहित करनेकेसाथ हितकरतेहैं अर्थात बु

रा करनेवालेके साथ भला करतेहैं तिनकोसंसा

रमें कछुभी दुरलभनहींहै औरजोपराया दुखदे

खिकरके अपनेहृदयमें दुखमानतेहैं सोपुरुषजगत

मेंधन्यहैं औरयधर्मतिनकी करनीहै औसेपरमपर

78

[illegible]नकर भक्तप्रधान जयदेवजीकी अनेक प्रश
सा और बड़ाई करतेहैं तब राजा हाथ जोड़कर च
रणोंपर माथा नाय करके बड़ी दीन वाणीसे विन
ती करने लगा कि हे कृपानिधान मेरे हृदयमे
बड़ाभारी संसय उत्पन्न होयगया है और मेकु
छ [illegible] पूछना चाहुं कृपाकरके कहिये कि इसमे
कौन कारन है वे संतकें मारेगये और इह आपके
कटेहुये हाथपांउं कैसे नवीन उत्पन्न होयगये

तवजयदेवजी भगवानको नमस्कारके आदसे
अंतलग अपनाहृतांतजोथा सोराजाकोप्रकट
करिके. तब सुनायदेतेभये औसेतिनका अदभुत
हृतांत सुनकरके राजा हरषमै मगन होजाता
भया औौर वारवार चरनोंपर प्रणामकरके म
खसे अनेकप्रकारकी असतुती करनेलगा क
हताहै किहेभक्तउत्तम तुमधन्यहो और धन्यतु
मारा सफलजनमहै तुमारे समान हमरा को

जैसे सत्जन सकापात्र हैं हे भक्त प्रधान तुमारे जे
से तुम सहीं हो और इह महिमा बडाई तुमको ही
योग्य है तुम कैसे हो कि जिनोंने सदैव पर हि
त और पर उपकार को हीं हृदय में राखा हुआ
है हे सत्य की निधी देखिये कि तुमारे संसर्ग
मिलाप से आज हम भी जगत में धन्य धन्य और
कीरतीमान होय गये हैं ऐसे कथन करके ग
जाता है सो आनंद से अपने भवन में चला आ

या तरहांश्रायकरके वशीप्रीतीमनमानसे जैदेवजी
की भक्तीकाप्रभाव श्रोर महिमासबको भलीप्र
कारसूनाय देताभया नाभादासजीकहतेहैं कि
हेसंतो इसप्रकार इह जैदेवजीकी पवित्र भ
क्तीजोहै सो मैंनेकुछगायनकीहै अबश्रागेलि
नकीभक्तीकी श्रोर मनोहरगाथा किजिसकेश्र
वणकरनेसे भगवानकेचरनकमलोंमे प्रीती
उपजतीहै कथनकरताहूं ।२०। चौपाई ।कछुक

कौलवीतिसोजवनाई । भयेहडवधुनव जनराई । कं
पतग्रंग सिथलतनमारा । नद्यपिनित्यकरमन
हिंहारा । प्रातहिंमंदमंदतनिधामा । मारगलेत
विपुलविस्रामा । हरमहिंनायविप्रनधरमा ।
करहिं सनान नित्यनिजकरमा । अवसरएक
हडउजराई । मोचादिककृतकरनसहाई । चले
जातमगजानह्विनीरा । मंदमंदगति सिथलस
रीरा । पहुंचेतनहांविपुलश्रमपाई । प्रीतिसरवक

४४
भ॰
८१

मर्दितअनाई। बहुरिपराय भवननिजधीरा। तिरे
भ्रमत मगनिबलसरीरा। देखिलोगपायेअतुरा
ई। लगेकरनमरदनसिवकाई। बहुरिसहन ँप
करनपानी। बैठारेसादिरड्डनमानी। पुनिविलो
कि सीतलडमछाये। नहंहांदीनडजनाथपैपोडाये
करनसविजन मोदमनभरना। चापितकाहुकर
नमरजचरना। तोलोतहांपरनपतिआये। कहत
वदन मरजवचन सुहाये। सिवकाहुफकरन।

मृदु

८१

8

सुनगवने।आयेमदितभूपउजनभवने।बोलेवद
ननम्रकरजोरी।दीननाथविनतीकछुमोरी।
जीरणभईघालनवकाया।अवतेंनाथनमह्रंक
रिदाया।सिवकाहूढदेवसरितीरा।जावहूनि
स्हहरनजनपीरा।तवप्रसादमोरेनरराया।नहिं
नभ्राजउरलभसिवकाया।श्रुनिप्रणमारभूपम
तिधीरा।पदवरमाङ्देवसरितीरा।पोरेदवस
जियनअवलागी।धरमधुरानत सकहुं नत्यागी

82

सोरठा। भूपवचन उरमान। गवनि भवन सादिर
सकल। करि पूजन भगवान। राजकाजतत्पर
भयो।२१। टीका। भवजयदेवजीको घरमैवासक
रते करते कछुकाल वतीत होयगया तव भक्त
प्रधान वृद्ध होयगये शरीरजोहै सोसिथल हो
यगया और अंगसवकांपने लगजाते भये त
थापि तिनोंने अपना नित्यकरम जोहै सोनहीं
तयागा प्रातःकालमै उठकर मारगविषें वहुत

हीं विस्राम लेते हूये श्रीगंगाजी पर जायकर श्रो
र सनान करकर प्रीतीपूर्वक अपना नित्य क
र्म सब करतेथे तब एक दिन सो हूड भक्त जयदे
व जी सोच करके सहजे सहजे गंगाके सनान
करनेको जो चले तो मारग मे बहुतही श्रमप
यकर तहां पहुंचते भये और फिर जब गंगाके
निरमल जल मे सनान करकर घरको आवने
लगे तो मारग मे निबलताके कारन चक्कर आय

४४
भ०
८२

करके गिरपडते भये और मूर्छा आयजाती भई ऐसे तिनको देखकर लोग जो हैं सो धायकरके आयगये और मरदन वाणी करने लगपडे जब तिनको कुछ स्मरन आई तब सहजे सहजे उठायकर और लेजायकर एक महलकी सीतल छाया के नीचे सुखशर्व कलितायपदिये कोई पंखो फोलने लगा और कोई मरदन करने लगा इतने में तहां एक समान नहीं राजा भी आयगया सो भक्त

ल

इकोदेखकर वडीप्रीतीसेनमानसे नरनपालकी
घरविदायकरके तिनकेघरमै लेआवताभया त
हंहाथजोडकर कोमलवाणीसे विनतीकरने
लगा किहेकृपानिधान मेरीइहप्रार्थनाहै कि
अव आपकाशरीर वृद्ध और अतमे करके नि
रवलहोयगया कछुचलनेकोसामर्थनंही र
खताहै तांतेवहमाहूं किआजतें लेकरप्रसन
मटया करके निमपालकीमै वैठकार गंगाजी

के स्नानकरनेको आयाकरो नवराजाका कथन
सुनकर जयदेवजी कहनेलगे किहे प्रजापाल
मै जानताहूं कितेरे प्रसादकर्के मेरेको इहपाल
की कुछ्छ दुरलभ नहींहै सवसुगम और सहज
है परंतु मेरा प्रणहै कि अपनेहि पांउसे श्रद्धापूर्व
क चलकर श्रीगंगाजीमे स्नानकरना हैधर्मकीविधी
राजन बहुतीतो वीतगई अवथोडे दिनोकेवास्ते अ
पनाप्रणनधर्म और प्रणजोहै सोकों नत्यागूं ।

ऐसेजयदेवजीका भक्तीप्रीतीवाला दृढवचनसु
नकर राजाहरषसे प्रणामकरके घरकोचला
आया तहांभक्ती औरप्रेमसे भगवानकाभजन
सेवन करके अपने राजकाजमे ततपरहोजा
ताभया ।२१ चौपाई । असप्रकार जबदिवसबि
हावा । संध्यापरीतिमरजगछावा । निजनिजकि
हे सयनसबकोई । असजब अर्धरयनगतहोई
भूतगणसबिविभूपजनरानी । ज्ञाननिधानविप्र

४४
म०
८५

85

वरमानी। सवनअर्धनिसि निजनिजगेहू। अद्भुत
सपन विलोकिसपहू। दोहा। शाकलवरन अंव
र शकल ललित जुगलकरकंज। वाहनमनस
सरोजहगाधरनिसकलअगभंज। भामनिभेष
वशेषइन भूतअनूप प्रकटाई। भनतभगीवथि
गंगमे विश्वभक्तिवसआई। टीका। इसप्रकारजव
दिनवतीन होयगया और संध्यापडगई सवजगा
नमे अंधेरा छायतहोजाताभया तवलोगजोहैं सो

अपने अपने चरणोंमे सावधपूर्वक सोयगये जब आ
धीरात बीत होयगई तब सेवक और मंत्रियोंके
सहित राजारानी और नगरकेसब ब्राह्मणपंडि
त विद्वान तिस आधीरातके समय अपने अपने
चरणोंमे इष्टअद्भुतस्वपन जो है सो देखतेभये
कि शुकलवरन अर्थात उज्जलरंग और उज्जल
हीं वस्त्र हाथोंमे धारेहुये सुंदर कमल और म
छ है वाहन जिसका पृथ्वीपर पापोंके समूह

४४
भ०
८६

कानासकरनेवाली ऐसी कमललोचनी मानगं
गेजोहै सोभामनीजो स्त्रीहै तिसका अनूपरूपधार
कर और प्रकटहोयकर कहतीहै कि भक्तोंमे प्र
धान जयदेव मेरेदृढभक्तजोहैं तिनकीभक्तीके
वशहोयकर्के मैअबतिनकेघरमेहींचलीआईहूं। २२
चौपाई। प्रथमहिं उदयहोतजनभाना। विप्रअजर
जेवापिवहाना। मोरप्रवेशतासमधवासो। अवतेंहो
हिंसमपवनपासो। जानहुतवनिश्चयमनमाहीं।

८६

तामसप्रानकेनविकसाहीं। इहमनयदेवविप्रव्रतधा
री। अतिप्रीयभक्तमोरहितकारी। निर्वलज्जवि
र हठ तजततनधीरा। करतस्नान आनममनीरा
मैविलोकितंकर भ्रमपहा। कौननिवासहवि
रउजगेहा। इहप्रणभक्तभंगाननिहोई। तंकरत
मडंप्रानसबकोई। इहहूतंनसबप्रकटबखानो
श्रोरहंचमतकारनबजानो। जेप्रीयभक्तमोरस
नजाई। तासवापिजलविमलअनाई। सपतदि

४४
भं
८१

बसपाछिलजननसोई। दारुणकुष्टगलत गतहोई
असप्रकार निसिग्रवसरकाहीं। सकललोक निज
निजगृहमाहीं। देखतसपनप्रात सुखछाये। था
यथायभूपतिपैंग्राये। निसिहुतांत सादिरसबबर
ना। हरषेसुनत श्रवणपतिधरना। करतप्रसंसा
वदनसुहाये। उजपैंसकलभूपजनग्राये। सोहुतां
तसबबरणनकीना। भनेसुनतउजनाथप्रवीना
धन्यजमारजनम जगाभयपैया। जिनसादातदगानम

८१

87

रिलघयो। रमारूपदरसनसुखसरिया। किलषक्रोध संसृतिसबहरिया। देखोतमहुंजबननिसिमाहीं स्वपनवातकछुअचरजनाहीं। दोहा। जगतमातु जननीजगतजगतउधारनिदान। जगतडरनसें जातजहिकारतदरसडरजात। असगंगेदायाति थीकरनजननपरनेहु। मोरसदनआवैंअवसि नहिनमित्रसंदेहु। ४४। टीका। प्रातःकालसूरज केउदयहोनेसेप्रथमहीं भक्तप्रधानजयदेवके

४४
भं:
८८

अंगणमैवापी जोवावलीहै आजनेलेकर मेणस
न्यकरके तिसकेजलविषें प्रवेशहोजावेगा इस
वारताकोतम सवलोगोंने नवनिश्चयकरना
किजब सोताकालहोनेतिसमेखिलेहुये कम
लोंकीशोभादेखपडेगी इहसंदरवनकेधारने
वाला जयदेव ब्रह्मणजोहै सो मेरापरमप्यारा
भक्तहै देखो यद्यपि वहुत वृद्ध और कृपण नि
रवलभी होयगयाहै तद्यपि अपने हठ और

नियमको नहींत्यागता निनप्रानाकाल आयक

रके मेरेविखेंहींमनानकरताहै इसीनें मै आपने

हडभक्तकाश्रम देखकरके तिसके घरमेंही नि

वास आयकियाहै किमेरेभक्तका नियम औरप्र

एजोहै सोभंगनाहोजावे अवतमसबकोई आ

नाकालहोनेतिसकेपास जायकरके इह प्रसं

गजोहै सो सबसुनायदेवो इसमेंमेरा एकऔर

भीवाक्यहै किजोकोई कुष्टरोगकरके गलित

५५
भ.
८९

८९

भयाहुआ पुरषवात्तीमेरेनिसभक्तके सायस्नाय
करके नहांवापीकेजलसे स्नान करेगा सोसात
दिनकेपीछे निसमहारोगसे मोक्षकोप्राप्तहोवे
गा अर्थात निसकाकुष्टरोगहरहोजावेगा इसप्र
कारजब सबने अपने अपने घरमै स्वपनदेखा
तबप्रातःकाल उठकरके सबराजाके पासचले
आये और स्वपनेकाहृतांत सुनायदेनेभये त
बराजासुनकरके परमहरषकेवशभयाहुआ।

भावसे अनेक प्रकार महिमा वड़ाई करकर सब
लोगों के सहित जयदेवजी के पास चला आया तब भ
या तहां आवते ही तिन को लपटने का सब वृत्तांत
सुना घदिया तब भक्त प्रधान सुनकर आनंद प्रेम
गण होय गये और कहने लगे कि भाई आज तुम
सब धन्य हो और धन्य तुमारे भाग्य हैं कि जिनों ने ज
गत के पापों का नाश करने वाली लक्ष्मी रूप श्री
गंगे माई का नेत्र भरकर अनंदर सन पाया है ह

प्यारे इहजोतुमने रात्रीकेसमय स्वपनदेखाहै सो
सबसत्यहै कुछअचरजकीबातनहींहै सोजगतमे
मानीहुई जगतकीमाता औरजगतकेजीवोंकाउद्धा
र करनेवाली किजिसकेदरसनकरनेतें जगतमे
पापोंकेसमूह सबनासकोप्रापत होजातेहैं औसी
दयाकीनिधी औरदीनभक्तोंपर सनेहकरनेवाली
मातगंगेजोहै सोहे मीनजनोमेरेघरमे प्रवेशप्रा
प्ती इसमेकुछ संदेहनहींहै ।२२। चौपाई । खति

श्रुतभूप भीटमनदीने। बोलिविप्रपंडितसवलीने
मज्जनीयसंचितसंभारू। कीन्होभूपतिविविधप्रका
रू। श्रागलसगविडजहिंसमदाये। वापीतीरमटि
तमनआये। प्रथमदेवसरिमज्जनकीना। पठत
मंत्रद्विजसप्रवीना। हरहरहरहररवरटनमपीता
कसतनसनानदेवसरितीरा। प्रकटीमानगंगानव
कैसे। मानोतीव्रनालधरजैसे। ऊर्मीउमगाउम
गरुविटेहीं। मानोअर्द्धसवलवलिलेहीं। सह

४४
भ॰
९१

शाङ्गधविमलजलभरिया। स्निकताखेलसवरसस
वसरिया। नीरजनवललितविकसाये। लोक
विलोकिसकलहरषाये। जयजयतीनलोककीरा
नी। भयोभननवसत्यभवानी। नवनरेसउजहं
ह्नसंगा। करिप्रणामउरहरषउमंगा। मातुगंग
कर असनतिचाहू। लागेगायनविविधप्रकाहू।
जयजयत्रिपथगामनीदेवी। किंनरयक्ष मनुज
सुरसेवी। विस्नपदीशिवसीसविहरनी। मंगल

९१

मोदजननमनभरनी। विदनभगीरथिनान्हविमा
ई। जलाशंकरीसंस्तिमाई। भयहरनीसंकलसु
खकरनी। भवनिधवारनातरनीनरनी। दोहा। त्रि
तिये नयनसमयन रिपनिकटमानननवसयन
याळेंदोहूणंडवभव करतनातिसवरयन। २२ ॥
टीका। ऐसेभक्तप्रधानके मावसेवचन सनक
नके गजाहूवसें प्रफुल्लनभयाहुआ सवपंडि
तब्राह्मणोंको बुलायलेनाभया और सनानसे

४४
भ॰
९२

वंधीनामश्रीजोथी सोसवसाथलेकर फिर सन्
मानपूर्वक जयदेवजीको आगेराखकरके वा
पीजोवावलीहै आनंदसेतिसके किनारेपरचले
आवतेभये तहांप्रथमजयदेवजीने विधीपूर्वक
मंत्रउचारण करकर श्रीगंगाजीका पवित्र पू
जनजोहै सो किया तिसतेउपरांत जबहरहरह
र रटतेहूये तिसवापीके निरमलजलविखें स
नान करनेलगे तबमान गंगेकेसीशोभासे उम

वनीभई किजैसेनालपरसेजोफुहाराबड़े तीव्रवेग
से उछल उछल पड़ताहै और ऊर्मीजो जलकी
लहिरें और कलोलहैं सोभीअनेक प्रकारउम
ग उमग कर नानाछबीकोप्रकट करनेलगे अ
रुणादिजो लोगदेतेहैं सोगंगाके कलोलमानो
वलसे आगेहींचलचल करलेतेजातेहैं जलजो
है सोहधवल उजल औरवड़ानिरमल परिपूर्ण
होयरहाहै तैसेही गंगाकेवाल समान निमल

४४ लकी उज्वलशोभा ओरवाणीमे सुंदरकमलजोहैं
भ॰ सोभीविकासमानभयेहुये अर्थात खिलेहुये सुं
९३ दरहींकुचीको उदयकररहेहैं इसअदभुतकोत
ककौ देखकरलोगसव हरषकेवशभयेहुये
कहतेहैं कि मानगंगेनेरीजयहोहैतीनलोक
कीरानी तेनेस्वपनेमे जोकुछकहाथा सोसवस
त्यभयाहै नवसंपूर्णग्रलक्षणोके सहितराजाआ
नंदमैमगणहोयकरके श्रीगंगाजीकी प्रसन्न

९३

९३

नीसोहै सोगायनकरनेलगा कि जयहोतेरीहेकिं
न्नर यद्त मानुख्य और देवताउंकरके सेवनकीहू
ईहेतीनोमारग स्वर्ग मातलोक औरपातालमे
विचरनेवाली हेविस्नुपदी अर्थात विस्नुभगवा
नके चरनकमलोंसे उतपन्नभईहूई हेजटाशं
करी जो शंकरमहादेवकी जटोंमेनिवास करने
वाली हेभक्तजनोकोआनंद और मंगलोंकेदेने
वाली हेभगीरथी हेजाह्नवी अर्थात जन्हराजाके

४४
भ:
५४

९४

कानद्वारा उतपन्न भई है इहि भयहरनी हे सर्वसुखव
करनी संसारसमुद्रकेतारनेको जीवोंकेलिये तू
तरनी अर्थात बेडीहैं फिर हे मानगंगे तू कैसी हैं
कि मयनजोकामदेवहै तिसकेशत्रु जोमहादेव
हैं तिनकेचितिये क्यातीसरे नेत्रकेपासनेरानिवा
सहै इसीनेतूहे देवीजगतके घोरपापजोहैं सोम
बजलाय करके भसमकरदेतीहैं ।२३। चौपाई ।
असप्रकारजब असतुतिगाई । उजजयदेवादिक

देहृणाई। भयेलोगसबपावनकाया। सेवनअभि
षृहृविरफलपाया। असप्रकार इहचरितसुहावा
मैकछुअलप यथा मतिगावा। जोइहिमनहिं अ
वगाहनलाई। अथवाभक्तिभावजनगाई। पुर
वहिंतासइच्छन सबकामा। उपजहिंहृदयप्रेम
अभिरामा। मुनिजोगिन दुर्लभगतिजोई। हरि
प्रसाद पावहिं जनसोई। दोहा। भक्तिबढ़ावन
सज्जनसरइह उजनजयदेवप्रनीत। मोदभरनमेगा

लकरन हरन भीम भवभीत ।२४। टीका । इसप्र
कारजव असलनीगायनकरी नवश्रीगंगाजीके
प्रसादसे जयदेवजीकी वडीसुंदरदिव्यकायाहो
गातीभई और लोगभी सवपापोंसे रहितहोय
करकेपवित्र होयगये सवने अपने अपने मन
वांछित फलकोप्रापतकरलिया नाभादासकह
तेहैं किहेसंतो इसप्रकार इह मनोहरगाथाजो
है सो मैने जैसीकतछवडीके अनुसारहोयस

कोआपकेआगे गायन करदेईहै इहकैसीभीगाथा
है किजोकोई भक्तीऔर श्रद्धापूर्वक इसकोपढ़ैगा
अथवा श्रवणकरेगा तिसके मनोरथजोहैं सोस
बसफललहोजावैंगे और भगवानके चरनकम
लोंमैं प्रेम वधजाजावेगा और जोगतीकिमुनी
जोगी जनोंकोदुरलभहै सोतिसकोभगवानकी
कृपासे सुगम और सहजनेहीं प्रापतहोजावेगी
इसमैं कुछसंशयनहींहै क्योंकिइहजयदेवजी

भ०
९६

के सज्जनों और भक्तों की गाथा जो है सो अवश्यक

व के सर्वस्व और मंगलों के देने वाली और सं

सार के भय कलेशों को हरने वाली है।२४। इति

श्री भक्तविनोद ग्रंथे भगवद्भक्तों महात्मे भा

षाटीकायां जयदेवचरित्र वर्णनं नाम सर्गः

मीहां सिंह कृत

96

९६

अथ जयदेव चरितं। चौपाई अब मैं भक्ति महातम सोहा। कबहौं कथन आन मन मोहा। जासु सुनत भगवान पदनीके। उपजहिं प्रेम भक्ति दृढ नीके। जगन नाथ पुरि थान सुहावा। उतकलनाम देस जोई गावा। तहिमैं बेड बिल्व अस नामा। रह्यो एक सुंदर शुभ ग्रामा। उतकल जाति द्विज न गण माहीं। वसहीं एक विप्रवर ताहीं

११
मं०
१

जहि जयदेव नाम विख्याता। विद्या निपुण घर
म गुण गाता। निशि बासर सुमरण भगवाना
कथा प्रसंग कीरतन गाना। करत रहत नि
रमल चित होई। विषय विकार मार मद खो
ई। तहि सामीप आन इक ग्रामा। विप्र देव
सरमा अस नामा। तहं बसहिं संयुत निज
नारी। इज अनपत्य रुचिर व्रत धारी॥
जगन नाथ दरसन हित नेह॥ ।

जिसके श्रवण करनेसे मानुष्यके हृदयमें पाप
रूपी उल्लूओंका लोप करनेवाला उदय होता
है महा प्रकाशमान भक्तीका सूरज ऐसी जो स
वे कलेशोंके हरकरनेवाली अद्भुत और मनो
हर गाथा है सो अब शौनी सनमानसे आपके आ
गे गायन करता हूं. दक्षणी ब्राह्मणोंके देस विषे
कृष्णा नदीके किनारेपर बडा धनमान और सी
ल गुण धर्ममें प्रवीन एक ब्राह्मण वास करता

भ॰ २

था सो जब वृद्ध होय गया तो तिसके घरमें पुत्र
उत्पन्न भया सो कैसा कि बडा सुंदर और सर्व
अंग सुलक्षण तब पिताने तिसका नाम बिलमं
गल राखता भया सो दिन दिन मनोहर [illegible] स
नमानसे पलता पलता समय पाय करके ज्वा
अवस्थाको प्राप्त होय गया परंतु वेद विद्या
और ब्राह्मण धरम जो है तिससे शून्य रहा सो कु
छ नहीं सीखा जब तिसका पिता काल वश हो

यगाया तब सुनतंतर अर्थात अपनी इच्छाके अन

सार होय करके पिताका जोडाहुआ धन जोथा

सो नृत्य गीत गीत नाटक चेटक इत्यादि विष

योंमें लागाकर भली प्रकार लुटावने लगा। २।

चौपाई। एक दिवस नहि खयो निलामा। स

विता पार वार प्रिय धामा। चिंता मणीनामस्त्र

म नामा। कला प्रवीन रूप गुण धामा। उज्जय

याद निज वंस तयागी। वार विलासनि दरस

लागी। ताके सदन गयो इत धाई। मानो सुख
द नवल निधपाई। बोधव नाति मीनजन जा
नी। वेस्या निरत देखि रहि भोती। हनि उतर
क सब विविध सिखावहिं। हृदय भेद कछु
एकन आवहिं। ताके वसी भूतजठ होई। वि
प्र सुधरम लाज जल खोई। अवसर पाय
सदँ सामाग्या। जनक श्राद्ध वासर जियजा
ना। मूढ वदन अस गिरं उचारी। काह क

रहे अब प्राण पयारी । आज जनक मम आइ स
हावा । तातें चाहे भवन निज जावा ॥ दोहरा ॥
मृग नयनी निसि आज कर आवन होहि न मोर ।
तव वियोग मोहि मरणानै प्रिया प्रति उचित क
ठोर ॥२॥ टीका । तव एक दिन तिस ब्राह्मणने स्त्री
कि नदीके पार वार जिये जो कंचनी है तिसका घर
है सो चिंतामणी नाम करके प्रसिद्ध सरब कला
प्रवीन और रागोंकी खानी है ऐसे स्नान करके ब्रा

भ.
५

लगा अपने वंसकी मरयादा को त्यागकर तिसके
दरसनकी अभिलाखा वाला होय कर तिसके व
सै ही जाय प्राप्त होता भया तव तिसको देख
करके ऐसा प्रसन्न होय गया कि मानो तिसको
बडी सुखदायक कोई नवीन निधी प्राप्त भई है
ऐसे तिसकी दशा देखकर सब बांधव मित्र और
जाती नाती के लोग अनेक तरकें कुतरकें देदेकर
सिखावने और समझावने लगे परंतु सो मंदभा ५

कभी नहीं मानता भया तिस वेस्याके वश होय करके अपना ब्राह्मण धर्म और कुलकी लाज जो है सो सब खोय देता भया तब समय पाय करके एक दिन नहीं वेस्याके घरमें वैठेवैठे तिसके पिताका दाइ श्राद्ध जो है सो आय गया तिसको हृदयमें स्मरण करके तिना मणीको कहने लगा कि हे प्राण प्यारी अब मै क्या करूं क्योंकि आज मेरे पिताके श्राद्धका दिन आया है

४४

भ॰
५

तातै वरमैं अवश्य जाना वहता है हे मृगनय
नी है इन कारनौ आज रात्री को मेरा आवना
नही वनैगा परंतु इह तेरा वियोग जो है सो मे
रे को मरणौ तैंभी भारी हो जावैगा कहोमै कै
से रयन वतीत करूंगा ।२। चौपाई । निज
वस तारू वार वधु देखी । भनत ववन उरह
रष वसेखी । जाहु भवन निज वेग सिधारे ॥
नव उज आव सदन मन मोरे । सादिर डजन

५

नि अंबरण दीना। विधिवत श्राद्ध करम सब कीना।
बहुरि विविध भोजन बनवाये। विप्र वृंद सब दीन
जिमाये। शेष कीन पुनि श्राद्ध प्रकारा। तदनंतर
उर करत विचारा। आज दिवस मोहि बरष बिहाई-
प्रिया वियोग दारुण दुखदाई। असहज विरह वि
बस अकुलावा। मैथ्या हेत मरत तट आवा। सोउ
न पारवार प्रिय गेहा। देखा दृगन विप्र भरि नेहा।
ससि वदनी तब दरसन रागे। दृग चकोर प्रियउ

6

कटक लागे । इह कब होहिं सफल जुग नयना । बर
हं निरखत उज उबरत बयना सोरठा आवा भवन
पराय । लोकलाज बस बिथत मन । अब कस रय
न बिहाय । निहारात बितन करत ३ ॥ टीका ॥
नव बार बधू जो वेस्या है सो निस उर्द्ध लग्ण को अपने
वश देख कर बडु ह्राध से कहने लगी कि हे प्यारे
अब तेरे को घर मे जाना योग्य है नां तो नं विलंब को
त्याग कर नंहो चला जा ऐसे वेस्या का वचन सुनके

र ब्राह्मण मन मारे हूये उठ करके घरको चला आया
तहां सनमान पूर्वक ब्राह्मणोंको निमंत्रण किया
अर्थात नेवता दिया और फिर विधी वत श्राद्ध कर्म
जोहै सो सब किया तिसके उपरांत अनेक प्रकारके
सुंदर भोजन पकवान जो बनाये हूयेथे सो ब्राह्मणों
को जिमाय देता भया फिर पीछे आप भी भोजन
पाया तब हृदयमें विचार करने लगा कि आज मेरे
को दिन जोहै सो बरषके समान बीतत होवेगा कि

९१

ना मणी का वियोग मेरेको परम कलेशका
कारण है ऐसे विरहके वश आकुल भया हू
आ अर्लमण सैय्याके निमित्त नदीके किनारेपर
चला आया तब नदीके उस पार विना मणीका
घर जो देख पड़ा तो अत्यंत सनेहको प्रकट कर
के कहता है कि हे ससि वदनी अर्थात चंद्रमाके
समान सुंदर मुख वाली तेरे दरसनके अभिला
खी इह मेरे चकोर रूपी नेत्र जो हैं सो एकटक

लाग रहेहैं देखिये इहकव सफल होतेहैं ऐसे विरहं
के वश कहनाहूआ बेलग लोक लाजसे उठकरघ
रको चला आया नहींभी चैन और निद्रा नहीं पडती
भई हृदयमें चिंतन करतांहै कि अब रात्री कैसे वतीत
होवेगी ।२। चौपाई । अस जव अर्थ विगत भई स्या
मा । विरह अधीर नचत निज धामा । पीडत मदन
कुसुम सरिनाता । निसा भीम मनघोर अधीरा । सा
जल सघन गगन घन छाये । वरषत गरज गरज

तं आये। तइन दसैक वेकवानि ग्यारी। मारन म
नउ सवल वल आरी। अगाम नरेग नरेगानिछा
ये। सतल प्रवाह वरनि किमि जाये। होन जान
भ्यावन रव मरना। वीरन हृदय धीरजन हरना।
आवा विप्र मरन नटदाफा। प्रिय कर मिलन प्रेम
उर गाफा। कहन उपाय कवन अव करहैं। इह
उमनरनि नरनिकमन रहैं। दोहा। तोलो गावज
न गागान जन भयो चपल चमकार। उज मन मव

निज सरन नट शाव चट परयो निहार ४। टीका।
इस प्रकार जब भटकते और चिंतन करते हूये
ब्रह्माणको आधी रात वतीत होयगई तब योब्रज
मे रहित कामकरके पीडत भयाऊआ घरकोभा
गा कर चल पड़ता भया जिस समय बडी भयानक
और घोर अंधेरी रात जलकरके भीजत बडे घनेबा
दल जोहैं सो आकाशमै छायेत भये हूये गरज
गरज कर पृथवीपर वरस रहेहैं तडित जो विज

तीहै सोभी अति वेकगतीसे दमेके मारतीहै अथी
त बडी विकट वन वनकर चमकतीहै तैसेही प
वनभी मानो महा वेगासे चलती और मारतीहै ऊकोरे
नदीकी उमङ्ग और जलका प्रवाह तरंगोंकी म
हिमा कछु कही नहीं जाती तिसतै ऐसा भयान
क शब्द होताहै कि मानो सूरवीरोंके हृदयकी
धीरज कोभी हरताहै तब लक्ष्मण जोहै सो चिता
मणीके मिलनेकी अभिलाषावाला भयाहूआ ५

नदीके किनारे पर आय करके स्थित होयगया

और हृदयमें कहता है कि अब कौन उपाय करूं

इरूजो महो उस तरनी नदीहै किजो तरनी बडी

कठिनहै इसको मै कैसे तरूंगा ऐसे विचार करर

हाथा कि इतनेमें आकाशसे बादल गरजकर च

पला जो बिजली है तिसका चमत्कार पडताभ

या तब तिसके प्रकाशमें ब्राह्मण क्या देखता है

कि सत भाव नदीके किनारेपर लकडीके समान

११

एक शब अर्थात मरदा लगा हूआ है ॥ ४ ॥ चौपाई ॥
जानि तरुण निज मरगम उपाऊ । भयो अहूफ
बिम्र लगिब नाऊ । देखा मदन निकट हबआगा
देखत मदन जाय तब लागा । तासु मजनतन मर
त नटलाई । देखा भीया मदन हेरा आई । मेहे देखा
र अर्थ निसि सोई । इत उत फिरहिं मदन वस हो
ई । करहत देव अब कवन उपाई । देखे भीय
हि हगन कसजाई । भीत अलेब मान नबदेखा

एव मन बिह्व्याल अव शेखो । वपनी बोय सबल
अबलेखो । पकरन बध्यो मनहुं नट खेखो । बि
ना मणी चिन मणि लेखो । भयो रंक मच पव
ड वसेखो । सो बिलोकि मान सबि समाई । म
नत वदन कछु बचन रिसाई । सो बरई हो अर्थ नि
सि माही । कौन यतन मोहि सूझत नाही । बा
रद कठिन रयन अंध्यारी । सरिता प्रबल बारि भ
र भारी । गरजत मेघ ब्योम बरसाये । चपे क

भ॰
११

पाटभवन कस आये। श्रिय उरखे सुनत ववन
मन भावा। निज अगामन सव मरम जणावा॰
सोम्हति कहत वदन विसमाये। देखहु कवन
वयनि पथ आये। कवन यान जलसोऊ दिषा
वहु। हृदय मोर संदेह मिटावहु। नव उज्ज ट
गान वयनि दिखरावा। व्याल कराल हेंयर ल
टकावा। सरता नीर् तरनि शाव पाये। कहत
वार त्रिय ववन रिसाये। सुफ हिता हिन तमंडे

९

न जाना । दसन उरग साव भयो न माना । मेस
ज ग्रसत स्वान बन पावा । जनक ग्राह तिसि दि
वस सहावा । मद ग्रथमि वेस ज्ञत गीती । सो ग्रव
गण करि ग्रयम ग्रनीती । दोहा । ग्राण ग्रश्रिये
भोग कर नव यवित मद होय । मोपै ग्रावा सह
पव वन विग्रयमि निजखोय । ५ । टीका । नव
निस भरदेको र्खलण ग्रपने नरनेका सगामउ
पाय जानकर ज्ञातीके नीचेय रकर काम करके

व्याकुल भया हुआ तरफता तरफता वेश्याके घरके नि
कटही आय लागता भया तहां तिस मुरदेको
नदीके किनारे पर यतनसे बांधकर आपजाय
करके आधी रातके समय चिंतामणीके घरको
जो देखने लगा तो वे कवाड मूंदे हुये आनंदसे
अपने घरमै सोई पडी है तब ब्राह्मण कामके
अधीन भया हुआ इधर उधर घरकी चारो ओर
फिरता है कहता है कि दैव अबमै कौन उपाय

करे, और अपनी प्यारी को कैसे नेत्र भरकर देखें
ऐसे चिंतन कर रहा है कि मन नवे द्विवाल विषे
एक अंदर मे प्रवेश किये हूये वडा भयंकर सर्
प लटका हुआ है जिसको वथनी के कोथ से अपी
त रसी जान कर वल से पकड कर के जैसे खंभ
पर नट चढ जाता है तैसे ऊपर को चढ जाता
भया तव विना मणी को विना मणी के समान
देख कर रंक जो था सो मानो धनी होय गया आ

नेदमै समभावना नहींहै तब जिसको विनामणी
देखकर बडे अचरज को प्रापत भई और कोप
के वचनोमे कहने लगी हो छैलगा ने देखकि
इस समय अकाशमै घोर बादल छायत भया
हूआ पृथ्वीपर गरज गरज कर बडे जोर शोर
मे वरस रहाहे और महा अंधेरी रात तैसेही
उमडी हूई नदी और वेगसे पवन चलती है
से कठिन सीत कालमै आधी रातको मेरे

घरके कवाड बंद हुये तुम कैसे चले आये हो
इस प्रकार विना मणीके मुखसे वचन सुन
कर अपने आवनेका सब वृतांत सुनाय देता
भया सो सुनकर अचरजसे कहने लगी कि
ब्राह्मण बलकरके मेरेको दिखा जो तूं कौन
स्थलसे आया है और मेरे घरमें कैसे वड़ा और
नदीसे कैसे पार उतरा है तब बिल मंगलने
प्रथम सर्प दिखाया कि इस रज्जु अर्थात

भ॰
१५

रस्सी को पकड़ कर ऊपर चढ़ आया है और फि
र नदी के किनारे पर मुरदा जो था सो दिखाया
कि इसके आधार से नदी को तर कर प्यारी तेरे
पास आया है तब तो देख कर वेस्या परम को
प से धिक्कार कर कर कहने लगी कि अरे
मूढ़ तैने हित अहित कुछ नहीं जाना तेरे को
सरप और मुरदा ने दोनों मे कुछ देख नहीं पड़ा
काम के वश भया हुआ श्वान जो ऊना है तिस

१५

के समान यावता चला आया है इतना नहीं वि
चारा कि आज पिता के श्राद्ध का दिन है हे मंद
हे अधम तैने तो अपने धरम और वंस के विरु
द्ध अनरीती और अनाचार जो है सो ग्रहण कि
या है और प्राण अप्रिय भी था कि जो प्राणों को
प्यारा नहीं है अर्थात प्राणों के नास करने वा
ला है तेजफ तिसके वश होय कर अपने ब्रह्म
ण धरम को त्याग करके नीच वन मेरे पास

४४

भ॰
१५

यावता चला आयाहूँ ५ चौपाई ॥ यित्ता यित्ता
नमहि कुमारग गामी । निडर निलज्ज उष्ट
मति कामी । तोसे स्नत उपजावन हारी । भ
ली सविस्व वीज महूतारी । पिली आढु दिव
स जढ जोई । संतत विषय निरत जगा होई ।
रौरव नरक भोगि सट नाहू । ऐन सो होहि
ग्राम वाराहू । मै इहू स्रवण विप्र सुवेकीना
तोते नमइ अधम मति हीना । आज दिवस

१५

निज जनक सुभागी । अैसे निसरग उदानम
त्यागी । मोरे आवर मन हित सूद्रा । सठ दश
मोर कवन सुग सूद्रा । देख सगायथैमे गानक
ऊकरमा । नव उतपन्न विप्र कुल धरमा ॥
सूद्र कवननि चक सवि लागी । वेस सुयाद
दीन सब त्यागी । जस नव कीन विप्र पमोरी
प्रीत प्रतीत नहिंन कछु थोरी ॥ सोरठा ॥
कवहुं कि पद भगवान । दृष्ट निश्चय प्रसक

16

रङ्गउज। तोनभरी कल्यान। होहिं सुजस संजु
तजगात ६॥ टीका॥ फिर वेस्या कहती है कि
थिया है थिग है तेरे को हो कुमार्ग गामी होति
र लज्ज छोडह मती कामी और निडर गवार ने
रे जैसे पुत्र को उतपन्न करने वाली जननी जो
माता है सो तो जगत में वाऊ ही भली थी मफ
मैने ब्रह्मणो के मुख से सुना हूआ है कि जो पु
रुष पिती श्राद्ध के दिन मे विषय भोगता है सो

रौरव नरकका महादुःख और कलेश भोगकर
अनंत को शामका वाराह अर्थात गाडेका सूर
बन कर भटकता भ्रमता रहता है तोते हेतुही
के हीन और अभागी अधम ने आज पिताकेश्रा
द्धका दिन त्याग कर मेरे रमने को अर्थात विष
य भोगने को चला आया है मूढ तेरे समान दुष्ट
स्वभाव वाला और पाप की खानी और कौन है
होमंद देख कि मैं वेस्या जाती महां ऊकरमी
दूसरा

४४

भ॰
१२

और ने ब्रह्मणोंकी सपर्शी जल विषे उत्पन्न भया हू
आ प्रथम कौन विवेक विषयका भावे कि जिसके लिये
मैंने अपने वेसकी मर्यादा और धर्मको त्यागदिया है अ
वे ब्रह्मणो जैसे ने निश्चय करके मेरे विषे ग्रीनी करी है
जो कदाचित ऐसा भगवानके चरनोमे भी दृढ प्रेमक
रे तो जगतमे मेरी सुजसके सहित कल्यान होजावे ६
चौपाई इस प्रकार तस कारन नेहा। उदैगे मोच वि
प्रवर देहा। लागे उदय होन जब भागा। विषय रज

१०

नि सोवत नव जागा। भान हृदय उरजन उजसोई।
नृपगिरिकहा उरगन नहोई। वड़ विकरहृत नग्र सवदन उ
वारी। जाड़ तमडे ग्रव भवन सियारी। मैग्रवईहां
सदन नटमारी। रामभजन रतिरयन गुजारी। जावड़े
प्रान सदन निज त्यागी। कानन कमल भजन हित
लागी दोहा वारविये नव सनन प्रम भवन वदन
मसकाय। तब हट देखिन हेत मै हृह कसु कपट
ग्रलाय। सोमोरे तम तमड़ उज चलड़ भवन करि

४८

भ
१८
18

होइ। प्रेम सनातन जानि जिये नतजइ मित्र अब रोइ ७
टीका इस प्रकार जब वेश्या ने परम त्रिसकार के वचन
कहे तब ब्राह्मण के शरीर के रोमांच उठ खड़े हुये और
भाग्य जो हैं सो उदय होने लगे विषय की निद्रा में सो।
या हुआ जाग उठा दुरजय जो कामदेव है तिस से भीन
हुन्न होय गया और मौन व्रत होय रहा ऊछ उत्तर न
हीं देता भया थोड़ी देर के पीछे कहने लगा कि हे भाम
नी अब तें अपने घर में चली जा मैं अब ईहोही नदी के

१८

किनारेपर भगवानके भजन स्मरण मे राची वनीतक
रके प्रानकाल होने घरकी आसा त्यागकर हम भज
नके नमित कानन जोवणाहै तिसविषे चला जाऊंगा
ऐसे तिसका कथन सुनकर चिंतामणी मुसकायक
र कहने लगी कि हे प्यारे मैने तेरा हट देखनेके लि
ये इह वचन जो हैं सोउक्त करेथे तुमेरेपर क्षमाकर
और सनातन प्रीतीको जानकर हृदयका रोग जो है
सो त्याग और दया करके मेरे साथ घरको चल ।७॥

४४

चौपाई नामकथन सुनिविप्र प्रवीना। बोल्योबवचन
ज्ञान रसभीना। भामनि श्रवन करहु हठ श्राना॥
मै नव कपट कथन हिनजाना। कृस्न भक्तिजन
अमिय सुहाई। मोरे मृतक श्रवण नव पाई। श्रस
उपदेस नोर मोहि ज्यावा। श्राज वृषफल संसृति
पावा। गुरु पित मात नमहं जगमोरे। वेदहु वरन
हरनउरवेतोरे। श्रसकहि विप्र नास्र सिरनाई। वलो
विपन उरहरष वढाई। सोऽचकिन चित सदनसि

१९

धारी। इत उत भक्ति दृढ़ेन उर धारी। असइह चरित य थामति मोरी। सादिर कौन कथन कछु थोरी। दोहा

नामन विषय विकारसब भक्ति महातम पङ्ग। सुन हिप्रीति जत मनजजे हरिपद उपजहिं नेङ्ग। ८। टी-

का। नव तिसका कथन सुन करके विलमंगलजा न रसका भीगा हुआ वचन जोहै सो करहना भया कि

हे सखीले अवने हुआ हव मतकर ३ हनेरा कपटका कथन जोहै सो मैंने हिन करके मानलियाहै औरमेरी

४८

भलाई कारी कारनें है क्यौंकि सरव सुखदायक अमृ

भ॰ २॰

तके समान हमपरमात्माकी भक्ती जोहै सो तैने मा

नोमेरे मस्तक के अर्थात मेरे हृद्ये के कानोंमे पायदेई

है हे हितकारनी तेरे ऐसे उपदेशने मेरेको जगतमे

जीवत करदियाहै ओर मैने आज शरीर धारनेकाफ

ल पाय लियाहै अबतोतुमही गुरू ओर तुमही मेरे

माता पिता हो बारबार तुमारेही चरनों कोमेरी दंड

प्रणामहोवे ऐसे उचारण करके लक्ष्मण तहांवेस्या

३॰

के चरनो पर नोछावर शीश नायकर क्रम क्रम रटना
हुआ वाके मारग को चल पड़ना भया और ई होवे
स्याभी अचरज के वश सोच करती हुई अपने घर
को चली आई तब दोनो के हृदय मे भगवान की भ
क्ती जो है सो ह्यायत होजाती भई इस प्रकार इँगा

ह

था जैसी कई हां उन्हीके अनुसार होसकी ऊछ
गायन कर देई है इह कैसी भी गाथा है कि जो अर
ब श्रद्धा और प्रीती पूर्वक पढे सुनेगा तिसकी

विषय विकारोंसें रहित होयकर भगवानके चरनो
मे अवश्य प्रीती हो जावेगी ८ दोहा । आगे विलमेग
ल ललित भक्ति महात्म ग्यान । करहु यथामति क
थन कछु सुनहु सेत धर कान चौपाई सो उपदेश
वार विय पाई । करन विचार विघन मग आई । अव
मै कहो शरण कहि जाऊं । कोंपे निज ग्यानमपद
पाऊं । जवतें लीनजनम संसारा । कीननकाहु
करम सुभचारा । पावन विप्र वंसउपजोई । रहा

ऊलीन धरम ज्ञानहोई । प्रबलता विशय निरन्तर दिन
खोये । प्रेम पञ्चनान बिषउर रोये । उवल भजन म
मनुज जगलीना । काञ्चन धरम करम सबकीना ॥
निज पश्चात उवन अज्ञानी । नाडिन उविवत धरनि
जग पानी । ह्रावन नाम उदगण नाना । प्रवकस म
जङ्घ कृस भगवाना । दोहा । प्रेम चितन उर करत
उजतच्यत लखत सरीर । वैसो जगकर माथधर
न हरतर बिचयत प्रथीर ए टीका प्रब आगे विलमे

२२

भ· २२

गलकी भक्ती की कथा जो है सो कथन करता हूं हे स
नो आप कान धर कर श्रवण कीजिये सो ब्राह्मण तिस
वैस्या का उपदेश पायकर वण मारगा जो रस्ता है तिस
मे आयकर के हृदय मे विचार करता है कि अब मै कहां
जाऊं और किसकी शरण को प्राप्त होऊं और किससे
उपदेश लेकर अपने वास्तव सरूप की प्रापती करूं ज
बसे संसार मे जनम लिया है तबसे कोई भी सुकरम
और धर्म नही किया है परम पवित्र ब्राह्मण वंस जो है

तिसमें में उत्पन्न होयकर अपने कुलीन धर्मसे दूरा रहा है तिसके निकट भी नही आया है अबलग सब दिन जो है सो विषयों में ही खोय दिये हैं आगे के लिये कुछ भी बन नही पड़ा ऐसे अलग जो है सो रोय रोय कर पछतावता है बारबार यही कहता है कि अहो मेरे मंद भाग्य देखो जगत में बड़ा दुरलभ मानुष जन्म पाया और फिर कुछ धर्म सुकर्म नही किया ऐसे अपने पिछले पापों को हृदय में सुमरण कर कर दुखी

भ
२२
23

भया हुआ दोनो हाथ पछाड़कर पृथ्वी पर मारता
है और विलाप करता हुआ यों कहता है कि अब
सर्व भय कलेश और पापों के हरकरने वाले हरि
परमात्मा जो हैं तिनको मैं कैसे भजूं इस प्रकार
चिंतन करता हुआ लक्षण भ्राता सिया सहित दोनों हा
थ माथे पर धरे हूये एक वृक्ष के नीचे बैठ रहा है ९
चौपाई सीतल ललित देखि द्रुम छाजा । आवा आ
न विश्रनहै काहू । नाम देखि बिना जल भारी ॥

२२

बिप्र बदन अस गिरा उचारी। किन आये नव कवन
पधारे। बैठे ईस्त्री किकल मन मोरे। बिना मगाए दे
रबि अस तोरे। सेनन जानि परन जिय मोरे। कोउ
म ब्रह्मग्यान मन कीना। जाहिते बिषयन सोच मन
लीना। मोरे मरम प्रकट करि एहू। काहु न कहूं
तान सें देहू। उज कर बचन स्रवन अस काना। बित
मे गाल मान स हित जाना। जस उपदेस बा त्रिय
कीना। सो निज बिद्या सहित कहि दीना। मैनाक

भ.
२४

2

र षेरन अस भाई। विषय स्वाद दिनजनत सम्वदाई। आ
वा विशुन विमल मन होई। हृदय देष उरमनि सब
खोई। अवमोरे गुरुसरण अपेला। जहि प्रसाद भव
विकट वसेला। तरहौं पायमेव उपदेस्हु। मिटहिं स
कल उरव दोष कलेस्हु। स्वामि अस कथन पथकव
टु नासा। दयापुरुस भाव वचन प्रकासा। अहो विश
उरपीरज परहीं। चिंता सोच सकल परि हरहीं। ईहो
निकट पथवार नि नीरा। वान अरुयापद निरत मयी

रा। विप्रनप्रसि सोम गिरिनामा। शंतन दोन दाया
गुणधामा। ताकर लेहु सरन सुखदाना। विप्रनमा
र होहिं कल्याना। तहि उपदेस मंत्र बर पाई। उज
नब होउ हनावथ जाई। दोहा। सुनि प्रमपथक
महातमन बचन बदन सुखदाय। बिल मेगल मे
गल लावी चलो चरन सिरनाय। ९०। टीका। नब
तहां सीतल और सुंदर सुखदायक वृक्षकी छाया
देखकर एक कोई रसने चलने वाला अहिता आय

करके स्थित होजाताभया सो बिल मे गलको चिं
तामे व्याकुल देख करके पूछने लगा कि भाई तुम
कौनहो और कहांसे आयेहो ईहांकैसे व्याकुल हो
यकर मनमारे हूये वैठेहो तुमको चिंतामे मगन दे
खिकर मेरे हृदयमे इहनिश्चय होताहै कि तुमको
ई मानो ब्रह्मघात करके आयेहो कि जिससे चिंता
सोच करके ऐसे व्याकुल होयरहेहो हे प्यारे तुम
अपना वृत्तांत प्रकट सुनायकरके अवमेरे हृदयका

भ्रम संदेह जो है सो मिटावो तब ऐसे ब्राह्मणका क
थन सुनकर बिलमंगल ऊन्हु अपना हित जानक
र वेश्याके उपदेशके सहित अपनी विद्या और हंता
न जो था सो प्रकट करके सब सुनाय देता भया कि
मैं तिस वेश्याका प्रेरया हुआ द्वेष दुरमती और विष
य सुखादिसब त्यागकर निरमल चित होय करके
ईश्वरण मारग विषें चला आया हूं अब मेरे को गुर
देव स्वामी जो हैं तिनके चरनोंकी शरणकी अभिला

४४
भ०
२६

थाहै कि जिनकी कृपा और मंत्रोपदेशोंसें इह महा
विकट संसारजोहै सो तरकर शरीरके सब दोष दु
ख और पीड़ा कलेशोंसे नहन्य होजाऊं ऐसे बिल
मंगलका कथन सुनकरके सो पाथिक वह ग्रर्थी
तू रसते चलनेवाला ब्राह्मण दयाकेवश भया ह
श्रा कहने लगा कि हे ब्राह्मण तुम चिंता सोच म
तकरो हृदयमें धीरज धारो ईहां निकटही रसते
में नदीके किनारेपर एक वानप्रस्थी का बागमें। २९

78

निवास करनेवाले इंद्रजीत दया और गुणोंके धाम
महातपस्वी सोमगिरी नाम करके प्रसिद्धहैं त्वम
जायकरके तिनकी शरण लेवो सो त्वमारी कल्या
नकरैंगे हेर्इसलिए त्वम तिनका मंत्र उपदेश पाय
करके जगतमें कृतार्थ होजावो इसप्रकार तिस
पथिक महातमाका परमसुखदायक वचन सु
नकर बिलमंगलजोहै सो हृदयमे मंगल और
हित जानकर तिसके चरनोंपर सीस नायकर न

होको चल पड़ता भया ९ चौपाई आश्रम तपस क
चित मन भावन। देखो विपिन हगन अति पावन।
कमलय नहू सुमन वरवारी। कोकलकीर भृंग
गुंजारी। कदलीविटप जेव नवलाये। ललित क
दंब प्रेवश्चित छाये। जहं तहं नवल हरित त्रिणसो
भा। हेदबाल वृंदावन लोभा। चारुकदीर तीर स
विछाजी। उपमा सकल देखि जहि लाजी। विहसि
हुनवनिहसहाई। इह सब वसहिं जास गृह आई।

नाहि देत उपमा सब थोरी। कवन हेतु तव मंदम
ति मोरी। कृष्ण भक्त कर सदन बडाई। मैं कछु
सकहुँ बदन निज गाई। दोहा अस रचना उग दे
खि हरा भक्तसोम गिरि गेहु। करि प्रणाम बैठा श्रि
त हृदय हरष भरि नेहु। टीका तब तहां जायक
रके सोमगिरी तपस्वी जो थे तिनका आश्रम कैसा
देखा कि वडा रमणीक मनको भावता और सुंदर
नवीन वृक्षलगे हुये तैसेही मनोहर वृक्षोंकी वा

भ॰
रु॰

डीकोकिला जो मैना कीर जो तोता भृंग जो भ्रमरे
इह नानाप्रकारके शब्द श्रोर गुंजार कर रहेहैं क॰
दली जो केले जंब जो जामन श्रोर कदंब श्रंब इ
त्यादि शोभावाले वृक्षजोहैं सो भूमीपर छायत भ
येहुये छवि पावतेहैं श्रोर जहां तहां हृतजोहरे
तृणहैं सो मोलेहुये हृदयको श्रानंददेतेहैं तैसे
ही कथारियोंमे बालतुलसीके समूह लगे हुये
सुंदरशोभाको उदय कररहेहैं श्रोर मनको भा

बनेहैं नदीके किनारे पर बडी सुंदर और मनोह
र कुटिया कि जहां रिद्धीसिद्धी इत्यादि सब निधी
जोहैं सो निवास करतीहैं ऐसे कृष्णभक्तके आश्र
मकी महिमा कुछ कथन नही कीजाती तिसकी
मनोहर रमणीकताके आगे सब उपमा लज्जाको
प्राप्त होतीहै तोते मै कैसे कथन करसकताहं
तब भक्त सोमगिरीके आश्रमकी ऐसी रचना देख
कर बिलमंगल हरष और प्रेममें मगन भयाह

म॰
५५

श्री प्रणाम करके तहाँ स्थित होयकर बैठजातामया
॥ चौपाई तब तहि देखि मौन विसमाये। वदनसो
मगिरि बचन सुलाये। कौनतुम कवन हेतकित
आवा। निज वृतांत मोहि देहु सुनावा। कृपायुक्त
अस बचन सुहावन। सुनत बिल्वमंगल मनभा
वन। करि प्रणाम नम्रत महिमाथा। निज वृतां
त लगा जोरत हाथा। दोहा। बारत्रिये उपदेश
लगा सकल कथन करिदीन। निज इज्जारहित ब

दुखि दुज विनय बदन अमकीन । दुरलभ मानस
जनम प्रभु मै निज हथा गवाव । अब तोकर उप
देश सुनि याल शारण लव भाव ए टीका नव ति
सको मौन और अचरज भये हृये को देखकर सा
मगिरीजी श्राय कर कहने लगे कि भाई तुमको
नहा और कहांते किस कारजके लिये आयेहो
अपना हतांत मेरेको प्रकट करके कहो ऐसे कृ
पा करके एक सोमगिरीके वचन सुनकर विल

भ॰
सू॰

७०

मंगल चरनोंपर सीस धर कर और हाथ जोडकर ।
वेस्याके उपदेशसे लेकर अपना हतांत और विथा
जोथी सो सब सुनाय कर फिर तैसेही हाथ जोडे
हूये दीनताईसे अपने उद्धारकेलिये विनती कर
ता भया कि हे प्रभू मैने आजलग संसारमे अपना
मानुष्य जनम हथाही गवायाहै अब तिस वेस्याके
सुखसे उपदेश सुनकरके कृपानिधान तुमारे च
रनोंकी शरणको आयाहुं ॥ चौपाई मोरे करदु ।

ह्रतारथ आपू। होहिं अचित बड़ सेचित पापू। अ
गम अगाध सलिल निधि भवहीं। अब अब लेव
यान जल तवहीं। कीजै कृपानाथ मोहि पारा।
करम वचन मन दास हमारा। नाम मधुर सुनि
गिरा विकासी। जान्यो सावधान जिज्ञासी। हृदय
प्रसन्न सोमगिरि ज्ञाना। बोले वचन सुधारस सा
ना। तात धरहु धीरज जिय माहीं। चिंता करहु
सोच कछु नाहीं। सरव सुखद हितकारक जोई।

४४

मं॰
४२

करहु मंत्र उपदेसन तोही। अस कहि वदन ज्ञानति
धनीके। लगे विचार करन निज जीके। इह उज प
तित जनमते नाहा। भ्रम धरम निज सह्यो नकाहा।
अब इहि करहुं कवन उपदेसू। हरन वपुष उरव
हरन कलेसू। जाहितें इह अथर्म रत जोई। सुजस
सहित जग सुकृति होई। अस उर गुनत दोष उरव
हरना। विप्र शलोक भेजरत सुमरना। जिन कर
अर्थ रुचिर अस राहा। भरन मोद मानस उतसाहा।

॥ श्रीकृस्ननाम अस जोई । ललित मोद मंगलप्र
दसोई । रटत जासु नर सेरहति जीहा । मोह सक
ल सुकृति अवधीहा । तोकर उग्र किलष सेया
ता । सुमरत कृस्न होत सब पाता । दारिद्री आर
त सजयाहू । उचित दोष शुहपीडत काहू । कृस्न
नाम चिंतत मनमाहीं । शुक होत संशय कछु ना
हीं । अस सोचत मानस सुभचारा । कृस्ननाम म
हिमा गत पारा । ताहु ललित माधुरि मृदुबानी ।

४४

भ०
३२

भने वदन दाया रससानी। दोहा कृस्ना सविता तीर
वस चलहुवतस मेरा मोहि। परमारथ साधिक क
विर देहु मेत्र अब तोहि ॥३॥ टीका हे दीनदयाल अब
मेरेको कृतारथ करिये अर्थात् सफल करिये जो
मै आपकी कृपासे अपने किये हुये घोर पापोंसे।
मोक्तको प्रापत होजाऊं नाथ इह महा कठिन
और अगम संसार समुद्र जोहै इसके तरनेको अ
ब जहाजवत आपहीं आधार देख पडते हो और।

हमरा कोई उपाय नहींहै कृपा करके मेरेको इ
स अगाध समुद्रसें पार उतारिये मै मन वचन
काया करके आपके चरनोंका सेवकहूं ऐसे
तिसकी वडी दीन ओर भक्ती प्रीतीवाली को.
मल वाणी सुन करके सोमगिरी हृदयमे जा
नगये.कि इह सावधान जज्ञासी ओर मंत्र उप
देशका अधिकारी होय रहाहै अत्यंत प्रसन्न हो
य करके मानो अमृत रसकी भीगी हुई वानी

४४

भ॰
३३

३२

से कहने लगे कि हे पुत्र हृदयमें धीरज धरो और
चिंतामणि चमतकारी सर्वसुखके और हितके देनेवा॰
ला मंत्र उपदेश जोहै सो तेरेको देताहूं और तेरे
हृदयके भ्रम संदेहको हर करताहूं ऐसे कथन
करके ज्ञान विचारकी निधी सोमगिरी तपस्वी
हृदयमें सोचने लगे कि इह ब्रह्मण जनमते ले
कर आज लग पापही करता रहाहै अपना मूल
ब्रह्म धर्मजोहै सो तो इसने सपनेमें भी नही कि

या तोते अब इसको घोरपाप और दुःख लेशोंके
हरने वाला कौन मंत्र उपदेश कहूं कि जिससे
इह अधरमी ब्रह्मण जगतमें पुन्यमान और सु
जसका पात्र होजावे इस प्रकार विचार रहेथे कि
तुरतही दो श्लोक तिनके हृदयमें फुरआये
जिनका इह अर्थथा कि हेकृष्ण हेकृष्ण ऐसा ।
जो सर्वमंगलोके देनेवाला भगवानका नामहै
तिसको संसारमें जिस पुरुषकी जिह्वा रटनक

४४

भ॰
ग्र॰

34

रतीहै सोई सब सुकृतियोंकी अवधीहै तिससेंपरे
और कोईभी अन्यमान और सुजससमान अरथ नहीं
है तिसके घोरपापजोहैं सो कृष्णनामके स्मरण
करनेतें सब नासको प्रापत होजातेहैं औरभी ·
दारिद्री दुखी रोगी और ग्रहोंकी पीडावाला इस
परमपवित्र कृष्णनामके चिंतन करनेतें तिन
सब व्याधियोंसे छूट जाताहै इसमें कछु संशय
नहींहै इस प्रकार महातपस्वी और श्रेष्टाचारी सो

मगिरी मंतजोहै सो कृष्णनामकी महिमा अपार।
जानकरके विलमंगलको बडी मधुर और दयार
सकी भीगी हुई वाणीसे कहने लगे कि हे पुत्र त
मेरेसाथ कृष्णा नदीके किनारेपर चल तहां तेरे
को मैं परमार्थके साधने वाला पवित्र मंत्रजोहै
सो कानमें सुनाय देताहूं १३ चौपाई तरत नदे
श थवर उजपाई। कीन सनान कृष्णसरि आई।
जोरि जुगलकर मनशुभ ठाढा। पावन भक्ति।

भं रूप

55

प्रेम उरवाछा। गुरु कृपाल तब लीन बिठाई। अथ
मनीति कछुबदन सिखाई। विधिवत करन दत्त
श्रुति तासा। हरन डेड गुरुमंत्र प्रकासा। रहेत
पखी सोमगिरि साधू। कृष्णनाम निज हृदय अरा
धू। मन वच करम भक्त भगवाना। इज सपर्श
तोकर जब पाना। तरत विधूत उरत वपु भययो।
जनकु अनल वत धोतन लययो। करि प्रणाम।
नेमरत करजोरी। कहत वदन श्रम विनयनथोरी।

तव प्रसाद करुणाय निधाना। भयो कृतार्थ दीन महाना। आज सिद्ध मन अर्थ सुहावा। चरन व शुभ फल संसृति पावा। अब कृपाल जस आयसु होई। मैधरि सीस करहुं प्रभु सोई। वन मनोहर इ ह्वा मन जाहो। करहु निवास मुदित मन ताहो। ऋषियन धरम सुष्ट आचारा। सोऊ रुचिर अनअ अ तुमारा। हित जन गुरुजनदेस असपाई। ततप रभयो स्वामि सिवकाई। दिनदिन निरत भजन

भ॰ सू॰

भगवाना। इमप्रकार कछु काल मराना। तवह
विप्र गुरु कृपा प्रसादू। अतिशास्त्रज्ञ निपुण गुण
साधू। कोविद परम काव्य कृत मरमा। आसाम
र्थ विप्रवर धरमा। तव इक दिवस निकट गुरु आ
पन। कीन्यो आय वदन विज्ञापन। कृष्णदेव द
रसन सुखदाई। मोरे हृदय लालसा छाई। श्री
गुरु जोन देश अव पाऊं। तो कृपाल वृंदावन जा
ऊं। गुरु प्रसन्न मन आयसु दीना। उज प्रस्थानव

36

रत नव कीना । हाल हाल शवे हाल उचारी । व
लेया विश गुरु चरन जुहारी । दोहा आवा मारग
काटि तव नदी नरमदा तीर । देखी शुरी महि म
मती तहां ललित मति धीर । ४ टीका तव बि
लमंगल बरतही तिनकी आज्ञा पायकर हाल्ला
नदीके किनारे पर चलाआया और तहां प्रीति पू
र्वक सनान करके फिर हृदयमें भक्ती और प्रेम
को अधिक किये हूये हाथ जोडकर मनशवे स्थि

४४

म॰ ३२

त होयगया गुरुजीने कृपाकरके बिठायलिया प्र
थम कछु नीति जोहै सो कथनकरी तिसतें उपरां
त फिर सरब पापोंके नास करनेवाला मंत्र उपदे
श जोहै सो विधीपूर्वक तिसके दहने कानमें सुना
यदिया तब प्रेमे कृष्णनामके आराधन करनेवाले
और मन वचन काया करके कृष्ण भगवानके द
ढभक्त सोमगिरी महातपस्वी संत जोथे जब तिस
ब्राह्मणको तिनका स्पर्श भया तो ततकालही ।

३४

जिसके शरीरके पाप जोथे सो सब नासको प्राप्त
होयगये और शरीरका तेज जोहै सो अगनीके
समान प्रकाश देने लग जाता भया तब ब्रह्मजी
के चरणोंपर प्रणाम करके बडी दीनतासे हाथ
जोडकर बिनती करने लगा कि हे दीनदयाल मैं
आपकी कृपा प्रसादसे जगतमें कृतार्थ हुए होय
गयाहूं और मेरा मनवांछित अर्थ भी सिद्ध होयग
याहै आज शरीरके धारनेका फल जोथा सो मैंने

पायलियाहै अब दीनानाथ जैसी आज्ञाहो मैं तैसी·
ही सीसपर धारन करूं तब सोमगिरीजी आनंदमें
कहने लगे कि हे पुत्र जहां तुमारी इच्छाहै तहांसु
ख पूर्वक निवास करो ऋषियोंका आचार धर्म जो
है सोई ग्रहण करो और कृष्ण कृष्ण भजते रहो इस
प्रकार परमहित और सुखके देनेवाली गुरुजी
की शिक्षा पायकर बिलमंगल तहांहीं स्वामीजी
की सेवामें तत्पर होयगया और रात्री दिन भग

वानके भजन स्मरणमें लीन रहने लगा ऐसे ज
ब कछुकाल वतीत होयगया तब विलमंगल गु
रुजीकी कृपाके प्रसादसे परम शास्त्रज्ञ अर्थात्
सर्वशास्त्रके जानने वाला धरम प्रवीन सरव गु
णनिधान काव्य कृतमें सावधान अर्थात् कवि
तामें सामर्थ्य और संतप्रधान होजाता भया सो प
कदिन गुरुजीके आगे हाथ जोडकर बडी नम्रता
ईसे प्रार्थना करने लगा कि हे कृपानिधान मेरे

४४

भं॰
मू॰

हृदयमें कृष्णपरमात्माके दर्शन करनेकी अभिलाषा और सची उपजीहै जो दीनानाथके मुखसे आज्ञापा ऊं तो प्रभु मैं श्रीवृंदावनको जाऊं इस प्रकार जिसके भक्ती प्रीती वाले वचन सुनकर गुरुकृपाल आनं दसे आज्ञा देदेतेभये कि पुत्र जावो कृष्णभगवान का दरसन करकर नेत्रोंको सफल करो ऐसे गुरु जीकी आज्ञा पायकर वारवार चरनोंपर प्रणाम क रके बिलमंगल जोहै सो कृष्ण कृष्ण रटता हुआ त

३१

होसे तरत प्रस्थान करदेताभया तब चलता चलता
मार्गको काटकर नर्मदा नदीके किनारे पर महि-
ष्मती नाम करके बडी सुंदर और रमणीकपुरीमें
आय प्रापत हुआ ४ चौपाई करत सुमरण हृष्ण
सुखे रासा। तहां बसत कछु काल बितासा। एक
दिवस तहि भांति सुहावा। भयो महातम मानस
भावा। चल्यो प्रात उठ हेत सनाना। सरितातीर ह
रष सरसाना। तब मारग पतिव्रता सुभेखी। विध

म॰
पु॰

वाचिये विप्र वर देखी। लिये उछंग बाल म्रत सोई। रोदन करत मोह वस होई। ताहि विलोकि विकल द्विज राया। पूछत वदन उपाजि डरदाया। इह कस भयो बाल म्रत माई। करहु वदन कछु विथा सुनाई। सोसुनि विप्र वचन बिलपाती। रोदन कर त विरहे सुत माती। भनत नाथ द्विज वेस सुहावा। जनम मोर इह बालक जावा। पतिम्रतहोत जरन संगलागयो। सुतवति धरम जानि पुनि त्यागयो। सि

40

रहहिं देखि डर धीरज ठाना । प्राण आधार नाथ नि
ज जाना । अस प्रकार कछु बरष बितेवा । मोरे
हृदय पत्र अवलेवा दोहा मोहु नाथ अब मतलभ
ये मोरे जीवन प्राण । फूलन कर डर कर गया
कठिन वज्र पाखान ।। ५ टीका तब तहां निवा
स करके कृष्ण भगवानके सुमरँ हुये अष्टका ते
ल व्यतीत किया एक दिन तिनकी भक्तीका प्रे
मा चमत्कार लोगोंमें प्रकट होना भया कि प्रा

भ॰
धा॰

तःकालके समय भक्तप्रधान बिलमंगलजी स्नान
करनेके लिये नदीके किनारेको चले जातेथे तब
मारगमें एक पतिव्रता और विधवा ब्रह्मणी मरा
हुआ बालक गोदमें लिये हुये बडे बिलापसे रोद
न करती और व्याकुल भई हुये चली आवती है ति
सको देखकर बिलमंगलभी दयाके वश व्याकुल
होयगये और पूछने लगे कि हेमाई इह तेरा पुत्र
कैसे मृत होय गयाहै ते दया करके मेरेको इ॰

सका वृत्तांत जोहै सो सुनायदे तब ग्वलनी रु
न करके महा विलापसे उसकी विरहके वशरो
दन करती करती कहने लगी कि हेनाथ अ
लबेशाविखे मेरा जन्महै और इह बालक मैने
उत्पन्न कियाथा जब दैवयोगसे पती मरन होय
गया तब तिसके साथ जलनेका तयार हुई प
रंतु पुत्रवती धरम विचार कर नही जलसकी
तिसतैं ब्रह्महत्या होय गई और पही अपने प्राणोंका

मे॰
प्र॰

आधार जाना ऐसे कछु काल वतीत होयगया मे
इसी प्रणके सहारेपर जीवतीरही हेनाथ अव सो
ई मेरे जीवन प्राण नाथ सो मृतहोयगयाहै फूलों
के समान इस मेरे कोमल हृदयको आज वडे क
ठिन वज्रके तुल्य करगयाहै ॥ चौपाई अव मो॰
हि कवननाथ आधारा। मरहों वूडि सरित जल
धारा। सुतवियोग नहि सकऊं सहारी। होनविश
म हृगन किमि वारी। तुमऊं नाथ मोहि जनक

42

समाना। तुमहिं मोर अब दंड प्रणामा। पावक वि-
रहँ दगाध तहि वचना। मनक्रे रूप करुणाध्रत-
रचना। द्विजवर हृदय भूत द्युति भययो। रोमरो-
म दाया मन छययो। धरि निज क्रोड बाल मरत
लीना। काहु विचार विप्र नहिं कीना। हृदय ह-
मणे लाग भगवाना। कृपानकेत भक्त वरदाना।
दीन बंधु प्रणतारत गंजन। भक्त तोष प्रण दैव नि-
रंजन। अब व्रत विप्रपाल निजनेहू। सँरत दया

म

मै॰
धं३

43

ल हरणडर वे नेहू । इह मतनबाल विश्वप्रिय स्वा
मी । देहु जियाय भक्त अनुगामी । नतरु नजियहिं
जननि सिहपरहा । तापर मोर मरण संदेहा । अस
प्रकार कछु दिवस विहाना । कीनन तिनहिं अन्न
जलपाना । सोरठा निश्चय सत्य विहारि । नव कृ
पाल रंजन भक्त । आपन विरद संभारि । मतनसि
ह दीन जियाय प्रभु १९ । टीका फिर कहती है ।
कि हे प्रभू अब मेरेको किसका आधार रहा कहीं

नदीके अगाध जलमें डूब करके मरजाऊंगी इस पुत्रका वियोग कैसे सहार सहूंगी रोते रोते मरे नेत्रोंका जल अंत नही पावताहै हेभगवन तुम मेरेको पिताके समानहो अब तुमको मेरी दंड प्रणाम होवे ऐसे बिरहकी अगनी करके दग्ध भये हूये तिसके वचन कि माता सुनकर शोकही रूप धार करके विलाप कर रहा है बिलमंगलजी सुन करके द्रवीभूत अर्थात

५५

२२

चित्तकरके कोमलहोयगये और दया जोहै सोरो
म रोम मेंछायत होय गई हृदयमें वार विचारकु
छ नहीं किया तुरतही सो मृत भयाहुआ बाल॰
क तिसकी गोदसे छुडाय कर अपनी गोदमें ले
लेते भये और भक्तोंकी पैज राखनेवाले भक्तवर
दायक कृपानिधान भगवान जोहैं तिनका स्म
रण करने लगे कहतेहैं कि हेदीनबंधु हेभक्तोंके
शरण पूरण करने वाले हेदेव हेपरमानंद हेपरमा

त्मा हे प्रभु अब कृपाकरके अपना ब्राह्मणपाल
विरद जो है सो दीनदयाल हृदयमें स्मरण क
रेके इह मृत भया हुआ दीन और अनाथ ब्राह्म
णोंका बालक जो है सो जियाय दीजिये नही
तो कृपानिधान इह पुत्रकी विरहके वश व्या
कुल भई हुई कैसे जीवेगी और तिस पर मेरे
मरनेकाभी संदेह है जो कदाचित इह नही जी
वेगा तो मैभी प्राणोंको त्याग देऊंगा इस प्रका

र ह्नमरण करनेको आधादिन वतीत होय गया
अन्न जल कछु खान पान नही किया नव तिस
का ऐसा हठ और निश्चय देखकरके भक्त रक्ष
पालक भगवान अपना विरद हृदयमें स्मरक
र तत्कालही तिस मृतभये बालकको जियाय
देते भये ॥ चौपाई जियत विलोकि बाल मह॰
तारी। फूली जनक नवल फलबारी। हरषत
वरन विप्र गहि लीना। मोरे जियन सफल प्र

भकीना। इजवर धन्य तमर्इ उपकारी। पितृ
समान करुणा निज भारी। मोपै कौन जाति
जिय आवत। सदा संत प्रभु प्रणत उधावत। त
व इज स्नेह वाल नहि दीना। सादिर करि प्र
णाम गहि लीना। बहुविधि वंदि चरण इजरा
ई। अरु प्रसन्न मन आसिष पाई। सुतहिको
उधारि मदन सिधारी। इत इजनाथ सरित त
टवारी। करि सनान आश्रम निज आये। लो

४४

भ॰ ४६

कविलोकि चरित विसमाये। सकल नगर बर॰
गा श्रम छावा। मृतकबाल ब्रजनाथ जियावा।
दरसन हेत ग्राम नर नारी। जहं तहं आय जूथ
मिलि नारी। दोहा सो विरक्त निरपेक्ष ब्रज लो॰
क मानता त्यागि। वृंदावन उद्दिपन चित्त कृ॰
ष्ण दरस हित लागि। भयो करत प्रस्थान कृत॰
गणपति गौरि मनाय। तहि मारग इक वनक
छिये देखि विषधर आय ७ टीका इसप्रकार बा

लकको जीवता देखकर जिसकी माता जैसे न
वीन फलवारी फूलतीहै तैसे आनंदमें फूल उ
ठती भई और धायकर बिलमंगलजीके चरनो
पर सीस धरकर बिनती करने लगी कि हेप्रभू
तुम धन्यहो जिन्होने ऐसी अनंत कृपा करके
जगतमें मेरा जीवना सफल करदियाहै नाथ
तुमारे समान उपकारकी निधी और हमरा को
ई नहीहै मेरेका दुखी जानकर आज पिताके

भ॰
४३

४7

समान दयापाली है अहो संत सदैव ऐसेमेंही शर॰
णपडेकी पीडा हरने वाले और रक्षा करने वाले
और रक्षा करने वाले होतेहैं तब बिलमंगलजी
ने प्रसन्न होय करके बालक जोथा सो तिसको
देदिया और तिस ब्रह्मपत्नीने बडे हरष सन्मान
से प्रणाम करके लेलिया फिर बार बार चरनों
को वंदना करके और आनंद पूर्वक आसीसा पा
यकर बालकको गोदमें धारन करके तिनका

भजन गावती हुई अपने घरको चली आवतीभई
हैहो भक्तप्रधान बिलमंगलजीभी नदीके निर्म
ल जलविखैं सनान कर कर हरम हरम रटते
हुये अपने आश्रममैं चले आये तब इस अद्भुत
कौतुककी चरचा होती होती संपूर्ण नगरमें ।
फैलगई कि संत महानमाने अमुक ब्रह्मणीका
मराहुआ बालक जीवता करदियाहै सब लोग
सी प्रकाष बालक चैड जहां तहांसे दरसन कर

मे॰
४८

नेको थावते चलेआये तब सो संत विरक्त और
निरपेक्ष कि जिनको किसी वासनाकी इछ्या न
ही ऐसी लोक मानताको त्याग कर हृदयमें
गौरी और गणपतीजीको मनाय कर श्रीहंदाव
नको कृष्णपरमात्माके दरसनकी रुची अभिला
षा वाले होय कर तहांसे ततकाल प्रस्थान क
रतेभये तब चलते चलते मारगमें एक बडी
दिव्य जोती वाली हनुमान वेस भक्तकीवाला जो

48

स्त्रीथी तिसको देखतेभये ए चौपाई सुभ्रत सीस
नीरवट सोहा। त्रिय सर्वांग ललित मनमोहा।
मृगलोचंद्रश्रमान निरामा। निज छवि हरनमान
रति भामा। चपल अपंाग डुंड हगमेलत। खंजन
ज्वगम जात जनु खेलत। बाल मराल बालजनु
निंदा। नाखे सिखचल्योजात छवि हेदा। मध्यभा
ग सुलम डुतिकाया। देखत हगन विकल डुज
राया। नाम रूप वस पाछिललागे। धीर सरीर

मे॰ धु॰

विषवर त्यागे। दोहा तब भामनि तहि देखि हग पतिपें डुलगति श्राव। मोरे पाछिल नाथको कहत मदन वसथाव ए टीका सो कैसी कि जल की भरी हुई गागरी सीसपर धरे हुये श्रीर सरव श्रेग हृदय मनके हरने वाली मानो पूर्णमासीके चंद्रमावत जिसके मुखकी शोभा श्रीर अपनी छबी करके रती जो कामदेवकी स्त्री है तिसकोभी निंदरतीहै सो जब दोनों चंचल नेत्रोंको मेलकर

४१

फे

केँ रती श्रौर भावकरतीहै तो श्रैसे प्रतीत होताहै
कि मानो खगखेजन अर्थात् दोममोले खेलते
चले जातेहैं तैसेही बालहंसवत चालकी शोभा
नाछोटी नालेवी मध्यभागकी रहत्म कायानव
सिखोंसे लेकर मानो एक छबीका समूह चला
जाताहै श्रैसे तिसको देखकर विलमंगलजी मो
हित श्रौर व्याकुल होयगये रूपके वश भये हृदे
धीरजको त्याग कर तिसके पीछे लाग चलते भये

९२

४४

भ॰ पु॰

तब सो पतिव्रता स्त्री तिनको पीछे आवते देखकर वडी उतावलसे भयके वश कांपती हुई पतीके पास आयकर कहने लगी कि हे नाथ आज मेरे धरमकी भगवानने रक्षा करीहै देखिये कोई पुरुष सा धू भेष कामके वश व्याकुल भया हुआ मेरे पीछे पीछे लागा चला आयाहै और मै नही जानतीहूं कि कौनहै १८ चौपाई सो समदरसि नाम पति जोई। लागेपामनन हरष वसहोई। तब न करइ चिंता कछु

50

प्यारी। पतिव्रत धरम तोर रखवारी। आपु कृपा नि-
धान भगवाना। तव कस सीया त्रास डरमाना। सो
नथिछ मानस हरषाई। जस तोहि करहिं कथन
सिवकाई। हित जुत तमके सीस धरि भामा। क
रहु त्रास डर पूरण कामा। तोलो भक्त प्रवर तहँ
आये। त्रियपें पतिहिं देखि सकुचाये। तव प्रणाम
करि वैस प्रवीना। जुग करजोरि भक्ति मन लीना।
भनत नाथ इह भामनि मेरी। मन वच काय चर-

१११
५१

न तव चेरी। सब विधि दीन घाल अनुसारी। जमन

देस अनुहोहिं तमारी। हमरे मोऊ सेत हई कारा।

आज सफल जग जनम बिचारा। धारि वरन तव

दीन सनेहू। कीन मोर इह पावन गेहू। अस जब

बैस हजम सुने गाथा। तव तिय कहे इक सूप अला

वा। हरो मोर कथन कछु देहा। सुनहु इकांत वल

हु निज गेहा। पति अनुसास वचन गहि रमनी। स

दन इकांत विष मन गवनी। तव तहि रमा रूप जि

म०

५१

51

घ जानी । बिलमेंगल जोवत जग पानी । धन्य धन्य
शुवे भनत श्रकामा । कीन भक्तिजुत चरन प्रणा
मा । नम्रत बङुरि वदन निज रुची । मांगी विघ्न ज
गल तव रुची । देवी वेग विलम नजि देहो । श्रासि
ष मोर मुदित मनलेहो । ल्याय दीन ततत्त्वण गत
हेमी । उज डुत कीन करन जग वेसी । प्रथम वद
न प्रम वचन उचारी । देहग मेद उष्ट जप्र भारी । हि
त श्रनहित कर नमझे नभागी । केवल रूप विषय

मे॰ प्र॰

52

अनुरागी। जप तप जोग धरम ब्रत जोई। तोकर नम
के अनल बन होई। देत प्रथम तपण सकल जराई। त
व संसर्ग विष्ठ दुःखदाई। असकहि द्वारि हगन दुज
वेसी। लीने तुरत बहिर निब केसी। श्रोणत ज्ञग
ल नयन दुत जाना। दुजवर चल्या भक्ति मद मा
ता। प्रिय जुत वेस विप्र हठ देखी। बिलपत कर
त रुदन अव सेखी। दोहा पावा दारुण कष्ट इह
दुज संसर्ग हमार। सुनत सीस पछतात जिय हा

हा दैव उवाच ९९ टीका ऐसे स्त्रीका कथन सुनक
र सो तिसका पती समदरसी और भगवानका भ
क बडे हरषसे कहने लगा कि हे प्यारी तूं चिंता
मत कर तेरा पतिव्रता धरम राखनेवाले आप ज
उनेदन भगवानहैं प्यारी तैने हृदयमें क्यों इतना
भयमानाहै सो महात्मा अपनी इच्छा और रुचीके
अनुसार तेरेसे जो सीसवालेनी चाहै सो तूं परम
हित जान कर चरनोंपर सीस धर करके तिनके

भ॰ पु॰

मनकी अभिलाषाको पूरण कर इसमें नेरालोक
परलोक सुधर जावेगा और हे कल्यानको प्राप्त
होवेंगी इतनेमें बिलमंगलजीभी तहां घरके भीत
रही चले आये और तिस स्त्रीको पतीके पास स्थित
भई हूई देख कर हृदयमें सकुचमान होय गये त
ब तिस वैसभक्तने तिनको सकुचे हूये देख कर
हाथजोडकर चरनोंपर प्रणाम कर कर प्रार्थना
करी कि हेनाथ इह स्त्री जोहै सो मन वचन काया

53

करके आपके चरनोंकी चेरी अर्थात् दासीहै और
सरव प्रकार करके प्रभु तुमारी आज्ञाके आधीनहै
कृपानिधान अब संकोच और संदेहको त्यागकर
जैसी मनकी रुचीहै तैसी आज्ञा करिये हम दोनो
स्त्री भरता तुमारे चरनोंकी सेवा करनेको साम
र्थहैं आज हमारे धन्य भाग्य और धन्य हमारा सफ
ल जन्महै कि जिनके घरको भगवान अपने चर
न धारकर पवित्रकियाहै इस प्रकार जब वैसम

कनेनं सबाणीसे बिनती और बडाईके बचन उचा
रन किये तब बिल मंगलजी तिस स्त्रीको कहने
लगे कि हे सखीले मेरा कुछ कथन है तंन्यारी च
लकर श्रवणकरले यो मे तिनका बचन सुनकरके
सो भामनी पतीकी आज्ञा पायकर एकनारे चमसे
सेवक [illegible] स्त्रानमाके साथ चली गई तब तहांति स्रकें वि
लं [illegible] जी लक्ष्मीका स्वरूप जानकर हाथ जोडकर
[illegible] कहतेहूये चरनोपर सीस धरकर प्रण

[illegible]नेभये और फिर रुची पूर्वक नम्रवाणीसे
[illegible]हनेलगे कि हे देवी यावतं मेरा श्वासा रहता
है तौलग दयाकरके दोसूची अर्थात दोसूई मेरेको
शीघ्री उतावलसे ल्यायदे तब सो हंसगामनी वै
स भक्तकी स्त्री मृगनैनी संतमहात्माकी आज्ञा
पायकरके दोलोहेकी सूईजोहैं सो ल्यायदेती
भई सोले करके हस्तभगवानको हृदयमें
बिल्वमंगलजी अपने हाथोंसे तिनकी दोवन

४४
भ०
५५

55

त

छी अर्थात दोऊंश्री वनायलेतेभये ओर प्रथ
म मावसे ऐसे उचारकर कि अरे महामंद
ओर उष्ट जड तेजो तुमकैसेहो किहित अन
हिं कुछनहींजानतेहो केवल रूपविषेमेंही
मोहित हो जातेहो ओर जपतप जोग व्रत ध
र्म ओर सुकरम जोहैं इनको अधम तुम
अगनीवत होयकर छणमेभसमकरदेतेहो
जैसे तुमाराससर्ग अर्थात संगतीजोहै सोज

गन मैं महाउदव और कलेशोंके देनेवाली
है ऐसे नेत्रोंका तिरस्कार करके फिर तर
नहीं वनकी जोकुंडीहै सो डालकर दोनो
नेत्रोंको निकाल करके वाहर फैंकदेतेभ
ये ओगन जो लहूहै सो वहाचला जाताहै
आपभक्तीके मदमें उनमत भयेहूये भ
क्त प्रधान कस्न कस्न रटतेहूये चलपडे
नव स्त्रीके सहित सो वैसभक्त तिनके

अगाध दुखको देखकर हा देव हा देव पुकारकर और अनेकप्रकार पछतायकर परम विलाप कर कर कहते हैं अहो हम कैसे महा दुष्ट और पापकी खानी हैं कि जिनकी संगतीसे ऐसे संत महात्मा बडे घोर कलेश को प्राप्त होय गये हैं।५९।

५८

चौपाई। रोदन करत कहत बिल खाई। दीन
बाल कस चले सिधाई। यद्यपि हमहूं अथम
अपराध। तद्यपि तुमहू नाथ तव साध। हे
मेरे चलहू दीन सुखदाई। मन वच करम कर
हूं शिवकाई। तब उजनाथ मधुर मृदु बानी।
अति प्रसन्न मन बदन बखानी। तब कस उ
चित सोच जिय धारा। इहन काहू अपराध
हमारा। मोरेउष नयन बिथिवामी। इहन

४४

भ-
५७

जिनहिं पति ब्रत पछ्यानी। जस आपगाय अय
म इनकीना। तस परिणाम बन कबर लीना।
मै प्रसन्न मन सब बिधि भाई। तसहिं होवक
ल्यान सुहाई। अस कहि कीन गवन उजराये-
दंपति सोऊ सदन निज आये। हेंदा बिधुन बिप्र
जब आवा। कीन सनान जमन जल भावा॥
भाषत इह मथ्फरा मन भानी। कृस्नजनम
महि मंगल दानी। हरन सकल उरवे दोख

विकारा। श्री सहित सुजस देन संसारा। ईहाँ नि
वास करउँ निजनीके। नव श्रम सगन विप्रव
रजीके। रुचिर भाव जानी रउलासन। कौन
प्रवीन विश्र टक आसन। जगल दिवस जब
नासु सराना। भयोन काउ श्रम जल पाना॥
नवल ध्यान रविथन सरीरा। भाषत वदन वि
श्रगान थीरा। मैहग श्रेय सकल वल सारा। के
वल एक कृस आधारा। सोऊ दैव प्रसदीन द

४४

भ०

५८

58

याला। आन कवन निरयन प्रति पाला। लेहिं न
लेहिं याल सुधि तेहू। मोरे उर भरोस दृढ एहू।
आवत हरन जनन सब दाई। सोउ कृपाल कृ
ल सुर राई दोहा अस जब कीन समाणि प्रभु हृ
दय भक्त वत धारि। भक्त अमर नर भक्ति पें आये
भक्ति निहारी। ४१। टीका। फिर दोनो रोदन
करते लज्जाको आपन भये हूये करतेहैं किरे
दीन याल अव कहो सिधार वलेहो यद्यपि हम

२

२

अपराध और अपराधी हैं तथापि कृपा निधान तुम मेरेगहो हमारे पर क्षमा करो और फिर करके घर कोचलो हम मन वचन काया करके प्रभु आप की सेवा करेंगे ऐसे तिनका कथन सुनकर वि ल मंगलजी प्रसन्न होय कर कहने लगे कि हे भ क्त तुम ने अपने हृदय मे चिंता और शोक क्योंकि या है इस रूक्छ तुमारा अपराध नहीं है मेरे ही ने त्र महो डए और अपम पापकी खानी थे किजि

४४

भ॰
१८

कौने ऐसी पतिव्रता और धर्मशीलकी निधी न
मारी पतनी को अपनी जड़ताके वश होयकर
नहीं पहिचाना ताने इन अधमोने जैसा अपराध
कियाथा तैसाही प्रकट फल पाय लियाहै न
मारा कछुभी दोष नहीहै मै नमारे पर अत्यंत
प्रसन्न हूं हे भक्त नमारी कल्पनहो और नमपै
जडुनंदन भगवान सदैवही अनकूलरहैं ऐसे
स्त्रीके सहित निमवैस भक्तको आशीरवाद दे

३२

करके भक्त प्रधान जो हैं सो चले जाते भये
और इहां वैस भक्त भी स्त्री के सहित फिर क
र के अपने घर मैं चला आया उहां जाते जाते
विलमंगलजी जब श्री वृंदावन मैं आय प
हुंचे तब आनंदसे जमुना जी के जल मैं स्ना
न किया और कहने लगे कि इह सर्व पाप औ
र कलेशों के हर करने वाली और सुख सुजस
के सहित कल्यान के देने वाली सर्व मंगलों का

४४

मे०

६०

60

मूल मथुरा पुरी कृष्ण भगवानका जन्म भूमी अस्या

नहै अबमै ईहांही निवास करनाहै ऐसे विचारक

र जमुना जीके सुंदर किनारेपर अपना हद्द ग्राम

न जोड़ै सो लगाय दिया नहोदो दिन ऐसेही बलीन

होजाते भये अन्न जल कछु प्रापत नहीं भया तब

तथ्यासे व्याकुल और अधीर भयेहूये बिल मंगल

कहतेहैं कि मैनेजोसे हीन ग्रंथ और असमर्थ निरब

ल एक कृष्ण भगवानका आधारहीं राखनाहै सो

४

ई दीनानाथ और सोई दीन पाल ऐसे उपकारकोसा
मर्थ हैं जिनके बिना निर्धनोके पालने वाला और
हमारा कोई नहीं है मेरे जैसे दीन दारिद्रियों की सो
ई दीन बंधु सुधी लेवैं अथवा ना लेवैं मैंनो अपने
हृदय मैं सत्य करकैं यही भरोसा राखे ना है कि दीन
जनोके दुःख हर करने वाले और दीन सुख दायक
सोई जदुनंदन भगवान हैं इस प्रकार जब बिल मंगा
लजीने भगवान कृपा निधान का स्मरण किया

४४

भ॰

६१

61

तब भक्तकी दृढभक्ती देखकर भक्तोंके कलप वृ
क्ष कृष्ण परमात्मा जोहैं सो तत कालही तहां अ
पने भक्तके पास चले आवते भये २०॥ चौपाई
अब सब अरथ वैन अंध्यारी। कृष्ण सरूप विप्र
निज धारी। भोजन अमिय पात्र धरि नीके॥
बोले मधुर वचन प्रीय जीके। लछमन विप्र
न विप्र तुमरेहौ। भोजन करहु सदिन मन ए
हौ। पीरि हरि विलम वेग अब पाई। पाछे भज

५

ऊ कृस्न सुखदाई । विप्र सुनत भगवान अस बा
नी । गैला हृदय परम सुख मानी । मैनो श्रेय
दीन हग हीना । जोउपकार नमझे असकीना
नो मोहि देहु करन नव दाना । अस जब भस्यो
वदन उजवाना । कृस्न कृपाल करन कर गाह्रा
लेऊ लेऊ उजवर अस काह्रा । सरस दिव्य रस भो
जन करह्रौ । हृदय आनंद विपवर भरह्रौ । प्र
भु कर कारन परम कछु आना । विप्र प्रवीन

लीन जियजाना। करसो करगहि गिरा चलाई।
इहि नव कर करना हिन भाई। जास कुरहन वन श्रा
नेदमाहू। क्राये मोर वोम उर चाहू। कोनसमसा
व कथन मोहि करहै। तोमै गहिन पाविपवि
हरहै। नव भगवान भक्त विन चोरा। उजकर
सवल करन करतोरा। टाढे जाय मौन यमिमा
रे। भक्त पाल प्रभु भक्त उवारे। कहन वदन नव
विश्र सजीनी। कामोहि कृपा नाथ श्रव जीती॥

दोहा। करतें सबल छुडाय कर चले हरन भव भीत। जो मनतें प्रभु छूटिहैं तो जानें सब जीत ॥२१॥ टीका ॥ तब मदन (?) अंधेरी और आधी रातको कृष्ण परमात्मा ब्राह्मण का रूप धारे हुये और अंमृत के समान भोजन पाइके भये हुये बडी मधुर वाणीसे आयकर कहने लगे कि हे ब्राह्मण तुम हमको कर के परम व्याकुल और सिथिल होय रहे हो तातें अब विलम्बको त्यागकर प्रथम आ

४४

भ०

६३

63

नेटसे भोजन पायलेवो फिर पीछे स्वस्थ चित
होयकर हूल भगवानका भजन करो ऐसे प
रम सुखके दायक वचन सुनकर ब्राह्मण आनंद
से कहने लगा कि हे दाता मैतो दोय नेत्रोंसे ही
न हूं जो तुमने इह उपकार कियाहै तो कृपाक
रके अपने हाथसेंही मेरे मुखमे भोजन पाय
देवो क्यों कि मै ऐसा निरबल होय रहा हूं जो अ
पने हाथसे आप खावनेकी सामर्थ्य नहीं राख

ता है जब इस प्रकार विलमंगलने कथन किया
तब कृपा निधान भगवान अपने हाथसे तिस
का हाथ पकडकर कहते हैं कि लेवो लेवो अस्ले
ण भोजन पावो इस रसके सहित बडा स्वादु औ
र दिव्य पकवानहै तुम पाय कर आनंदको प्राप
त होजावो तब भगवानके हाथका स्पर्श जो
भया तिससे विलमंगलको ऊर्द्ध वमन कार सू
झ पडा तुरतही अपने हाथसे भगवानका हा

४४

भ॰

६४

64

थ पकड़कर कहताहै कि मुझे इस मानुष्यका
हाथ नहींहै क्योंकि इसके स्पर्श होतेही मेरे
आकाशरूपी हृदयमें आनंदका एक घन घ
घोन बादल छायन होयगयाहै अबहे अस्मा
न्मा तुम सत्य कहो कि कौनहो तबमें तुमारे
ह पकड़ा हुआ हाथ छोडूंगा ऐसे भक्तके मुख
से वचन सुनकर भक्तोंके चित्तको चुराय लेने
वाले भगवान तुरत बलकरकें तिसके हाथसे

अपना हाथ छुडायकर और मारे जायकर मौन
होयकरके स्थित होयगये इस प्रकार भक्त पा
लका पुरुषार्थ देखकरके बिलमंगल बडी श्री
नीसे कहने लगे कि हे भक्तोंके भय हरने वाले
दीन बंधु क्या आप बलसे मेरा हाथ तोड करऔ
र मेरेको जीत कर चले गये हो परंतु आपका ब
ल पुरुषार्थ और जीत तब जानूगा कि जब कृ
पानिधान मेरे हृदयसे छूटकर चले जावोगे २१

४४

भ॰
६५

65

चौपाई। भक्ति प्रेम जन मधुर सुहावन। सुनि प्र
भ भक्त कथन मन भावन। परम हरष बस दीन
न बंधू। बोले बदन बचन सुख केहू। सुनहु प्र
वीन विप्र ब्रत धारी। तव समान मोहि सेसहि
सारी। नाहिन ग्यान भक्त प्रिय काहू। पुत्र कलत्र
मित्र तजि जाहू। केवल मोर सरण हित माना
तेस समान मोहि नसहि सुजाना। पय निपह
ना सोऊ ग्रस नाहीं। जस मोहि प्रिये भक्त मन

माही। यद्यपि विश्व मोर् अज नामा। तद्यपि भ
क्त हेत अभिरामा। धरि सरूप नाना निज भावा
कान करहु संसार सुहावा। गोकल मै वसुदेव
कुमारा। नंद नंदन जानत संसारा। पारथ कृव
रि भक्ति वसचाहू। ग्वाल केलि कौतक मनमा
हू। गनका शबरि गद्ध गज तारे। पतित अजा
मिल आदि उधारे। जेजे करम विदत जगमाई
मै भक्तन हित कीन निकाई। भक्तपाल असना

३३

४४

मं॰

६६

66

म हमारा। मोरे प्रिये भक्त संसारा। तोंते नम सङ्ग व
चन मन काया। अति प्रिय भक्त मोर उजराया।
परम प्रसन्न जान प्रव मोही। उज वर देहुं नवल
दृग तोही। नव नयनन भरि लेहु निहारी। मो
र स्वरूप भक्त व्रत धारी। उज वर दिव्य दृष्टि नव
पाई। मोरे वसङ्ग नगर ब्रावे दाई। प्रस कहि कृ
पा नाथ नव कीना। कर स्पर्शी उज दृगन प्रवी
ना। ततछण नवल नयन उपजाये। जब व

१०

कोर ससि दरस लभाये। इकटक अमिय रूप भ
गवाना। होतन तृपत पियत सुखमाना। दोहा
जहि जाचिन शिव कमल भव स्रुति सनकादि
क यागि। सो प्रनत देखत दृगन दरस विश्व बड
भागि २२ टीका ॥ नव भक्ती प्रेम के सहित बडे
मधुर और कोमल अबला के वचन सुनकर भ
गवान कृपा निधान प्रसन्न होय करके कहने
लगे कि हे ब्रत धारी उज उत्तम तेरे समान मेरे

भ॰ ६७

67

को संसार में और कोई प्यारा भक्त नहीं है कि जि
सने स्त्री पुत्र और सब कुटंब त्याग करके केवल
मेरी ही शरण को आधार कर के सोई अपना हि
त मान लिया है तोते तेरे समान मेरेको स्नेही हैं
और कोई नहीं है क्षीर समुद्रकी पुत्री लक्ष्मी जो
है सोभी ऐसी नहीं है कि जैसा मेरेको भक्त प्या
रा है हे ब्रह्मण यद्यपि वेद पुराणों ने मेरा नाम
अज कथन किया है कि जन्म में नहीं आवता है

६.

जद्यपि भक्तोके नमित्तमै अपने अनेक नाना
रूप धारण करके संसारमै क्या नहीं करता है
देखो गोकुलमै वसुदेव का अखवना और नंद
नंदनभी कहाया पारथ जो अर्जन कुवरी जो
कुबजा मालिन इनकी भक्तीके वश होयके
र गोपी ग्वाल वालोंके साथ वृंदावनमै अने
क क्रीडा विलास किये और शबरी गनका गढ्व
गजराज जो नंदके कायसा रूपा इमतनी रहसव

४४

भ·
६८

68

तारे और अजामिल जैसे महा पापी जो थे ति
नका उद्धार किया है भक्त मैने भक्तों के लि
ये जो जो करम किये हैं सो जगत मे भली प्र
कार प्रसिद्ध हैं मेरा तो नाम ही भक्त पाल है मे
रा वैसे मेरे को भक्त ही प्यारा है तो ते हे अर्जुन
लक्षण
ने मन वचन काया करके मेरा परम प्यारा
भक्त हैं अब ते अपने पर मेरे को अत्यंत प्रस
न्न जान और मै अन कूल अर्थात प्रसन्न भ

(१२१)

या दृष्टा भक्तनेत्रको सुंदर जोतीके सहित नवी
न नेत्र जो हैं सो देता हूं तब ते सोई नेत्र भरकरशु
नी जोगी जनोंको दुर्लभ मेरा सरूप जो है तिस
को भली प्रकार दरसन करले और भक्तने हृदि
वा हर्षीके सहित होय कर आनंद पूर्वक से
री इस नगरीमें ही निवास कर ऐसे कहिक
र भगवान कृपा निधान ने तिसके नेत्रोंको अ
पने हाथका स्पर्श जो किया तो तुरत ही दोनो

४४

म

६८

69

नेत्र खुल जाते भये मानो हैं चकोर जो हैं सो चंद्रमा
के दर्शन करनेके लोभी होय रहे हैं इकटक लगे
हुये प्रसन्न भय भगवानके रूपको पीवते पीवते
तृपत नहीं होते हैं देखिये जिस परमात्माके दर्श
नको शिव ब्रह्मा मुनी सनकादिक अनेक यत्न
और हठ कर कर जावते ध्यान मांगते रहते हैं सो ऐ
सा दुर्लभ दर्शन बडे भागों वाला विलमें वाल आज
आनन्द नेत्र भरकर देख रहा है ॥ ११ चौपाई अमडज

१३

देखिरूप सुखकरना। करत प्रणाम देउवन धरना।
अस्रुपात नयन भरिआये। गदगद गिरा प्रेम उरछा
ये। कृपानकेत सीस धरि हाथा। भने प्रसन्न वदनसु
खगाथा। श्रवनम कृपा कृपा उज होऊ। मोर प्रसाद
सुलभ सब तोऊ। खान पान लग कृपा तुमारी। बि
नु प्रयास सब होहिं सुखारी। करहु सुमरण विभज
वमोरा। होहि अभिष्ट तुरत करनोरा। असकहि व
दन सुखेद उजगैयो। भये प्रेमगत गोप गुसैंयो। उ

४४

भ०

७.

70

जबर हृदय धरत सो ऊध्याना । भये निरत निद्रा सुख
माना । स्वहन हूड जब बोलन लागे । ध्यानहि बिसरि
छु नव जागे । कुलमिलन निज हृदय विचारे । करह
न खपन कछु भयो हमारे । ग्रम उजनाथ ओन हुति
होई । कृपा सकल सौबादिक जाई । करत बडुरिति
ज आश्रम आये । कीन स्मरण भक्त सुखदाये । दो०
नयन नमीलन जब सो सरूप उर आनि । प्रकटे घट
घट रमन नव नवरत कुल वरदानि ॥ २३ ॥ टीका ॥

कीन

१८

इस प्रकार भगवानका रूपदेख करके बिल मंगलजो
है सो दीन होय करके चरनोपर दंडवत प्रणाम करता
भया नेत्रों से जल बहा चला जाता है प्रेम करके गद गद
वानी होय गया कोई वचन मुख से निकलता कोई
नहीं निकलता है तब भगवान दीन सखदान जिस
के सिरपर हाथ धरकर बडे आनंद से कहने लगे कि
हे ब्रह्मण अब तूं अपने प्राणको जगतमें सफल जा
न मेरी कृपा करके अब तेरेको कुछ डर भि नहीं है

सब सुगम और सहज है खान पानतें लेकर सब कु
यानमारी यतनके विना सहज ही होजाय करेगी
और जब जब भक्त तुम मेरा सुमरण करोगे तोमै
तब तब ही आय कर तुमारे मनकी अभिलाषाको
पूर्ण किया करूंगा ऐसे कथन करके गौर्खलाण
के पालक भगवान तत्रतन तहांही लुपत होजातेभ
ये तब विलमंगलजी सोई ध्यान हृदयमै धारकरनि
हाके सुखमै लीन होय गये जब आताकालके सम

य अरन हुउजो हकटहैं सो बोलने लगे तब भक्त स
ब भी जागे और भगवान का मिलना हृदयमें विचा
र कर कहते हैं कि इस्से मेरेको कोई स्वपन भया है कि
यथार्थ भगवानही मिले हैं ऐसे भामिक हनीके
सहित उचितसे होयकर अपनी शौचादिक क्रियाजो
है सो सब करके फिर ततकालही आसन पर चले
आये और तहां तिनको स्थित करके भवनोके नाथ
क भगवान जो हैं तिनका स्मरण करने लगे जब

४४

भ-

७२

नेत्रोंको मेदकर सोई सरूप किजो सपनेमे देखाथा
हृदयमे लेश्राये नव भक्त वरदायक श्रीरघटघट वा
सी भगवान जोहैं सोनदनहीं प्रकट हो जाते भये।
२३ चौपाई सरदमयंक वदन छवि सोभा। श्यान व
चित्र मुनिन मन लोभा। पुंडरीक लोचन श्ररुन्या
रे। श्रायत हृदय केवकल वारे। शंख चक्र भूषन
वन माला। वरहक्रीट केचिन मणि जाला। निर
तन इंद्र धनुष भ्रूवोंकी। उपमा कोटि मदन मन

थोको । भाल विसाल ललित उजनासा । खोरको
रुचिन चारु विकासा । कुंचित चिकर मेचग जनु
हेदा । दाडम दसन कुंदकलिनिंदा । चिहत चैल
नील यर वरना । चित वनि चारुभक्त मन हरना ।
ग्रहणा चरन जल जारन लाजा । जेउर शोभ नल
न भव राजा । दोहा । ग्रस ग्रनन्त प्रभ ध्यान उज
हृया देखिन सखिमानि । तन नन परखो ग्रसके वन
लकट जुत जुग पानि २४ टीका नव कैसे ध्यान

४४

भ॰

७३

73

मे भगवान प्रकट होते भये कि सरद रितुका चंद्र
मा जो है तिसके समान जिनके मुखकी शोभा क
मलोंवत लाली मय सुंदर नेत्र विशाल हृदय और ब
डा मनोहर कंठ शंख चक्र गदा पदम धारे हुये हृदय
मे तुलसी की माला के बिन मणियों करके खचित
सीस पर मोर मुकट इंद्र के धनुष को लज्जा देने वा
ली बांकी भवें तैसे ही विशाल मस्तक पर चंदन
का तिलक और हजजो नाता है तिसके समान से

द्रनासिका कुंडलों वाले चिकने मानो भ्रमरयों के
समाज को लज्जा देने वाले स्याम केश दाडम जो अना
र कुंदकली जो नापा तिनको निदरने वाले उज्जल दां
त और बिजली की छवीको हरने वाले पीत वस्त्र ने
मे ही मेघवत स्याम सरीर और कमलों के समान को
मल चरन किजो सदैव शिव ब्रह्मा दि॰॰ यों के हृदय
मे बसे रहते हैं मनी जनों के चित को चुराय लेने वा
ली नेत्रों की कृपा दृष्टी और मधुर मुसकयान ऐसा

वचित्र ध्यान कि जिसके आगे कोटि कामदेव की उप
मा भी पकत होती है बिलमंगल अनंद मन मखे देख
कर हावभै मगन और प्रेम करके असक्त भया हुआ
हाथ जोड़कर दंडवत चरनो पर गिर पड़ता भया २४
चौपाई । कृपानाथ तव लीन उठाये । अधोवदन गा
ति विप्र लजाये । नम्रत विनय करत करजोरे । भयो
अनाथ नाथ भ्रम मोरे । मम अपराध मयो मन सप
ना । तमऊ कृपाल जानि जन अपना । हरषि भने

नव दीन उधारा। मोन काज अपराध हमारा। मैं असन्न
तोपैं उजराई। अेरा मेरा मोहि जानि सदाई। करहु स
मति मोर तव जवहीं। पति हरि बिलम बेगमैं नवहीं-
तोपैं आय भक्त व्रतधारी। करहु सफल सब काम ह
मारी। अब मम भक्ति विधान सँदेहू। बसहीं मोर ह
दि अरपहू। मोरे भजन निरत दिन रयना। अस क
हि बदन बचन सुखअयना। अंतर्ध्यान भगवान ह
रिकेहू। भये तुरत प्रभु दीनन बेहू। उजवर हान्प

कृपा निजजाना। सकल चराचर कृष्ण समाना। देखे
न लगयो ज्ञान रतन ह्रोई। दुरमति दुरत द्वेष भ्रम खोई।
दोहा। अस विल मंगल भक्ति कल कीन कथन क
छु एहु। भरन मोद मंगल करन कृष्ण कमल पद ने
हु २५ टीका ऐसे जिसको प्रेमसे उनमत्त देखकर
भगवान कृपानिधान दया करके नरनहि चरनो प
रसे उठाय लेते भये नव भक्त स्पष्ट नीचे खडे किये
लज्जित भया हुआ हाथ जोडकर नम्रवाणीसे विनती

करने लगा कि हे अनाथों के नाथ हे दीन दयाल मैं तु
रमनी भ्रमके वस होय गया आपके साक्षातनका रहो
ने को एक स्वपना ही जानता भया तो फिर हे भक्त पा
ल रक्ष मेरा प्रकट अपराध है कृपा करके मेरे को अ
पना जन जान कर आप क्षमा करिये तब दीन बंधु
भगवान यह कर कहने लगे कि हे भक्त उत्तम रक्ष
क्षमा राखकु अपराध नहीं है मैं तेरे पर सदैव सर्व
प्रकार करके प्रसन्न हूं ते मेरे को सदा अपने प्रेम

४४

भ-

७६

76

मेराही ज्ञान और भक्तिने जब मेरा स्मरण करेगा मैं
निमीषमात्र विलंबको त्यागकर और आयकर तेरी
मन वांछित कामनाको पूरण करूंगा अब हे भक्त
प्रधान तै अपने हृदयके संशय भ्रम सब त्यागक
र आनंद पूर्वक ईहां मेरे धरमें ही निवासकर और
नित रात्री दिन मेरेही भजन स्मरणमें लीन रहाकर
इस प्रकार कथन करके भक्त सुखदायक भगवान
तुरत तहांहीं अंतर ध्यान हो जातेभये तब विल मे

अथपदमावती चरित्रं । दोहा । पदमावति जयदेव क
र पतिव्रत पतनीजोय । तास चरित्र अब करहुं मै क
थन यथामति होय । अदभुत अघहरन हरन मन
हरिपद नलन प्रनीत । प्रीति रमन संशय समन
दमन दुरत दुखभीत । चौपाई । एक समय भावी
वसहोई । पुरषोत्तम पुरभूपति जोई । तास भ्रातका
या तजिदीना । नहि पतनी त्रिय परम प्रवीना । जि
यन जगत जिय आस विसारी । पतिसन जरनली

८५

भ०
१

न प्रणधारी। नवहृठ देखिनास महिपाला। यथा स
माज उचित नहिकाला। संचित किये भूमि समसा
ना। चंदनचिता विर चिसन माना। सहगामनि नव
म्रत पतिसंगा। आई मनहु वीर महिरंगा। भूप स
मेत लोग सब आये। भनतवचन माखिशोक वढाये
ढाढी जहां धवन पतिरागी। आईतहां शोक रसपा
गी। पदमावती सील गुणखानी। देखि नास करजो
रत रानी। परी चरन आसिख सभलीन्ये। वहुरि पर

स्यर भाषण कीन्हा । तब महिषी अस बदन उचारा ।
पतिव्रत धरम कठिन संसारा । पदमावती वचन
सुनि रानी । बोली बदन मधुर मृदु बानी । महिषी
धरम पतिव्रत जोई । तासहीन अस नाहिन होई ।
सुलभ नै सुलभ अति करनी । जानहु जगत पति
व्रत तरनी । सुनत प्राणपति मरन सुभागी । देहि
तुरंत प्राण निज त्यागी । सोपति व्रत धरम रतना
री । भूप पतनि उरलेहु विचारी । जारत निजवपु जो

84

भ०
२

वनजोई। नहि परलोक सिद्ध नहिं होई। लोगन केह
करि दंभ दिखावहीं। पतिदेवन पद नाहिंन पावहीं
जरहिं प्रकट पावक वपुएहा। शोक अनल मोरा
हनिदेहा। भई स्वनन अवरन वसवानी। इहि श्री
ला करहैं जियठानी। सोजव भई भसम नवसारे।
भूप सहित निजभवन सिधारे। गयो कछुक जव
काल विहाई। एकदिवस प्रमुदित नरराई। सोर
ठा। सादिर वोलि मंगाय। भक्त प्रवर जय देव उज।

२

लियेसंग निजधाय। हरषि आय हरिभवन ज्जग। १

टीका। नाभादासजी कहतेहैं किहेसंतो अव प
द्मावती नाम करकै पतीव्रता धर्ममे प्रवीन जय
देव जीकी स्त्री जोहै तिसकी मनोहरगाथा जे
सीक बुद्धीके अनुसार होय सकतीहै आपके
आगे गायन करताहूं इह कैसी भी अद्भुत गा
थाहै कि हरी जो भगवानहैं तिनके चरन क
मलों की प्रीतीभक्तीके देनेवाली और संशय

४५
भ.
२

शोकपाप इत्यादि उरवे कलेश जोहैं तिनके नाशक
रने वालीहै एक समय दैवभावी करके जगनना
थपुरीका राजाजोथा तिसका भ्राता कालकेवश
होजाताभया अर्थात मरजाताभया तबतिसकी
स्त्री जोथी सो अपना पतिव्रता धर्म विचार कर
कि पतीके विना मेरा जीवना किस अर्थहै तिस
के साथही जलमरनेको प्रणधारकर तयारहो
जातीभई तब राजाने तिसका दृढ निश्चय और

२

इत देखकर जोजो संत कारका उचित समाजथा
सो समसान भूमीमें ल्यायकर सब जोडदिया औ
र विधि अनुसार चंदनकी चिताभी रचाई गई त
ब सह गामनी जो सतीहै अपने म्रतभये हूये
पतीके साथ मानो जैसे सूरवीर अभय होय क
रके रण भूमीको चला आवताहै तैसे आनंदमे
मगणभई हूई चली आवतीभई तिस समय त
हां संपूर्ण लोगोंके सहित राजा भी चलाआया

८५

भ०
५

सब कोई परस्पर शोकके वचन अलापन करते
और कहतेहैं कि भाई दैवभावी बड़ी बलमानहै
तब जहांस्त्रियोंके समूहमे राजाकी रानी स्थित भ
ई हुईथी तहां सोल और गुणोंकीखानी जयदेव
जीकी स्त्री पद्मावती भी शोकसे आयकरके
स्थितहोय गई तिसको देखकर रानीनेहाथ जो
डकर चरनोपर प्रणामकिया और सुंदर आसीस
लिया फिर परस्पर कुछ चरचा वारता ॥

होतीरही तब रानी कहने लगी कि देखो संसारमें
स्त्रीका इह पतीव्रता धर्म जोहै सोवडा कठिनहै
ऐसे रानीके मुखसे वचन सुन करके पद्मा व
ती वडी मधुर और कोमल वानीसें कहनेलगी
किहे महारानी स्त्रियोंका पति व्रता धर्मजोहै ति
सकी इहरीती नहींहै सोतो वडासहलम तेंभी सु
लभ धर्महै हेदेवी पतीव्रता स्त्री सो होतीहै कि
जो अपने प्राणपतीका मरना सुनकर तहांतब

८५
भ॰
५

नहीं प्राण त्यागदेवे और जो इह जीवती जलमर
तीहैं सोतिनका परलोक सिद्धनहीं होताहै केव
ल एक दंभ करकै लोगोंको दिखावती हैं पतीदे
वता पदजोहै तिसको प्रापत नहीं होतीहैं इहतो
प्रकट अगनीमे शरीरको दग्धकरतीहैं और
वे सतीजोहैं सोशोककी अगनीमेहीं भसम हो
जातीहैं इसमै कुछ संशय नहीं है इस प्रकार
पदमावती के वचन सुनकर रानी बडे अचरज

५

कोधापन होयगई ओर हृदयमै कहतीभई किमै इ
सकी अवश्य भीला कहूंगी इतने मै सोचिखावि
हेवं जल करके भसम होयगई तव संशगीलोगो
के सहित राजाजोहै सो अपने घरको चलाआया
ऐसे जब कुछ काल बतीत होयगया तव एक
दिनराजा वडीप्रीती ओर सनमानसे जयदेव जी
को बुलायकर ओर साथलेकर आनंदमै मग
णभया हुआ जगननाथ भगवानके भवन मै

८५

भ॰
६

चलाआया।९।चौपाई।नहाँरैन रतननाथ विहावा
ईहाँप्रात महि विमन आवा। शीलाकरहुं विप्रवि
यकेरा।वादिन वपोजवन प्रणमेरा। अस विचा
रि तिन चेरि पठाई। पदमावती तुरत चलिआई
कवन काज मोहि पठो बुलाई। करहु प्रक
ट सासन मनभाई। भूप पतनि भरि नयन न
नीरा।करत कपट रोदन गनधीरा। मन
न वदन अस प्रकट जणाई ॥ ॥

६

आये अवहिं भूप भवन माईं। तव पतिरजनि सुलक्ष
णसंगा। भयोकाल वस प्राणन भंगा। तवहिं नआ
य भूप निजगेहा। भयो अनर्थ पतनि उजपेहा। जव
अस कपट वचन उरआनी। भने प्रकट सव भूप
निशानी। मरणजानि पदमावति सोई। गिरी विक
ल मूर्छित महिहोई। तजेप्राण छुत निमख नलागी
देखत चरितव कलविनरागी। हाहाकार करत
पछताई। भई दैव नव कवन रजाई। करि करि नि

८५
भ.
७

जनिंदा गनधीरा। भनत विपत नयनन भरि
नीरा। मैपति बना ललित उजनारी। करिमध्या
भाषण जगमारी। ग्रवका होहिं दैव गतिमोरी
जहि ग्रस लगेपा पाप जग चोरी। देखि विकल ग्रे
नापुर नारी। लागी करन रुदन मिलि सारी। तो
ले। उज जयदेव समेता। ग्रायगये नरनाथन केता
तहि मतं स्वनन माथ धुनिलागे। चिंताविकल
शोकरस पागे। काइह भयो भूप ग्रव बोला। महि

८

7

षी मरम सकल नवबोला। भेनराज स्वनि पिग पि
ग वानी। नव वध योगपमंद मतिरानी। उज पत
नी पति देवन देवी। धरम प्रवीन इष्ट जलसेवी
सोनव हृयामंद वधकीनी। सकल जगत ग्रप
कीरति लीनी। ग्रव कहिविधि एकल उजराई।
करहिं निवास भवन निजजाई। विनुउजनाथ च
घनकस मोरे। ग्रावति हृदय वधहु जछनोरे।
पुनि सीय वरग जाति परि हरहैं। ग्रापवोय वि

५८
भ॰
८

ष संमति मरहीं। देखहु अब नेमोहि निजनयना

अस जब भने भूपति सवैना। तब जयदेव दैवगति

जानी। बोले वदन मधुर मृदुवानी। सुनहु भूपव

र वचन हमारा। भावी दैव प्रवल संसारा। सोरठा

होनहार जगहोय। कोकर दीजे दोखन्रप। अब

चिंता जिय खोय। करहु भवन नायक भजन। २

टीका। तब दरसन परसन करने रानजो पडगई

तो जयदेव जीके सहित राजा तहां भगवानके भ

८

वनमैं ही निवासकरताभया औार ईहां प्रांतका

लहोते राजाकी राणीके चित्तमैं इह संकल्प उ

ठा कि निसदिन जोमैंने अपने हृदय मे प्रणकि

याथा तो अब जयदेव की स्त्रीकी परीक्षाकरनीहै

देखनीहै तिसका कैसा पतीव्रत धर्महै ऐसेवि

चार कर रानीने तरत अपनी एक चतरदासी

को भेजकर पदमावती को तहां अपने पास

बुलायलिया सो पदमावती जब आई तो मधुर

भ. ५

रानीसे कहने लगी कि हे महारानी जी मेरे को आ
पने कौन कारजके वास्ते बुलायाहै अब जो आज्ञा
है सो कहिये तब राजाकीरानी पद्मावतीका व
चन सुनकर हृदयमे कपट और बाहरसे शो
क करके आकुल भईहुई बड़ा रुदन कर कर
कहने लगी कि राजाके भतीजो चाकरहैं सो आ
वीआयेहैं हे देवी बड़ाघोर अनर्थ होयगया ने
रापतीजोहै सो रात्रीके समय नहां शूल रोगसे

कालवश होय गयाहै इसीसें राजानिसको छोड़
कर घरमै नहीं आये इसप्रकार जब रानीने ह
दय मे कपट राखकर वचन उचारन किये त
बतिनको सुनकर और सत्यजान कर पदमा
वती जोहै सो मूरछासे व्याकुल होय कर पृथ
वीपर गिरपडी और ततकालही प्राणोंको त्या
गदेतीभई तब इस अदभुतवारताको देख क
रके रानी हृदयमै पछतावतीहुई हाहाकार

४५
भ०
१०

शावद कर कर रोनेलगी और कहतीहै किहे देव इहतेरी कौन भावी वरतमान भईहै फिर मुखसे अपनी अनेक निंदा करकर अपने परही दोषध रतीहै कि देखो मै कैसी अधम और पापकी खा नीहूं कि जिसने मिथ्या कथनकरकर ऐसी प तीव्रता और सत्य धर्मवाली ब्रह्मणकी स्त्री मार डालीहै अब मेरी कौन दशाहोवेगी और इस म हाघोर पापसे मै कैसे छूटूंगी अहोमेरे मंदभा

१०

ग ये जो मैने हथ्यांही इह अनर्थ अपने सिरपर उठा
य लियाहै ऐसे तिसकी दशा और पदमावती का
मरना देखकर राज घरकी सब स्त्री बडा विलाप
कर कर रोवने लगजातीभई इतने मे जयदेव
जीको साथलिये हूये राजानोहै से घरमै आय
जाताभया और पदमावती का मरना सुनकर
परम शोकसे सिर फेर कर और हाथ मलकर
पछतावने लगा फिर पूछनाहै कि कहो इहका

अनर्थ भया है इसका कारन क्या है तब भयके वश हेती भई तब राजा सुनकरके रानीको महाकोपसे धिग धिग धिग उचार कर कहनेलगा कि अरे मंद जड नारी तूं तो वध करनेके योग्य हैं अर्थात मारदेनेके लायक है हे पापनी तूने ऐसी पतीव्रता और सत्य धर्मवाली ब्रह्मणकी स्त्री कि जो महान देवी और पूजने के योग्यथी हथाही मारडाली है और अभागनी सर्वजगतमे अपजस ले

भईहूई रानी हाथजोड करसव वृतांतसुनाय

लियाहै अब सो तिसकापती ब्रह्मणोंविखें उत्तम
ब्रह्मण सोहै कहो वनमें अकेला कैसे निवास
करेगा और तिस उज प्रधानके विना मेरेकोंके
से कुछ सकताहै तिनमें तो ऐसी आवतीहै कि
महामंद तेरेको अबी उग्रदशासें मारडाले परं
तु सो वधी जानकर नीतीके विचारसें हाथनहीं
उठाय सकताहूं आपकोहीं विषखाय करके
मरनापडाहै प्रथम अब तेरेको देखनानहीं च

भ॰ १२

हताहै इसप्रकार जब राजाने परम कोपसे राणी
का वचनकहे और तिसका वहुतही अपमानकि
या तब सुन करके वश भये हुये वडी कोमल वा
णीसे कहने लगे कि हे राजन तुमआप परम
चतुरहो तुमको मै क्या सिखाऊं परंतु देखो इह
दैवभावी जोहै सो संसारमै वडी वलमानहै इस
मै किसी दोष नहीं है होनहार अवश्य आयकेर्के
५ जयदेवजी जोहैं सो हृदयमै दैव इछाको जानकर दयाके

१२

आपनहो जानीहै तातेहे प्रजापाल अब हृदय
से चिंता और शोकको त्यागो भक्तजनों की पैज
राखनेवाले भवनोंके पती भगवानजोहैं तिन
का भजन और स्मरणकरो।२। चौपाई। सोप्र
भु आपु करहिं कल्पना। अस कहिविप्र भक्ति
रससाना। जेपद मधुर ललित मन भायन। क
नतरहो भामनि जन गायन। निजनकेत मान
स अनरागा। सोऊ मोदित अब गायन लागा

84
भ॰
१२
13

मधुर मधुर स्वर वदन अलापा। गोविंद गीत ह
रन संतापा। स्रतसजीव पद ललित सुहाये। ज
व उजनाथ वदन निजगाये। सोजन स्रतक श्र
वण मग चारू। पशोजाय अम्रत रससारू। ह
रिप्रसाद हरि हरि रवरानी। उजत्रिये उठी प्रेम
मदमाती। पतिमन लाग ललित पदगायन।
भक्ति निपुण त्रिय परम परायन। नवनरेस से
नत रणवास। भयो सुखिन उरहरि हुलास॥

१२

लोग देखि मानस अनुरागे। धन धन वदन प्र
संसँलागे। महिषी परी चरन करजोरी। देवीन
महु छमक तवमोरी। स्वमति वचन उज पतनिउ
चारा। नाहिन कछु अपराध तमारा। भावी प्र
वल दैव ब्रुपवरनौ। मै प्रसन्न सवविधि न्रपन
रनी। अस कहि दंपति हरष प्रलीना। करि स
नान सुभ भोजन कीना। विदालेन पुनि सद
न सिधाये। चरित विलोकि लोक विसमाये।

८४
भ.
१४

भक्ति प्रभाव देखि सब कोई। कहत धन्य इह देव निदोई। सोरठा। अस इह भक्ति मराव। भरत सजी वनी विदत जग जाहिं लीन्यो उरधार। धन्य सुज स भाजन सोई ।३। टीका। सो भगवान कृपानि धान और दीनोके हितकारी जोहैं सो आपही कल्यान कर देवेंगे ऐसे कथन करके भगवान के हृद भक्त जय देवजी जहां पदमावती सत भई हुई पड़ीथी तहांही इकांत बैठ करके गावें

१४

गीतके वडे मधुर श्रोर ललित पद कि जो पदमा
वतीके सहित प्रेम मे मगन होय कर भगवा
न कृपानिधानके आगे गायन करतेथे सोई
अमृत रसके भरेहुये पद मधुर मधुर स्वरसे
आलापन करने लगे अर्थात गावनेलगे तो
जब आय करके शांतीरस परिपूर्णभया श्रोरवे
मृतस जीवने कि जो मरेहुये को जियाय देने
वाले ललित पदहैं तिनका जब मृतभई हुई

84
भ०
१५
15

पदमावतीके कानो द्वारा अम्रत रस जाय करके पडा तो हरीके प्रसादसे हरी हरी उचारण करती हुई ब्रह्मणकी स्त्री जोहै सो ततकाल उठकर प्रेम से मत्तभई हुई पतीके साथही तिन मधुर और ललित पदोंका गायन करने लग जाती भई ऐसे तिसको देख कर्के संपूर्ण रणवास के सहित राजा और सब लोग परम हरषको प्रापत होय गये जयदेवजी की अनेक प्रकार ॥

शलाका और बड़ाई करनेलगे तब रानीजोहै सो
आय करके पदमावतीके चरनोपर सीसधर दे
नेभई और हाथ जोड़कर विनती करने लगी
किहेदेवी मै मूढमती तेरेप्रभावको जानत
हींसकी मोहकेवश होय करके मैने बड़ाभा
री अपराध कियाहै अबतं कृपाकरके मेरे अ
नुचित को छमाकर तब पदमावती प्रसन्न
होयकर कहनेलगी कि महारानी तेरेको।

भ. मा. १९

कल्पान होहै हित कारनी इससै तेरा कुछ दोष अपराधनहींहै भगवानकीभावी जोहै सो बडी प्रवलहै मै तेरे पर सर्वप्रकार करकै प्रसन्नहूं ऐसे राणीको धीरज देकर आनंदसे सनानकि या और भोजनपाया तिसतें उपरांत विदा हो यकर हरष पूर्वक अपने घरको चलेगये इस अदभत चरित्र और भक्तीके प्रभाव को देख कर लोग अचरज के वशहोय कर जयदेव

श्रोर पद्मावती को धन्य धन्य उचार कर वंद
ना करतेभये नाभादासजी कहतेहैं किहे सं
तो इसप्रकार इह भगवानकी भक्ती संसार
मे म्रत सजीवनीहै अर्थात मरेहूयेको जीव
नाकर देनेवालीहै सोई पुरष धन्य और जग
तमे सुजसका पात्रहै कि जिसने प्रेमी कल
पव्रक्षके समान सर्व संकल पोंके सिद्धि क
रनेवाली भक्तीको ह्रदयमे धारन कियाहै। २।

८५
भ०
१८

17

इति श्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवंभक्ति महातमे मीहांसिंहकृत
भाषा टीकायां पदमावती चरित वरणनं नाम
सरगाः ॥ ॥

१८

अथ द्रोपदी अस्य चरित्रं। दोहा। अवसै नंदनि

द्रुपद कर चरित हरन मन आन। करहुं क

थन जहि सुनत स्रुति मिटहिं मोह मद मा

न। चौपाई। अपदा हरन सुजस सुखदाई।

कथा विचित्र पवित्र सुहाई। उदयो यत न्टप

भवन रसाला। समय एक प्रभु दीनदयाला

उरवासा मति ज्ञान निधाना। लीये संग शि

षगण निज नाना। पावन चरन ताहु निज

३८
भ०
१

पारे। तब आवत महिपाल निहारे। सादिर षा
रहल मनिलागी। भक्ति भाव जुत सभा नया
गी। पदेशोनाय चरनन गनिदीना। प्रेम प्रीति
जुत पूजन कीना। तेज प्रज्वलत अनलवत
जाना। अस मनि वरहिं सहित सनमाना।
रुचिर भवन सेजुत अभिलाखा। विपुल दि
वस लग भूपति राखा। देखि सरस सेवन म
नमाना। आपसन्न मनि ज्ञान निधाना। आ

प्रसन्न मुनि ग्यान निधाना । भाषन लक्षन भू
प सनवानी । अब प्रसन्न मुनि ग्याननिधाना
भाषन बदन भूपसन बानी । अब प्रसन्न मा
नस मोहि जानी । सो गाढ़ नृपति नवन बर
भावा । जो इहि अवसर सबद सुहावा । बीते
विपुल दिवस तव भवना । अब चाहूं निज
आश्रम गवना । सोरठा । सुनि अस वचन
मुनीस । करि विचार निज हृदय तव । बो

लो वदन नरीस । विनय युक्त नम्रत वचन ।१
टीका। नाभादास जी कहते हैं कि हे संतो अ
वसै द्रुपद नंदनी जो राजा द्रुपद की कन्या द्रो
पदी है तिसकी और वडी मनो हर अपदा के
हरने वाली और सब सुजस के देने वाली
पवित्र गाथा जो है सो कथन करता हूं के
सो भी अदभुत गाथा है कि जिसके श्रवण
करने से मोह और मद इत्यादि विकार स

व नामको शोभन होतेहैं एक समय राजा उ
रये थन के घरमैं सब शिष्योंका समाज सा
थलिये हुये स्नानध्यान की निधी उरवासा
मुनीजोहैं सो चरन धारतेभये तब हरसेहीं
आवते देखकर राजा सभा को त्यागकर आ
गेंही जायकर तिनके चरणे पर दीन होय
करके दंड प्रणाम करता भया और भक्ती
प्रीतसे अनेक प्रकार पूजन सतकार भी क

३८
भ०
३

-3

रताभया ऐसे अगनीके समान तेजके पुंजओ
र ज्ञान ध्यानकी मूरती मुनीश्वर वसिष्ठ जो थे
तिनको वडी रुची और अभिलाखासे वडे स
नमान कर कर राजाने वहुत दिनोतक अ
पने चरनमे हीं राखा तब इस प्रकार राजाकी
भक्ती और सेवा देखकर मुनीनायक अत्यंत
प्रसन्न होयकर एक दिन कहने लगे कि
हेराजन मै तेरे पर वडा प्रसन्न भयाहूं अब

जो तेरे मनको भावता वरहै सो मांग क्योंकि मै
अव अपने आश्रम को जाना चहताहूं ईहां ते
रे घरमे वास करते हूये वहुत दिन वीतगये
हैं ऐसे मुनीके मुखसे वचन सुनकर राजा
हृदय मे विचार कर जिस प्रकार विनती क
रनेलगा सो आगे कथन कीजातीहै ।१।
चौपाई । जोमोपें तव दीन दयाला । हो प्रसन्न
वरदेहु रसाला । तोमैं निज रक्षा अनुसारी ।

३८
भ०
४

4

मांगहुं वरदीन नहिन कारी। सुनि अस मांगा
मांगा सुनि वरना। नव नरेस नमत गहि चर
ना। करुनानाथ पांडव सुत मोरे। ग्रेहीं भ्रात
विदुर सुवतोरे। सो इहि अवसर सुनहु गुसां
ई। करहिं निवास रुचिर वन माहीं। जिमि।
अगमन प्रभु सुखद सुहावन। इह प्रासाद मो
र भा पावन। तिमि मोरे मन लालस एहा।
जाय करहु उनकार सुचि गेहा। एकादशि पाव

४

न व्रतधारी। निराहार संजत शिषकारी। द्वाद
शि दिवस जाहु मनि तोहा। पंडुपुत्र वसहिं
वन जाहां। पैभोजन संजल ब्रतवारी। क
रि लैहीं नव द्रुपद कुमारी। नहि पाछिल
मनिनाथ कृपाला। संजत शिषन जायनि
न घाला। जाविन करहु मादिन मनहोई।
शिषन सहित प्रभ वेग रसोई। सुनि मनी
स श्रम भूप बखाना। निज निंदा करि करि

5

मावे नाना। कहत सनहु इह संखनि भाई।
प्राण कंठ गत होहिं कदाई। तबहूं अधम उ
ष्ट बस परना। उचित न करति भरण बुध व
रना। जहि पथ वहत इष्ट निज जाना। नहि
मग कहू उपदेशहिं आना। अस विचारि मा
नस मति नाथा। संजन नीति विविध वि
धि गाथा। कहि कहि वदन न्रपहिं समझा
वा। तदपि तास बोध नहिं आवा। बार बार

अथ मयूर धज चरितं । दोहा । रुकमांगद क
र चरितमै कीन कथन गुरदेव । अब मयूर
धज भक्तिकर कथा परम विसमेव । मोरय
यामति सो कहूं कथन ललित मनभाव
जासु सुनत सधा विमल ज्ञान भक्ति उरछा
व । भ्रम बंधन अज्ञान सब मिटहिं मोह अ
भि मान । उपजव प्रीत प्रवीन नित चरनकं
ज भगवान । चौपाई । अवसर एक हुलास

८१
भ.
१

रनायक। भक्तसंत सज्जन सुखदायक। अर
जन सहित द्वारिका माहीं। बसहिं हरन उ
ख दीन सदाहीं। तब पारथ कर हृदय म
झारा। उपज्यो एक दिवस हंकारा। विस्वच
राचर मोर समाना। काहु न प्रीये भक्त भग
वाना। अस अभिमान भक्त उर चेदन। अन्त
र यामि देवकी नंदन। जानिना सुनिज हृद
य अगारी। बिहसे मनहिं मन दीन उवारी

प्रभु

गरब बिटप कर अंकुर जोई । उपजा हृदय
भक्त मम सोई । उचित नास अब वेग उपाव
न । अस विचारि मानस भव नावन । बोलेव
दन वचन भगवाना । सनेही सखे सील
गुण खाना । महिमा बिशुन देखवे काहीं
उपजी रुची आज मनमाहीं । तोते चलहु
हरष सरसाई । बिचरि आव शनि भवनप
राई । सत्य वचन भनि पारथ ताहो । धारि

म
२

सीस सासन सर नाहीं। चलेउ संग प्रभु पा
छिल लागी। आये वहिर द्वारिका मागी।
कौतकि रमानाथ तव ठाढे। भाषत वचन
प्रीति रस गाढे। पारथ तुमहूं वरष दस होई।
वनहु रुचिर मइ वालक सोई। मैं निज हू
इरूप पति लेनू। नप मकर धुज दरसन हे
नू। हम तुम चलहुं युगल मिलि ताहीं।
अति प्रीय भक्त मोर नप जाहीं॥

अस अनुसास पाय भगवाना। सिव सरूप
अरजन प्रकटाना। जदपि भेष निज धरि
श्रीरमना। सेवक स्वामि कीन नव गवना।
एक समान मृगजात निहारा। व्याघ्ररूप
धृत भीम करारा। गरजत घोर वदन नि
ज वाघो। भक्षण करन हेत सिरधायो।
भावन दशा देखि मृगराया। बोल्यो हृद
वचन अकुलाया। दोहा। नव उदार मृग।

भ
३

राज अब मोहि भक्तराण करिलेहु। इह मोरेमि
ह प्राण प्रीय करि दाया तजिलेहु।१।टीका
नाभादास जी कहतेहैं कि हेगुरदेव स्वामी
जी और हे सब संतजनो रुकमांगद राजा
की गाथाजोहै सो मैने आपके आगे गायन
कर देईहै अब मयूर धज राजाकी वडीमनो
हर और अचरजके देने वालीगाथा जैसी
केसरी वडीके अनुसार कथन हो सकतीहै

श्रवण करिये इह कैसी भी गाथा है कि शीघ्र
ही भगवानकी भक्तीके देनेवाली और ध
म बंधन अज्ञान इत्यादि सब कलेशोंके ना
स करने वाली है एक समय देवोंकेदेव से
न भक्तोंके सुखदायक और सर्व भवनोंके
नायक कुस्ल परमात्मा जो हैं सो अरजनके
सहित द्वारिकामे विराजे हूयेथे तब अरज
नके हृदय मे अभिमान उपजता भयाकिस

भ. ५१
४

रव चराचर सृष्टीके विषें मेरे समान भगवा
नका प्यारा भक्त ओर कोई नहीं है ऐसे ति
सके अभिमान को भक्त जनोंके हृदय को
चंदनवत सीतल करने वाले सर्व घट घ
टके अन्तरजामी भगवान हृदयमै जानक
र ओर मनहीं मन मुसकाय कर कहतेहैं
कि इस गरव रूपी वृक्षका अंकुर जो मेरे भ
क्तके हृदयमै उत पन्न भयाहै इसका अवी

४

५१

५ षीघरही नष्ट करना उचित है नहीं तो इहमे
रे भक्तको कलेस देवेगा इस प्रकार भक्त
रक्षक भगवान हृदय मे विचार कर कह
नेलगे कि हे शील और सरब गुणोंको
खानी मेरे सखे अरजन आजमेरे चितमे व
णकी महिमा देखनेकी बडीरुची और अभि
लाखा उपजीहे ताते आनंद पूर्वक रमनतम
चलें और तहां विचर करके फिर गवनक

भ. ५

रीते हूये हरषसे भवन को चले आवें ऐसे अ
र्जुनने भगवानकी आज्ञा को सीसपर धर
कर सत्यवचन कहिदिया तब दीन बंधु तब
नहीं द्वारिका को त्यागकर वनका मारग ले
तेभये और अरजुन भी प्रभुके साथहीं पी
छे पीछे चलपड़ा तहां कुछक दूरीपर आ
य करके भगवान ठाढे होयगये और अर
जुन को कहनेलगे कि हे सखे तूं अब वारो

५

बरषका बालक बन और मै हुइ बनताहूं
ऐसे इम तम दोनो बालक हुइ रूप धार
कर मेरा परम प्यारा भक्त राजामयूरधज
जोहै तिसके दरसन को चलते हैं तब भ
गवानकी आज्ञा पायकर अरजुन जो है
सो तरतही बालक रूप होयगया और
भगवान हुइ ब्रह्मणका भेष धारन क
रलेतेभये इस प्रकार सेवक स्वामी दोनो

फिर आगेको चलपड़े तब क्या देखतेहैं कि
मारगमें एक बड़ा भयानक सिंह घोर गा
रजताहूआ मुख खोलेहूये वाणीसे अक
स्मातही निकल करके बालक के भक्षण
करने को धायपड़ा तहां तिस सिंह की म
हा भयानक दशा देख करके हृदमोहै सो
कांपता हूआ बड़ी दीन वाणीसे कहनेल
गा किहे परम उदार सिंहराज अब तूं मे

रैको भक्षण करले और इहमेरा प्राणप्यारा बा
लक मोहै इसको दया करके त्यागदे ।१। चौ
पाई । सुनि अस वचन हृदयरिपु नागा । कछुक
कोप वश भाषण लागा । सुनहु बाल रक्षक
नवरूपा । नाहिन मांस नार रसगूपा । खाहु
ग्रमाव नवल सिसुपही । भक्षण करहुं हृद
मे तेही । विलपि हृदु नव वचन बखाना । सु
नहु उदार सिंह बल खाना । कपिदाया घव

५१
भ.
८

यतन उबरहो । जिहितें सवन मोर पति हरहो
मै । मै फुर करहुं रजाय तुमारी । यथा वनहिं
तम हृदय विचारी । सुनि अस हृइ दीनवचना
नी । बोलेउ सिंह दया कछु ठानी । भनहुं हृइ
मै एक उपाई । जोतमतें वनि परहिं कदाई ।
नयमहर ध्रज परम प्रधाना । भक्त संत सेवक
जगमाना । सोग्रीव पतनि पुत्र करहारा । धर
न सीस निज आयस आरा । देहिं चराय काय
८

षगावेज्ञ। पैगात रुदन शोक मनमंज्ञ। अह
सन पनलि हरष सरसानी। मानहि रुदय
न ननक मिलानी। सोरठा। दत्तभाग वपुते
हू। मोरे भवण हेतनव। आति जदिर उज
देहू। तो तमार सन कहंनन्हू। २। टीका।
इस प्रकार हट ब्रह्मणके वचन सुन करके
हसतियोंका शाङ्गसिंहजो है सो कोपसे क
हने लगा किहे वालक की रक्षा करनेवाले

४८

भ॰
८

हूँढे मेरा मांसजोहै सो रस करके युक्त नहीं
है अर्थात रसवालानहीं है और इस नवीन
बालकका मांसजोहै सो अत्यन्त रसवाला
और बडास्वादुहै तांते मै इसीको भक्षण क
रूंगा ऐसे सिंहका कथन सुनकर बूढ व
डी दीनता और विलापके वचनोंसे कहने
लगा किहे मृगराज हे बल पराक्रम की खा
नी अबदया करके मेरेको सो उपाय कहो

८

8

कि जिससे तू संतुष्ट होय करके मेरे बालक
को त्यागसकें मै जैसे वन सकताहै सोई य
तन करताहूं और तेरी आज्ञाको पालताहूं
तब वृद्ध ब्राह्मणके दीनवचन सुनकर सिं
हजोहै सो कुछदयाके वश होयगया और
कहने लगा कि हे वृद्ध इससमै तेरेको एक उ
पाय कहताहूं जो तेरे सेवनसके नौकर
क्योंकि बडा धर्ममें प्रधान और संतमको

५१ भ ५

का सेवक जगतमै प्रसिद्ध मयूर धज नाम
करके राजाजोहै सो शोकसे रहित होक
र सीसपर आराधर करके स्त्री और पुत्रके
हाथ से अपनी काया को चिरवायदेवे परंतु
सो स्त्री पुत्र भी कुछ शोक और रोदन नाक
रैं ऐसे तिस राजाकी कायाका चीरा हुआ द
क्षणभाग जो है सो तूं ल्याय करके मेरेको
देवें तो मै तिसको आनंदसे भक्षण करके

५

तेरे इस प्यारे पुत्रको त्याग देऊंगा नहींतो औ
र कोई उपाय नहीं है। २। चौपाई। जोकवहुं
कि नव वचन उचारा। करहिं नहइ भूप स
ईकारा। तो नवल्याय वालकं मोहि देहो।
मैइहिकहं भक्षण करिलेहो। सत्य वचन
भगवान उचारी। आयवेग नृप भवन सि
धारी। देख्योद्भाय अव सर मध्याना। उदिन
भूप वर भोजन पाना। अरज्जन सहित व

५१
भ॰ उजनरूपा। हरन भीति भव भव नन भूपा।
१० द्वार पाल हतन सनवानी। भने क्रपाल प
रम हितमानी। मोर आगमन जाय नव भाई
सपदि भूप सनदेहु जणाई। सिसन्तन हृढ
विप्र श्रुकगाढा। दरसन हेत द्वार नवठाढा
विप्र ववन नव हत सजाना। जाय भूप सन
नरन बखाना। सुनत नरेस वेग चलिआये
करत प्रणाम उजहिं सिरनाये। वहारि वदन
१०

अमगिरा उचारो। मोरे भवन चरन प्रभधा
रो। कवँ काज अब सासन करहो। दीनना
थ सब विधि मन सरहो। सोरठा। जवन मनो
रथ होय। कहहु कृपानिधि दासकहं। पाछे
करहु रसोय। मैसरव करि सफल सो १।
टीका। फिर सिंह कहताहै कि हे हठ जोक
हा चित तेरे कहे हुये वचनको राजा सई
कारनहीं करेगा अर्थात नहीं मानेगा तो

५८
भ
॥

फिर तू इस बालक को त्याग करके मेरे कोदे
देना मैं आनंद पूर्वक भक्षण करले ऊंगा त
व हंस रूप भगवान जो थे सो सुनके सत्य
वचन कहिकर बालक के सहित राजा के द्वा
र पर चले आवते भये तब मध्यान समय जो
होय रहाथा राजा भोजन पावने के लिये सा
रथा हंस ब्रह्मण जो है सो द्वारपाल को कहने
लगा कि भाई तू भीतर जाय करके राजा को ॥

मेरा आगमन सुनाय दे कि एक कोई हद्ध ब्रा
ह्मण अपने बालक के सहित तुमारे दरश
न करने को द्वारेपर आया हूं औरै तब द्वार
पालने सुनकर के तुरत हीं जायकर हद्ध
ब्रह्मण का आगमन जोथा सो राजाको सु
नायदिया औसे ब्रह्मणका आवना सुनने
ही धर्मकी निधी राजा मयूर ध्वज तुरतहीं बा
हिर चलाआया और हद्ध विप्रका दरसन ।

करके बार बार चरनो पर सीस नाय करबि
नती करनेलगा कि मेरे धन्यभागहैं जो आ
न घरमे आय करके आपने दरसनदिया
अब कृपा करके जिस कारजके लिये प्रभु
आयेहो सो आज्ञा करिये मै सेवक सर्व प्र
कार करके आपके आधीनहूं हेदयानिधी
अब संकोचको त्याग कर जो मनकी इच्छा
है सो कहिये बिलंबना करिये मै प्रथम आ

एका मनोरथ सिद्ध करके पीछे भोजनपाऊंगा १

चौपाई। जब अस भूप वचन हढ बोला। त
व निज मरम कपट उन खोला। कुल नमि
त आव तबपासा। धरम धुरिंद भूप गुणरा
सी। उनकर अर्थ दान कछुदेहैं। तो महेंद्र
जाचन करिलेहैं। सुनिअस धरनि नाथ उ
जबानी। बोल्यो हरष मगन मदमानी। ऐसे
विध विसमय अति वचना। जो तब कौन व

८१
भं.
१२

दन निजरचना। कृस्न अर्घ्य तव जाचन आवा।
मैनहिं देहुं तमहिं मनभावा। तो पिग जिय
न मोर जगभाई। रहेहु आनदेव समुदाई। मै
तिन अर्घ्य दान देहूगा। करहुं अभिष्ट सवन
करसरा। कृस्न अर्घक सदेहुं नदाना। मोग
हु विप्र कवहुं तवप्राना। मोहुं अदेव नाहिं
उजमोरे। भावहुं सप्त परम निजतोरे। कृत
विन काय कृस्न पर वारहुं। संपति राजकाज

13

१३

सब हारेहुं। मागेहु विष जवन मनभावा। कृ
ल प्रसाद मोर गृह छावा। सोरठा। चारि पदा
रथ आज। मेरे देहु संशय नहीं। करहु प्रकट
दुजराज। हृदय मनोरथ जवन निज। ५। टी
का। इस प्रकार जब राजा ने हर्ष वचन बो
लता भया तब कपट भेषधारी हुइ ब्रह्मण
जोहै सो अपनोर्थ प्रकट करके कहने ल
गा कि हे धर्मके पालक और सर्वगुणों की

नाम

म॰ ८१
१५

निधी राजामहूरधुज मै कृसभगवान के न
मित तेरेपास कुछदान मांगने आयाहूं सोते
उनके नमित जेकर मेरेको दान देसकें तो
मै अपनी इछाके अनुसार कुछ मांगलेऊं ऐ
से ब्रमण के मुखसे वचन सुनकर राजा हर
ष मै मगनभया हुआ आनंदसे कहनेलगा
किहे ब्रमण तेरे वचनो की रचनाने मेरेको
बडे अचरजके वश कर दियाहै क्योंकि जो

14

१५

सर्व चराचरके पालक श्रौर सर्व भवनोकेप
ती देवों केदेव कृसूपरमाहैं ते तिनके न
मित्त मेरेपास दानमांगनेश्रावें श्रौर मे ना
देऊं तोते धिगमेरा जीवना श्रौर धिगाहीं
मेरा जनमहै देखो श्रौर जोश्रनेक देव
ताहैं मैतिनके नमित्तदान देदेकर सब
कामनोरथ सरण करताहूं भक्तहितका
री कृसूभगवान जोहैं क्यामै तिनके नमि

भं॰ ५८
१५

ननहीं देऊंगा जोकदाचित तू प्राणभीमांगे
तो सोभी अदेय नहींहैं मैं देसकताहूं इह
मेरा सत्यवचनहै सीघ्रहि राज कोश तनमन
नयन इहसब कृष्ण कृपाल परनिछावर
अर्थात वारने करदेताहूं हे ब्रह्मण अवजो
तेरे मनकी रुचीहे सोमांग कृष्णभगवा
नकी कृपासे आजमेरे घरमें चारो पदार्थ
हीं परिपूरण होयरहे हैं तम अपनामनो

१५

घे जोहै सो प्रकटकरो मै सफल करताहूं । ४ ।
चौपाई । गिरा भूपसुनि श्रवण सुहाई । बो
ले वृद्ध विप्र हरषाई । सुनहु भूप तव दरस
न लागी । आय हमहूं जब भवन त्यागी । मा
रग विपन रोकि इकठाढ़ा । सिंहराज कोपित
अति गाढ़ा । पुनि मोरे बालक कहं खावन ।
धायो वाय वदन निज भ्यावन । तब मै विलपि
दीन सखवानी । नाहजगल कर जोरिबखानी

हेम्रग राज मनहु बलखाना। इह बालक मोरे
प्रीय प्राना। करिदाया इहि कर परि हरहो। भ
लए मदित मोहि नव करहो। नव म्रगराज
एक नहिं माना। कोपि वदन अस वचन व
खाना। स्वाह नहिंन अमाव नवकाया। जदिर
कृपण कलु मोहिनभाया। पीन नवीन बाल न
वदेहा। तोते करहु भक्षमे पहा। नव व्याकुल
मै रोवन लागा। करिविस कार विविध निज।

भागा। एकहिं देव मोर संभारा। रह्यो स्रवन इ
ह प्राण अधारा। अति सनेह लालन जतपा
ला। जीवन जीवमोर इहवाला। सोतो आज
सिंह वस पर्यो। मोरे हृदय वज्र विधि ध
र्यो। सुनत विलाप मोर मृगरायो। भयो
भु आल कछुकव सदायो। लाग्यो भनन
वृह सुन वाता। जोवन हो नव वालक ज्ञा
ता। सोरठा। तोमे एक उपाय अव भाष हुंतो

म
१८

हि जविरज्ज। जोतम तें वनि आय। मैसिम
कहं परिहरकुं तव ।५। टीका। इस प्रकार
राजाकी वाणी सुनकर वृद्ध ब्रह्मण जो है
सो हरष पूर्वक कहने लगा कि हे राजन
हम जब अपने घरको त्यागकर तेरे दरस
नके लिये चले आये तब मारगमें वणमें ए
क वडा भारी सिंह निकल करके हमको रो
क लेता भया और तरतहीं वडा भयानक मख

१८

बोलकर मेरे इस बालकके भल्याए करने
को धाय पड़ा जिसको मै कालवन देखकर
दोनो हाथजोरे हुये दीननाके वचनोसे वि
लाप कर कर कहने लगा किहे मगनाथ
इह बालक मेरेको अनसे करके प्राएणा
रोहे तूं दयाकरके इसकोत्याग और मेरे
को भल्याए करले ऐसे मेरा वचन सुन
कर सो सिंहकोपसे कहताभया कि हो

५८

भ.
१८

18

हुए तेरा मांस खाया है उछ रस करके यक्ष
खाह नहीं है तांते मै तेरेको नंही खावता
इसी बालक को भक्षण करूंगा कों कि इ
सका मांस नवीन और रसकरके भरा हु
आ बडास्वाद है जब इसप्रकार मृगराजने
कथनकिया तब हे प्रजापाल मै अपने
भागों को निंदाकरता हुआ रोदन कर
करके विलाप करनेलगा कि हे देव इ

ह मेरा एकहीं प्राण आधार बालकथा और
बड़े सनेह प्यारसे पाला हुआ मानो मेरे जी
वका जीवनथा सो देखो आज इससिंहके
वस पड़गया अहोमेरे बृद्धके हृदय पर
विधाताने कैसा वज्रधर दियाहै इस प्रका
र मेराविलाप सुनकरके मृगापतीजो
है सो कुछक दयाके वश होजाताभया
और कहनेलगा कि हे बृद्धजोतूं आप



५८
भ
१५

ते बालककी रक्षा करनी चहताहैं तोमै ते
रेको उपाय कहताहूं तिसको जो तू करस
केंगा तोमै तेरे बालकको त्याग देऊंगा ।५।
चौपाई । नृप मयूर धज अमल सुहावा । सो
मोरे मानस अतिभावा । सीस चरन लग
आर चराई । सत जीय करन शोकगनभाई
सोव थान छिन पन अनरागी । कछहिं न
उरव कलेश सदव बागी । सोअर धंग दखन

१५

रहाई। मोरे देहु हठ तव लाई। तासु मंदिर मैं
भक्षण करहैं। फिरि उदर तव सहन परि र
हैं। मैं भनि सत्य वचन नहि संगा। तोपै
आवलेन अरथंगा। पहु अभिष्ट मोर पति
मेदन। आय अग्र तव कीन्ह वेदन। जो तो
हि अब लागहिं नृप नीके। देहु उत्र सोई भा
वति जीके। सुनत अलोकिक मेद निरा
ई। हृदजावना अचरज दाई। मोद मगन

२

भ॰
२॰

जग जोरत पानी। लागेषा भगन न सव मावे वानी। उदय भागमोरे उजष्मान। जोनव सर्थकूल सवदान। इह ममकरहु गृहणा प्रवदेहा वलण हेतवाल निजनेहा। तोमे कृतकृत्य उज भयऊँ। धारन वपुरव विस्व फललय ऊँ। अस कहि प्रति प्रसन्न मनराई। प्रउप नति निजलीन ठुलाई। वहुरि मंगाय लीन डत प्रारा। भन्योवदन सनहो सनदारा। श्र

२॰

वनम शोक हृदन डरवेखोई। हित जन परम
हरष त होई। निज कर धरत सीस ममश्रा
रा। इह ननकरहु चीति जगफारा। दत्तणभा
ग देहु उनकाही। होहुस फल नव संहति
माही। सनत वचन अससहत चीय जोई। ला
गे भनन हरष वसहोई। महाराज देहौ उन
पहा। हम चीरत अव आपनदेहा। नव जीव
हु जग कृपा अगारा। होहिं विविध चीय सत

परिवारा । इहसव सुलभ नाथ संसारा । न्रमडु रलभ मूरति उपकारा । दोहा । हउ विप्र ग्रसव वन सुति पतनि पुत्र छिन नाथ । मैन करउ वपु गृहलुण नव भयो वदन धुनि माथ । ६ ।

टीका । हे ब्रह्मण सो कौन उपायहै कि मयूर धुज राजाजोहै तिसके शरीरका मांस मेरेवि नको भावताहै सो कैसे कि सीससे चरनों पर्यं त आरेके साथ तिसकी स्त्री ग्रौर पुत्र शोक रो

रनमे रहित आनंद पूर्वक अपने हाथोंसेची
रें और राजाभी हृदयमे कुछ शोक डाव न
हीं माने तोवे तिसके चीरे हुये शरीरका द
त्तणभाग जोहै सो तू त्याय करके मेरेको दे
वें तो मै आनंद से प्रछाय कर तिसको भक्ष
ण करूंगा और तेरे इसप्यारे वालकको त्या
गदेऊंगा ऐसे तिस सिंहका कथन सुनकर
हेराजन मै सत्य वचन कहिकर के ईहांते



९८
भ
२२
निधी

रेणास अरधंग लेनेको चला आयाहूं अब जे
से तेरे मनको भावताहै सो तूं मेरेको उत्तरदे
तब धरमकी राजामयूरधज तिस वृद्धब्रह्म
णकी ऐसी अलौकिक याचना कि जो लो
कों मे नहीं है सुन करके परम हरषके व
शभया हूआ वडी नम्रवाणीमे कहनेलगा
कि हे ब्रह्मण आजमेरे धन्यभाग और धन्य
मेरा जनमहै कि जो तूं अपने बालकके लिये

२२

मेरे इस शरीरको हमभगवानके निमित्तमांग
ने आयाहैं इसनेमें तो आज जगतमें कृता
र्थ होय गयाहूं और शरीरके धारनेका सु
दर फल जोहै सो मैने पाय लियाहै ऐसे
कहि करके अपने पुत्र और पतनी जो स्त्री
है तिनको बुलायकर और एकलोहेका
आरा मंगवाय करके कहनेलगा कि तुम
शोक और रुदनसे रहित अभय होयकर

५२
भ॰
२२

सिरसे पाउंतक मेरे इस शरीरको चीर कर
के दोभागकरदेवो फिर तिनमें दक्षण भा
गजोहै सो लेकरके वडीप्रीती सनमानसे इ
स ब्रह्म ब्राह्मणको देकर चरनोपर सीसध
रो और इसका आसीरवाद जोहै सोलेवो इ
स प्रकार राजाका कथन सुनकर
स्त्री और पुत्र हाथ जोड कर विन
ती करने लगे कि महा राज ए

2३

२२

हमको आज्ञाहो जो इसी आरेसे चीर कर्के
हम अपनाशरीर देदेतेहैं प्रभुजगतमे न
म जीवतेरहो स्त्री पुत्र और भी होजावेंगे
इनकाहोना सुगम और सहजहै परंतु
हेकृपानिधान तुमाराहोना वडादुर्लभ
है ऐसे राजाकी स्त्री और पुत्रका कथ
न सुन करके वह ब्राह्मण जोहै सोमा
या फेरकर कहनेलगा कि मै तुमारा

५८
भ.
२४

शरीर कदाचित भी गृहण नहीं करेंगा
जोदेनाहै तो राजाही अपना शरीरदेवे। ६
चौपाई। केवल कायभूप उपकारा। मोरेहृ
दय लेन सईकारा। तेहि विप्रवदन अ
सवानी। भये नहुष हरष उरमानी। लियो
उगाय करन पुनि आरा। धरेहोसीस नृप
शोक निवारा। तरन स्वामि शासन वस
होई। चीरन लगे पतनी सनदोई। ज्ञान प्र

२४
24

यंत चीरजव आयो। तबहग वाम नीर तपछा
यो। अस्त्रूपात भयो इकतासा। विप्रदेखि अ
स वचन प्रकासा। अबनहिं लेहु भूप तव
देहा। उपजा हृदय मोर संदेहा। तव निज
मानि खेद उरआरा। रोदन करहु वामह
गहारा। सोरठा। तव तन नाथ वखान।
मैरोदन नहिं करहुं उज। भने विप्रवर आ
न। करहिं भूप रोदन कवन।७। टीका।

भ ५८
म
५५

25

हठब्रह्मण जोहै सो बारबार यही कहता
है कि मेरेको केवल राजाका शरीरलेना
लईकारहै और कुछ प्रयोजन नहीं है ऐ
से ब्रह्मणका वचन सुन करके राजाकी
स्त्री और पुत्र मौन होयगये फिर आनंदपू
र्वक स्वामीकी आज्ञा पायकर और आरा
उठाय कर सीसपर धर करके राजाको दो
खंड करने लगजातेभये जब आरेका चीर

नामका परयंत आयगया तब राजाके वा
म नेत्रमे जलछायत होयकर एक ग्रस्त
पातजोहै सो चलपड़ताभया तिसको देख
करके हृदब्रह्मण कहनेलगा किहेराजन
श्रवमे तमारा शरीर नहीरोलताहै मेरेका
संशय होयगयाहै कयोंकि तूं आरेके घा
उका कलेशमान करके अपने वाम नेत्र
द्वारारोदन करताहै तब राजाहाथ जोड़क

८१
भ
२६

र कहने लगा कि हे ब्रह्मन मै ह्यलपरमातमा
की कृपासे नातोकलेश मानताहूं और ना
कुछ रोदन करताहूं ब्रह्मण कहनेलगा
नोराजन फिर इह कौन रोदन करताहै तूं
मेरेको कथन कर। ७। चौपाई। बोल्या वद
न भूप उपकारी। विप्रएक अस्त्रवान विचा
री। मोरा वामभाग इहजोई। रोदन करत
मोह वसहोई। दलवाम हम एकहिंवारा।

२६

जनमे काय नृपति संसारा। वरधन पाल
न दहन विधाना। होन रहो सव पकम
माना। दक्षण भाग आज वडभागा। कृस
कृपाल अरथ जोई लागा। वामभाग मे
मंद अभागी। दीनानाथ दीन जहि त्या
गी। दक्षण भाग आज जग धन्या। अगज
गनाथ जास प्रीयमन्या। धिग धिग जन
म मोर अगाधामा। लागन कृस अर्थवि

म॰ २८

पिवामा। निज लखुना असरुदय चितारी।
वामभाग गनिभाग विचारी। नैननीर भवि
उरपछतार्ई। लागेपाहदन करन अकुलार्ई।
असप्रकार जीय सतकरजीया। पीउत भूप
धरम निधिधीया। मंदहास मख वचन उ
चारन। दयानास सरगागन निहारन। सा
धु साधु कहि वरषन लागे। समन सख
द मानस अनरागे। धन्य धम रव रुचिर स

२८

हावा। रेणासि धरनि ब्योम लगछावा। अहो
नेरस कठिन नव करनी। महिमा जाय व
दन किमि वरनी। करहिं देव मख विविध
प्रसंसा। नव कृपाल भय भक्त विध्वंसा। नत
त्रण रमानाथ भगवाना। निजस रूप सभ्र
न प्रकटाना। संख चक्र भूषित वनमाला।
गदापदम धृत दीन दयाला। अंबर पीत
भीत भव हारन। पावन अहन चरनजल

५१
भा.
२८

जारन। निरखि लावन्य नीलघन काया। कंबि
न क्रीट ललित दुति छाया। खोर लिलाट
चोर चितमोहा। चितवनि चारु मुनिन मन
मोहा। भुज आजानु मान मद गंजन। रदद्युति
नलिनि नैन भवभंजन। श्रवण सुखद शु
क घ्राण सुहावन। भ्रुकुटी कुटिल वचन मृ
दु पावन। निदरत भृंगनि कर छवि केसा।
कुंडल रुचिर मकर कृतवेसा। आयत हृद

78

पकंभकल ग्रीवा। नवखंडति इंदुहरन छवि
सीवा। अस अनूप सरवांग सुहाये। हरख
रिचित निज हृदय वसाये। सोरठा। कवन त
कुमति मोर। ध्यान ललिन किमि कहिसके
दीन घाल करथोरि। दंतकोटि उपमा मद
न। ८। टीका। तव उपकारकी निधी राजाजो
है सो कहनेलगा किहे हइ तुम सत्य क
हतेहो परंतु मैने रुदन नहीं कियाहे इस

५१
म
२८

29

मे इहकारनहै कि मेरे शरीरका वामभागजो
है सो जिसने इसवारनाको विचार कर अव
एए रोदन कियाहै कि दोना हमदोनो दन
ओर वामभाग एक साथही जनमेहैं ओर
खान पानसे लेकर पलना वढना भी ह
मारा वरावर एक समान होतारहाहै आ
ज सो वडभागी दनण भाग हमभगवान
के अरथ जायलगा मै महामंद ओर अभा

२८

णी वामभाग निसदीन वेधभगवानके अर्थनहीं
आया मेरेको त्यागदियाहै आनइह दक्षिण भा
गहीं धन्यहै कि जिसको दीनहितकारी कल्प
रमात्माने प्यारा मानकर गृहण करलियाहै
मैधिगहूं और मेराजनम भी धिगाहै कि जो
भगवान की शरणागत नंहीभया और दी
नानाथके अर्पणनहीं लगा हेवंक्षण ऐसे अ
पनी लघुता और भागोकी न्यूनता विचार

५१
भ
३०

करके इह्मेरा वामभाग जोहै सो व्याकुल भ
याहूआ रोदन कर कर पछतावताहै इस प्र
कार स्त्री और पुत्रके हाथोंसे वीराहूआ राजा
यद्यपि अतसे करके पीडत भीथा तद्यपि ध
र्म और धीरज की निधी मंदहाससे प्रसन्न मु
ख होय करके वचन कहतारहा तब आका
शमें देवतागण तिसको दशादेख करके सा
धु साधु कहते हूये आनंदसे पुष्पोंकी वरषा

३०

30

गोहै सो करदेते भये पृथ्वीसें आकाशपरयं
न धन्य धन्य शब्दही छायनहोय गया क
हतेहैं कि हे राजन अहोतेरी भक्तीका प्रभा
व और अहो तेरीमहां कठिन करनी किजि
सके कथन करनेको कोईभी सामर्थ नहीं
है ऐसे देवतागण अनेक प्रकार सुखसे
शलाघाकर रहेथे इतनेमे ईहां भक्तोकाभ
य हरकरने वाले लक्ष्मीके नाथ कृपानिधा

भ ३१

न भगवान जो हैं सो अपने मनोहर सरूपसे
ततकाल प्रकट होजातेभये कैसेकि संखच
क्र गदा पदम धारे हुये और हृदयमे तुलसी
की माला तैसेहीं शोभावाले पीत वस्त्र और
बड़ी आभा करके युक्त सीसपर कंचिनका
मनोहर मुकट तैसेहीं मुनियों के मनको
मोहित करनेवाला माथेमे सजाहुआ चं
दनका तिलक और कानो मे मकराकृत

३१

31

कुटिल नीलेबादरवत शरीरकी सुंदर शोभा
नवीन कमलको लजादेनेवाले विशाल
नेत्र तैसेहीं बडी उज्जल दांतों की सुंदरपं
क्ती की रजोतोताहै तिसके समान मनोह
र नासिका और बडेसुखदायक श्रवण अ
मरथोंके समाजको लजादेनेवाले स्यामके
शा तैसेहीं कुटिल भृकुटी अर्थात टेढीभवें
और मुखमें बडे मधुर वचन मुसकामोदेत

जोहैं निस मदको हर करनेवाली लंबीभुजें
श्रोर सुंदर विशाल हृदय मनोजनोंके म
नको हरनेवाली नेत्रोंकी कृपादृष्टी श्रोर
चंद्रमाकी आभाको लज्जादेनेवाली नखोंकी
उज्जल शोभा नाभादास कहतेहैं किहेसंतो
ऐसे सर्व अंगोंकरकें शोभित भगवान किजोशि
व ब्रह्मादियोंने हृदयमे बसायेहूयेहैं श्रोर जिन
को कोटिकामदेवकी उपमा देनेसेभी विंचकसी

प्रतीत होतीहै तिनका अनंत ध्यान कथन
करने को मैतच्छ बुद्धीवाला कैसे सामर्थ
होय सकताहै इसलिये ईहांजैसा मंद मती
के अनुसार कथन होयसका तैसा करदिया
है ।८। चौपाई । असप्रकार धनरूप सुहावा
वनसल भक्त जास श्रुतिगावा । शोककले
श भक्त उद्धारे । सुरद्विज धरनि धेनु रखवा
रे । कृपा समेत आय प्रभतांहीं । वीरन ७३

४८
भं.
११

33

पतनि नृपजाहो। पानिपान गहि जनन उवा
रण करन खेद जगकिये निवारण। जहि
लगरहेउ नृपति तनचीरा। त्वरन त्रास खेद
न मदवीरा। करस परस करिदीन मिटाई
सावधान भातन लणगाई। छाडकलेस खे
द भ्रम ग्रारा। मिटेउ प्रमाद हरन भवसा
रा। तव भगवान लोक त्रै नायक। बोलेव
दन वचन सुखदायक। भूप प्रसन्न जान

११

जीयमोही। मागहुं भाव जवन मनतोही। म
नवच काय भक्त तुममोरे। नहिन अदेव आ
ज कछुतोरे। प्रभुकहं देखि भूप वरदाया।
हरषि नम्र चरनन सिरनाया। बहुरि बनी
त दीनवत बानी। लागेभनन जोरि जुग
पानी। धन्यभाग मोरे सुरराया। जाहि इनह
ग दरस प्रभुपाया। दुरलभ सुरन मुनिन
कहुंजोई। मोरे आज सुलभ भोसोई। कृत्य

न

भ
२४

कृत अब भयो सुभागी। हरिपद नलिन दृष्टि
जहि लागी। इहिते कवन नाथवर आना। मा
गहुं दीनदयाल भगवाना। तदपि जानि भक्त
भय हारी। तमहिं दयावश दीन उधारी। अ
ति कोमल जनपर अनुकूला। हरन दोष
दुख दारुण सूला। जाचत करहुं जुगल क
र जोरे। आवत भनत लाज प्रतिमोरे। होव
सि मौनव भये वदन भगवाना। मोरेदन

जो कृपाल कछु वानी। अनचित तमज्ञ दास पद जानी

34

रुचिर वरदाना। तोमैं छाल भक्त जननेही।
मागहुं प्रकट वदन वरपहीं। सोरठा। यथा
कीन प्रभुमोर। प्रीलादीन निवाज तव। आन
भक्त चितचोर। आगे करिय नकाहु असा। ए
टीका। इस प्रकार अदभुत रूपसे प्रकट
होय कर भक्तजनोका भय और शोक ह
र करने वाले गौ ब्रह्मण पृथवी और देव
ताउंके रक्षक भगवान बडी कृपासे जहां

५८
भ०
३५

35

पुत्र और पतनी राजाको वीर रहेथे तहां
तिनके पास आयकरके स्थित होयगये औ
र तुरत अपने हाथसे तिनके हाथ पकड
कर राजाके डंवड करनेसे निवारण कर
दिये और जहां लग राजाका तनवीरा हू
आशा से आनंद के सागर और भय शो
कके हर करने वाले भगवानने अपने हाथ
का स्पर्श देकर पद्यावन ज्योंका त्योंहीं । ३५

करदिया अर्थात चोरका घाउ और श्रम क
लेश जोथा सो ततकाल सब मिटकर दी
नानाथकी कृपासे राजा स्वस्थ चित और
सावधान हो जाताभया तब तीनलोकके
नायक और भक्तहितकारी भगवान ब
डी सुख दायक बानीसे कहनेलगे किहे
भक्त अब तू मेरेको प्रसन्न जान कर जो
तेरे मनको भावताहै सो वर मांग मैं देता

भ०
४८
४६

हे हेरानन तू मन वचन और काया करके मेरा हृढ भक्तहै तेरेको आजहृढ भक्तहै तेरेको आजकुछ अदेव नहीं है मै सवक्त देस कताहूं तू संकोच को त्यागकर जो मनकी रुचीहै सो मांग इसप्रकार भगवानको कृपाके वश और प्रसन्नभये हूये देखकर राजा दीनवन चरनोपर सीस नाय कर फिर बडी कोमल और वनीत वानीसे

३६

हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि हे देवों
के देव हे कृपा के समुद्र मेरे आज बड़े उदय
भाग हैं कि जिसने इतने जों करके दीनबंधु
प्रतक्ष तुमारा दरसन पायलिया है प्रभू
म कैसे भी हो कि मुनी जोगीजनों और देव
ताउं को अनेक कष्ट और कठिन साधना से भी
प्राप्त होने दुरलभ हो मैं नहीं जानता हूं
कि मेरे कौन पुन्य हैं जिनके प्रभाव से भग

म
२८

वन तुमविना यतनके सुलभ अर्थात सह
जेहीं प्रसन्न होयगयेहो अवमै वडभागी कृ
त कृत्य होयगयाहूं जोकरनाथा सोकर चु
काहूं नाथ अव कौन वरमागूं सवसाधनोंको
सुफल करनेवाले आपके चरन कमलजोहैं
सोजो प्रसन्नमेरे सनमुखहैं अव अधिक कौन
वररहा जो मै मागूं तद्यपि हे भक्तजनोकाभ
य हरनेवाले और हेदोष दारिद्र आदिसव मू

लोंका नाश करनेवाले आपको दया करके श
त्रि अतसे कोमल और प्रसन्न चित देखके
रके हाथजोडकर कुछ मांगताहूं हेकृपानि
धान इसमै कहते हूये मेरेको यद्यपि लज्जा
आवतीहै तद्यपि प्रभुतम चूक निवारणहो
मेरा अनुचित देखकर क्षमाही करिये हे
दीन वंधू आपने जोमेरेको वरदेना कहाहै
सो भक्त हितकारी मै एही वरमांगताहूं कि

५। म १८

इह जैसी आपने मेरीपरीक्षा करीहै हेकृपा
निधान आगे ऐसी फिर किसीकीमत करि
ये मैंनेोवर मांगनाथ्या सो मांगलुकाहूं। ९।
चौपाई। सुनिप्रभु वचन भक्त भगवाना। प
व मस्त निजवदन वखाना। बहुरि आन वर
दीन कृपाला। प्रवतम विगत शोक महिपा
ला। मम प्रसाद महि रुचिर सुहावा। करहु
राजनिम कंटकभावा। जव रुचि होहिं तोर

५८

नरनाई। संजत पतनि पुत्र हरषाई। मोरे पर
मधाम बडभागी। श्रावहु वेग रुचिर वपु
त्यागी। जोलो नामधाम धरनि नलमोरा।
तोलो स्रवनहु न्टपति वरतोरा। संपति सज
स रैहहिं जगछाई। शोक कलेश विगत स
वराई। अस वरदेन भक्त भयहारी। विप्र स
रूप लीन निजधारी। सुनिल मवर जादव
न सारी। जे हारावति पुरी मरारी। श्राये

श्री

भ०

३५

तहं सकल सुखदाता। अरजुन देखि चरित भगजाता। जानि अगम माया पति माया। नवत सीस मनहिं मननाया। परिहरि कुमति मोह अज्ञाना। निरमल भयो बिगत अभि माना। सोरठा। भक्ति विवश नर जोय। गत विकार इक चार चित। नहि कर निश्चय होय। तण वत आतम जीवन जग। इह अनित्य जियजान।

३५

नित्य भक्ति स्वरव सोलखौ। लेहिं शरण भग
वान। संतत भक्ति अनन्य जन्त।२१। टीका
इसप्रकार अपने भक्तका वचन सुन कर
के भगवान कृपानिधान एवमस्तु कहि
देतेभये कि ऐसेही होगा फिर दीनानाथ
और वरदेतेभये कि हे राजन अब तुमशो
क संदेहसे रहित होयकर मेरीकृपाके प्र
सादसे पृथ्वीतलपर कोई काल पर्यंत।

भ ५१
५.

निस कंटिक राजकरो श्रोर फिर जब न
मारी इछाहो तो अपनी स्त्री श्रोर पुत्रके
सहित आनंद पूर्वक शरीरको त्यागकर मे
रे परम धामको अभय होय करके चले
आवो श्रोर हे भक्त जबलग इस पृथवी न
ल परमेरा नामहे तब लग मेरे वचन से
सब विघनोसे रहित होकर तेराभी स्वच
संपती श्रोर सुजस जगत मे कायत रहेगा ५.

40

इस प्रकार राजामयूर ध्वजको वरदेकर भग
वान भक्तसख दान फिर अपना त्रुही हृद
ब्रह्मका सरूप धारन करके संपूर्ण महाराज
नो और जादवों करके भरीहुई द्वारिका जो
है तहांको चले आवते भये तब मारग मे
आवते हुये अरजुनजोहै सो मायाके पती
भगवानकी अगम और अनंतमाया देख
करके मनमे ही वारवार सीस नावता भ

५८

भ० ५१

41

या श्रैार मोह भ्रम इत्यादि अज्ञान अभिमान
को त्यागकर निर्मल चित होय करके कहने
लगा कि अहो भगवान की श्रैार भगवानके
भक्तों की महिमा अगाधहै मै मोहके वश
होय करके वृथाहीं भूलाहूआथा नाभादा
सजी कहतेहैं किहे संतो देखिये भक्तीका
प्रभाव कैसा वचित्रहै भक्तीमान पुरुष जो
होताहै तिसको इह जगतका जीवन्न त्रिण

५१

८६
म०
५२

वत प्रतीत होताहै सो इस जगत के जीवने
को अनित्त जानकर और भक्तीके सुखको
नित्त विचार कर दृढभक्तीके सहित भग
वानकी शरणको प्राप्त होताहै।९। इ
तिश्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ती महा
तमे भाषाटीकायां मयूर धज चरित वर
णनं नाम सर्ग्गः।

मीहांसिंहकृत

सपत बरष कर बाल कल धृतसरूप सखदान
नील जलध बन नील तन नील कमल नयन ३व
प्रेम मद मोचित मैन नहि रहत संग दिनरैन
भक्त नजानत मरमपै होत नसत सखभान
बडभागी जन आन कहं देत दरस भगवान ४
टीका। तब सो तिस पंडित का गरदभ परब
धाना सुनकर दयाके वश होयगये और ति
सको तिस अपमानसे निवारण कर देते भ

ये और अपने शिष्यको तिरस्कार करकर क
हनेलगे कि इह कौन विचारकी वार्त्ताहै जो ऐ
साभारी विद्वान और प्रवीन पंडित इस अपमान
के योग्यहोवे इस प्रकार तिरस्कार करनेसे शिव
स्वरूप भगवान जोथे सो सभाको त्यागकर
और बाहिर आय कर लुपत हो जातेभये न
व माधव का घरमें यथार्थ रूप शिष्यजोथा
सो तिस समय नहो आयगया अरु औरभीपंडित

५९
भ०
६३

63

६३

विद्वान वहांतसे आयगये माधवके शिषका
संवाद सुनकर वडे प्रसन्नभये और तिसको
अनेक प्रकार शलाघा और वडाई करनेलगे
कि देखो इह वेदकावेता महां विद्वान पंडि
तथा वडे आचर्ज की वातहै कि तुमने इसको
कैसे जीत लियाहै तब शिष्य तिनका कथन
सुनकर कहनेलगा कि मै नहीं जानताहूं
इह तुमारे हृदय मे कौन भ्रम उतपन्न हो

५९ म ६७

गयाहै तुमभली प्रकार जानतेहो कि मै जनम
में बुद्धीका हीनहूं एकवरण अर्थात अक्षर मा
त्रभी अपने मुखसे उचारणनहीं किया और इ
न्हो पंडित गुणोंका समुद्र और सबलोगों मे
उजागर कहो मैने इसको कैसे जीतलिया त
ब विद्वान जन जिसकी ऐसी वानी को सुनक
र कहनेलगे कि भाई इह बालक सत्य कह
ताहै मानो बड़ाभारी विद्वान रहा जिसके ।

64

जीतने की इसको कहां सामर्थ्यथी हमने जा
नलिया कि माधवजोहै सो मनवचन काया
करके भगवानका दृढ भक्तहै सो दीनाना
थ और भक्त हितकारी भगवान जिसके शि
ष्यका सरूप धारकर भक्तके निमित्त आप
संवाद करनेको आयेहैं और कृपानिधानने
कौतुक और चतुराईसे भेषांतर होकरके अ
पने जनको जगानेमे नाना सहजसे और वडा

२९
भं०
६५

ईदेईई इस प्रकार जिनका कथन सुनकरके
वे प्रवीन पंडित जोधा सो परम हरष को
प्रापत हो जाता भया फिर दीनवत दोनो हा
थ जोड़कर माधव भक्तके चरनोपर प्रणा
म करकै अस्तुती करनै लगा कि हे भक्त प्रधा
न तुम धन्यहो कि जिनके शिष्यका रूप धा
र कर गरव प्रहारी भगवानने नानासंवाद
करकर मेरेको जीत लियाहै अब मै तुमारे

६५

उपकारकी कहांलग बड़ाई और शलाघाक
है कि जिसके प्रसादसे इह कृपाके समुद्र
भगवान मैंने भलीप्रकार नेत्र भरकर देख
लियेहैं हे भक्त प्रवीन तुम आपतो तरेहो प
रंतु मेरेको भी तार दियाहै तुम संसारमे ध
न्यहो और धन्य तुमारा जनमहै ऐसे अनेक
प्रकार बड़ाई करकर और वार वार चरनो
पर सीस नायकर आनंद मे मगन भयाह

आसो पंडित अपने घरको चलाजाताभया
और ईहां माधव भक्तभी भगवान की भक्ती
प्रीती मे लीनभये हूये सुख पूर्वक आयक
र अपने आश्रम मे निवास करनेलगे इसप्र
कार नीले बादर और नीलकमल के समा
न शरीर की शोभा वाले और कमलवनहीं
विशाल नेत्रोंवाले पुरषोत्तम भगवान जो
हैं सो सात वर्षके बालकका रूप धारकर

अपने माधव जन की भक्तीके वशभये हूये रा
त्रीदिन सदैव तिसके साथही रहतेहैं बडेभागों
वाले हमरे उरषको दरसन देतेहैं परंतू माध
वजीको देखनहीं पडते ।४। चौपाई । समय
एक माधव मतिधीरा । तजिकासी निज रुचिर
कुटीरा । मथुरा कहं उजकीन पयाना । मारग
पाय अनप श्रम घामा । देखि सघन कल तरु
वर छाया । वैठे भक्त हरष सख पाया । तहां

एक जीये जठिर सयानी। भक्तिमान दाया रतिसा
नी। पथिकन पान करावन वारी। चरवण चारू
देन हितकारी। देखि भक्त जन लक्षन वाला।
साम वरण मदु रूप रसाला। देन विमल
जल चर वणचारू। लागी करन शोक व्रत
धाहू। कवन जननि उर भागन देहा। कौन
विजगन वाल मदु एहा। सो कस जीयत।
वज्र उर धरनी। जव अस गिरा शोक।

डीय वरनी। तव माधव अस वचन सुनावा।
हृदे कवन शोक तोहि छावा। बोली जठिर
तास सुन एहा। तव लावा प्रवन कल गेहा।
तास अभागनि कर मोहि काहीं। भयो वि
लोकि शोक जियमाहीं। माधव सुनत वचन
नहि भाषा। वृथा कहन कछु हृदय न राखा।
निजमन भाव इक आसन चाहू। दीन विछा
य भक्त वन धाहू। तहि परमानसि देव स

५९
भ०
६८

68

ह्वोय। माधव संजन भक्ति बिठाये। करपद
प्रक्षालन प्रभु कीनो। चरवण मोक्ष जठिर।
श्रीपदीन्यो। भोजन राखि विमल जलधरयौ।
खान पान भगवान नव करयौ। बहुरि भक्त
कछु शेष रह्मावा। पाछे आप भक्ति जनपावा
भामनि जठिर देखि प्रम मेवा। बालरूप प्र
भु देवन देवा। सादिर प्रति प्रसन्न अनुरागी
वदन वचन मृदु भाषन लागी। मेजासोत

६८

व संत उदारा। सिन्हहिं दीन जहि प्रथम अहारा
तबहूं भक्त अस हृदय नराखा। हृदै मरम व
चन जाई भाखा। दोहा। दीन दया निधि कौतुकी
करि कौतुक निज चारु। कतहूं प्रकट करत हूं
दुरत महत नरन संसारु ।५। टीका। तब एक
समय माधव जी कासीमैसे अपनी कुटिया त्या
गकर मथुराको चल पडने भये तहां मारगमै
धूपकी घाम अर्थात गर्मीसे व्याकुल भयेहूये

४४ भं० ६४

61

एक वृक्षों की घनी और सीतल छाया देखकर।
सुखसे आसन लगाय देते भये तिस अस्थानपर
भक्तीमान और दयाकी मूर्ती एक वृद्ध स्त्री रह
तीथी सो धर्मवती पथिक जनो कों अर्थात रस
ते चलने वालोंको प्रेमसे जल पिलावती और
चबीना भी देती थी तब तिसने माधव भक्तके
साथ को मल अंगोंवाला एक स्याम सलोनी।
मूर्ती बालक देखकर बडीप्रीती से सीतलजल

ग्रोर चवीना देकरके हृदय मै शोक कर्नेलगी
कहतीहै कि देखो इह कैसा कोमल वालकहै
वैकोन जननी ग्रर्थात माताहै कि जिसने इस
कुमारके विजोगको सहारलिया ग्रोरवे ग्रप
ने हृदयको वज्र समान कठोर करके कैसे
जीवतीहै जव इस प्रकार तिस हृद्ध स्त्रीने क
थन किया तव माधव कहनेलगा कि हेमाई
तं ग्रेसे शोकके वचन को करतीहैं हृद्ध क

२४
भ.
८.

हने लगी कि हे साधु जिस माईका इह पुत्र तेरे
घरसे मेरकरके लेआयाहैं मै तिस अभागनी
का शोक कररहीहूं तब माधवने तिसकाक
थन सुनकर कुछ हृदय मे नहीं राखा फिर
अपने मनमाव एक सुंदर आसन विछाय
दिया तिसपर भक्ती प्रीतीसे मानसी भगवान
कि जोमन करके कलपना किये हुयेथे वि
ठायदिये और सनमान पूर्वक तिनके हाथ

८.

और चरन प्रक्षालन करवायकर अर्थात धुला
यकर सोचवीना किजो वृजरत्नीने दिया हुआ
था आगे राखदिया और सुंदर जलकापात्र
भी धरदिया तब दीनबंधूने प्रीतीपूर्वक खा
नपान किया तिनका कुछ शेष जो पीछे ब
चाथा सो मनमानसे भक्त प्रधानने आपपा
य लिया तब सो वृज भामनी बालरूप भग
वानकी ऐसी सेवा देखकर बडीप्रसन्न हो

२१
भं
५

य करके कहने लगी कि हे संत महात्मा मैने
तेरके अनतसे उत्तम और उदार चित देखाहै
क्योंकि जिसने इस कोमल बालक को प्रथम
ही भोजन दिया और सतकार कियाहै ऐसे
तिस भामनीने प्रकट भी कहा तोभी माथ
व उक्त हृदय मै नहीं ल्यावते भये इसप्र
कार कौतक की भगवान जोहैं सो अपने हृदरको
लकसे कहीं प्रकट और कहीं लुपत ।

५

होकर्कै संसार मै मानुष्यों को मोहित करते हैं ॥४

चौपाई । तब माधव हरिभक्त सुजाना । आगल चले सुमरि भगवाना । मारग देखि वारि वर छाया । वैठे तहां विप्र सुखपाया । करि स्नान भोजन मनभावा । हरिहिं रुचिर नैवेद लगावा । आप करन कछु चरवण चारू । चल्योभ क्तवर पंथसिधारू । तव इकमिल्यो वैस मग माहीं । संत रूप नकि माधव काहीं । वोल्यो

२९
भ
८२

नाथ असक मम गेहा। तहां चलहु नव दी
न सनेहा। मोहि कारज लागहिं कछु वेरा।
आय करहुं सेवन अभ तेरा। माधव सुनतक
थन असनेहा। दीविस आय वैस वरगेहा। भा
मनि नाम संत गृह आयो। देखिवंमन चरनन
सिरनायो। आगल रहो संत इकधामा। तहि
पैंलाय भक्ति जनभामा। बहुरि वदन अस व
चन प्रकासा। इन्हिकहं देहु निकट निजवासा।

बोल्यो सो अनंत विधि बानी। ईहांनवचो वस
नकर ठामा। भाखिस जीय विमान वरनोरा
तव इत वसहु सदन प्रभु तोरा। खान पान
करि जथा तुमारी। करहु कृपाल संत व्रत
धारी। माधव सुनत वचन असकारा। सुधे
अव न असन करि विराहा। तव जीय वैस निगु
ए वरभागी। संतसरोज चरन अनुरागी। से
वत भक्ति उगाध कलदीवा। सो प्रसन्न मन।

२९
भ०
७२

माधव टीका। आसिविदीन रुचिर हरखाई। तोरे सदन होहिं सतभाई। चारु वंसवर विमल वढावन। भगवन भक्त निपुण जगपावन। वहुरि नाम निज नाम सुनाई। भक्तसह भगचले सिधाई। दोहा। तव आयो निजसदन सभ भक्त वैस हुलसाय। पूछन से न आगमन कलत्रीय सन वदन। अलाय।२६। टीका। तव भक्त प्रवीन

७३

माधव जोहैं सो हृदयमैं भगवान को सुमरते

हुये तहांसे आगेको चलपडतेभये जाते जा

ते मारगमैं सुंदर जल और छाया देखकर

तहां सुख पूर्वक बैठगये और सोच सना

नकरके भगवानको नैवेद लगाया पीछे

चवीने मात्र कुछ आपभी अहार करके फि

र तहांसे चल पडतेभये। तब मारगमैं एक

कोई वैस भक्त मिलपडा सो माधवजीको से

२९
भ
७४

न रूप जान कर कहने लगा कि हेनाथ
रसने मैं अमुक मेरा घरहै आप कृपा कर्के
वहां चलिये मेरेको कुछ थोड़ासा कामहै ।
सोमैं करके अभी आवताहूं और भक्ती पीसी
मे आपका भजन सेवन करताहूं ऐसे सा
धवनी तिसका कथन स्रन कर्के वरतहीं ।
तिसके घरमै चले आये तव संत महात्मा
के घरमै आये हूये देख कर तिस वैसकी ।

७४

स्त्रीने नम्र होय कर चरनोंपर सीस नाया तहां
तिसके घरमै एक संत आगे भी रहता था तिस
के पास माधव भक्त कोभी लेगई। और कहने
लगी कि हे संत भक्त इनकोभी अपने पास
निवास देवो तब सो संत कहनेलगा कि ई
हां हमरेके वासते जागा नहीं है ऐसे सुन क
र सो भामनी क्रोधसे कहने लगी कि महारा
ज तुम आनंदसे ईहां वासकरो इह घर आप

काहीं है श्रौर खान पान भी जैसे तुमारी रुची है
तैसे करो तब सुन करके माधव कहने लगे
कि हे संत हित कारनी अब खान पान की तो
कुछ रुची नहीं है यद्यपि भक्त सूरूने अस्त्र
ई कार हीं किया तद्यपि तिस भामनीने कुछ
ड्रग्य मात्र भोजन लयायदिया सो तिसके बा
र बार कहने से माधव जीने पान कर लिया
श्रौर फिर प्रसन्न होय करकें आसीरवाद देतभये

माधव ८५ ८५

कि साई भगवान नेरे चरणै शुकदेव सो कैसा
कि तेरे वंसके बढ़ानेवाला भगवान का
दृढ़भक्त और गुणोंकीनिधी सब लोगों मे
उजागर होवे इस प्रकार वरदेकर और य
पना नाम सुनाय कर भक्त प्रधान तहांसे
चल पड़नेभये तब तिनके पीछे तिस ग्राम
नीका पती सो वैस भक्त भी घरमै आयगया
और संत महात्माके घरमै आनेका वृतांत।

४४ भ. ७६

सछुनाभया।४९। चौपाई।कौन गवन जिमि भ
क्त प्रवीना।प्रमदा कथन सकल तिमि कीना।
वैस सुनत पाछिल तव धायो।जावत भक्तस
ह पथपायो।करि प्रणाम यद्यपि हठ कीना।
तद्यपि आय न भक्त प्रवीना।कहिस वैस त
व सदन सुहावन।जव उपजव सुत सुजस
वढ़ावन।तव आगमन सदन तवमाहीं।
करहु भक्त संशय कछु नाहीं।अस कहि की

७६

न भक्त वर गवना। आयो सोपि वैस निज भ
वना। गयो कछुक जव काल विहाई। विप्र
अहीर वाद फलपाई। वंधा जनम वैस वरभा
मा। जनमन भई पुत्र अभिरामा। राम भक्तवि
द्या गुण नागर। करन कलिन निज वंस उजा
गर। उत माधव मथुरा पुरि आये। रंमय छवि
र देखि सुख पाये। जमुना नीर जात मति धी
रा। कीन सनान विमल वर नीरा। हरन त्रा

२९ भ० ७८

स सजन मनभावा। श्रीभगवान दरस कलपा वा। कालिंदी तट वहरि प्रवीना। भक्तसष्ट आ श्रम निजकीना। तव कछ वैस भक्त भगवाना अनथी संत देखि मनमाना। चरवण चणक देत सव काही। आवा भक्ति प्रेम मनमाहीं। माधव कहं दीने कछुसाई। लीने भक्त प्रीति र नहोई। भानसुता तट जान सुधीरा। करि प्रक्षा लन पट कर नीरा। हवि सोपान वैठि मनमा

ना। करि प्रक्षालन पदकंज नीका। सचि सौ
पान देवि मनमाना। करि अरपण हरष
भगवाना। पाछे आप हरष उरछाये। भक्त
रस कछु लीन सिपाये। ताहि समय हरिभ
वन सुहाये। षजक महाभोग विरचाये। दो
हा। मनभाव रूपानकेन कर धरन रुचिर
वरथार। चलि आये तव वहिर सव करि
सं लगन कवार। ६। टीका। तव जिम प्र

२९ भ० ७८

कार संत भक्त घरमै आये और चलेगये

सो सभीने सव कथन करदिया वैस भ

क्त सुनते ही पीछे धायचला और मारग

मै जातेहूये माधवजीको पायकर ले

जाने के वासते यद्यपि वहुतही हठ

किया तद्यपि भक्त प्रधान ने नहीं माना।

कहने लगे किहे वैस भक्त जब तेरे घर

मै साव और सजन के वषाने वाला।

पुत्र उतपन्न होवेगा तब मैं तेरे घरमें अवश्य
आऊंगा ऐसे कहिकर माधवजी चलेजातेभ
ये और ईहां वैसभी निरास भयाहुआ अपने
घरको चलाआया। जब कुछ काल वतीतहो
गया तब ब्रह्मणके आसीरवादका फलपाय
कर तिस वैसकी स्त्री कि जो जनमते हीं बांझ
थी वणसुंदर विद्या गुणप्रवीन भगवानका
भक्त और अपने वंसका उजागर करनेवाला

२४
भ०
५९

पुत्रजोहै सो जनमती भई और जहां माधव भक्त
जोहैं सो गवन करते हुये मथुरा पुरीमें चले
आये सोवही सुंदर और रमणीक भगवान
की नगरी देखकर हृदयमें परम सुखकोप्रा
पत होतेभये फिर जमुनाके किनारे पर जा
य करके सनान किया तिसते उपरांत आय
करके भक्तजनोंके भय हर करने वाला भग
वानका पवित्र दरसन जोहै सो पाया फिर ।

५९

जाय करके कालिंदी जो जमुनाजी है जिसके
किनारे पर आसन लगाय देते भये नव कोई
वैस भगवानका भक्त अनर्थी और संत भक्तों
को चरवण अर्थात चवीना वांटता हुआ च
ला आवताथा सो माधव भक्त को भी देख क
रके प्रीतीभक्तीसे कुछ चवीना देताभया नव
भक्तस्रष्ट मनमान पूर्वक लेकर और जमुना
के किनारे मे हाथ पाऊं धोयकर फिर बैठ।

२९
भे.
८.

कर प्रीती पूर्वक प्रथम भगवान को अरपण
किया और पीछे आनंदसे कुछ आपभी पाय
लिया तिसी समय भगवानके भवन मे रुज
क जो हैं सो महाभोग रचायकर और भगवा
नके आगे प्रसादका थालराख कर आपक
वाड मूंद करके वाहिर निकल आये। ८ ॥
चौपाई। बहुरि सकल मानस अनुरागे। एव
सि भवन जब देखन लागे। सोऊ चमाक मा

धव जोई दीने । पाये जगन नाथ तिन चीने । परे
कछुक भगवन वरष्यारा । महां भोग परि पूर
एसारा । पायो सो न भक्त भयहारी । भये चकि
त चित देषि पुजारी । अति चिंता ज्ञल करत
वषाना । जाय न मर्म देव कछु जाना । अस प
कार षिजिक मनमारे । तजि हरि भवन अन्त ज
ल मारे । परे विथत निद्रा जब आई । तब भगवा
न भक्त सषदाई । सपने कीन प्रबोध सुहावा

२५ भ० प।

8

तब कस हृदय छोभ निजपावा। नीलाचल गि
रि गेहु बिहारू। माधव नाम भक्त मम चारू।
तासु भक्ति जन मोहि सुहावा। चणक चारू नै
वेद लगावा। निजप्रीये भक्त सिमरपन सोई। पा
वामै प्रसन्न मन होई। ~~पावामे प्रसन्न मनहोई~~
तब चिंता जनि करहु सुजाना। माधव भक्त मोर
प्रीयप्राना। उठे देखि अस स्वपन पुजारी। माधव भ
क्ति जानि जीय भारी। बदन प्रसंसि विविध सनमाना

८।

मजक आय भवन भगवाना। तबतें अनसेषी
ति अनरागे। नित नैवेद देन तहिलागे। ७
र कर आन लोग समुदाई। लागे करन ता
स सिव काई। अस प्रकार कछु समय वि
तासा। एक दिवस माधव गुणरासा। हवि
भांडीर नामवन काहीं। गवनो भक्ति प्रीति
मनमाहीं। तहांएक देमा असनामा। रहा
प्रसिद्ध सिउ अभिरामा। तहिपे जाय भ

२९
भ॰
८२

क्रमनभावा। कौन कथन कछुज्ञान सुहा
वा। दोहा। देख्यो माधव दृगन नव रच्यो प
ल रथकाहु। कस्यो अछादिन वसन मन।
धस्यो ललन ललनाहु। १८। टीका। नव कु
छक वेरके पीछे जब पुजारी भवन के भीत
र जायकरके देखने लगे तब सोई चरणों
का प्रसाद कि जो माधव भक्तने अरपण कि
याथा दीनानाथने पाया हुआहै कुछकवरो

भगवान के थालमै भी पड़े हुयेहैं और महा ।
भोग जेोंका त्योंही परिपूर्ण धराहुआहै सो दी
न वंधूने कुछ भी नहीं पाया इस कौ तक को
देखकर पुजारी जोहैं सो वड़े आश्चर्जको प्रा
पत होयगये और चिंता करके व्याकुल भये
हुये कहते हैं कि भगवान की गती कछु ।
जानीनहीं जातीहै इस प्रकार सब इनक
मनमारे हुये अन्न और जल त्यागकर भग

२९
म
८२

वान के भवन के वाहिर पड़रहे जव तिनको
निद्रा आई तव भगवान स्वपनेमे प्रबोध कर
तेहैं कि हे ध्रुजक तुम अपने हृदय मै किस
कारण होभ पावते हो नीलाचल परवत की
गुफामै वास करने वाला माधव नाम करके
मेरा प्यारा भक्तजोहै तिसने भक्ती पूर्वक मेरे
को सुंदर चरणों का नैवेद लगाया सो मैने
अपने भक्तका अरपण किया हुआ नैवेद प

रम प्रसन्न होयकरके पाय लियाहै तुम चिं
ता मतकरो माधव मेरेको प्राणोंसे भी प्यारा
भक्तहै इसप्रकार स्वपन देख करके पूज
क जोहैं सो उठखड़े हूये श्रोर माधवजी।
की भक्ती अलौकिक कि जो लोकों मे नहीं
है ऐसी जान कर श्रोर अनेक श्लाघा क
र कर भगवानके भवनमे चले आवतेभ
ये तवतें नित्य प्रीती श्रोर सनमानसे माधव

जीको भगवानका पवित्र नैवेद जोहै सो देने
लगे और उरके सब लोग भी भक्तप्रधानका
भली प्रकार सेवन सतकार करने लगे इस
प्रकार कुछ समय वतीत होयगया तव एक
दिन माधव भक्त जोहैं सो आनंद पूर्वक
भंडेर नामा वणको चले जातेभये तहांएक
देमा नाम करके सिद्ध वडा प्रसिद्धथा ति
सके पास जाय करके माधव जी कुछ

ज्ञान ध्यानकी चरचा करते भये और फिर
क्या देखते हैं कि तिसने पृथवी को खोद
कर एक गढे मै सुंदर भोजन बनाय कर
के छिपाया हुआहै।१८। चौपाई। माधव दे
खि ताहि अस काहा। इह कस संत पदार
थ गाहा। सोबोल्या अस कपट प्रवीना।
दीन नाथ इह संतन दीना। दिन कहूं ह
वी मोर कछु नाहीं। करऊं अहार नाथ।

निसिकाहीं। काहूलखपत अस भाषि सुनायो
महाराज सठ कपट छलायो। उत्तम सरस
स्वाद जड़ पाई। विघन हूव कछु देहिं जि
माई। यातैं सठ निसि करहिं अहारा। अस
प्रकार जब नाम उचारा। तब माधव भाख्यो
नहिंकाहीं। उचित न करन पाक निसिमाहीं
अबहीं दिवस मम मनभावे भाई। लेहु संत
तब भोजन पाई। शेष विभगन करहु कछु

आना। ननर नरंत लपत नकि भाना। कृमि
जंत होहिं अन्न सब तोरा। संत निरंत्र वच
न इहमोरा। तोलोभास करत लपताना।
तास करत उदघाटन पाना। सोनिज चाह
पदारथ देखा। कृमी सकल पाँव परणाले
खा। ऐसा देखि चरित विसमाना। लागेणोच
रन जोरि जगपाना। तेऊ करम निज निदर
न सोई। संतत कृस भक्ति रत होई। वैठिस

२९
भ०
८६

माज संतजन माहीं। लगेपा करन भोजन दि
नकाहीं। पिरि हरि सकल हेष डरनाई। तत
पर भयो संत सिव काई। माधव भक्त प्रसाद
सुहावन। भयो प्रसंत संत जग पावन। भ
क्ति प्रसाद सुलभ संसारहिं। नरोा प्राप्त पुनि
लोकन तारहिं। दोहा। तव माधव यात्रा अ
खिल करन हुलस पुरिमाहिं। प्रावा विचरत
विपुन पुर गिरि नीलाचलकाहिं। ९९। टीका

तव माधव जीने तिसको कहा कि हेमंत इह
कैसा पदार्थ राखा हूआहै सो कपट से कहने
लगा कि महाराज इह पदार्थ संतोने दिया हू
आहै दिनमें मेरेको खावनेकी रुची नहीं हो
तीहै रात्रीके समय आहार करताहूं तव किसी
ने सहजेही माधव जीको कहिदिया कि महा
राज इहजड़ सखा अधीन झूठ बोलताहै उ
नस रसवाला भोजन आप पाय लेताहै और



हला खा पीछे औरों को दे देताहै ईसीतें अ
धम राझी को आहार करताहै जब इसप्रकार।
माधवजीने श्रवण किया तब तिस साधुको
कहनेलगे कि भाई राझीके समय आहार क
रना योग्य नहींहै अबही दिनको मेरे सनम
ख भोजन पायलेवो और बाकी जो बचेगा सो
औरोंको बांट देवो नहींतो सूरज के अस्त।
होनेके पीछे इस तमारे भोजनमें किरम पड

जावेंगे इह मेरा वचन सत्य करके है इसमेंकु
छ संशयनहीं इस प्रकार वारना अलाप क
रते करते सूरज जोहै सो लपन होयगया त
व सो साधू उठ करके तिस भोजन को जो
देखने लगा तो क्या देखताहै किव सब भो
जन कृमीके सहित होगया अर्थात किरम
पेरे हूयेहैं तब तेसा देख करके बडे आचर्ज
को प्रापत हूया और हाथ जोडकर माधव

२९
भ०
८८

जीके चरनोंपर सीस नावता भया फिर अनेक
प्रकार आपको धिक्कार करकर और तिसकु
करमको त्यागकर कृष्णभगवानकी भक्ती मे
लीन हो जाताभया तिसदिनतें संत समाजके
बीच बैठकर दिनविखे ही भोजन पायलेता
और हृदयमे द्वेष और कुटिलताको त्यागक
र संत भक्तों की सेवा करने मे ततपर होगया
ऐसे माधव भक्तके प्रसादसे सो असंत जगत

मै संतरूप होय करके इस संसार समुद्रसे स
हजेही तरगया और लोगोंकोभी तारताभया
तब माधवभक्त गोसाईं सो हुलस भरीकी जहां
तहां सब यात्राकरकर फिर नगर ग्रामो औ
र वनों मै विचरते हुये नीलाचल परवत
को चले आवते भये। ५९। चौपाई। मारग ता
ह वैस कर गेह्। आसिष दीन सवन हितजे
ह्। आवा हृदय हरष निजमानी। तेदंपति

जग जोरित पानी। स्रवन सहित पावन पग लागे। संज्ञत प्रीति भक्ति अनुरागे। तिनकहं कृत्य कृत्य जग कीने। कमल सरोज चरन मन लीने। विहरत जगननाथ पुरि आये। तेप्रभु। अखिल लोक सव दाये। करि प्रणाम नयन न भरि देखे। उदय भाग निज संस्रुति लेखे। दोहा। जोलो रहेसि जियत जग माधव भक्त प्रवीन। जगन नाथ स्मरण भजन रहे दि

८५

अथ श्रीधर स्वामी चरित्र ॥ दोहा ॥ अवधै अद्भुत चरित्र वर निजलखु मति अनुगामि ॥ वरनहुं सा दिर भक्तिप्रद सुंदर श्रीधरस्वामि ॥ चौपाई ॥ पूरव एक विप्र गुणधीरा ॥ वेद वेदांग निपुण मतिधी रा ॥ शंत दांत गतक्रोध सुहाया ॥ परम प्रवीन निरत द्विज दाया ॥ अतिविद्वान सील सुभचारी ॥ तेज समूह विप्र व्रतधारी ॥ अगनि होत्र इत्यादि क करमा ॥ विधिवत करत विप्र रतधरमा ॥१॥

८९
भ॰
१

स्व उकत विधि संस्कृत नेह्ह । भयो सिद्ध द्वार परिग्रेह्ह । निज महेश धीमान स्वहावा । विप्र प्रवीन पुत्र उपजावा । दोहा । भोग विरक्त स्वभक्तवर विज्ञधर धरि धनिजाय । देखीभये सुदेठ ग्रन्त सवि सन्यस्त पदपाय । । १ । टीका । अव आगे ग्रौर वडी उत्तम ग्रौर भक्तीकेदेनेवाली श्रीधरस्वामीकी सुंदर गाथा जो है सो जैसीक मेरी बुद्धउ दीहै तिसके ग्रनुसार गायन करताहूं हे संतज

१

नो आपध्यानदे करके श्रवण करिये हरव का
लविखें अर्थात अगले समयमे एक सील औ
र गुणोंकी निधी विषयोंसे रहित वडाईदेनीत
ब्रह्मण होताभया और भी कैसाकि वेदविद्या
रमै प्रवीन दया औरधर्ममे उजागर महा वि
द्वान तेजस्वी और शुभ आचारीथा नित्यअग
नी होत्र इत्यादि अपने करम और धरममे
भलीप्रकार ततपर रहताथा जब तिस ब्रा

५६
भ.
२

ब्राह्मणने विवाह करके द्वारा जो स्त्री है तिसको ग्रहण किया तव समय पाय करकें अपने समानही परम बुद्धीमान पुत्रजो है सो उत्पन्न करलेता भया जब घरमैं पुत्र होयगया तव ब्राह्मण भोगसे विरक्त होयकर औार शिव पुरीमैं जायकर विधि पूर्वक दंड गृहण करकें सन्यासजोहै सो धारन करलेता भया। २। चौपाई। विधिवत अस सन्यास जव लयऊ। श्रीधर स्वामि वि

दन नव भयौ। वेदाध्ययन करहिं नितनाहो।
वैस्नव भक्ति निरत उजनाहो। अग्मन अनाविवा
ह व्रतधारो। विषय स्वावादि सकल वप्रहारो
जगान नाथ जग देखि निरंतर। सोहं सोऽहवद
नहह मंतर। वासर एक भागवत काहीं। रहे
विचार भक्त मनमाहीं। नामथ भक्ति महातम
चाहा। देखो अदभुत अमल अपाहा। व्यासदेव
कृत सोऽ सुहावन। सुधासमूह जनहुं जग।

४५

भ.
२

3

पावन। सरव शास्त्र सम्मति जनवाहू। पठन प्रबो
ध बोध मनमाहू। तरण पोत भव वारधकेरी। पे
कलिष्ट कोविदसव हेरी। सकहिं ननास्त्र ययन
करिनीके। ज्ञान विराम सकुच बस जीके। क
वहुंकि दीन थाल पतिमाया। सोपें करहिं कृ
पानिधिदाया। तोभै हृदय धरत व्रत नी
का। विर चहूं विमल भागावत टीका।
सोरठा ॥ प्रस प्रकार जव कीन ॥

२

श्रीधर स्वामी हृदय मणि। नव निश्चय हढ ची
न दीन ध्याल दायक सुजस। दोहा। विंह माथ
व ललित छवि कोटि मदन दमनीय। अर्ध निशा
सपनैन वदन भनत वचन कमनीय। २। टीका।
ऐसे जब विधीवत सन्यास धारनकर लिया
तब श्रीधरस्वामी नाम करके प्रसिद्ध होजाते
भये और वैस्नव भक्तीमे लीन होयकर नि
त्य रात्रीदिन वेदविचारमैंही लगेरहतेथे और

५६
भ०
४

शरीरके विषय सुख आदिक सब त्यागकर अ
नाथी ब्रतजोहै सोई धारन करलिया कि अनिछ
तजो आजावे सोपाय लेना नहीं तो हरी रछा स
र्व जगत को जगत नाथ भगवानकारूप जान
कर परम पवित्र सोहं मंत्रजोहै सोई आधार रा
खते भये तब एकदिन स्वामी बैठहूये श्रीभा
गवत जो विचार रहेथे तो तिसमें तिनोनेभक्ती
का एक अदभुतनहीं महात्मदेखा सो कैसा कि स

४

वे शास्त्रोंकी सम्मती करकें शुक व्यासदेवजीका
कथन कियाहूआ तथा जो अमृतहै तिसका
समूह और संसार समुद्रके तारने का जहाज
पंडित विद्वान जोहैं तिनके लिये बोध प्रबोध
कामानो एकसार और सर्व जगत का पवित्र
करनेवाला परंतु महा कालिष्ट अर्थात बडाक
ठिन कि पंडित प्रवीन तिसके अर्थको नहीं
पाय सकतेथे विचारते विचारते थकत होय

४५

भा॰
५

कर रहिजानेथे ऐसे तिसको देखकरके स्वामी
हृदयमै कहनेलगे किजो मायाके पती और द
याकीनिधी दीन हितकारी भगवान मेरेपर अ
पनी कृपाकरैं तोमैं हृदयमै ब्रत और प्रणधाव
करके इहवडी निरमल और सुंदर श्रीभागवत
की टीका जोहै हृदय मै सत्य करके प्रणधावन
किया तव तिनका हृढ निश्चय देख करके दी
न हितकारी और दीन भक्तोंका सन्नसके देने

सोश्रमकर्के रचताहूं
इसप्रकारजवश्रीधरजीने

बोले विंदुमाधव भगवान कि जिनकी सुंदर छ
बीके आगे कोटि कामदेवकी शोभा भी फीकी
लागतीहै आधीरात के समय सपनेमें जिस
प्रकार मनोहर बानीसे सुंदर प्रबोध करतेहैं
सो आगे कथन किया जाताहै।२। चौपाई।सु
नहु स्वामि चिंता जीय त्यागी। सुंदर सकल लो
क हितलागी। चाहु भागवन केरि सहाई। टी
का करहु भक्तमन लाई। यामध इमन महा

४५

भ. ६

नम जोई। गोप्यन सकहिं तास लखिकोई। तोतेत
सहं यतन समहावा। करहु प्रकट सोऊ भक्तउ
दारा। कथन नमार सत्य सबहोई। मोर वचन
संशय नहिंकोई। जोलोमोर अवनि तलनामा
तोलो नव सजस्स अभिरामा। संसृति वैहिं भक्त
वरक्षावा। असजव कृपा नाथमनकावा। उठे न
रन निद्रागत भययो। समरन स्वपन मोद मन
छययो। राखि चरन उरभक्त सहायक। सारदा

अस कहत बुझाई। सुनहौ विनय मोर मुनि
राई। प्रभुनम कहा नवन वर देना। मै अव
धप भगवन सोईलेना। आपन ववन सत्यअ
व करहौ। प्रणकृपाल निजनाहिन हरहौ।
बोले एवमस्तु मुनिनाहो। अवमैं करहुं ध्यान
त्प नाहो। तवमुनि एक दिवस वनकोने।
शिषगण सहस्त्र संग निज लीने। पांडु ६
त धर्म सुत आरी। कानन नहां वसहिं सुत

१८
भ
६

6

बारी। जब मध्यान काल रवि आवा। द्रोपदि ली
नसि भोजन पावा। तब साक्षात क्रोध धृत रू
पा। अति पर ज्वलत तेज मुनि भूपा। सनमुख
जबहिं धरम निधि आये। आवत देखि संत स
मुदाये [illegible] उठे राऊ ततक्षण गति दीना। पंचुप
चार शिवन [illegible]न कीना। अतसे प्रेम सजन
मतिराई। सा[illegible]ल आसन बैठाई। सन मु
ख बैठि जुगल करजोरी। विनय करत उर।

६

प्रीतिन घोरी। बहु विधि करि अस्तुति म
हिपाला। करुना धन्य नवदीन दयाला। प्रा
न धारि निज चरन सुहावन। मुनिवर की
न मोप गृह पावन। सोरठा। तव मुनि नाथ
बखान। मैष्कादशि शिषनजुत। धन महि
पाल सुजान। निरा हार धारन करो। दोहा
प्रातभाय द्वादशि दिवस सहित शिषन स
मुदाय। आये लखन भवन नव भोजन देहु

३८
भ
८

जिमाय। टीका। दुरयोधन को कहताहै कि
हे दीनदयाल मुनीनायक जो तुम मेरेपर प्र
सन्न होय करके वरदेना चहतेहो तो मै हे
कृपा निधान अपनी इछाके अनुसार वरमां
ग [illegible] ऐसे सुन करके मुनी कहने लगे
कि तु[illegible] मनको भावताही वरमांगो मै
तेरेको देताहूं [illegible] वराजा चरनो को पकड क
र कहने ल[illegible] किहे नाथ पांडूपुत्र जोहैं सो

८

आपको विदित है मेरे आत्मा हैं वे इस समय व
णमे निवास करते हैं अब मैं चहता हूं कि जै
से आपके आगमन अर्थात आने से इहमेरा
घर पवित्र होय गया है तैसेहीं कृपा करके
उनका घरभी अपने चरनोंसे पवित्र करिये
सो कैसे कि संपूर्ण शिष्योंके सहित आप
एकादशीका निराहार व्रतधार कर द्वाद
शीके दिन तहां वणमे कि जहां पांडुपुत्र ।

१८

भ.

८

निवास करते हैं जाईये परंतु तब जाईये कि

जब द्रौपदी भोजन पाय चुकीहो और तिस

के पीछे तहां अपने समेत सब शिष्योंके वा

स्ते भोजन मांगिये इस प्रकार राजाका क

थन सुनकर मुनी दुरवासा जोहैं सो अनेक

प्रकारसे [illegible]नी निंदा कर कर कहनेलगे

कि जो कदाचित इह प्राण कंठगत भी हो

जावें अथवा निकलनेको कंठमेंभी आजावें

८

नोभी उष्ट ग्रोर अधम पुरषजोहै तिसकेवश
नहीं परना करिये इहवडीमानो की शिक्षाहै
कों कि उष्ट पुरष तिस मार्गको आपजानता
चलता है अधम ग्रोरों को भी उसी मारग
का उपदेश करताहै अधम ग्रोरों को भी उ
सी मारगका उपदेश करताहै ऐसे विचार
करके मनीनायक उरवासानीने राजाको
अनेक प्रकार की नीती सुनाय सुनाय कर

१८
म
९

के वहुतनहीं समझाया। परंतु तिस मंदके हृदय
मे कुछ भी वोधनहीं होताभया वार वार यही
कहताहै कि भगवन आपने जो मेरेको वर
देना कहाहै सो प्रभु मैने अवश्य लेनाहै अ
व अपना वचन जोहै सो सत्य करिये और
प्रणको [illegible]रिये ऐसे श्रवन करके मुनी क
हनेलगे कि [illegible] राजन अव तेराही अर्थ सिद्ध
करताहूं मे तहां जाताहूं तव एक दिन मुनी

९

नायक एकादशीका व्रतधारकर और अप
ना हजार शिष्य साथ लेकरके जहां वणवि
वे वे सनत्वाटी राजा धर्मसे लेकर पांडूउ
त्र निवास करतेथे जब द्रोपदी भोजन पा
य चुकी तो तहां जाय प्रापत होतेभये ऐ
से कोपकी मूरती और महा प्रज्वलन ते
जवाले मुनीको शिष्योंके सहित सनमु
ख आवते देखकर राजा उठ खडाभया औ

१८
भ॰
१०

र दीन गतीसे आगेही जाय कर चरनोपर
दंड प्रणाम करके लेआया और सनमान
पूर्वक भक्ती प्रीतीसे पवित्र आसन परबै
ठारकर गंधपुष्प धूपदीप नैवेद से लेकर
पंच उपचार पूजन जोहै सो किया फिर
अनेक प्रकारकी प्रसन्नती कर कर और
हाथ जोड कर विनती करने लगा कि
हे मुनी कृपाल तुम धन्य हो किजिनो ने

अनंत दयासे अपने चरन धारकर मेरे इस १
घरको पवित्र कियाहै तब मुनी दुरवासा जी
कहने लगे किहे राजन मैने शिष्योंके सहि
त एकादशीका निराहार व्रत धारन किया
था सो आज द्वादशीका दिन पाय करके स
ब शिष्योंके सहित स्नान भयेहुये तेरे घ
रमे आयेहैं अब राजन हमको भोजन जि
मावो और हमारा आशीरवाद जोहै सोलेवो २

३८
भ॰
॥

चौपाई। सुनत श्रवण अस वचन मुनिंद्रा। सो
चित उर नृप धरम धुरिंद्रा। जोइन कहं भोज
न नहिं देहीं। तो अति पाप आपपें लेहीं। अ
स विचारि नृप कहत सुजाना। करहु जाय प्र
भु आशु सनाना। मैं कृपाल दीनन सुखदाई।
लेहुं [illegible] भोजन वनवाई। सुनि अस श्रव
ण भूप मा[illegible]ाथा। शिषगण लिये संग मु
निनाथा। गये सनान करन नदितीरा। नव

॥

पाछे भूपति मति धीरा। कहत द्रुपद नंदनि
सनवाना। पीया अनल मूरति साक्षाता। उर
वामा [illegible] आज हमारे संजत शिषन चरन
निजधारे। सोतिन कहे संजत सनमाना। हम
भोजन निज भवन जिमाना। तव द्रोपदि अस
विनय वखानी। दीनानाथ सत्य तववानी।
पैप्रभ मै भोजन करिलीना। वनहिं वात क
स जाय नवीना। जहि उपाय मुनि भोजन क

रहीं। मोरे नाथ जानि नहिं परहीं। सोरठा। पैइक कृपा निधान। करहुं आराधन हृदय निज। कुलदेव भगवान। जो प्रभु अब रक्षा करैं। ३। टीका। तव ऐसे मुनीके वच नें [illegible]कर धरम के धारने वाला रा जा [illegible]श्वर् जोहै सो हृदय मे विचार् करताहै कि जो अब इनको भोजन नहीं देऊंगा तो महा पापका अधिकारी हो

ड़ेगा ऐसे सोच कर तिनको कहने लगा कि
हे मुनी म[illegible]राज आप जाइये और स्नानक
रिये [illegible]पानिधान तुरत भोजन बनवाय
लेना[illegible] ऐसे राजाके मुखसे वचन सुनकर
संपूर्ण शिष्योंको साथलेकर मुनी दुरवासा
जी जोहैं सो स्नान करनेके वासते नदीपर
चलेगये तब पीछे बड़ा धीरजका धामराजा
युधिष्ठर द्रोपदीको कहनेलगा किहे प्यारी

१८
भ
१३

13

आज साक्षात अग्नी की मूरती मनी दुरवा
साजीने शिष्योंके सहित हमारे घरमे चर
न धारे हैं सो तिनको सनमान पूर्वक इहां
घरमें भोजन अवश्य जिमानाहै ऐसे पतीका
वचन सुन कर द्रौपदी कहने लगी कि महा
राज आपने सत्यकहाहै परंतु मैने भोजन
पायलियाहै अब कैसे बात बनेगी और कौन
उपायसे मुनी भोजन पावेंगे मेरेको कुछ जा

१३

ननहीं पडता है परंतु हे नाथ अब एक य
तन है कि हम भगवान का आराधन कर
ती हैं क्योंकि इस समय हमारी रक्षा करने ।
को कोई दीनबंधु सामर्थ्य है और तो कोई दे
खनहीं पडता है ।२। चौपाई । कहि अस न्टप
हिं वदन गति दीना । हृदय स्मरण जगत
पति कीना । हे चक्रायुध हे घन श्यामा । हे ह
रि हरन कोटि छविकामा । हे सरोज दृगा

१८
भ॰
१५

सज्जन रंजन। दीननाथ भव भीत विभंजन हे हरि धरन अनेक अवतारा। भक्तन खेद हरन महिभारा। सेवत सुलभ सकल प्रद कामा। हे अनंत माधव गुण धामा। हे प्रभु अखिल भवन नट नागर। हरन दोष दारद सुखसागर। अब इहि अवसर दीन दयाला। दुरवासा मुनि कोप कराला। जन हुं अनल अति चंड महाना। नहितें राखले

१५

14

हु भगवाना। नहिं तो करहिं भस्म मुनिस्वामी
होहु सहाय भक्त अनुगामी। इहि अवसर
रखवार हमारे। तुमहूं हरन दुख वारन वारे
जिमि डरयो धन खरब काला। लोका भवन
विर्चन विसाला। तहां हमहूं करि आपन मो
ई। लागयो नष्ट करन रिष होई। तहां कृपाय
सिंधु भगवाना। राखलीन हमरे तवप्राना
तिमि हमार अब त्रिभवन नायक। प्रणत

१८
भ
५

पाल प्रभद्रोह सहायक। नव द्वारावति कृल मरारी। दीन वचन श्रम दुपद कुमारी। ह्र दय जानि जनि तकमनि शयना। दीननिवा अभक्त सावदयना। वाहन विगत वेगजन लागी। गरुड चक्र चेटक विनत्यागी। विपु रनपीन वसन सरनाहा। आये शीघ्र प्रातश भनाहं। देखे दुपद सुता भगवाना। पदचर गनी आय गजयाना। करहन नाथ भवभीन।

५

विभंजन । आये आपु जनन मन रंजन । प्रभ
कहं भये चित भ्रमभारी । भ्रमनभवन मुख
विनय उचारी । सादिर आसन दीन बिछाई ।
राजिय ईहां जनन सुखदाई । सोरठा । पदम
रोज भगवान । मैं प्रक्षालन करहुं अब । सोनि
अस कृपानिधान । कहासनहु नेदनि डुपन
टीका । इस प्रकार वशीदीन वानीसे राजाको
कहिकर फिर हृदयमें जगनपती जो कमल

१८
भ
१६

16

भगवान हैं तिनका स्मरण करनेलगी औ
र कहतीहै कि हे चक्रके धारनेवाले हे घन
स्याम हे कोटि कामदेवकी छबीको लज्जा
देनेवाले हे कमल नैन हे सज्जन सुखदाय
क हे संसारका भय हरकरने वाले दीनाना
थ हे कृपा सिंधू हे अनेक अवतारोंके धारने
वाले हे भक्तजनो के सुखदायक हे पृथवीकाभा
र हर करने वाले हे भगवान तुम केसेभीहो

१६

कि सेवन करने वाले पुरुषों को सहजेहीं का
मनाके देनेवालेहो और अनंत हो तुमारा अं
त भी नहीं आवताहै हे सर्व भवनोंके पती
हे लक्ष्मीनाथ हे दुष्ट दोष और दारिद्रोंके
हरने वाले हे गुणोंके धाम हे सर्वोंके सम
द हे दीन बंधु अब इस समय मनी डरतासा
नोका अति प्रचंड अगनीके समान महां क
ठिन कोपजो है तिसतें हमको कृपा करके

१८
भ
१८

राखलीजिये नहींतो इसअगनी सेही भस्म कि
ये चहताहै हे भक्तपाल हमारी रक्षा करिये
इस समय हमदोनो की सहायता करनेको
हे गजके बंधन काटनेवाले भगवान तु
म्हीं सामर्थ्यहो और कोई नहीं देखपड़ता
है हे कृपानिधान जिस प्रकार पूर्व काल
विषे दुर्योधनने शत्रुपनसे लाखाभवन
बनाय करके हमको तहां मारनेके लिये

१८

निवास दिखाया और दीनहितकारी तहां त
मनेहीं आप गृह करके हमारे प्राणें की र
क्षा करीथी तैसेहीं हे भक्तपाल अब भी त
महीं हमारी सहायता करो और इस मुनी
के महांकोपसे बचाय लेवो जब इस प्रका
र द्रोपदीने वडेदीन वचनोसे प्रार्थनाकरी
तब द्वारिकामे कृष्णभगवान जो घट घ
टके अंतर जामीहैं ध्यान करके ततकाल

१८ भ १८

रुकमणी की सेनासे उठकर और अटपटा
हीं इधर उधर विथुराहुआ पीतांबर लेक
र चक्र और गरुड इत्यादि सब भूलेहूये
पांओं पयादे ही धाय कर प्रार्तकाल होते
हीं तहां आय प्राप्त होतेभये तव द्रुपदसु
ताने देखे कि भगवान गरुड रथ इत्यादि
वाहनसे रहित पांओं पयादेही चले आये
हैं हृदय मे कलेश मानकर कहने लगी

१८

18

किरे संसारका भय हर करने वाले और दा
स जनों के हृदय को आनंद देनेवाले भग
वान आप आयेहो मै जानतीहूं कि दीन
बंधू को इस समयविषे आवनेका अत्यंत
श्रम और कलेश भयाहै ऐसे नम्र बाणी
से वचन उच्चारकर बडे सनमानसे आस
न बिछायदिया और हाथ जोड कर क
हने लगी कि कृपानिधान ईहां विराजि

१८
भ
१९

19

ये मैं आपके चरन कमलों को प्रक्षालन कर
तीहूं अर्थात धुलावतीहूं तब भगवान तिस
की वाणी सुन कर बड़े हरष को प्रापत हु
ये और कहने लगे कि हे राजा द्रुपदकी क
न्या सुनले मेरा वचन जोहै सो श्रवणकराध
चौपाई। मोरे इहि सब सरवउ भागी। तृष्णा
उदर कठिन अतिलागी। भोजन देहु जवन
कछु तोरे। तासे तोष होहिं जीय मोरे। सुनत

१५

वचन अस द्रुपद कुमारी। सोच विवस अस

विनय उचारी। अब अवसर मध्यान विहा

वा। मै लीनो भोजन अभ पावा। कोउ यत

न अब वन नहिं आवहीं। दीनदयाल कछु

जानि न जावहीं। तब भगवान मख कहा व

झाई। पाक भवन तव द्रोपदि जाई। देखहु

अलप मात्र कछु होई। तो भोजन मोरे तव

सोई। ल्यायदेहु अब वेग प्रवीना। भैदप्पा

३८
मे
४०

पीउन ग्रति कीन्हा। सुनि प्रभ वचन परम सु
नरमनी। लाजत ग्रधो वदन गति गवनी।
करत जात चिंतन हरिलीला। का देखेहिं त
हैं नाथ सुप्रीला। पाकनकेन शाक कछु।
थोरा। सगिरह्यो भाजन इक ग्रोरा। तासु दे
खि भाषत मनमांही। इहितें सरहिं काजक
छु नाहीं। थाव दई चलत नाहीं वस मोरा।
इह तोरहा शाक ग्रति थोरा। ग्रावन चलतक

४०

छमोव अनासा। अस विचारि आई प्रभपासा

संजुत सकुच नम्र मृदु वानी। विनय युक्त

कर जोरि लजानी। भाखत भोजन दीन स

नेहू। निकस्यो शाकमात्र कछुएहू। काहे

करहु निधि मोही। पावन देत लाज जीय

मोही। सुनि अस भने कृष्ण सुखगेहा। मोहि

कहं विपुल देहु नव एहा। नव नहि रागविदी

न मदमानी। परण शाक कल भगवनपा

३८ भ ११

नी। कृपानकेत नाथ मावपाई। भने वचनय
स उर हरषाई। अब इहि शाकमात्र मनहोई
रपति सरब विश्वातम तोई। हु प्रसन्न मन
वहुरि कृपाला। कहिस वदन निज वचनर
साला। हुन द्रोपदि तव मनकर तोई। अव
संकल्प सिद्ध सब होई। असकहि उठे दीन
उपकारी। करत करन प्रक्षालन वारी।
सोरठा। वैठि हाथासन घाल। धरम सुवन

२१

सन सहित सन। वचन अलाप रसाल। ला
गे नाना भनन प्रभू॥५॥ टीका। दीन वंधू क
हते हैं किहे वडभागन द्रोपदी इससमय
मेरेको त्वध्याने वहुत व्याकुल कियाहै तो
ने ऋषीलें तूं जलभोजन पावनेके लियेदे
जोमै इस त्वध्याको निवारण करूं और मै
तोषको प्रापत हूउं ऐसे भगवानके मुख
से वचन सुन करके द्रोपदी परम सोच के

१८
भ०
२२

वश होय करके विनती करने लगी कि हे भ
गवन अब मध्यान समय होयगया है और
मैं भोजनपाय चुकी हूं अब दीनानाथ मेरे
को कोई उपाय सूझ नहीं पड़ता है और
क्या करूं कुछ बननहीं सकता है ऐसे ति
सका वचन सुन करके भगवान कहने ल
गे कि हे द्रौपदी तूं अपने पाकभवन अर्था
त लंगर विषैं जा और तहां से थोड़ा बहुता जे

२२

सो कछु भोजन मिले सो लाय करके मेरेको
दे क्यों कि मैं क्षुधा करके बड़ा पीड़ित और
व्याकुल होय रहा हूं इस प्रकार भगवानका
वचन सुनकर द्रौपदीजो हैं सो हृदय मैं बड़ी
लज्जा माने हूये और नीचे मुख किये हूये
भगवान की लीला चिंतन करती हुई आप
ने पाक गृह मैं चली गई तहां जाय करके
क्या देखती हैं कि एक बटलोही के बीच।

१८
भ
२२
23

एक पासे कुछ थोड़ासा मांग लगा हुआ है
जिसको देखकर कहनेलगी कि इससे तो
कुछ काज सिद्धनहींहोता इह वहनहीं थो
डा है हे देव क्या कहूं मेरा कुछ वशनहीं च
लता है इस प्रकार सोच करतीहुई भगवान्
गवानके पास चलीआई तब तहां लज्जा औ
र सकुचके वशभई हूई वडी कोमल विनती
की भरीहुई वानीसे हाथ जोड़कर कहनेल

२२

गी किहे प्रभु तहां पाक शालामें इह ऊच्छिष्ठ
शाक पात्र भोजनजोहै सो निकलाहै श्री
व कृपानिधान आपको क्या देऊं इसके देतेभी
लज्जा आवतीहै तब भगवान कहने लगे कि
हे कृष्णीले इह मेरेको इतनाही बहुतहै तैसो
च और संकोच को त्याग करके शीघ्रदेदे
ऐसे सुनतेही द्रोपदीने आनंदसे सो साग
एक कण अर्थात तूनेमे धरकर दीनानाथ

३८ भ २४

के हाथमें देदिया तब भगवान तिसको मुख मे पायकर बडे हरष पूर्वक कहने लगेकि अब मेरे वचन करके इस शाक मात्रसे संपूर्ण जगत त्रपतीको प्राप्त हो जावे और वहे द्रोपदी नेरे मनका अर्थ और संकल्प जो है सो सब सिद्ध होवे ऐसा वचन उचार कर हाथ सिंघ भगवान उठखडे हुये और कमलोंको लज्जादेने वाले कोमल हाथ

२४

जोहैं सो जलसों प्रक्षालन करके फिर आनंद
से आयु भरिके सुंदर सुखासनपर वैठगये औ
र ज्ञानधर्म जो जुधिष्टर है तिसके साथ अ
नेक प्रकार की वारता अलाप कर कर फिर
ऐसी आज्ञा देते भये सो आगे कथन की जा
तीहै।५। चौपाई। मुनि उरवासाफें नवराई। अ
ल आपन अवदेहु पठाई। उतमसन भनहिं वि
लंव नलावहु। करि सनान मुनि नायक आ

२८
म०
२५

25

वहु। भई वेर वहु वनी रसोई। पावहु आय म
दिन मनहोई। प्रभु यन्नमास पाय छिनराई।
वोलिलेग डुजदीन पठाई। कहहु तोर आग
मन मतीसा। परनीदा करि रह्योनरीसा। क
व मनि नाथ शिषन जुत आवहीं। हरषि भव
न मम भोजन पावहीं। डुज संदेस जाय जब
दीना। भये सोचवस मुनिन प्रवीना। प्रथम
प्रभाव वचन भगवाना। भयोसि नृपतिविष

३५

सब नाना। तांते कछु अभिलाष नरह्यैो। सं
मत शिषन त्रपन मनि भयय्यो। सुनि उज
वचन पाय मनि मरमा। संध्यादिक पवि
हरि सब करमा। भलहिं निकट निज उज
हिं विठाई। लागे कथन करन मनिराई। सु
नहु विप्र अस वचन हमारे। कहहु न्रपहिं
मै भवन न्हमारे। जहि प्रकार आवा सत ध
रमा। सो सब करहु प्रकट अव मरमा। ह

सतन नगर दिवस इकपाई। गयो भवन उरजो
धनराई। तहां भक्ति संन्तन अभिलाषा। विपु
ल दिवस मोहि भूपति राखा। सुचि सतकार
नवल नितपायौ। भे प्रसन्न तांके वश भय
यौ। तब तहि भयो मंग ... राई॥ जो नमा
र मा... सरदाई। मांगानास भूपवर एह।
मोर आगमन भवन तव जेह। अरु जब स
ना इपद ...रारई। कहिमलेहि मनि भोजनपाई

१९

नोपाछिल गम नहो रसोई। जाचन करहु म
दिन मनहोई। नाम वचन वसहोय भयाला
मै सायाता नव भवन रसाला। प्रथम असीर
वाद इज देहै। वहुरि हतांन सकल अस।
कहेयै। अव इछा भोजन मोहि नाहीं। मैप
सन्न सव विधिमन माहीं। मोर वचन कर
नृपति सुजाना। होवसि नमहिं सुजस क
ल्याना। असकहि कीन गवन मुनिराई ॥

१८
म.
५८

ईहां विप्र छिनपलपें आई। सकल वृतांत दीन समकाया। हृदय आनंद भूपवर पाया। कह न विदन करुणा इह सारी। कुलदेव दीनन हितकारी। पुनि वरना कछु और सुहावन। वहे लगत प्रभुमानस भावन। अस इह चरि न चा[illegible] सुखदायन। मैं सब सम कीन कछु गायन। इपर भूप कन्यावर जोई। देखहु ता सभ छिव सजोई। कृपासिंधु दीनन हित कारी। प्रण

५८

न पाल प्रभु भक्त उवारी। पद चर विप्रन द्वारि

कानुरागी ॥ आय कृपाल पांडवन लागी। अस

विचारि दोया निधि कोहीं। सुमरहिं अपद

काल न्यायमोहीं। कष्ट दोषडरव कल विहाई

लेहिं सुप्रभु प्रसाद सुखपाई। दोहा। डुपदसु

ता कर भक्ति भव ललित महातम पहु। की

न कथन कछु प्रीति मत सुनहिं श्रवणपर

नेहु। तांके उर आन पायनी हरन सकल भ्र

१८ म २८

मभीत। हस चरन पंकज विमल उपजहिं भक्ति पुनीत।५। टीका। भगवान कहते हैं कि हे राजन अब उरवासा मुनीके पास अपना कोई हूत भेज देवो सो उनको जाय करके कहि देवे कि मुनिनायक आप आईये भोजन वहुत देरका वना हूआ है शिष्योंके सहित वेग आय करके पाइये ऐसे हस भगवानकी आज्ञा पायकर राजा नृपेश्वर जो है सो तुरत एक ब्रह्मनको ऐसे

समजाय कर तहां भेजदेताभया किहे ब्रह्म
ण मनी ‍ उरवासाजी को जायकर्के कहो कि
महाराज राजा आपके आगमन को देख र
हाहै जो कब मुनी नायक आवैं और मेरेघ
रमे भोजन पावैं इस प्रकार राजाकाभेजाहु
आ ब्रह्मण मुनीके पासजाय कर्के सव सं
देस कहि देताभया तव उरवासा जी सुन
कनकर्के वडे सोचको प्रापत होयगये ।

३८
भ
२९

२१

क्योंकि इस परमात्माके मुखसे वचन जो भ
याथा तिसके प्रभावसे सर्व जगतको विप
ती होय रही थी तातें मुनीनायकभी सब
लोकों के सहित परम विपती को प्राप्तभ
ये होगे थे किसीको कुछभी खानपान की
अभिलाषा नहीं थी ऐसे मुनियों विखें प्र
धान जो दुर्वासा मुनीथे सो हृदय मे भग
वानके कौतक और लीलाको जानकर

२५

और संध्यादिक अपने कर्म को छोडकर ति
स ब्राह्मण को प्रीती पूर्वक पास विठायले
ते भये और मधुर वाणीसे कहनेलगे कि
हे ब्राह्मण अब मै जिस प्रकार कहताहूं
सो तू श्रवणकर और तैसे ही इह सेवाक
ध्यन राजाको जाय करके कहो कि हे धर्म
भूप मै जिस प्रकार आपने सब शिष्योंके
सहित तेरे घरमै आयाहूं सो कारण तू श्र

३८
भ०
१०

वर्णन करै कि मै एक दिन हस्तनापुर विखें राजा दुर्योधनके घर चलागया तब तिस ने मेरेको बहुत दिनो तक अपने घरमै रा खकर दिन दिन भक्ती प्रीतीसे ऐसा सेव न सत्कार किया जो मै प्रसन्न भयाहू ओ तिसके वश होयगया ओर कहा कि हे रा जन अब जो तेरे मनकी भावनाहै सो वर मांग मै देताहूं तब तिसने एही वर मांगा।

४०

१०

किहे मनी नहां वणाविवें मेरेधाना पांडव
निवास करतेहैं नमतहां तिनके घरमै नव
जावो कि जव द्रोपदीने भोजन पायलिया
हो फिर तिसी समय अपने समेत सव शि
षोंके वासते तिनसे भोजन मांगो इस प्रका
र मे तिनके वचनके वशभयाहुआ राजन
तेरे घरमै आयाहुं हे ब्रह्मण नम पहिले
मेरी ओरसे आशीर वाद देकरके पीछे ।

३८ भ० ३१

इह ब्रतांत सब सुनाय देवो और इह भी कहो
किइह परम निधी अब मेरेको भोजन की कु
छ इछा नहीं है मैसर्व प्रकार करके प्रसन्न
हूं मेरे वचनके प्रसादसे राजन तेरे को सर्व
दा सदा सुजस और कल्यान प्रापतहोवे ऐ
से कह करके मुनीनायक जोहैं सो सब शि
षों के [illegible] नहोसे चले जाते भये और ई
हां ब्रह्मण भी राजा जुधिष्टर के पास चलाआया ३१

और मुनीका कहा हूआ सव वृतांत सुनाय दे

नामया सुनासुन करकै परम हरष को प्राप

त हूआ और कहने लगा कि इह सव दीनो

के हितकारी और परम उपकारी कृस्न भग

वानजोहैं तिनकी कृपाहै तिसतैं उपरांत

परस्पर कुछ और और चरचा वारता होती

रही फिर भगवान आनंदसे विदाय होय

कर और पांडवोंको अभय देकर अपने धाम

३८
भ
३२

कोचलेगये इसप्रकार इह मनोहर गाथाजोहै
सोहम संतो मैने आपके आगे गायन करदीहै
देखिये कि राजाद्रुपद की कंन्या द्रोपदीजोहैति
स की भक्तीके वश भयेहूये भगवान कृपानि
धान पाउं पयादेही द्वारिकासे धाय करके च
ले आये ऐसे विचार कर दृढ भक्ती और नि
श्चयसे जो आपदाकाल विखे भगवानका स
मरण करेंगे सो अवश्य आपदाके कलेश से

३२

छूट कर स्वर्ग के प्राप्त होवेंगे ऐसे इह द्रो
पदी की भक्ती का महात्तम जो है सो इसको
जो कोई श्रद्धा पूर्वक पठेगा अथवा सुनेगा
तिसके हृदय मैं अनपायनी कि जो नहीं
पाई जाती ऐसी जो कृष्ण भगवान की भक्ती
है सो अवश्य करके दृढ होवेगी ।५। इति
श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ती महा
तमे भाषा टीकायां द्रोपदी चरित्र वरणनं

मीहां सिंह कृत

३८

म

३३

33

नाम सर्गाः ॥

३३

अथ रुकमांगद चरित्रं । चौपाई । अव पावन
रुकमांगद गाथा । भनहूं नाथ संतन पदमा
था । तनवलण सुनत जास सुखसाहू । ज्ञान
विवेक भक्ति वरदाहू । उरहढ होहिं सुजस
मददाना । मिटहिं विकार मार मदनाना । ए
रव एक धरन पतिगावा । रुकमांगद जहि
नाम सुहावा । प्रजापाल रत धरम रसाला । च
त्रंगनि अनि नाथ भुआला । पतिप्रताप उग्र

भ
१

गैयनज्ञाता। समर सूर धारन धृतिदाता। गु
ण संपन्न दोष गनसाधू। रामनाम नित हृद
य अराधू। निस कैटिक महिराज सुहावा। क
रत तास बहु काल बिहावा। नगर बहिर
इक सुखद सुहाई। सुमन वाटिका भूपरचा
ई। फल प्रसून खटरित करनीके। मोहत
नहां ललित प्रीय जीके। किसलय विपटवे
लि छविकारी। चलत समीर त्रिविध सुखदाई

कयकि कीर कल कंठ सुहावन। गुंजत भृंग
मधुर मन भावन। आहूत आन खगन गण
संगा। होत विचित्र मधुर बहु रंगा। तहा वि
लोकि मनो हरताई। रजनी समय अपसरा
आई। हरिलै जाहिं कुसुम नितवारी। दशा
वारि निजरूप निहारी। मालाकार वोलि प्र
सकाहा। हरन प्रसून कौनकसताहा। आज
मोर सनमख मठनेही। कौसो जोन जतन

भ० मा० २

जनगेही। तो कुटंब जन मोर विधंसा। करहु मोर प्राणनाहिन संसा। दोहा। अस सासन भूपति सुनत मालाकार अधीर। चलेउ मोच चिंता विवस कंपत विथत सरीर॥१॥ टीका। अब नाभादासजी संतजनो के चरनो पर सीस नाय करके कहते हैं कि हे महा पुरषो श्र व परम पवित्र राजा रुकमांगद की गाथा जो है सो आपके आगे गायन करता हूं कैसी भी

गाथाहैं कि जिस के श्रवण करनेसे हृदयमे
ज्ञान विवेक और भक्ती दृढ होयकर सत्व
और सज्जन जोहै सो पावन होताहै और
कामक्रोध मद इत्यादि नानाविकार जोहैं
सो सब नास होयजातेहैं एवं समयविषे
एकवडा प्रजापाल और धर्ममे परायण च
तुरंगनी सेनाकापती महा प्रतापी और गौ
ब्राह्मणकी रक्षाकरनेवाला रणविषे वडा सूर

४
भ॰
३

वीर और धीरजका धाम सर्व दोषोंसे रहित
और गुणोंकी निधी भगवानका भक्त रुक
मांगद नाम करके राजा होता भया तव ति
सको पृथ्वीतलपर निस्कंटक अर्थात
निरविघन राज करते करते को वहुत का
ल वतीत होयगया और तिसने नगरके
वाहिर एक मनोहर वाटिका अर्थात मनके
हरने वाली वागीची वनवाई हुईथी कि जो

३

षट रितु अर्थात छहौ रितुओंके फुलों और
फलों करके शोभादेतीथी और किसलय जो
बडे कोमल नवीन वृक्ष सो अनेक प्रकारके
तहां लगेहुये तैसेही निरमल जल और नी
न प्रकारकी शीतल मंद सुगंध पवन भ्रमर
यों कीवडी मधुर गुंजारकाय की जो मोर की
रनोतोते सुंदर कंठवाली जो कोकलाहैं इ
त्यादि और भी नाना पक्षियों करके परिवार

४.
भ
५

नमई हुई सो बागीची अर्थात चारो ओर बैठे
हुये पंछी बड़ी अपूर्वहीं शोभादेतेहैं और
अनेक प्रकारके मधुर शब्दों को बोलतेहैं
तबतहां ऐसी मनोहर वाई देख करके रात्री
के समय अपसरा जोहैं सो आय करके तिस
वाटिका मे विचरतीथीं और प्रसन्न जो फूल
हैं सो तिन हर करके लेजातीथीं एक दिन रा
जेजो तहां आया सो फूलों की न्यूनताको देख

५

कर मालाकार जो मालीहै तिसको बुलायकर

कोपसे कहनेलगा कि अरे जड हमारी वाटि

काके फूल कौन हरकरके अर्थात चुरायक

रके लेजाताहै जो मूढ तिस चोरको पकडक

र आज मेरे सनमुख नहीं करेगा तो मेरा म

न्यप्रणहै कि तेरा सब कुटंबके सहित नास

करदेऊंगा इस प्रकार राजाकी आज्ञासुनकर

मालीजोहै सो परम सोच और चिंताकेवस

भयाहूआ पीरजसे रहित और व्याकुल चित होयकरके नगर मै चला आवताभया। १। चौपाई। वृद्ध विप्र इक नगर मझारा। धरम शास्त्र सब जानन हारा। अति विद्वान निपु ल गुण सीला। वेद पुराण विदत जहिलीला। ओंकार आदि नहि सरणा। कौन प्रणाम सी सथरि वरना। समन हरन कर सकल दूर्नं ना। कीसो कथन आद लगअंता। नहि जान

हुं नाथ कवन गुसैयां। प्रतिदिन हरहिं पुष्प
नित नैयां। राज बजाय आज मोहि दीना। जो
तुम चौर पकर नहिं लीना। तो सठ जान प्रा
न हरतोरे। हतहुं कुटंब सहित प्राणमोरे।
इहितें कारण तोर प्रभु आई। सकल मरम
निज दीन जणाई। राखिलेहु अब कृपा अ
गारा। जानि परहिं मोहि सुमनन हारा।
मालाकार बचन सुनि दीना। हृदय विचा

र विप्रवर कीना। सोरठा। भयो तासु सम का
य। सुमन वाटिका भूपजे। को नसकहिं न
हंनाय। राजदंड भयमानि गन। होहिं अपम
ग कोउ। गंधर्व किन्नर यक्षथों। ननर अस
र सुर होउ। हरिलै जाहिं प्रसूनजे।।२।। टी
का। तेहि नगरमें एक वडा हठ ब्रह्मण वेद
शास्त्रके जाननेवाला परम विद्वान और ध
र्मात्मा उरषथा सो मालीडाकी भयाहुआ

तिसकेपास आयकर और चरनो परसीस नाय
कर वडीदीन वाणीसे पुष्पों के हरलै जाने का
प्रसंगजोथा सो सब सुनाय देताभया और क
हने लगा कि राजाकी ऐसी आज्ञा भईहै जोक
हाचित आज पुष्पोंके चोरको पकडकर मेरे
सनमुख नहीं करैगा तो कुटंबके सहित तेरे
को मरवाय डालेगा हे भगवन तिसभयके
वशहोयकर मै आपकी शरण को प्रापतभ

भं ८४ ८

याहै और अपना वृत्तांत भी सब सुनायदिया
है अबकृपा करके मेरी रक्षाकरो जोवे शत्रुओं
के चुरानेवाला पुरुष प्राप्त होजावे इसप्रका
र मालीके दीन वचन सुनकर दयाकी मूर्त्ती
दृढवर्म्मन जोथा सो हृदयमे विचारकरके ति
सको कहने लगा कि भाई इह राजाकी सुंदर
वाटिका मे है इसविषे तो राजदंडका भयमा
न कर कोई नहीं जाय सकताहै जान पडताहै

कि कोई देव अपसरा अथवा यक्ष किन्नर गं
धर्व राक्षस इत्यादि फूलोंको हर करके ले
जातेहैं । २। चौपाई। इहिकर यतन सनहु अ
वभाई । जहि प्रकार तसकर गहयाजाई ।जेह
रिहर निरमाल सहावन। आनहुजाय वेग
नव पावन। भीतर सुमन वाटिका वाई। जहं
तहं करहु वकीरण जाई। आपहु महुं निसि
अवसर मोने। रहहु अलोप वैठिकहुं कोने।

भं॰ ८

कोउदेव अपसरनभ चारी। आवहिं तहां म
ड नृपचारी। सो निरमाल उलंघन कीने।
नि गृह होहिं नरत वल छीने। हृद विप्र स
[illegible] ववन नवीना। ततछण तास पतन स
व [illegible]ना। वहुरि जाय निज सदन मझा
रा। भयो सयन रत मालाकारा। उन निज स
मय पाय समदाई। हरषत सोउ अपसरा
आई। सुंदर सुमन वाटिका मांही। लेन

८

ललित मरउ फूलन काहीं। इनउत विथुरि क
रन जबलागी। अटनमसकुच भय मानसमा
गी। गवनी वहुरि सेष निसिपाई। मालाका
र प्रान तहांजाई। देखेहि एक अपसरा चारु
वैठी सकुच विवस उतिराहु। सुर निरमा
ल उलंघन कीना। भईदिव्य गतिविगत म
लीना। मालाकार नरत नवजाई। धरन पा
ल मन खवर जनाई। महाराज नमसकार

गहिलीना। पिकोई कमल विलोचनि चीना
अतिसरवांग ललित मृदु रमनी। निजला
वन्य मान रतिदमनी। अरु सौंदरय नाई नि
न लीने। हमो दिमन मन घोतन कीने। के
हनि जनकुं धरनि उतिछाई। इमन रूपछबि
व र निजजाई। मानषि नाहिं रूप गुणधन्या
किन्नर नागदेवकी कन्या। सोरठा। मनन श्रवण
अमराई। मगनवाटिका बीचनहो। दिव्यरूप मनभाई

भं. ४. ५

५

देखि यच्छछ्य सुंदरी ॥ ३ ॥ टीका । हेमाली अ
व मै तेरेको एक उपाय कहता हूं कि जिस
से इह फूलोंका चोर सहजेही पकडाजावे
गा तुम क्या करोकि जाय करके हरीहर
जो विस्नु भगवान और महादेव हैं तिनके
उतरे हूये फूल कि जिनको निर्माल कहते
हैं लेआवो और राजाकी पुष्प वाटिकामै
जाय कर तिनको जहां तहां वकीरण कर

पं०
भ०
१०

देवो अर्थात ठौर ठौर मे खेलार देवो और आ
प पकांत न्यारे लोप होय करके वैठरहो अ
थवा घरमें जायकरके सोयरहो तव तहांजो
कोई अपसरा यक्ष किन्नर देवता आय करके
तिन निरमालो को उलंघन करेगा सो अपने
दिव्य प्रभावसे हीन और अशक्त होय कर
तहांही रुक जावेगा अर्थात तिसको जाने
की सामर्थ्य नही रहेगी इस प्रकार तिस ह

१०

र वसन्तश्रीमै शिला पायकर माली यथावत
सोई यतन करके आप जायकर आनंदसे
अपने घरमै सोयरहा तब रात्रीके समय अ
पने नियम अनुसार विचरती हूई सो अपसरा
तहां पुष्पवाटिका मै चली आवतीभई और
अनेक अभय होय करके तिस फूल की वा
डीमै जहां तहां न्यारी न्यारी होय करके विच
रनेलगी इस प्रकार जब कछु थोडीसी रात

८ भ ॥

बाकी रही नवीं अपमरा उरकरके अपने मारगके चलीगई तिनमैसे एकनेतो निरमा ल उलंघन कियेथे सो अशक्त भई हुई तहांही बैठ रही आनंकाल होते माली जो आया तो तिसको प्रभावसे हीन लज्जित और व्याकु ल देखकरके ततकाल राजाके पास जायक र सब वृतांत सुनाय देताभया कि महाराज आपके तापसे फूलोंका चोर पकड़लियाहै ॥

पर्यन्त हे कृपानिधान कोई काम देवकी स्त्री
को भी लजादेने वाली सर्व अंगों करके सु
न्दर साक्षात कमल नैनी है और जिसने
अपनी सौंदरयता से दसो दिशाको हीं प्र
काशमान किया हुआ है मानो रोहणी
जो चंद्रमाकी स्त्री है सोई पृथ्वी तलपर आ
य करके शोभाको उदय कर रही है पृथी
नाथ इस को मानुषी नहीं है देव कन्यासी

भ॰ ४१ १२

प्रतीत होतीहै इस प्रकार मालीका कथन
स्रवन करके राजाजोहै सो तुरतहीं पुष्पवा
टिकामें चला आया और तैसेंही तिसरूप
की निधीको देखकर अचरजके वशभया
हुआ कहताहै कि इह सत्य करकें मानुषी
नहीं है कोई देवकन्याहीं देख पडतीहै। २
चौपाई। राम विचारि मानस छिननाथा।
नहिं पै आज भयो सब गाथा। सुभ्रे मनहु

१२

कवन नव ऐहैं। सकल लखन प्रकट निज
कैहैं। इहि थल कवन हेत नव आई। ते अ
स सुनत वचन छिनराई। बोली सुनहु भू
प गुणरासी। मै अपछरा नाक निवासी।
सखि समाज संजत निसिकाला। ईहौ सुम
न वाटिका रसाला। विहरन हेत नृपति
चलिआई। सो समुदाय शेष निसिपाई। सु
र घर गवनि गगन पथलीना। मे निरमा

उलंघन कीना। नहि प्रभाव कर सुर पुर गव
ना। मोरी भई दिव्यगति दमना। अस नहिव
चन सुनत नरराई। बोले वदन मंद मुसका
ई। मोरे करहु कथन सुभवानी। कौन यत
न अव रूप निधानी। जहितें तू सामर्थ्य स
मेना। चलिजा वहु निज नाकन केता। तव
सुख यथा कथन कछु होई। करहु उपाय
वेगमे सोई। गिरान येम सुनत सुखदाई।

हरषि अपसरा बदन अलाई। सुनहु भूप न
हि राजमकारा। जहि एकादशि कर ब्रतधा
रा। निनिज निराहार ब्रत जोई। मोरे देहिं हु
वि फलसोई। तो मैं जाउं नाक निजसदना
सुनि अस वचन भूप नहि बदना। आय न
गर इन लोग बुलाई। सकल सवन प्रीति
जनराई। निराहार मंजल ब्रतकीना। एका
दशिकर जवन प्रवीना। सोमोरे अवदेहु

जनाई। ग्राम ग्राम पुनि दूत पठाई। आय
स दीन देखि नरनारी। ल्यावहु जाय वेगअ
नधारी। धरि सीस सासन महिपाला। धाय
दूत जहं तहं ततकाला। करि अन्वेषण वि
विध प्रकारा। आय दूत फिरि भूपति द्वारा।
सोरठा। विनय करत गतिदीन। महाराज
पुर ग्रामलग। सकल खोज हम लीन। पा
व ननहि अत कीन अस ॥ ५ ॥ टीका।

तब ऐसे विचार कर के राजाजोहै सो तिसके
पास चला आया और कहने लगा कि हेस
शीले तू कौनहैं अपना ह्रतांत सब सत्य स
म कथन कर कि ईहां कैसे आईहै इसप्रका
र राजा का बचन सुनकर सो भामनी कह
ने लगी किहे प्रजापाल मै स्वर्गलोक मै नि
वास करने वाली अपसराहूं ईहां सब स
खियोंके समाज सहित रात्रीके समय आप

भ॰ ५४ १५

ने नियम अनुसार विचरती हुई तेरी इसवा
टिकामें चलीआई जब थोडीसी रात रहिगई
तोवे सब सखी उडकर आकाश मार्गसे अप
ने स्वर्ग धाम को चलीगई और मैनेजो शिव
निर्माल्येको उलंघन किया तो तिनके प्रभाव
से मेरी दिव्य गतीजोहै सो क्षीण होयगई औ
र अशक्त भईहूई ईहांही बैठरहीहूं ऐसे ति
सका कथन सुनकर राजा दयाके वश भ

१५

याहृत्रा कहनेलगा कि हे अपसरे अब मोको
न उपायहै कि जिससे तू सामर्थ्य और भाव
धान होयकर अपने स्वर्गधामको चलीजावे
मेरेको कथन कर मे सोई यतन करता हूं
तब राजाकी वड़ीहितवाली वाणी सुनकर
अपँवाजोहै सो आनंद पूर्वक कहनेलगी कि
हे राजन अब इसका एक उपायहै सो तुमको
कहतीहूं कि तुमारे नगरमे अथवा बाहिर

स

ग्रंथोंमें जो किसी स्त्री वा पुरुषने एकादशी ।
का निराहार व्रत धारन कियाहो सो तिस व्रत
का फल मेरेको देवे तो तिसके प्रभावसे मै
सामर्थ्य होयकरके अपने स्वर्ग धामको अ
वश्य चली जाऊंगी इसमें कुछ संशय न
हीं है इस प्रकार तिसका कथन सुनकर
राजा जोहै सो नगरके सब लोगों को अ
पने मनमाव बुलाय करके ॥

भ ५६
१६

कहने लगा कि भाई जिस किसीने एकाद
शीका निराहार व्रतधारन किया ह्वाहो
सो मेरेको कहिदेवे ग्रौर वाहिर ग्रामोंमें भी
भी ह्त भेजदिये ग्रौर तिनको कहाकि ए
कादशीका निराहार व्रतधारे ह्वये जो स्त्री
पुरुष हो सो मेरे पासले ग्रावो तब ह्त रा
जाकी ग्राज्ञापायकर जहांतहां ग्रामोंमें वि
षे धायगये ग्रौर भली प्रकार खोजनेलगे

परंतु ऐसा व्रतधारी कोई प्रापत नहीं भया त
व होयरहये फिर करके राजा के पास चलेआ
ये और कहने लगे कि हे पृथ्वीनाथ हमने
यद्यपि वहुतही खोजना करी है तद्यपि ऐ
से व्रत के धारने वाला कोई स्त्री पुरष भी प्रा
पत नहीं भया है ।५। चौपाई । ये इकनाथ व
नक चीय जोई । अतिविभ चार निरत जप्ह
सोई । कोइक आन पुरष मन जाई । कीवि

भवार भवन निज आई। पतिलखि नाम
प्रथम सुग सैना। कहि कहि कोपि कठि
न कटुवैना। नाथो भलहिं देउ नहि दीना
पाति उर दशमान गतकीना। नेउर मा
नि शोक उरभारी। पति हित दिवस अ
न्न परिहारी। ध्यान ल्षन विषत बिन
माहीं। भई निरत निशानिसि नाहीं। अ
कसमात छिननाथ प्रवीना। असनहि री

४. भं. १८

18

ये वैस व्रतकीना। सुनत अपसरा हरतनवानी
बोली सुनहु भूप जगमानी। कबहुं प्रसन्न
वैस चीयहोई। देवैमोहि व्रत फल निजसोई
तोसे जाऊं विवुध पुरराई। होहिं मोर सव
भांति भलाई। नृप अससिगिरा श्रवण जब।
कीनी। नरत मंगा वैसचीय लीनी। अपसर
कहं अतिद सुहावा। तहितें व्रतफलदान
करावा। तव देवत सव कर सुखपाई। सु

य
सुष

रघुर कहं अपसरा सिधाई। भयोभूप अव
रज वसभारी। कहत वदन असकिराउ
चारी। मिथ्याव्रत कर इहफल भाई। सा
वहं करहिं जवन मनलाई। तहि प्रभाव
कछु जायन वरना। अस कहि ववन व
दन पतिधरना। तदनंतर् मंजन परिवा
र्। एकादशि व्रतलीनसि धारा। अरु नि
ज सकल राज छिनराई। अस सासन ड

म
१५

न दीन पठाई। जहं तहं प्रजा मोर सब कोई
खग मृग जीव जंत नर जोई। एकादशि क
र व्रत अनुसरहीं। भोजन सलिल दिवस
जनि करहीं। कबहुंक इह सासन मम को
ई। जो निदरहिं हठ वस सठ होई। पावहिं
भोजन करि व्रत खेडा। लेहिं सुफल
दारुण मम दंडा॥ अस धरि सी
स सासन ना राई॥ देखि वेस जीय व्रत

१५

अधिकाई। निज निज लाग सकल जनकरने
धरम करम सुभ जाहिं नवरने। नहिं प्रभा
व कर भयो रसाला। पुरुख सकल समरीति
भुआला। मंगल मोद सहज सुखपाई। पा
लहिं प्रजा धरम रतवाई। समय एक संद
र मरुगाना। राज कि भोर भूप नामाना। ति
ननकेतनतें होत विदाये। सुसर भवन रन
आनंद छाये। आयोरूप सील गुणगेहा।

४
भं.
२.

मिलेराउ उर प्रीति सनेहा। तव निवसत न
हि भूप अगाहू। आवा एकादशि व्रतचाहू।
लख्यत परम भूप हतजेहीं। प्रातकाल भो
जन करिलेहीं। तहां राउ अनु सासननाहीं
भोजन करन दिवस व्रतमाहीं। हुता भूप
श्रीयनाम प्रवीना। तहिंदिन पतिहिं पाक न
हिं दीना। यद्यपि भूप सवन वहुवारा। मा
गे विल पन वदन अहारा। सोरठा। तद्यपि

२.

दीन न त्रास। आक्रोवेग मृग प्राणपती। ईहां
आज उपवास करहिं जीव जंतू सकल। ५।
टीका। फिर वेह्न कहतेहैं किहे प्रजापाल
एक वैस पुरषकी स्त्री देखीहै सो कैसी कि
परम विभचारनी और किसी दूसरे पुरषके
साथ विभचार विवहार करके अपने घरमें
जोआई सो तिसके पतीने उराचारनी को
कुकर्म लख करके अत्यंत कोपसे बडे उर

नी

भ
२१

वचन बोलकर और भलीप्रकार दंड देकर।
जैसे योगयथा तैसेही उग्रदशा और निरादर
किया तब सो उग्राचारनी हृदयमे परम गि
लानी और शोक मानकर अन्न जल त्यागे
हूये दिनभर भूखी प्यासी ही रही और रा
त्रीको निद्रा भी नहीं लेती भई हे राजा
ए इस प्रकार एक तिस वैसकी स्त्री
ने व्रत धारन किया हूआहै ॥

ऐसे हंसोंका वचन सुनकर सो अपंसराके
हने लगी किहे उपकारकी निधी राजन
जो कदाचित वे वैसकी स्त्री प्रसन्न होय क
रके मेरको निसी व्रतका फलदान करै तो
मे तिसके प्रभावसे अवश्य अपने स्वर्गधा
मको चलीजाऊंगी और सर्व प्रकार करके
मेरा हितहीं होवेगा जब इसप्रकार राजा
ने तिसके भावसे वचन सुना तो ततकाल

भै॰
२२

ह्रीं तिसवैस की स्त्रीको बुलाय कर तिस
से अपने मनमाने व्रतका फलजो है सोत्र
पसराको दलवायदिया ऐसे जब अपस
राने व्रतके फलको प्रापत किया तब स
बके देखते उडकरके आकाश मारग
द्वारा राजाको आसीसा देतीहुई अपनेस
र्गधामको चलीजातीभई इस अदभुत कौ
तककी देखकर राजा अचरजके वशहो

२२

यकर कहने लगा कि देखोभाई मिथ्याव्रत
का तो इह फल प्रकटभया अब कहो कि
जो सत्य करके प्रीती और श्रद्धा पूर्वक धार
न करेगा तिसके महातम की कैसी अगा
ध महिमा होगी इस प्रभाव को देखकर
राजाजोहै सो तिसदिनसे लेकर अपने स
वपरिवारके सहित सुंदर एकादशी के
व्रतको धारन करलेताभया और अपने ।

४ भ ११

23

सेपहली राजैसैभी आज्ञा प्रचलित करदेई कि
स्री पुरुष स्त्रिगामृग जीव जेतू जो मेरे राजमैंनि
वास करते हैं एकादशीके दिनकोई भोज
न नहीं पावे सबकोई इस पवित्र व्रतको धार
नकरे जो कदाचित कोई मेरी इस आज्ञाको उ
लंघन करेगा अर्थात व्रतनहीं धारन करेगा
तोवैमेरे घोर दंडका फलपावेगा इस प्रकार
सब प्रजाके लोगजोहैं सो राजाकी आज्ञा । ११

सीसपर धारकर श्रौर वैसकी स्त्रीके व्रतका
प्रभाव देखकर परम पवित्र एकादशीके
व्रतको प्रीती श्रौर रुचीसे धारन करलेने ल
गे नवतें दिन दिन प्रजामें अनेक धर्म श्रौर
सुकर्म जोहैं सो होनेलगे तिस प्रभाव करकें
राजा भी दिन दिन संपती श्रौर संतती की वृ
द्धीको प्रापत होयकर बडे सुख श्रौर सुन
सके सहित अपनी प्रजाको पालने लगा

४
भ
२५

25

तब एक समय वज्रसुंदर सुलक्षन अंगोंवाला
राजाका जामाता कि जो राजाकाहीं पुत्रथा अ
पने घरसें विदाय होय कर रूपसील औ
र गुण प्रवीन जोथा सोईहो आनंदसें अप
ने सास सुसरके भवन मै चलाआया राजा
देख करके बडे प्रीती सनमानसे मिलताभया
और भवनोके भीतरले जाय करके सुंदर नि
वासजोहै सोदिया ऐसे तिसको तहां वास

करते को नव कल्कक दिन वतीत होयगये
नव एकादशीका व्रतजोहै सो आयगयाति
सदिन कि सीनेभी भोजन करनानहीथा औ
र वे राजाका जामाता कि जो अवी वालक
हीथा प्रातकाल उठकरके सदैव भोजनपा
य लिया करताथा। राजाकी कन्या जो तिस
की स्त्रीथी तिससे यद्यपि वहुत वारही भो
जन मांगा हुका परंतु सो नहीं देतीभई क

भ॰ ४
२५

हने लगी किहे प्राणपती देखो आज कैसा
शुभ और उत्तम एकादशीका दिनहै हमा
रे राजभरमे संपूर्ण पशु पंछी जीव जंतु ।
और स्त्री पुरषोंने इस एकादशीका निराहा
र व्रतमोहै सो पारन किया हुआहै तुम कै
से भोजन मांगतेहो ।५। चोपाई । जनक
जननि मात्र सासनजोई । मेकस करहु
उलंघन सोई । तीय मात्र सुनत वचन सु

२५

नराई। सास ससरपें पुनि पुनि जाई। कहत
असनकूं लग मै प्रभदीना। निरा हार व्रतकव
हूंन कीना। अतिदुख्यारत विकल सरीरा।
भयोकाय निरवल गातधीरा। मोरदेहू पाक
चराई। नतर प्राणकर कवन वसाई। यद्य
पि विनय विपल नहिंकीना। तद्यपि नृपति
अन्न नहिंदीना। नव तोके विन भोजनपानी
सकल दिवस निसि अर्ध विहानी। तद नेत

भ॰ ४
२६

र लष्यारत होई । स्तवस भयो स्रवन न्रप । सोई । सोरठा । सुमर सास जीय हारि । कहत स्रवन पतीरही । साप स्रवधि इहि केरि । यहहिं नव्रत हृषण कोई । ६ । टीका फि र राजकुमारी कहतीहै कि हेपती मातापिता की स्राज्ञाजोहै तिसकोमै कैसे उलंघन करके तेरेको भोजन देऊं इहयोग्य नहीं है ऐसे स्त्रीके मुखसे वचन सुनकर सो राजकुमार व्याकुलभया

२६

हुआ अपनी सास और ससुरके पास जायक
र वार वार बडी दीनवाणीसे कहताभया कि
हे कृपानिधान मैने घरमे आजतक ऐसा नि
राहार व्रत कवी धारन नहीं किया देखिये
मै अव परम सिथल और धीरज से रहित ।
व्याकुल होयगयाहूं मेरेको अवश्य भोजन
देवो नहीं तो प्राणोंका कुछ वसाय नहीं है
अवीचले जावेंगे इसप्रकार यद्यपि तिसने

भ. ४.
५८

बहुतहीं विनती करी तथापि राजा भोजन न
हीं देताभया तब तिसको अन्न अन्नकर वि
लाप करने को जब दिन भी बीतगया और
आधीरात भी निकसगई तिसके उपरांत व्र
थाके वशालीण होयकर प्राणोंको त्याग
देताभया तब तिसका मरना देख करके स
भर और खास कहनेलगे कि दैवकी मरजी
पृथवी तलपर इसकी इतनीही आयुकीअव

५८

पीयी व्रतका हषण जोहै सोकोई नहीं गावे

नाभया ।६। चौपाई । प्रातकालनिसि होत नि

वरने । भये उघुगद दगाध नहि करने । सह

गामति वनिचली मृगनयना । प्रमदातास रू

प गुण अयना । नहितें दानादिक संभारू ।

जनक कराय अनेक प्रकारू । वहुरि सहि

त वाधव जननाती । कन्या धरम पतिव्रत

माती । आई मंदिन भूमि समसाना । विना

चढ़त संजत पतिग्राना। खुलेवदन मन कम
ल विकासन। वैठी ध्यानलीन दृढ़ आसन
दोहा। विरचित चंदन चितहिं जवलगे ग्र
नल चमकान। तृह विप्रधरि रूप नवचलि
ग्राये भगवान।७। टीका। इस प्रकार जब
रात्री वतीत होयगई नव प्रातःकाल होनेही
चंदन की चिता रचाय करके तिसके दग्ध
करने की तयारी करदेतेभये सो राजा की क

ना कि जो रूप शील गुण और पतिव्रता धर्म
मै प्रवीनथी पतीके साथहीं सहगामनी अ
र्थात सतीहोनेको चंडोल परचढ़ कर चल
परतीभई ऐसे सब बांधव और नाती जाती
के लोगों समेत सो राजकुमारी समसान भूमी
मै आय प्रापतभई तहां चितामै प्रवेश करती
और पतीका सीस अपने जानू परधरतीहूई
आसन हढ़करके ध्यान मै लीन होय करवै

ठगई तोजव चंदन कीरचीहई तिम विवा
को अगनी प्रज्वलन करनेलगे तव नवतहीं
एक वृद्ध ब्रह्मणका रूप धारकर परम कौन
की भगवान भक्त वरदान जोहैं सो आय प्राप
त होतेभये।७। चौपाई। उरवनमाल भालउनि
सोहा। तिलक म्रुनिन मूरति मनमोहा। अनल
देत प्रभकिये निवारण। पूछन मरम वदन
भवतारन। कहा सकल तिन प्रकट जणाई। वो

लेतव कृपाल नमसकाराई। म्लतक नाहिं इह बाल
सुजाना। तथा विवस विथन मरछाना। उर
हु तनक ग्रन्नमतबपहा। होहिंस नीव नरतसि
सदेहा। एथुक ग्रन्न नव भूपति ग्राना। निज
कर विप्र भेष भगवाना। सिहकर वदनपाय
जवदीना। सोतहि नरत नगीरएा कीना। भ
ई विगत ननदाए मरछाई। जनुजागे सो
वत सनराई। सावधान उठिदेख नैना विस

४.
भ
३.

मय विवस भनत मखवैना। इह समरू कस
विना रचाई। लागे कथन करन समुदाई। न
व नृपस वन मन कमहि परयो। अति उप
कार जठर उन करयो। कहत न मझं सब स
न वखाना। मैविन अन्न विथन मरखाना।
इहविम मोपे उपकारा। कीन जथाय लीन
संसारा। भूप सहित बांधव जन सारी। होत
निमगण हरष निधवारी। सासन सभगा अ

३.

हृढ कराये। एकदिन तास भवन लै आये
भये लोग सब उतसव लीना। नव भगवा
न हरन दुखदीना। करि अदभुत कौतक
निजताहीं। भये अंध गत सवनर नाहीं। न
व भूपति निज भवनन आई। सोउज कहो
कहत सुखदाई। प्राणदान जिहि बालक का
हीं। करि उपकार दीन जगमाहीं। [illegible]
[illegible]। मैकछु करहुं तासमि

भ. ४.
३१

काई। सादर यथा उचित बनिआई। दोहा।
सनि सासन अस भूपहुन धायहत उरमाहिं
लागे खोजन जतन जत हृद धरनि सर
काहिं। टीका। कैसे भगवान कि हृदय मे
जिनके तुलसीकीमाला और मस्तकमे स
नाहुआ मनोहर तिलक तैसेही सुंदर म
निथो केसा भेष चिखोको अगानी जो देने
लगेथे तबतही निवारण करलेनेमेथे औरसब्बेने
॥

31

भ॰ ३१

लोग कि भाई मेरेको वृत्तांत सुनावो इह कौन
कारन और क्या कौतककहै तब तिनोने सब
प्रसंग प्रकटकरके सुनायदिया भगवान सु
ननेहीं मुसकाय करके कहनेलगे कि इह
बालक मराहू तो नहीहै परंतु तृष्णा करके
व्याकुल और मूर्छागत होयरहाहै इसके मु
खमे थोडासा अन्न पायदेवो अवी जीवता
होय कर उठवैठेगा ऐसे वृद्धब्राह्मणका व

३१

ग्रा

भ० ४० ३२

चन सुनकर राजा नरनहीं चावलोंके वनेहुये पिंडवे जोहैं सो कुछथोडेसे मंगवाय लेता भया तब हुड ब्राह्मणने लेकरके सो थोडासा पिंडवयोंका अन्न तिसके मुखमै डालदिया वे तिनको नरनहीं नगीरण करगया अर्थात निगलगया तिस अन्नमात्रके उदरमै जानेसे बालक मूरछासे जागकर चैतन्य होय करके उठ वैठताभया और सावधान तासे ॥

32

रपर उपर देखकर वे अवरजके वशहोय क
र कहने लगा कि इह त्रिलोकैसे रचीहुईहैं
और ईहां लोगको आय करके जडहुयेहैं
तब सब कहनेलगे किहे राजकुमार तुम
देव भावीसे मृतहोयगयेथे और इहसबलो
ग तुमारे शरीरके दगध करनेको आय हु
येथे इस वृद्ध ब्राह्मणने परम उपकार कि
या और तुमको प्राणदान देदिये हैं ऐसे

५. म. ११

तिनका कथन सुन करकें राज कुमार कहने
लगा कि भाई तुम सत्य कहतेहो मै अन्न
के विना मूर्छा होय करकें अचेत पडाहुया
था इस हुडवस्तनें अत्यंत उपकार किया है
और मेरेको जगत मै जिवाय लियाहै तब
संपूर्ण बांधवोंके सहित राजाजोहै सो परम
हर्ष को प्राप्त भयाहुया तिस बालक को
सुंदर पालकीमै विठाय कर अपने भवना ॥

33

मैं लोगों बनाभया और वडे मंगल और उत
सव होने की आज्ञा होतीभई इसप्रकार ज
व सवलोग अपने आनंद स्वावमें लीनहो
यगये तवहर ब्रह्मणका भेष धारेहूये कौ
नकी भगवान जोथे सो अपना अद्भुत कौ
तक करके तरत तहांही लोप होजानेभये
तव राजाका सथी आई तोकहने लगा कि
भाई वेमेरे जामात्र को प्राणदान के देनेवा

भ० ४० ३४

ला वृद्ध ब्राह्मण कहांहै बुलाय करके मेरे पा
सले आवो मै तिसको जहांतक बनसकता
है सेवन सतकार करूंगा इसप्रकार राजा
की आज्ञा पायकर हलकारे से नगरमे ज
हांतहां जाय करके बडे श्रम और यतनसे
तिस वृद्ध ब्राह्मण को खोजने लगजातेभये ६
चौपाई। मिलान काहू सकल फिरिआये। द
पतन कहत वचन सिरनाये। महाराज हम

१४

त्रिविध निहारेसो। पावन हद विप्र उपकारेसे
सेतन काल लपत भयेतांहे। जहो सभा
न सकल प्रभ जांहे। सुनि अस भूप शोक
वस भययैा। इह कैा नहिंन जाहि उज रह
यैा। कपट रूप धरि विप्र सुहावा। जग न
ग नाथ निगम जहिंगावा। पारब्रह्म सोईश्र
घनिरंजन। भक्त सुखद भवत्रास विभंजन
प्राण दान बालक कहंदीने। भये लपत प्र

भ्र.
४.
३५

भ कौतुक कीने। अस विचारि न्रप हृदय स्जाना। करिसनान कीन्यो विनदाना। द्वादशि दिवस सहित परिवारा। भोजन व्यजन विविध प्रकारा। पाये सानुकूल स्व लुपयो। राजकाज पुनि तनपर भययो। सोरठा। सुनहो संत प्रवीन। इक मोगद न्रप भक्ति कर। कथन वदन कछुकीन। अनिविसमयदायककथा। सुनहिं श्रवण इहजोय।

३५

किलष पास बंधन मुकत। राम भक्ति जग
होय। संतन तांकर हृदय हृढ़ ।९। टीका।
तब सो वृद्ध ब्रह्मण यद्यपि तिन हतोंने ब
हुतसी खोजा तथापि नहीं मिलता भया ओ
नको हार करके निरास भयेहूये फिर क
रके सब राजाके पासचले आये और कह
ने लगे कि पृथी नाथ हमने जहां तहां स
व नगरमें बहुतनहीं खोजाहै परंतु वे उप

कार की निधी इह ब्रह्मण जोहै सो कहीं भी
देख नहीं पड़ा हमहारे हुये अंतको फिर क
रके चले आयेहैं तव राजा तिसके नहीं मि
लने का हृदय मे अत्यंत कलेशमानकर
कहने लगा कि मैने जान लियाहै इहकोई
इह ब्रह्मण नहींथा कपट भेष धारे हुये
सर्व चराचर सृष्टीके स्वामी और मायासे र
हित परम ब्रह्म परमेश्वर संसारका भयहर

४.
भ.
३६

36

३६

करने वाले भक्त सुख दायक भगवान साक्षा
त आपहीथे अपने अद्भुत कौतुकसे इस
बालक को प्राणदान देकर दीनानाथ लोप
न होय गयेहैं इस प्रकार हृदय मै विचार्
करके राजा जोहै सो स्नान करके धन धे
नू भूषण वस्त्र इत्यादि नाना प्रकारके दान
कर्त्ताभया द्वादशीको अपने सब परिवार्
के सहित आनंद पूर्वक भोजन पाय करके

भ. १८

57

फल फल रटताहुआ अपने राज काजमें तत
पर होय जाताभया नाभादासजी कहतेहैं कि
हे संतो इह रुकमांगद राजाकी भक्तीकी बडी
अश्चर्य और मनोहर गाथा जोहै सो मैंने आ
पके आगे गायन करीहै इह कैसीभी फल
दायक गाथाहै कि जिसके श्रवण करनेसे मा
नुष्य पापेंकी फासीसे सहजेही छूट जातेहैं
और सर्व सुखोंके देनेवाली भगवान की भक्ती

38

भ.
२८

जो है सो तिनके हृदय मे दृढ होय जाती है ८

इतिश्रीभक्त विनोद ग्रंथे भगवद भक्ती म
हात्मे भाषा टीकायां रुकमांगद चरित
वरणनं नाम सर्गः ॥

अथ बालमीक चरितं। दोहा। गुरु संतनप
द सीसधर नाभादास सुजान। सावधान
मनमुख वदन लागे करन बखान। चौपा
ई। भक्ति महातम रुचिर सुहावा। बालमी
क मुनि मौन सुभावा। जथा श्रवण मैं की
न कृपाला। करहुं कथन तिमि दीन द
याला। इक काल एक धनहीना। बरोजु
टेव निरत उजदीना। सुतदारा निजपालन

न

३८ भ. १

हेतू। भिक्षाटन करि यतन सचेतू। करहिं उटं
व पालना सोई। भटकत भ्रमत वश्यव सोव
होई। यद्यपि उदर भरना काहू। होहिं नकि
ये विष्कल श्रम ताहू। अस विचारि भिक्षाट
न त्यागी। निजकुटंब प्रतिपालन लागी। प
रि हरि विप्र धर्म वरम्हारी। भाग्यधर्म रत श्र
धर्म अचारी। नवनें प्रतिदिन काननजाई॥ श्रावतङगरप
थिकजननपाई॥ लकट प्रहारि प्राण गत नासा। करहिं न ब

रैन दिवस अगरागा। बहुरि नाम धन संपति
जेही। सकल मूढ लौकिन करि लेहीं। नाम
कुटंब होत इहिभांती। जग पालन पोषन
दिन राती। सोरठा। नव लौकिक हतिमाहि
भयो परायण सोवह। कहत आन कोउ ना
हिं। इहिते उतम धरम जग। ए टीका। नाभा
दास जो हैं सो गुरुजीके और सब संतो के
चरनो पर सीस नाय कर और मनभाव सा

३५
भ०
२

वधान होयकर कहनेलगे कि हे संतो अब
वालमीकजीकी भक्ती का सुंदर महातम
जोहै जैसा कि मैने श्रवन कियाहै सो तै
सा आपके आगे गायन करताहूं पूर्व का
लविखें एक कुटंव वाला निरधन अनसे
करके वगहीन और दारिद्री ब्रह्मण होता
भया सो सदैव भिक्षाटन कर कर अपने
स्त्री पुत्रों की पालना करताथा और तिनके

२

नमित राती दिन घर घर नगरमै भ्रमन कर
ता और नानाश्रम कलेश पावतारहताथा
सो यद्यपि इतना यतन और श्रम भी कर
ताथा तद्यपि तिसके कुटंवकी उदर पूरना
नहीं होतीथी अर्थात भूखेही रहतेथे तव
तिस ब्रह्मणने हृदयमै विचार कर भिक्षा
टनको त्यागदिया अरु और ब्रह्मणों का
धर्मजोहै सो भी सव छोडकर केवल उरा

२५
भ
३

चार कोहीं ग्रहण करलिया क्योंकि रात्रीदिन
वण मै जाता और नहां जो रसते चलने वा
ले पथिकको देखता तो तरतधाय करके ति
सको लकट जो लाठी है तिसका प्रहार देकर
मारदेता और फिर तिसका धनवस्त्र भूषण
इत्यादि जो देखता सो लूटलाट कर घरको
ले आवता और इसी प्रकार कुटंबकी पाल
ना करताथा ऐसे लौकिक कर्म मै परायण

३

भयाहृद्या ब्रह्मण हृदय मै यही जानताभया कि इससे उत्तम जगत मै ग्रौर कोई भी धर्म कर्म नहीं है ।।१।। चौपाई । इह कुटंव प्रति पालनहेतू। भलो सुधर्म ग्रहिं सुखदेतू। तव ग्रस करम करन जगतासा। गयो विपुल जव काल विनासा। भयो धनञ्ज विष्र सोई भाग। समय पाय नहि विघन मकारा। ग्राये मनि वसिष्ट निधिज्ञाना। तिनहिं देखिहिं स

म
४

क अगवाना। भनत सो आज भाग मम आछे
एक तम हूं वहु दिवसन पाछे। मिले आज म
नि प्राण तमारे। लागत तमहिं कवहुं प्रति
प्यारे। तो निज अवहिं वसन धनसारी। देहु
वेग निज करन उतारी। नहिं तो अव हिं ल
कट हनि तोरे। हरहुं प्राण कछु वेरन मोरे।
सुनि अस वचन तास मतिराई। वोले वदन
वचन मसकाई। हेल गधिक एकहुं मैं तोही

४

परिहरि कपट सत्य कहु मोही। सोरठा। आप
न खाव जीयमान। कै कुटंब पालन नमित।
करहु कि कारन आन। नित्यपाप इह विप्रन
तव॥५॥ टीका। फिर कहता है कि इह धर्म जो
है सो कुटंब के पालने के वास्ते बहुत खव
दायक है तब इस प्रकार कर्म करते तिसको
जब बहुत कालवतीत होयगया तो घरमें
नित्य धनके आवने सेवे ब्रह्मण बडा धनी

३९

भ॰ ५

होयजातोभया तव समय पाय करके एक
दिन त्रिसवण के रस्ते परम ज्ञान ध्यानकी
निधी मुनी वसिष्ठजी जोहैं सो चले आवते
थे तिनको देखकर्के व पापकी खानी क
हनेलगा कि आज मेरे अहो भाग्य हैं देखो
वहुत दिनके पीछे इहकोई धनवाला पुरु
ष मेरेको आय प्रापत भयाहै ऐसे हरषके
वश भयाहुआ लौकिक अर्थात लुटेरा मुनी

५

को कुछ कोप जणाय करके कहने ल
गा किहे ब्रह्मण जो तेरे को अपने प्राण
प्यारे हैं तो विलंब मत कर तेरे पास धनव
स्त्र इत्यादि जो कुछ है सो शीघ्र उतार करके
मेरे को दे दे नहीं तो इह लकुट जो लाठी है
तिसका प्रहार देकर अवी तेरे प्राणों का
नास करदेऊंगा इस प्रकार तिसका क
थन स्रनकर मनी वासिष्ठजी मसकाय

कर कहने लगे किहे लंठिक मै तेरेको जो
पूछताहूं सो तूं कपट को त्याग करके स
त्य सत्य कहो कि तैं जो ईहां वण विखे इ
ह नित्य महा पापकर्ताहैं अपने स्वाविके
नमित्त कि कुटंव के लिये कि अथवा औ
र किसीके वासते करताहैं इसका उत्तर
हृदय मे विचार करके मेरेकोद ।२। चौपाई
असमति वचन सुनत निज श्रवना। वा

लो वदन विप्र ग्रगभवना। मोरे मात मान
सुतदारा। बांधव आन सकल परिवारा। मै
उन कर पालन हितभाई। करहुं करम इ
हु कानन आई। तावहिं एक मोर आधारा।
नहिं अवलंब आन संसारा। करि अस क
रम सदन निजमाहीं। लैनावहुं कवहुं कि
धन नाहीं। तोकुटंव रहत्तयन सारा। म
रहिं विधन मति विगत अहारा। अस त

हि वचन सुनत मुनि नाथा। भने सुनहु लग
पिक ममगाथा। जहि कुटंब प्रति पालन का
हीं इह तव करहु पाप वन माहीं। एछहु ति
नतें भवन सिधारी। तव हित तात भ्रात मह
नारी। मे जोई करहुं अनर्थ माहहाहीं। तांके
संगी अहहु कि नाहीं। जवलग तम नहिं आव
पगाई। तव लग रहुं ठाउ इतभाई। सव गाथा
उनकर तमपाई। वेग आय मोहि देहुजणाई

लगपि कवचन सुनत मुनिराई। जागेउ जन
हुं शांति कछु आई। तात मात भ्राता सुतनारी
आयेतिनपें वेग सिधारी। कहत जु वनमें
अर्थ तुमारे। करहु अनेक विघन अगभारे
तुमउन कर वनिहो किना भागी। भनहु स
त्य अव कपट त्यागी। वोले वचन तासुसुनि
सारी। तातमात भ्राता सुत नारी। हम तुमा
र अग जानत नाहीं। का तव करहु करम

वनमाहीं। सदा रहत भोजन अव सेरे। उन्य
पाप नव नाहिंन हेरे। करहु प्रनीति कि
नीति सभागी। हम केवल भोजन करभागी
सोरठा। अस बांधव समदाय। तात मात श्री
य भ्रात सुत। एक्के वहु समझाय। वन्यो नस
गि अधर्म के।। २। टीका। इस प्रकार मुनीका
वचन सुन कर सो पाप की ग्लानी करने ल
गा कि हो ब्रह्मण मेरे माता पिता भ्राता स्त्रीश्व

३९ म ८

जोहैं मे तिनके वासते ईहां वणाविवें आय
करके इह कर्मकर्ताहूं कोंकि तिनको एक
मेराहीं आधारहै और किसीका भरोसा न
हीं है जो मै इह कर्म करके तिनके वासते
घरमै धन आदिक नहीं लैजाऊं तो वे सब
भूखे व्याकुल होय करके मरजावें तब ति
सका कथन सुन करके मुनी कहनेलगे
कि होभाई लेविक तू मेरावचन अब कान

३९
भ॰
९

देकर खाए कि जिस कुटंबके पालनेके वा
सते तं इह वणमै नित्य महां पापकरता हैं
अब तिनसे जाय करके पछ्छ कि हे माता
पिता भ्राता और स्त्री पुत्रो मै जो तुमारे पाल
ने के वासते वण विषें जाय करके अनेक
पाप और अनर्थ करताहूं अब कहो कि तु
मभी मेरे पापोंके संगीहो कि नहीं और ज
वलग तं नहीं आवता तव लगमै ईहां हीं

९

स्थित रहूंगा तं उनसे भली प्रकार पूछकर
और सब वार्ताको पायकर आय करके
मेरेको जणायदे ऐसे मनीका वचन सु
नकर सो अधमी ब्राह्मण मानो अज्ञान
निद्रासे जागउठा और कुछ शांतीको प्राप
त होयगया तहांसे वरत हीं पायकरके
अपने मातापिता और ७३ स्त्री भ्राताके पा
स आय करके कहने लगा कि मैजो तहां

३५
भ
१०

वणविखे तुमारी पालनाके वासते अनेक पा
प और अनर्थ करताहूं तुमभी मेरे तिसपाप
और अनर्थ के कुछ संगी हो कि नहीं इह मे
रेको सत्य सत्य कहिदेवो तब तिसका ऐसा
कथन स्रुन करके माता पिता और स्त्री भ्रा
ता कहने लगे कि हम तुमारे करम को तो
कुछनहीं जानतेहैं केवल अपनी उदर प
रना को जानतेहैं तुमारे पुणपाप नीती अ

१०

नीतीसे हमको कुछ प्रयोजन नहीं है अपने
भोजनसे वासना रखतेहैं इस प्रकार मातापि
ता और स्त्री पुत्र भ्रातासे लेकरके तिसने स
वको वार वार पूछा परंतु अधर्म और पाप
का संगी कोई भी नहीं वना।२। चौपाई। अ
प्रीय वचन सुनत तिन काना। विप्र उखित
निज हृदय महाना। आवा जनु सरवस्व ग
वाई। मतिपै आकुल धीर विहाई। जगाकर

३९
भ.
।।

जोरि धरनि धरमाथा। कहत वदन नम्रत ग्र
संगाथा। सखेदीन नाथ मै सारी। तातमात
भ्राता सुतनारी। कौ अधर्म कर भयो नभागी
वने मीत सव भोजन लागी। कहत तमारक्ष
ना हुत जोई। हम नाहिंन कछु जानत सोई
सुनि अस वचन तास मुनिराया। वोले वदन
उपजि अतिदाया। अहो मदनव उज सुत हो
ई। लखो अधर्म धरम नहीं कोई। जहिं नामि

।।

न नव पाप करेंहै। वने न आजनोर सठपैहै
अनहित कहं मानस हिन पापी। हासो ह
था जनम निज पापी। सनहै विप्र सभा सम
जोई। जावहिं संग भनत सव कोई। इह संचि
न मानस जव होहीं। करे मान अरु संचित
करमा। दायक वपाव विरव बुध वरना। करे
करंहीं॥ करन करत उर संचित धरहीं। सोमरन समय वा
सना द्वारा। वपमालवथ पाव संसारा। सम

वपशालवथपाव
नव होहीं ५८
माननरकरमञ्ज

३१५

भ॰
१२

आरम्भ कर वन्यो सरीरा। उपजहिं कष्ट रो
ग उरव पीरा। स्वनहि विष जहि जीवनदेहा
सजन करहिं आलिंगन नेहा। परम प्रीति
जन हृदय जगावहीं। नित नव हरष मोद
सर सावहीं। मरे परे पर निकट न कोई।
आवत तास त्रास वस होई। अति सनेहला
लन सनपाला। मन मूरति हित स्वन र
साला। पित कहं देखि मृतक महि परयो।

१२

सोजीय प्रेत प्रेत कहि उरयो। तोते कौन ७३
पितु मीता। स्वारथ जानि करहिं सब मीता।
सोरठा। मरतपच्छा तन होहिं। कोउ उपकार कर
ता जगत। अपन कृताकृत जोहिं होहिं स
हायक अंतसो।५। टीका। इस प्रकार वांधवों
के वचन सुनकर सो अधरमी ब्राह्मण हृद
यमें परम दुखी और व्याकुल भयाहुआ मा
नो अपना सर्वस्व गवाय करके मनो वसि

३९
भ॰
१२

इसीके पास चला आवता भया और हाथ
जोड़कर चरनो पर सीस धरके वडेदीन
वाणीसें विनती करनेलगा कहताहै कि
हे कृपानिधान मै अपने पिता माता और
स्त्री पुत्र भ्राताको भली प्रकार पूछआयाहूं
मेरे किये हुये कर्मका कोईभी संगीनहींव
ना सब अपने भोजनकेही मीत वने हैं क
हतेहैं कि तेरे धर्म अधर्म और पाप पुन्य

१२

को हम कुछ जानते नहीं हैं केवल अपने
पेट के पोषण करने का तेरे साथ प्रयोजन
रखते हैं ऐसे तिसका कथन सुन कर
मुनी नायक दयाके वश होयगये और
कहने लगे कि अरे मंद तू व्यसन जलमें
आयकर धर्म अधर्म को कुछ भी जानानहीं
देख मूढ जिनके निमित्त तू नित्य पाप औ
र अनर्थ करता रहा हैं सो तो तेरे आज वने

३६
भ.
१४

14

ही नहीं जड़तैने अनहित को हित मानकर
अपना जनम हथा ही खोयदियाहै हुए बा
स्तए इह शुभ असुभ करम जोहैं सोई संग
जातेहैं क्योंकि इह जब हृदयमै संचित होते
हैं तो फिर प्रालब्ध शरीर को धारन करतेहैं
करै मान किजो शुभ अशुभ कर्म कियेजा
तेहैं और संचित किजो कर्म कर करके श्र
द्धा हृदय मै राखना जाताहै तिन करके

१४

हो मरन समय वासना के द्वारा प्रालब्ध शरी
रको पावताहै इस प्रकार इन शुभ कर्मोंसे
शरीर बनकर नाना दुखरोग और कलेश
पीड़ा जोहैं सो उपजतीहैं हे लछमण जिस
शरीरको जीवनेहूये सब सजन और बांध
व हितकारी वडीप्रीती और सनेहसे हृदय
मे लगाय लगाय कर मिलतेहैं सोई शरीर
जब मरनहोय जाताहै तब भयमान करको

ई भी तिस के निकट नहीं आवताहै और देखो
कि अतसे प्रीती और प्यार करके पालाहुआ
माता सनेह की मूरती पुत्रसाहोताहै सो भी
पिताको मरत पडे हुये देखकर प्रेत प्रेत कु
हता हुआ भागजाताहै डरता निकट नहीं
आय सकता तांते हे ब्रह्मण कौन किसीका
माता और कौन पिता सबकोई अपने अपने
प्रयोजनके ही मीतहै मरनेके पीछे उद्धार क

रने को कोई भी सामर्थ नहीं है तहांतो कछुक
पनाहीं सुकर्म किया हूआ होगा सोई सहाय
ता करेगा। ४। चौपाई। अस विचारि उन मान
स नीके। करहु जवन अब भावति जीके। ता
न गुरु मति वचन सुहाये। एवसे हृदय ता
सु विदाये। भाग विवस उपजो उरताना।
जागो जनहूं सपत अघखोना। चेतन भयो
जवहिं उनसोई। मति मन कहत पुक करदोई

दीननाथ तव सत्य वखाना । प्रभु प्रसाद मै
सव कुछु जाना । कूट कुटंव सकल परित्या
गी । अव दृढ प्रीति चरन प्रभुलागी । केवल
शरण तोर भगवाना । मै अवलीन परम सु
खमाना । प्रभु स्वामी मै सेवक दीना । नाथ मं
त्र उपदेस बीना । मोरे करहु दास पदजानी । त
व अस वचन सुनत मतिज्ञानी । हृदय विचा
र दया निधि कीना । इह सठ अधम पतित म

विहीना। करि उपदेश ग्यान इहि काहीं। लेव
हुं तृषा पाय तन माहीं। अस विचारि मुनिना
यकनासा। मंद मंद मृदु वचन प्रकासा। मोरे
अव अवधूप उजजाना। कारज विवस होत न
तहाना। तातें करहुं पंथ निजगवना। इनन
म जाय ग्राम निज भवना। वनहू विप्र सेव
क सिषआना। जव मुनीस अस वचन वखा
ना। भयोनास मुनिनाथ प्रवीना। जो उपदेश

३९

भ ८

17

तमहुं नहिं कीना । तात मोर संजत निजहिंसा
करहुं मोर प्रण नाहिं नसंसा । अस रटि सर
ण सरण परि धरना । पकरि लीन पावन
मनि चरना । तव मुनीस नहि विविध निवा
रो । गहे चरन उजट रहिं नटारो । मुनिना
यक तव मानस जाना । इह जड करहिं न
रन हतमाना । ब्रह्मग्यान मोहि दूषण ला
गी । असविचारि मुनि सको न त्यागी । भा

८

खेत सोचि अधम इहभारी। नाहिन काहू
मंत्र अधिकारी। पै कलेश डखे किलषन
सावन। राममंत्र तारक जग पावन। इहिक
हे देहूं उचित इहिकाला। अस विचारि मति
दीन कृपाला। राम मंत्र विपरीत सहहावा।
आदिवरण सोई अंत पठावा। कहा स[illegible]दे
व जपहु इहिभाई। राममंत्र तारक सखदाई
सोरठा। तब नहि चरन पुनीत। पिरि हरि

३९
भ०
१८

कीन प्रणाम महि। बोले वचन सप्रीत ॥ मु
नि कृपाल नहिं विप्र कहूं ॥५॥ टीका। ऐसे
विचार करे है ब्राह्मण अब जो तेरे मनको भा
ता है सो कर तव इस प्रकार ज्ञानके उदय
करने वाले मुनीके वचन जो हैं सो तिस
ब्रह्मके हृदय मे प्रवेश करजाते भये भोगों
के वश नरनहीं हृदय मे प्रवेश करजाते
भये भोगोंके वश नरनहीं हृदय मे ज्ञान

18

ज्ञान उपन आया और अज्ञान निद्रामें जो सो
या हुआथा जागउठा तव इस प्रकार चैतन्य
होयगया तव दीन भावसे हाथजोड कर म
नीके आगे विनती करने लगा कि हे दीनहि
हितकारी आपका कथन सबसत्यहै मैंने त
मारी कृपासे सब कुछ जान लियाहै अब तो
इस झूट कुटंब को त्याग कर प्रभु मैंने आप
केही चरनोकी प्रीती मानलई और आपके

३२५
भ
१९

हो चरनें की शरणको आधार कर लियाहै हे
भगवन तुमस्वामी और मै सेवक अब कृपा
करके मेरेको अपनादास जानिये और मंत्रउ
पदेश करिये कि जिससे हेकृपानिधान मेरी
कल्यानहोवे ऐसे तिसके दीन वचन सुनक
र यद्यपि मुनी के हृदय मे दयाभी उपजी त
द्यपि कहतें हैं कि इह जढ महा पापी और
अधम तुरीका होनेहै मै इसको आज उपदेश

१९

19

करके अपने ऊपर हथ्या क्यों पापलेऊं ऐसे
विचार कर मनियों विखे प्रधान जो मनी व
सिष्ट जी हैं तिसको सहज सहज कहने ल
गे कि भाई मेरे को तो कछु कारन के लिये
अवश्य जाना है जो कदाचित तहां नहीं जाऊं
तो श्रापसे करके बडी हानी होती है इसलि
ये अब मैं तो अपने मार्गको जाना हूं और
तुम भी ईहां से अपने घरको चलेजावो त

३९
म०
२०

हां ग्राम विषें जाय करके किसी महां पुरष
का उपदेश लेकर तिसके शिष्य वनजावो
जब इसप्रकार मुनी नायकने उचारण कि
या तब सुनकरके सो ब्रह्मण हृदयमें परम
दुख मानकर कहनेलगा कि मुनीनाथ मे
रावचन आपने सत्यकरके जानलेना कि जो
कदाचित तुम मेरे को उपदेशनहीं करोगे
तो मै तुमारे सहित अपने प्राणोंका आवी ना

सकर देऊंगा इहमेरा सत्य प्रणहै इसमै क

छु संशय नहीं ऐसे कहनारी शरण शरण

उचारताहूआ मुनीके चरनों को पकडलेता

भया तब मुनीनाथने यद्यपि तिसको वहु

नही निवारण किया तद्यपि सो प्रेममै उन

मत्त भयाहूआ नत्ताशी चरनो को छोडता

नहीं भया तवतो मुनीनायकने हृदय मे

विचारकिया कि जो इसके साथ अव हठ ।

३९
भ०
२१

करते हैं तो इह जड अवश्य अपने प्राणोंका
नाश कर देवेगा और मेरेको ब्रह्मज्ञानका पा
प लग जावेगा ऐसे विचार कर मुनी प्रथा
न तिसको त्याग नहीं सके और हृदय मे
सोचने लग जाते भये कि इह प्रथम प्रयि
कारके योग्य नहीं है इसको कौन मंत्र उप
देश किया जावे इस प्रकार विचारते विचा
रते अंतको इह सिद्ध किया कि इसको अव

२१

सर्वदुख दोष और घोर पापोंके नाश करने
वाला रामनाम तारक मंत्र जोहै सोई उपदे
श करताहूं ऐसे विचारकर संपूर्ण जगत
के पवित्र करने वाला राम मंत्रजोहै सो
तिसके कान मे विधीन रीतीसे सुनायदि
या अर्थात आदका अंतर अंत करके म
रा मरा मंत्र पढ़ाय दिया और कहा भा
ई इह सर्व सुखोंके देनेवाला परम पवित्र

३५
म
२२

22

तारक मंत्रहै इसको इकाग्र चित होय कर
के रात्रीदिन सदैव जपते रहना तव सो ब्रा
ह्मण अपने मन वांछित फलको पायकर
और मुनीके चरन जो पकरे हुयेथे सो छो
ड करके आनंद मे मगन भया हूआ वारंवा
र दंड प्रणाम करताभया तव मुनीनायक
प्रीती पूर्वक फिर जिस प्रकार तिसको शि
क्षादेतेहैं सो आगे कथन की जातीहै ।५।

चौपाई। अब इहिथल नव बैठि सभागी।
जपहु निरंतर कपट त्यागी। राम मंत्र ता
रक जगपहा। सुलभ मोक्ष प्रद पावनदेहा
अस कहि कीन गवन मुनिराया। इत उपदे
श विप्र उर छाया। भयो स्थिर नहि सथल
सुजाना। दीनसि त्याग अन्न जलपाना।
आसन एक बैठि हढ कीना। राममंत्रमा
नस धरि लीना। विपुल काल अस तासु वि

३९
भ.
२२
23

छाया। वलमी भई प्रकट उजकथा। अवसर
पाय नाम पथआये। मुनि वसिष्ट निथित्ता
नमस्काये। जपत निरंत्र मंत्र उजसोई। विस
मय विवस देखि मनिहोई। कौन्योविधि सु
मरण ततकाला। अति प्रसन्न मानस मुनि
थाला। हंसारूढ वेग विधि आये। करिप्र
णाम मुनिवर हरषाये। भने वचन चतुवद
न प्रवीना। पुत्र सुमरण मोर कत कीना। २२

तब वसिष्ठ मुनि विनय उचारा । इह कृपाल
उज भक्त तुमारा । सोरठा । अब इहि उज क
दयाल । दीजिय वर करि कृपा निज । कीन
नाथ वहु काल । इहि अखंड हठ उत्तानपाद
टीका । मुनी कहते हैं कि हे ब्रह्मण अब तुं
इसी अस्थान पर बैठकर इह बड़ा सहज औ
र कल्यान के देने वाला पवित्र तारक मंत्र
जो है सो निरंतर होय करके जप ऐसे कहि

३५
भ
२४

कर मनीनायक अपने मारगको चलेगये
औार ईहांमंत्र उपदेशजोहै सो ब्रह्मणके हृ
दयमे भलीप्रकार छायत हो जाताभया औा
रतहांही तिसी अस्थान पर स्थित होय क
रके अन्न औार जल इत्यादि खान पान सब
त्याग दिया औार एक आसन दृढ करके
बैठगया राम नामका उलटा मरा मरा शबद
जोहै सोई रसना द्वारा रात्रीदिन उचारने ल

गतानाभया जब इस प्रकार मरा मरा रटने
तिस ब्रह्मण को बहुत काल बतीत होयगा
या तब बैठे बैठे तिसका शरीर वर मीवत
मानो माटीही होयगया तहां समयपाय
करके तिसी मारग पर स्नानध्यान की निधी
मनि वसिष्टजी फिर आय प्रापत हूये तब
तिस वलमी रूप ब्रह्मणको तहां सोई मे
त जपता देखकर वडे अचरजके वश हो

३९
भ
२५

25

यगाये ओर कहने लगे कि अहो इसने वडा
उग्र तप कियाहै ऐसे कहनेही प्रसन्नभयेहू
ये मुनी ब्रह्माका स्मरण करतेभये तब
ब्रह्माजी हंसपर आरूढ भये हूये तत्काल
हीं तहांचले आये मुनी तिनको देखकर हरषके
वशभयाहूआ बार बार दंड प्रणाम करताभ
या ब्रह्मा कहनेलगे कि जब तैने मेरा स्मरण
किया ... तिनके वास्ते कियाहै तब वसिष्ठ मुनी

पुंडरीक चरित्रं । दोहा । भक्ति महातम ग्यानप्र
व करहुं कथन मन लाइ । जास सुनत भ्र
ति उपजहीं रामचरन रतिचाह । चौपाई । द
क्षिण देस ललित वर जाहीं । मंगल रूप स
भग सुखिताहीं । भीमानाम विदत सब जा
नी । सरिता एक विमल सुखदानी । तहिप
र बसहिं ग्राम इकरूरा । वेदा वेद उजन
मनसूरा । तहां एक दक्षिण परिवारा । महां

८२
भ
१

गाढ़ ऊल ऊजन मकारा। धरमातम विद्वान
नपना। ऊपजो स्नान इक विप्र नकेना। पँच
डिन विद्या जनुधारी। होहिं प्रतीत समय
ग्रनसारी। ग्रस प्रकार पित मात समेना।
वसहिं विप्रनिज मंदितनकेना। दिन दिन
पतनि प्रेम वस होई। भयो ग्रधीन नास
ऊज सोई। सोरठा। लोभ विवर जित सो
य। निरधन सब विधि दीन ऊवी ॥

१

भिक्षाटन करिहोय। नहि कुटंब कर जीवका १

टीका। नाभादासजी कहतेहैं कि हे संतो श्र

व भक्तोंका श्रोर महात्मजोहै सो कथन क

रताहूं आप श्रवण करिये इह कैसाभी म

हात्महै कि जिसके श्रवण करनेसे राम

चंद्रजी की सुंदर भक्ती जोहै सो हृदय मै

निरंतर करके दृढहो जाहै कहतेहैं कि ती

दक्षण देश विखें वडी पवित्र शोभायमा

८२
भ
२

न और मंगलरूप एक भीमानाम करके न
दी जो है तिसके किनारेपर वेदकेवेता अर्था
त वेदके जानने वाले ब्रह्मण जो हैं तिनक
रके शुरत एक ग्रामहोता भया तहां दत्तणी
ब्रह्मणोंकी महा राष्टर जाती विखे एक ब्र
ह्मणके घरमें एक बालक उतपन्न हूआ
सो समय पाय करके नाश्तना धरमात मा।
और ना कुछ इतना विद्वानभया परंतु सो द

२

खेने मे ऐसा प्रतीत होता कि मानो विद्वान
ही हैं इसप्रकार सो अपनी माता पिताके
सहित आनंदसे तहां घरमे वास करताहै
औ दिन दिन प्रेमके वश पतनीजो स्त्रीहै
तिसके आधीन होयकर लोभसे रहित ध
र्मसे हीन अंतसे करके दीन और दुखी व
हलाया भलाटन धर्मजोहै सोई करकर रा
त्रीदिन कुटंब की पालना करताथा ।१२॥

चौपाई। सोद्विज पुंडरीक अस नामा। समय
एक तहि हविरलिलामा। भिक्षाटन कर
हेतुसि धाई। गवन करत ग्रामो नरआई।
तहां एक द्विज कथा अलापा। रहेउ करत
हारन भवतापा। शिवपुरि ललित महातम
गोई। द्विजवर कीन कथन मनवसोई। सो सु
ति श्रवण परम हरखाई। अस संकल्प करत
जीयआई। करहिं देव निज कृपा कदाहीं।

तब उठेव जात हर पुरिमाहीं। जाय निवास क
रिय निज करहीं। जनम जनम कर पातक
हरहीं। अस गुनि गोये सदन निज आई। स्वा
मि चरन नेमत सिरनाई। लागी भनन जुग
लकर जोरी। जोमानहु विनती प्रभुमोरी। तो
मे करहुं कथन कछुस्वामी। वोल्योविप्र सुनत
तहिवानी। रहतव कस मानस निजजाना। मे
न करहुं प्रीय तोरवखाना। परिहरि सकुच

८२

भ०
४

कथन करइ प्यारी। वेग करहु फुरवानि नमारी
सोरठा। पति अनुकूल विचारि। बोली सो उन
भामनी। प्राणन नाथ सिधारि। मै जव भिल्ला
दिन करन। उनवर एक प्रवीन। रहा करन
पावन कथा। तहांश्रवण मै कीन। भक्ति
महातम शिवपुरी। तवतें अस अभिलाख
हवि। उपजि परी जीय मोर। वसि कुटंब ज
न हरपुरी। हरिय वपाव अगाधोर।२। टीका

४

ऐसे सो ब्राह्मण पुंडरीक नाम करके प्रसिद्ध
था तब एक समय तिसकी स्त्री भिक्षाटन क
रती हुई एक ग्राममें जो आई तो तहां एक ब्रा
ह्मण पापोंके हर करने वाली और संसार (
का भय हरने वाली बड़ी पवित्र कथा जो है
सो बाच रहा था तिसमें शिव पुरी जो काशी है
तिसकी महिमा और महात्म कथन होय
रहा था सो ब्राह्मणकी स्त्री सुन करके परम

82

भ. ५

हरष को प्रापतभई और मनमे कहने लगी
कि जो कबी भगवान कृपाकरैं तो हम कुटं
बके सहित तहां शिवपुरीमे जायकर और
भलीप्रकार यात्रा कर कर जनम जनम के
पापजोहैं सो सब निवारण करलेवें इस प्र
कार संकल्प धारकर ब्रह्म पतनी भिक्षाटन
करके घरमे चलीआई और पतीके चरनोप
र सीस नायकर हाथ जोडकर प्रार्थनाकरने

५

5

लगी किहे प्राणनाथ जो मेरी विनती मानिये

तो मे कुछ कथन करतीहूं नब पुंडरीक क

हने लगा किहे प्यारी सो कौन बातहै जो त

री कथन की हूई मे नहीं मानूं गातूं संकोच

और संदेह को त्याग करके अपने हृदय की

वारता शीघ्र कहो मे तैसही करूंगा ऐसे

पतीको प्रसन्न देख करके सो बाला कहने

लगी किहे प्राणपती मे जब भिक्षाटन करने

को बाहिर ग्रामविषें गई तो तहां एक चन्दर ब्रा
ह्मण प्रीती पूर्वक पवित्र कथाजोहै सो बांच
रहाथा तहां तिसके म्हाबेस मैने शिवपुरी जो
काशीहै तिसकी यात्राका महातम श्रवण
कियाहै हे प्राणनाथ तब से मेरे चित्तमें इह
अभिलाषा और रुची होय रहीहै कि कुटंब
के सहित तहां काशीमे जाय करके वासकरें
और महादेवकी कृपासे सरव कलेश और पा

म०
६
४२
6

ऐसे निवृत्त होयकर जगतमैं सजनके पात्र
हो जावैं। ४। चौपाई। प्रीय सखा सजन कथ
न अस सोई। बोल्यो विप्र हरष वश होई। सु
भे कथन तोर अस नीके। सखद मोहि
प्रीय भावन जीके। एक मोर मनोरथ ए
ह। कौन कथन तव निज सखा जेह। मै
अवश समिथर पुरिमाहीं। प्रीया चलहूं
संशय कछु नाहीं। पै पाछल कछु दिवस

८२
भ.
८

न प्यारी। हमरे ग्राम लोग मिलि कारी। व
लिहैं रुचिर भीम उरिकाहीं। हमतिन संग
जाव मिलि नाहीं। तोलो धन संचित कछु
करहो। तहि पश्चात पंथ पग धरहो। तो मा
रग कर होहिं निवाहू। अस कहि वदन
विप्र वरनाहू। लागो करन जाचना जाई।
जहं तेहं धनिन भवन भ्रमपाई। जहि ज
हि जथा उचित कछु दीना। सोल्पायो धनधा

८

मग्रबीना। बहुरि पतनि पितुमात समेता। देखि सदिन नजिविप्रन केता। सज्जन निकर ग्राम निज लोका। गवन्यो हरष हरिगत शोका। कहुं कहुं गुनि सनेह मनमाहीं। पथश्रम देखि दार निज काहीं। लेन उठाय पीठ उजसोई। जननि जनक उरसोच नकोई। सोग्रति दीन जठर पदचारी। मारग छ्रम कर विपुल उरारी। तिनकर ग्रन्नमात्र

भ
८

कछु करहीं। सेवन विप्र पतनि अनुसरहीं
सोरठा। अस प्रकार समुदाय। पहुंचे समि
धर रुचिर पुरी। चेदी भीम सहाय। ईस्वरि
जवन प्रसिद्ध तहां। दोहा। तहि सामीप [illegible]नि
वास करि प्रमुदित कीन सनान। भगवति
पूजन कीन जत प्रीति भक्ति सनमान।३।
टीका। इस प्रकार स्त्रीके सबसे वचन[illegible]
नकर ब्राह्मण जोहै सो हरष पूर्वक कहते

नेलगा कि हे प्यारी इहतेरा कथन जोहै सो
मेरे चित्तको वहुत सुख दायक और प्या
रा लगाहै मेरे हृदय मै पूर्वही इस वार्ता
की अभिलाषा होयरहीथी कि जो तूंने
अपने मुखसें कथन कीईहै हे सुशीले
प्रथमे अवश्य करके सुंदर मोक्षकेदेने
वाली शिवपुरी जोहै जिसके दरसन को
चलेंगा इसमे कुछ संशय नहीहै परंतु

४२
भ
५

हेप्यारी अब कुछथोडे दिनोके पीछे हमा
रे ग्रामके लोग मिलकर शिवपुरी अर्थात
कासी की यात्र को जाने वालेहैं हमभी
तिनके साथ मिलकर आनंद पूर्वक तहां
को चलपडेंगे तवलग कुछ धन जोड ले
ना चाहिये फिर मारगमे पगधरना उचि
तहै क्योंकि धनकेविना परदेसमे निर्वाहहो
नावडाकठिनहै ऐसे स्त्रीको चिताय करके

पुंडरीक जो है सो जहां तहां धनी जनोंके घरमें
जाय करके धनकी याचना करताभया अ
र्थात धन मांगताभया तब जिस किसीने
जो कुछ दिया सो आनंदसे अपने घरमें ले
आवताभया फिर सुंदर शुभदिन विचारक
रके मातापिता और स्त्रीके सहित घरको
त्यागकर अपने ग्रामके सब लोगोंके साथ
मिल करके शिवपुरीकी यात्राको चलपड़

४२

भ

९

ता भया तब मारगमै जाते जाते कहीं स्त्रीजो
घकजाती ता स्नेहके वश भयाहुआ तिस
को पीठपर उठाय भी लेता और माता पिता
जो वृद्ध बडे सिथल और पदचारी अर्थात
पाउं प्यादे चलते जावीहोतेथे तिनके श्रमका
हृदयमै कुछ भी विचार नहीं करता स्त्री की
आज्ञा अनुसार तिनकी केवल अन्नमात्रही
सेवा करताथा इस प्रकार मारगको काटके

१०

र सब लोगोंके सहित आनंदसे कासीमे आ
य प्रापतहूये तव भीम चंडी देवी जो प्रसिद्ध
है तिसके पास निवास करके फिर हरष पू
र्वक सनान कर कर भक्ती सन मानसे श्री
भगवतीका पूजन जोहै सो किया। १। चौपाई
इत उत वहुरि सकल अनुरागे। दरसन कर
न सादिन मनलागे। तहांएक उज कथासु
हाई। रघ्या करत सादिर मन भाई। जननी

४२

भ०

॥

जनक महातम सेवा। वरणन कीन वदन म
हि देवा। पित ब्रह्मा पित हरि हरनाना। जे
सादर सेवन पितमाता। करहिं सकल चित
कपट वहीना। तास प्रसन्न देव सब कीना।
कवहूं कि करहिं कोप पितमाता। कोपहिं
सकल देव विधाता। चरणोदिक पित मात
सुहावा। जेसादिर निजसीस चढावा। तास
रुचिर तीरथ फलहोई। उचित रहित संशय ॥

नहिं कोई। सुत कर रुधिर जवन सुतताई।
त्रिविध करम कर संसृतिगाई। जियत रैहिं
उनकर प्रानमारी। मृत पाछिल निज परम
विचारी। मृतक करम श्राधादिक जेता। क
रहिं वेद विधि संजननेता। गयाक्षेत्र पुनि
जाय सुभागी। सादिर पिंडदान तिनलागी
जहं तहं ठौर ठौर सब प्रीती। इह निज क
रन करत सुभरीती। तिन कर सद गति

४२
भ०
१२

करहिं सुहावा। असमंत धरम विदत जगगा
वा। होहिं सपुत्र जवन सुभचारी। जनति ज
नक आयस अनुसारी। लेहिं सदिनदिन ह
रि सुहाई। धन संतति सुख सुजस बड़ाई।
तिनतें जेव मुख सुत होई। ताके सुख सपने
हुं किमिकोई। जब पित मात काय परि हरहीं
तवसुत काल ववन जे करहीं। रुचिर असी
स्वाद तिनसोई। होत सफुर संशय नहिंकोई

१२

तिसतें अधिक भाग बडचारा। जननी कर सं
स्वति अधिकारा। सोरठा। जमिहहि पर सब
नाहिं। तिसिकोउ साखा सहृद नहीं। संसर
ए जगमाहिं। जननीतें परहित करन। था
टीका। तिसतें उपरांत जहां तहां जाय करके
सरब असथानोका बडी प्रीती भक्तीसे दरस
न करने लगे तब पुंडरीक नामा ब्रह्मणका
देखताहै कि एक असथान परबडी प्रीती औ

४२
भ०
१३

र मधुर वाणीसे एक ब्रह्मण सुंदर कथावाच
रहाहै तहां माता पिताकी सिवकाईका महा
त्म जोहै सो बरणन होय रहाथा कि पिताही
ब्रह्मा औार पिताही विस्नु औार पिताही महादे
वहैं जो कपटसे रहित सरल साधु चितहोय
करके माता पिता की सेवा औार भक्ती करते
हैं तिनोंने मानो सर्व देवताउंको प्रसन्न कर
लियाहै औार जिनपर माता पिताका कोप

१३

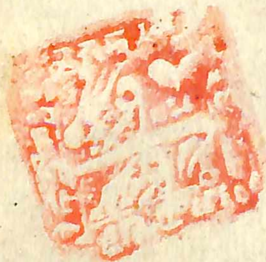
होताहै तिनपर संपूर्ण देवताभी कृपन हो
य जातेहैं और जो अपने माता पिताके च
रनोंका जल बडे आदरसे सीसपर चढाय
लेतेहैं तिनको प्रतक्ष तीर्थका फलहोताहै
और तिनके सब पापभी हर हो जातेहैं पु
त्रका सेवन धर्मतीन प्रकार करके जगत
मे प्रसिद्धहै पहिलेतो माता पिताके जीव
ने पर्यंत उनकी आज्ञाके अनुसार रहे और

८२
भ०
१४

14

दूसरा मृत होनेके पीछे तिनका मृतक कर्म
और तिथीवत श्राद्ध इत्यादिजोहै सोकरे ती
सरा गयाक्षेत्र पर जाय करके सनमान पू
र्वक सब पिंडदान कर कर तिनकी सदग
ती करवाय देवे इस प्रकारजो पुत्र मातापि
ताकी आज्ञा अनुसार और तिनकी भक्ती
सेवामें रात्रीदिन तत्पर रहताहै तिसको
धन संतती और साख सुजसकी दिन दिन

सबी हीं होतीहै अर्थात तिसका धन परि
वार और सब सजन दिनदिं वढताहीजा न
ताहै और जो माता पिता की आज्ञाके वि
रुद्ध और तिनसे वेमुखहोगा तिसका स
व संपती और सजन संतती की प्रापती
कदापि कालनहीं होवेगी और जव माता
पिता शरीरको त्यागतेहें तिससमय प्रस
न्न होय करके जो वचन कहतेहैं सो तिन



८२

भ०
१५

का आसीर वाद सब सत्य होय जाताहै इस
मे कछु संशय नहींहै और इह माताजोहै
सो जगतमे बडी दुरलभहै पितासे माता
का दसगुणा अधिकार अधिक होताहै
जैसे हरीजो विस्नु भगवानहैं तिनसे परे
कोई और देवता नहींहै तैसे हीं जगतमे
जननी जो माताहै तिसतें परे हितकारी
और [illegible] सुहृद हमरा कोई नहीं है। ४।

15

१६

चौपाई। जो निज गरभ मास खट वारी। धार
न जननि लेत श्रम भारी। पुनि कराय अ
स्यन हवि पाना। पालहिं करि लालन म
ख नाना। जो रुज उर उपजहिं सुतकाहीं
नहिं मानत उर मानस माहीं। होत उघु
गद तजत निज प्राना। धन्य जननि सम व
यो न आना। जहंलग विदत विश्व उपकारा
सब कर प्रति उपकार निहारा। जे उपकार

भ.
८६

जननि जगमाहीं। प्रति उपकार नास कछु नाहीं। अस प्रकार सुनि कथा प्रवाना। पुंडरीक मानस अकुलाना। निजकरनी करति दर नलागा। कवन मोर सहश हतभागा। जिन जग वृथा जनम निजलेवा। कीन न जननि जनक कछु सेवा। सुनिप्रसंग अस आश्रम आवा। पित पदमात नम्र सिरनावा। भनत वदत पुनि जुगकर जोरी। स्वामिन

८६

सुनहु विनति कछु मोरी। मै नम कहूं जन
भक्ति कृपाला। लावा ईहां नजन निजथाला
अब प्रभु मोर मनोरथ एहा। पुनि लैचल
हू रुचिर निजगेहा। उहां नमार् वैहि पदेसे
वहूं। धारन वपुव विस्व फल लेवहूं। का
सीतें कछु न्यून नमोरे। सेवन चरन भवन
प्रभुतोरे। मैरुरव जप्फ न्युफ मतीना। क
छुतमार सेवन नहिं कीना। सोअपराध ।

४२
भ॰
१८

मोर पित माता। तुमहु असीर वाद वर दा
ता। हरिहर आन देव समदाये। तुमहुं मे
र संतत सुखदाये। सुनि अस पुंडरीक स
ड़वानी। परम वनीत प्रीत हितसानी। जन
निज नक नव वदन वखाना। पुत्र कथन
तव पसो नजाना। अवलगा कछु अपराध
हमारा। तव नकीन सत प्राण अधारा। जो
तन कवहुं भूलि कछुकीना। सो हम पुत्र

१८

17

दासा करि दीना। सहश स्रवन कवन जग
प्यारा। जननि जनक कर सुत धन सारा।
हजन्नत अंध वृद्धपित मैया। सुतहुं होतनि
न केर सहैया। जस भावति तस करहु पया
रे। तव प्रसाद सब सुलभ हमारे। पैइक
हृदय लालसा एहू। सुनहौ स्रवन सील
मतिगेहू। सोरठा। ललित शंभु पुरिमाहिं
हम आये तजि सदन निज। देखे दृग भरि

नाहिं। देव भवन जहं तहं रुचिर ।५। टीका
फिर कैसी भी माताहै कि जो पुत्रको अपने
गरभमे दस महीने राखकर फिर वडे श्रम
और कलेशसे जणतीहै और प्रेमसे स्थन
पान करायकर वडे यतन कर कर पालती
है तिस वालकको जो कबीकोई रोगपीडा
उपजतीहै तो तिसका कलेशनहीं सहार
सकती अपने प्राण त्यागनेको त्यारहो जा

१८

ती है जैसे इह जननी जो है सो धन्य है इसके स
मान उपकारकी निधी जगतमे और कोई न
हीं है देखिये संसारमे जहांलग उपकार है
उनसबका वदला होता है परंतु इह माता
का उपकार जो है इसका वदला जगतमे को
ई नहीं है इह वडा अगम है किसीसे भी दि
या नहीं जाता इस प्रकार ब्रह्मणके मुख
से इह पुराणकी कथा सुनकरके पुंडरीक

४२
भ
१५

19

जोहै सो ग्लानिहोय करके हृदयमै बहुत प
छतावने लगा कहताहै कि अहो मेरे समा
न जगत मै मंदभागी और पापकीखानी
कौनहै कि जिसने अपना सब जनम वृथा
हीं गवायदिया मातापिताकी कुछभीसेवा
और भक्ती नहीं करी ऐसे अपने आपको
धिक्कार करताहुआ ततकाल मातापिताके
पास चलाआया और बडेदीनभावसे उनके

१५

चरनोपर सीसनायकर नम्रवाणीसे हाथ
जोडकर् कहनेलगा किहे कृपानिधान
मै तुमका चरसे भक्तीप्रीती पूर्वक ईहांले
आयाथा सो अब मेरा मनोर्थ पूर्णहै कि
तुमको फिर तहा चरमेहीं लेचलू और
उहांहीं वैठ करके तुमारे चरनो की भक्ती
सेवा कर कर जगतमे शरीरके धारनेका
फलजोहै सोप्रापत करू हे नाथ तुमारे।

४२
भ॰
२॰

चरनो की सेवा करनी सेरेको कासीकी यात्रा के तल्यहीं है कुछ मनन नहीं है मै सर्व मोह के वश भयाहुश्रा मूढ श्रोर डरमती जोथा सो तुमारी भक्ती श्रोर सेवा कुछभी करनही सका तोते इह मेरा अपराध जोहै सो कृपा करके श्राप क्षमा करिये ऐसे पुंडरीक के मुखसे वचन सुन कर मातापिता कहने लगे किहेपुत्र इह तेने का कथन कियाहै २॰

हमको भली प्रकार विदत है कि आजलग
तैने हमारा कोईभी अपराध नहीं कियाहै
सदैव हमारी आज्ञाके आधीन रहाहैं दे
खो तेरेसे कोई भूल करके बाल अवस्था
मै अपराध होय गयाहो तो पुत्रसोभी हम
तेरेको क्षमाकरते हैं पुत्र संसार मे बड़ा
वल्लभहै इससे प्यारा और कोई नहीहै मा
तापिताका सर्व धन पुत्रही होताहै देखो

भ॰ ४२
२१

जव रोगकरके ग्रस्तअंध और वृद्ध मातापि
ताहोजातेहैं तव तिस समय तिनका पुत्र
ही साहायक होताहै अव तात जैसी तेरे
चित्तकी भावनीहै सो कर हमको तेरेप्रसा
द करके कुछदुर्लभ नहींहै सव सहज औ
र सुगमहीहै परंतु हेपुत्र एक अभिलाषा
हृदयमे रहिगईहै किहम ईहां शिवपुरीमे
आये और आजो दिव्य अस्थान और देवभ

21

वनहूँ जिनका दरसन नहींपाया ।५। चौपाई
पावन मणीकरनका जाहीं । मज्जन कियो
तात नहिं जाहीं । विस्वेस्वर प्रभु दरसन जो
ई । भयो नहरन ड्रत भवसोई । तोते हमरी
इह सुतकामा । मज्जन निकर लोक निजधा
मा । जहं तहं करि दरसन समुदाई । चलव
वहुरि निज भवन पराई । असजब जननि
जनक मुख वरना । पुंडरीक नव वंदित च

८२
भ
२२

रना। जहं तहं देव भवन मनभाये। भक्ति प्री
ति जन सकल दिखाये। बहुरि सनानदान
सभरीती। सादिर यथा योग्य सवप्रीती।
तिनतें रुचि अनुसार कराया। सवकर हृ
दय परम सुखछाया। पंचकोसि आदिक
सुभ पावन। यात्राकीन रुचिर मनभावन
जहं जहं जस अधिकार विचारा। तहं की
न्हो तस पूजन सारा। अस प्रकार दरसन

२२

ग्रग भंगा। सकल ग्राम निज लोगन संगा
जननि जनक कहं मुदित कराई। आयव
झटि निज भवन पराई। निवसि सदन सा
दिर महिदेवा। निसिदिन निरत मात पि
तसेवा। प्रातकाल उठि सोच करावहिं। धा
वन दसन उदक जनल्यावहिं। करन प
खारि चरन सनमाना। उस्नादिक सनदे
न सनाना। उज्जल बसन लेत हरषाया।

४२
भ०
२२
23

रतिजन करत मार्जन काया। बहुरि हवि
र आसन बैठारी। करहिं सनान आप ब्रत
धारी। सहज सरल चित कपट वहीना। संतत
भक्तिमान लीना। अस प्रकार कछु काल वतीता

पितु

एक दिवस नव विप्र पुनीता। नारायण रंजन
उनदेवा। मनवच करम तास लखिसेवा।
परम हरष बस हरनर नाहीं। धरि
वर विप्र रूप निज नाहीं॥

२२

हैभज बरन स्याम घनघाला। ललित नयन
नव नलन विसाला। नाहूस्व दीर्घ मनमोहा
वपुस्यामान मान प्रदसोहा। आछे भवन ता
स पटवारी। सोनहिकाल विप्रव्रतधारी।
संतत निरत मातपित सेवा। वोले ताहि व
चन सुरदेवा। अति प्रसन्न मंजल मृदुबा
नी। मधुर मृदुल दायारस सानी। सोरठा।
मे अनथी गृहतोर। आवाभिलाटन करन।

८२
म.
२४

करहु विप्र वरमोर। हृदय मनोरथ सफल
भव।६। टीका। कहतेहैं कि परम पवित्रम
र्ती करनका जोहै पुत्रतहां सनान नहीं कि
या और जगतके पापोंको हरकरनेवाले वि
श्वेश्वर भगवानजोहैं तिनका भी नेत्र भर
कर दरसन नहीं पाया ताते हमारी इहला
लसाहै कि अपने ग्रामके सब लोगोंके स
हित जहां तहां सबदेव स्थानोंका दरसन

24

२५

पाय कर फिर आनंद पूर्वक अपने घरको
चलेआवें ऐसे माता पिताके मुखसे वचन
सुनकर पुंडरीक चरनोपर सीस नावता
भया और तिनकी आज्ञा अनुसार जहां त
हां बडी शोभा करके पुष्कर देव अस्थानथे
सो तिन सबका दरसन और यथायोग
विधिवत सनान दान करायकर फिर पं
चकोशी आदिक बडी उत्तम यात्राजोहैं।

भ.
२५

सो करवाई जहां जहां जैसा अधिकार रहा त
हां तहां तैसा ही पूजन करवाया इस प्रकार
पापोंके हरने वाला देवअस्थानोंका दरस
न जो है सो अपने ग्रामके सबलोगोंके सहि
त मातापिताको भली प्रकार कराय कर
फिर आनंदसे सब समाजके सहित अपने
घरको चले आये तब ईहां घरमै भी पुत्री
क नामा सपुत्र ब्राह्मण अपने नियम व्रत

सार करना पिता की भक्ती सेवा में लीन रहना
नित्य प्रातःकाल उठना प्रथम शौच करावना
फिर दातन और जल ल्याय रावना तिसतें उ
परांत हाथ और चरण प्रक्षालन करवाय
करके फिर गर्मजलसे स्नान देकर और उ
जल वस्त्रसें सनमान पूर्वक सब शरीरको
पोंछकर प्रीतीसे ल्याय करके सुंदर आस
नपर बिठाय देना और फिर आप स्नान

९५

करनेको जाताथा इस प्रकार जब सहज सी
ल और निसकपट पुंडरीक ब्रह्मण को माता
पिताकी सेवा करते करते कुछकाल व्यती
त होयगया तब एक दिन जगत के पवित्र
करने वाले ब्रह्मण देवताओंके हितकारी भ
गवान तिस ब्रह्मणकी पितृभक्ती अर्थात मा
तापिता की सेवा देखकर परम प्रसन्न भयेहु
ये दीनबंधु ब्रह्मणका रूपधार कर तहांचले

भ्रावतेभये कैसाभी रूप भगवानकाथा कि
लेवी दोभुजे भ्रार स्याम मेघवत शरीरका
रंग नवीन कमलवत शोभावाले विशाल
नेत्र नाकरूव भ्रार नादीरघ अर्थात नाछोटे
भ्रार नाकुकुवडे अेसमामान शरीरकर्के हीं
भक्तजनोके मनके मोहित करनेवाले दी
नानाथ तिसके चरमे पाउंपयादेही चलेभ्रा
वतेभये नव तिस समय पुंडरीक अपने ।

४२
भ०
२८

227

पिता माताकी सेवा मै लगा हुआथा तिसको
भगवान आनंद पूर्वक बडी कोमल और म
धुर वाणीसे कहनेलगे किहे ब्रह्मण मै आ
तयीहूं और तेरेघर भिक्षा लेनेकेलिये आ
याहूं अबतू मेरे हृदयका मनोरथजोहै सो
सफल कर ।६। चौपाई । अस प्रकार भगव
न जब बरना । सुन्यान पुंडरीक निजकरना
कृपा नकेत बहुरि अस भाषा । सोहंन हृद

यविस कछुकाला। रहो करत सेवत पितमाता
त्रिलियेवार वहुरि भवज्ञाता। भने वचन नव
विप्र सुजाना। उासोसिला तुरत न हिपाना
जोलोक रहं मात पित सेवा। तोलोतुम इ
हि परमहि देवा। वैठहु मोन द्वार समथा
मा। अस कहि भयो निरत निजकामा। जन
ति जनक अस भक्ति वशेखी। दीनद्याल त
हि उज कर देखी। वसीभूतकै भीत विधंसा

४२
म
२८

२४

लगे करन उर नाम्ह प्रसंसा। तोला पुंडरीक
मनभावा। भोजनलागि जा सयन सुहावा। पाद
समर दनलो सिवकाई। करि सव जननि
जनक सुखदाई। पुनि प्रायो ग्रतिथी उज
पासा। भरि भाजन जल विमल हुलासा।
कछु विलंब मानस निजजानी। बोल्या व
दन सकुच जनवानी। अव उजवर लवक
वेहु सनाना। ते कर चरन तोर सनमाना।

हरषि करन प्रक्षालन करहूं। पय्य आगम
न सकल श्रम हरहूं। रहे मौन उज रूप
उदारा। यद्यपि भयो विप्र वहुवारा। पुंडरी
क तव जुग करजोरी। कहत वचन सख
विनय नयोरी। मोरे करत मातृपितृ सेवा
भई विलंब विपुल महिदेवा। तांते छमहु
मोर अपराधू। दायानधी देवहुज साधू। अ
स कहि नेम्र चरन सिर धरयो। छमहु

४२
म.
२९

तमहु बहु बार उचरयो । सेमधल मात ।
पितसेवा । करहुं न आन काज महिदेवा ।
यद्यपि प्राण मोर किन जाहीं । तद्यपि तज
हूं भक्ति प्रणनाहीं । अस प्रकार बहु बद
न बखानी । गहे चरन सादर उजपानी ।
करिय न अस अमरख निधिदाया । होत
सपदि हगन दरसाया । मनमाव शिलारूप
द्रुम सोई । देखत चकित चकत चितहोई । २९

29

होऊ।लागेण रोदन करन तब पुंडरीक प्रऊ
लाग।धाय आय रोदन सुनन ग्राम लोग
समुदाय।७। टीका।इस प्रकार विप्ररूप
भगवान यद्यपि विनाय करके भी कहु
तेभये कि हम अतथी भिक्षालेने आयेहैं
तद्यपि पुंडरीक जोहै सो कुछ भी सुनता
नहींभया दीन वंधुने फिर कहा तिसनेतो
भी उत्तर नहींदिया जब तीसरीवार फिर

४२

भ॰ भगवान कहते भये तब ब्रह्मणने नरतहीं
३॰ एकशिला पकड करके फैंकदी और कहा
कि जबलगमै मातापिताकी सेवा करताहूं
तब लग हे ब्रह्मण तुम इस शिलापर मौन
होय करके मेरे घरके द्वारमै बैठरहो इत
ना कहताही फिर अपने कारजमै लीनहो
य गया तब तिसकी पिञी भक्ती अर्थात ।
मातापिता की सिवकाई देख करके भक्तोंका ३॰

३०

भय ग्रौर कलेश हरने वाले भगवान ब्रह्मण

की भक्तीके वश भयेहूये हृदयमै तिसकी

अनेक प्रकार शलाघा ग्रौर वडाई करनेल

गे इतनेमै पुंडरीक भोजन सेजा सयन वर

न चापन इत्यादि मातापिता की संदर स्तिव

काई जोहै सो प्रीती सनमानसे सबकरके फि

र जलका पाचले करके ग्रानंदसे अनथी ब्रा

ह्मणके पास चलाग्राया ग्रौर विलंब भई ।

४२
भ॰
३१

जानकर सकुचके वश होय करके कहनेल
गा किहे उन प्रधान अब आप सनान कविये
मे प्रीतीपूर्वक हमारे हाथ और चरन प्रक्षा
लन करातांहूं ऐसे यद्यपि बहुतवारही क
हा तद्यपि अनथी ब्रह्मणने कछ उतर नहीं
दिया तब पुंडरीक हाथ जोड़कर बड़ी नम्र
वाणीसे विनती करनेलगा किहे नाथ मै
अपने माता पिताकी सेवामेलगा हुआथा

३१

इसते मेरेको विलंब होय गईहै इह दीनका अ
पराध क्षमा करिये क्यों कि तुम देव ब्रह्मण
श्रोर साधू सदेव दया श्रोर क्षमाकी निधीहो
तेहो ऐसे क्षमा क्षमा कहताहू श्रांपुंडरीक
चरनोपर सीस धरकर फिर विनती करने
लगा कि हे कृपानिधान मै माताँकी सेवा
के बीचमै श्रोर कोई कारज नहीं करताहूं
यद्यपि मेरे प्राण भी चलेजावें तद्यपि मै श्र

पिता

भ०
११

पना प्रगट नहीं लगताहै इस प्रकार वारवा
र कहि कर फिर अतथी ब्रह्मणके चरन प
कड लेताभया कि हे दयाकी मूरती इतना
कोप कों करतेहो ऐसे जब हाथसे चरनो
का सपर्श भया तो क्या देखताहै किवे अ
तथी ब्रह्मण पाषाण रूप होय करके स्थि
त भयाहूआहै इस अचरज कौतकको देखकरउ
ठीक परमेश्वर और व्याकुल होय करके हाहाशब्दसे रोदन

११

करनेलगा तब ग्रैमे तिसका रोदन सुन कर
के ग्रामके सब लोग तिसके घरमे धावते
हूये चले आये।७। चौपाई। निज निज कह
न सकल विहाना। इह कस भयो विप्रपाखा
ना। पुंडरीक तब कहा बुझाई। मैसेवा आप
न पित माई। ताहां करत वेर कछु भययो।
तोला वैठि हार उज रह्यो। मजव आय भ
न्यो करजोरी। तुमहु विलंव विप्र वरमोरी



५२
भ०
३३

कीन्हा जब सपर्श करकेरा। ततछण शिला
रूप उजहेरा। लखि असु पुंडरीक सखिवानी
अति अचरज मानस सबमानी। लागे निज
निज करन विचारा। शिलासरम कछु पर
हिं नपारा। उजविहान हुद सब सपाने। भये
थकत जब मरम न जाने। तब निज निज स
व भवन सिधाये। रहे कछुकजे पाछिल आ
ये। पुंडरीक [illegible] विसमय मन लीना। आपन स

३३

कल निमज्जन कीना। पैजल मात्र वदन कछु
पाना। किये नइजवर धरम प्रधाना। उचि
त शोकवस मानस भारी। विलपि कहत अ
स हृदय विचारी। अनथी विप्रमोर गृह आ
यो। मै भोजन विनु लाख निमायो। कहिविधि
दैव वदन निज पाऊं। कहिके अव उचित उस
ह सुनाऊं। उज्जप्रवीन अस सोचि विचारी।
उर उपवास लीन व्रतधारी। जननि जनक

४२
भ.
२४

34

भामति जनदेखी। भये दुखित निज हृदय
वसेखी। इन्हिके अव विनु भोजन पानी। हो
हिं अवश्य प्राण करहानी। दैव उपाय कौन
अव होई। सज्जन सखे देखि सव कोई। सोचि
न सहो सवन उपवासा। अस प्रकार जव दि
वस विनासा। मिलि विहान वृद्ध नहियामा।
आये पुंडरीक उनधामा। कहत परस पर
हृदय विचारी। मानहु विप्र वर वात हमारी

२४

अनसी भये भवन पाषाना। अब इहि करन
व देहु सनाना। सुमन सुगंधि तिलक सुन
धारी। विधिवत भक्ति प्रीति अनुसारी। करि
पूजन नैवेद लगावहु। तव पाछे भोजन तु
व पावहु। इहितें होहिं नविप्र तुमारा। धर
मदीण अस वचन हमारा। हितक वचन
अस उजन उचारा। पुंडरीक कीन्हा सुईका
रा। सोरठा। करि पूजन सवतास। भोजन

भ. सवन जिमाय पुनि। पसो आपु उपवास।
३५ खान पान कछु ना कियो। ८। टीका। नव वि
ह्वान जन जोथे सो अपने अपने सब कहने ल
गे कि देखो बडे अचरज की बात है इह ब्रह्मण
कों कर पात खाए होय गया है नव पुंडरीक क
हने लगा कि मै माता पिता की सेवा मे लगा
हुया था इह ब्रह्मण आय करके द्वारे मे स्थि
त होय गया मेरे को कार्ज करके अवश्य क
३५

दूवेरके [illegible]गाई तोमै आयकर तिसवेरके क्ष
मा कराने को हाथ जोड़ कर विनती करने
लगा फिर जब चरनो को स्पर्श भया तो क्या
देखता है कि ब्राह्मण पाषाण रूप बना हूआ
है ऐसे पुंडरीकके मुखसे वचन सुनकर स
ब ब्राह्मण अचरजके वश होयकर अपने अ
पने हृदय मै अनेक विचार करते हैं परंतु
वास्तव भेदका किसीने भी पार नहीं पाया।

१२
भ.
२६

तब बडे विद्वान और वृद्ध ब्राह्मण जोथे सो सब
सोचते सोचते थकत होय करके अपने अ
पने घरोंको चलेगये तिनसे पीछे और जो
जो आये सो भी तिस अदभुत कौतक को दे
खकर हृदय मे बडा आचर्ज माननेलगे औ
र पुंडरीकभी परम सोचके वशभया हुआ
अपना नित कर्म तो सब करताभया परंतु
हृदय मे चिंता और कलेश मानकर कुछ

३६

२६

जलमात्र भी पाननहीं करताभया कहता है
किहेदैव मै अब अपना दुख किसको सुनाऊं
इस अतथी ब्राह्मण जो है सो मेरे घर मे आया
इसके जिमाये विना आप कैसे भोजन पाऊं
इस योग्य नहीं है ऐसे कहिकर सो अतथा
री ब्राह्मण अन्नजल इत्यादि कुछ खानपान
नहीं करताभया तब मातापिता और स्त्री
तिसकी ऐसी दशादेखकर परमचिंता क

भ. ३८

४२

एके डरीभयेहूये कहतेहैं कि देवहम कौन
यतन करैं इसके प्राणतो भोजनके विनाक
दाचित नहीं बचैंगे सज्जन सोखजोहैं सो भी
सब देख करकै सोचके वशभये हूये खान
पान कुछनहीं कर्तेभये इस प्रकार जबदिन
बतीत होयगया तब ग्रामके सज्जन सब
मिल करकै पुंडरीकके घरमै चलेआय श्रो
[illegible] हितके वचनोंसे कहनेलगे

३७

३८

[illegible] पुंडरीक इह अनथी ब्रह्मण जो
शिलारूप होय गया है अब इसको तूं सना
न देकर गंध पुष्प तिलक माला इत्यादि सब
सजाय कर और प्रीतीभक्तीसे भलीप्रकार
पूजन कर कर सुंदर नैवेद जो है सो लगाय
दे और फिर पीछे आप भोजन पायले इस
से हमारे वचन करके तेरा धर्म और व्रत जो
है सो कदाचित भंग नहीं होगा जब इस प्र

भ ४२
१८

कार हरद्ब्रह्मणोंने कथन किया तव कुंडरी
क ततकाल स्वीकार करके सुंदर विधी अ
नुसार तिस ग्रंतथी पाषाणका पूजन कर
ताभया तिसते उपरांत भक्तीप्रीती से घरमे
सव ब्रह्मणोंको भोजन जिमाया ओर य
था योग्य सवका आदिर सतकार किया
परंतु आप खान पान कछुनहीं करताभया।८
चौपाई। कहहु वदन जब लग मम गेह।

१८

करहिं न प्रकट पाक उजपहू । तब लग कछु
भोजन जलपाना । मैं नकरहूं जावहिं यदि
प्राना । असदृढ हृदय करत महिदेवा । ला
गेपा करन मात पितसेवा । तिनकर यथावि
न शिवकाई । करि सादिर सब विप्र सुहाई
तब रजनी आसन निज आवा । निद्रा निरतस
पन अमपावा । अखिल लोक विश्राम अगा
री । करुणा निधी चतुर भुजधारी । पुंडरीक

रा. पीत

भं. २९

लोचन घनस्यामा। बसन पुनीत अभिरामा
मकर कुंडल कल करना। कैकि क्रीट
मुनिमानस हरना। भृकुटी वंकसुभग शुक
नासा। चंदन तिलक लिलाट विकासा। अरु
न वरन मृदुपंकज चरना। उज्जल नखमंय
कडति हरना। कोटिमदन छवि निदरत सो
भा। सरउज धरनि हरन भव लोभा। अस प्र
कार धरि रूप सुहाये। हरिमालान स्वपन

२९

नहिंआये । विप्रभक्ति वशादीन उवारी । बोले वदन वचन हितकारी । हनहू भक्त तव स हश प्यारा । मोरेको नाहिंन संसारा । मैतव देखि मात पितसेवा । भयो प्रसन्न विठल म हिदेवा । धन्य सज्जनम तोर् धन करनी । मंहि मानाय वदन किमि वरनी । मैतव भक्ति वि वश हित माना । अनर्थीवन्यो तरत पावा ना । ईहां सरवदा काल प्रवीना । वाहुं निवास

४२

म
५०

हरिचिर निज कीना। यिशीभक्ति दीखिरन नोरे होतन नपति विप्रवर मोरे। अब मै वेग हारिकाजाई। रुकमणि संजत वहु हिपराई। तारे मदन खेस जत होई। वसहं आय संसय नहिं कोई। ईहां मोर दरसन सुखदाई। जेजन करहिं भक्ति जत आई। लिये पुष्प तुलसी दलचारु। मोहि पूजहिं संजत मनकारु। मै अभिष तिन कर मन भाये ॥

४०

५०

कवहूं सफल संतनि समदाये। मोरसभक्ते दा
स हढसोई। इहिकलि काल प्रीति जनतेहोई
इहिफल इहि मूरति सावदाई। पूजहिं मोर भ
क्ति सरसाई। मै तापर अनकूलन थोरा। पाव
हिं परम धाम सावमोरा। तातें सुनहु भक्तअ
नुरागी। धरहु धीर चिंता सबत्यागी। मैअनथी
वंसाण नहिं कोई। भोजन करहु स्वस्थ चित
होई। तजिनिज घरी हरिकावाहु। इहपाषा

४२

म.
५।

4(

ए रूप सभ थाहू । जननी जनक तोर महिदेवा
देखन भक्तिभाव सचिसेवा । करहू निवास रु
चिर सवगेहा । अब सब विगत सोच संदेहा ।
विधिवत जननि जनक करि सेवा । करहू प्रा
त भोजन महिदेवा । एह प्रकार निसि सपन
निहारी । स्वपजत ग्राम लोग नरनारी । सोवत
निज निज कहत विचारि । प्रातकाल उठि पर
सपर । डर अचरज मन हारि । भयो अलोकि

५।

क स्वपन कुछ ।९। टीका। कहताहै कि जब
लग प्रकट होय करके मेरे द्वारमे इह आत
थी ब्रह्मण भोजन नहीं पावेगा तबलग मै
यद्यपि प्राणभी चलेजावें कदाचित कुछ
खान पान नहीं करूंगा इस प्रकार हृदय
मै प्रणधार कर पुंडरीकजोहै अपने मा
तापिताकी सेवामे जायलगा तहांतिनकी
जोनित्य सिवकाई करनाथा सो सब करके

म
५२

और रानीको फिर आयकरके सुख पूर्वक
अपने आसनपर सोयरहा जब निद्रामें
लीनभया तब सब भवनोंके स्वामी दया
के समुद्र और पापोंके हर करनेवाले भग
वान जिसको स्वपने में दरसन देतेभयेके
सेभी भगवान कि चारहैं भजाजिनकी और क
मलोंवत नेत्रोंकी सुंदरशोभा पीतवस्त्र और मेखव
न [illegible] कानोमे मकराकृत कुंडल और

५२

[illegible] मोर मुकट तैसेहीं मस्तकमैं चंद
नकातिलक वडी मनोहर बांकी भृवें औ
र याकजो नाताहै तिसके समान संदर
नासिका कमलोंकी शोभाको हरनेवाले
लालीकरके युक्त कोमल चरन और
तिन चरनोंके नखोंकी वडी उज्जल चंद्रमा
के समान शोभा ऐसे गोब्राह्मण पृथ्वी औ
र देवताउंके पालक भगवान कोटि काम

भ. ४३

देवकी शोभाको लज्जा देनेवाला मनोहररू
प धारकर पुंडरीकको स्वपने मे कहते हैं
कि हे भक्तप्रधान तूं मेरा अनन्य करके ह
ढ सेवक है तेरे समान मेरेको जगत मे
और कोई प्यारा नहीं है क्योंकि मैं तेरी इस
प्रीती भक्ती देखकरके अत्यंत प्रसन्न हो
यगया हूं भक्त तूं धन्य हैं और धन्य तेरी इ
ढ़ [illegible] मैं तेरी भक्तीके वश होयकर

थिन्ता सप होयगयाहूं और सदैव ईहांही नि
वास किया करताहूं इहतेरी पिन्नी अर्थात
माता पिताको भक्ती जोहै सोदखने दखने
मेरेको तपनी नहींहोतीहै हेभक्त अवमे द्वा
रिमै जायकर और रुकमणी को लेकर
अंसोंके सहित होय करके तेरे घरमे आ
यकर निवास करताहूं ईहां जोकोई भक्ती
प्रीतीसें मेरादरसन करेगा और सनमान

का

४२
भ॰
४४

पूर्वक पुष्प और तुलसीदल चढायकरके पू
जन सेवन करेगा मै तिसके हृदयके मनोर्थ
सवसफल करूंगा मेरासोई वड़ा प्यारा भक्त
है कि जो इस कलिकालमै प्रीती भक्तीसे आ
य करकै इसी अस्थान मेरे इसी सरूपका पू
जन सेवन करेगा मै तिसपर अत्यंत प्रसन्न
होऊंगा और वेमेरे परम धामका सुख ।
जोहै सो प्राप्त करेगा जोते हे भक्त । ४४

44

अब हृदयसे चिंता और सोच सब त्याग और
स्वस्थ चित होयकरके भोजन कर मै कोई अ
नथी ब्राह्मण नहीं था अब तू सत्य करके जान
जो मै अपनी सुंदर द्वारिकापुरीको त्यागकर
इसी पाषाण रूपमे तेरी मातापिता की उत्त
म भक्ती और सेवा देखनेको ईहां तेरे घरमै
ही निवास करताहूं तू हृदय के सोच और
संदेहसे नहृत्त होयकर और अपने नियम

४२
भ
४५

अनुसार माता पिताकी सब सेवा करके प्रात
काल आनंदसे भोजन पायले इसप्रकार रा
त्रीके समय इह स्वपन राजाके सहित ग्राम
के सब लोगोंको भी होताभया तब प्रातःका
ल सब उठकर और अपने अपने विचारक
र परस्पर कहतेहैं कि देखोभाई रात्रीको इ
ह कैसा आश्चर्य और अलौकिक स्वपनभया
है कि जो कभी विचारमें नहीं आवताहै । ९ ।

४५

चौपाई। संजुत नगर लोग तनराई। प्रमुदित

पुंडरीक गृह आई। बोले वदन वचन समुदा

या। कथन हमार सुनहु उनराया। अनथी

वने जवन पाषाना। इहु सादान आए भग

वाना। चिंता तजहु विप्र निजजीके। हमकहे

भयो स्वपन निसिनीके। अस तिन कथन

श्रवण जब कीना। रह्यो मौन उज धरम प्रवी

ना। आपन यथा नियम अनुसारी। सेवन नि

४२
भ
५६

40

रन तातमहतारी। नव भूपादि ग्राम बिहाना
लागे भनन वचन सनमाना। नवउज्ज धन्य
धन्य नवसेवा। जहि प्रभाव रंजन उजदेवा।
हरि साक्षात द्वारिकावागी। केवल तोर भ
क्ति हित लागी। कीन निवास रुचिर नव भ
वना। सदृश तोर आज जग कवना। सोरठा
अस भावत समुदाय। न्टप समेत उज्ज हृद
नन। मंदिर चले लिवाय। पुंडरीक कहँ संग

५६

मिम । रुक्मणि सहित नगर । राजे उजवरभ
वन जहां । शिलारूप निज धार । तहां आय प्र
मदित सकल ।९। टीका । तब संपूर्ण नगर
के लोगजोहैं सो राजाके सहित मिलकर
पुंडरीकके चरणै चलेआये और तिसको
बडी प्रीती मन कारसे कहने लगे किहे ब्रा
ह्मण इह अनथी पाषाण जो बनेहैं सो तोसा
क्षात आप भगवान कृपा निधानहैं क्योंकि

भ. ५०

47

दीना नाथने हमको सपने मे भलीप्रकार सब
जणायदियाहै तुम हृदयकी चिंता सोच को
त्यागो और भगवानके चरन कमलो मे प्रीती
करो ऐसे तिनका कथन सुनकर पुंडरीक
ने कुछ उत्तर नहींदिया मौन होय करके अ
पने माता पिताकी सेवामे लीन रहा तब
राजासे लेकरके ग्रामके सब विद्वान जनजो
थे सो बडी शालाथा और सत कार करके

वचनोसें कहने लगे किहे ब्रह्मण तू धन्यहैं
और धन्य तेरी इह सेवाहै कि जिसके प्रभाव
सें देवताओंके दुख हरकरने वाले भगवान
द्वारिका को त्याग करकें भक्तोंके वशभये हु
ये साक्षात ईहां तेरे घरमे आय करकें विराज
मान भये हैं आज जगतमे तेरे समान हम
ने कौन वडभागीहै ऐसे कथन करकें रा
जाके सहित सब विद्वानजन वडे सनमान

४२
भ.
४८
48

पूर्वक पुंडरीक को साथ लेकर जहां सकम
षीके सहित शिलारूप होयकर भगवान
विराजे हुयेथे तहांचले आवतेभये।९।चौ
पाई।सब बुधजन जस आय सदीना।सादि
र पुंडरीकन सकीना।विधिवत करि पूजन
भगवाना।हरषि कीन सब प्रसनति ना
ना।सादर सवि नैवेद लगावा।तहिपाछे
भोजन उन पावा।भयेलोग सब हृदय सावा

री। कहत परस्पर नर ग्रहनारी। हमरे धन्य

भाग जगथ्यान्। जिनकर नगर राज स्वरा

ज्। प्रसप्रकार भगवान सहाये। हर नरस

खेद विप्र गृहश्राये। वैठन हेत जवन ईंज

कहयेो। विठुल नाम प्रकट ग्रस भयेयो।

राजेजहा भक्त सुखदाता। सोपुर पुंडरीक

विताता। सर्वसिद्धि करमूल सहावन। सं

दर सुखद देव भव पावन। दरसन किये।

४२
भ.
४९

47

नाम जगाहोई। भक्ती मुक्ति रुचिर फलदोई
मुनिऋषि उमा शंभु सुरराई। विधि गणेसज्ज
न विबुध निकाई। विश्वदेव जग जनन उदा
रा। धरि निज निज अंसा अवतारा। रक्षण
करन हेत निजदासा। नहि उत्तम पुर कौन
निवासा। पुंडरीक पुरमान सुभावन। जासु
महातम मंजुल पावन। इमत अनंत विपु
ल तिलसनारा। किये कथन मात्र परहिंनपारा

४९

तामे कछु संछेप सुहावा। मोरे यथा श्रवण म
ग आवा। सो कछु मंदमती अनुसारा। कौन
कथनमै संत उदारा। जिनन अनहुं भक्ति स
नमाना। सुमरहिं उर विठ्ठल भगवाना। ग
ति अनन्य कीर्तन गुन गावहिं। सो अनन्द
प्रभु दरसन पावहिं। विठ्ठल पुंडरीक पुर
वासी। किलिष ओघ संताप विनासी। कृस
गुणानु वाद सुख गाना। सकल भोग सुख

भ
५०

संपतिनाना। सोरठा। पावहिं सदगति सोय।
विठ्ठल देव प्रसादतें। कछु दुरलभ नहिं होय।
सावद सुलभ ताके सदा। ११। टीका। तबबहु
जन और विद्वानोकी जे सी आज्ञाभई पुंडरी
कने तैसेही किया विधिवत वडे सनमानसे
विठ्ठल भगवानका पूजन करके सावसे अने
क प्रकारकी अस्तुतीजोहै सो गायन करी
फिर प्रीती भक्तीसे सुंदर नैवेद लगायकर पी

५०

के आपभी भोजन पाया नब स्त्री पुरष सबलो
ग हृदय मै परम सुखमानकर परस्पर कहते
हैं कि हमारे जगतमै धन्यभागहैं जिनके न
गरमै देवोंके देव विठ्ठल भगवान आयकर
के विराजमान हूयेहैं इस प्रकार सर्व जीवों
के सुखदायक और भक्त हितकारी भगवा
न पुंडरीक ब्रह्मणके घरमै आवनेभये और
जो ब्रह्मणने शिलादेकर बैठनेके वास्ते क

भ
५१

होगया तबसें विट्ठलही नामकरके प्रसिद्ध हो
जातेभये और जहां दीनानाथ विराज मान
हूयेहैं सो पुंडरीक नाम करके पुर जगतमे
बडा उजागर सर्व सिद्धियोंका मूल सुखदायक
और परम पवित्र तीर्थ होताभया कि जिसके
दरसन करनेसे भक्ती और मुक्ती इहदोनो फ
ल प्रापत होतेहैं फिर कैसाभीहै कि जहां मुनी
ऋषी शिवपारवती और गणपती विस्नभगवान

५१

और लक्ष्मी ब्रह्मा इंद्र इत्यादि सब देवता अ
पना अपना अंश अवतार धारकर अपने
दास भक्तकी रक्षा करनेके वास्ते तिस उ
त्तम पुर विषें आय कर निवासकरते भ
येहैं नाभादास कहतेहैं कि इस पुंडरीक पु
रका अनंत और अगाध महात्तमहै कथन
कियेसे कुछपार नहीं पायाजाता जोते ह
संतजनो जैसा किमै ने श्रवण कियाहै ते

भ. सा मंदमतीके अनुसार ईहां संक्षेप साऊक्ष
५२ गायन कर दियाहै जा कोई आज कलिका
लमै भी प्रीती भक्तीसे निसकपट होय क
रके हृदय मे विठ्ठल भगवानका सुमरण
करताहै और एकाग्रचित होयकर तिन
का कीर्तन गायन करताहै तिसको सा
क्षात भगवानका दरसनदेते हैं तसे वि
ठ्ठल पुंडरीक पुरमै जो कोई निवास करने

५२

वालाहै सो महां घोर पापोंसे छूटकर जगत
मे सबभोग स्वछ भोगता और भगवान के
गुणानुवाद गावताहुआ विठ्ठल देवकी
कृपाके प्रसादसे सदगती जो बडी उत्तम
गतीहै तिसको प्रापत होवेगा भगवानकी
कृपासे तिसको संसारमे कुछ भी दुरलभ
नहीं है सब सहज और सुगमही है ।११।
इति श्रीभक्त विनोद ग्रंथे भगवद भक्तिम

८२
भ०
५२

इतिश्री श्रीहंससिंहकृत भाषाटीकायां पुंडरीक चरित्र व
र्णनं नाम सर्गः ॥

83